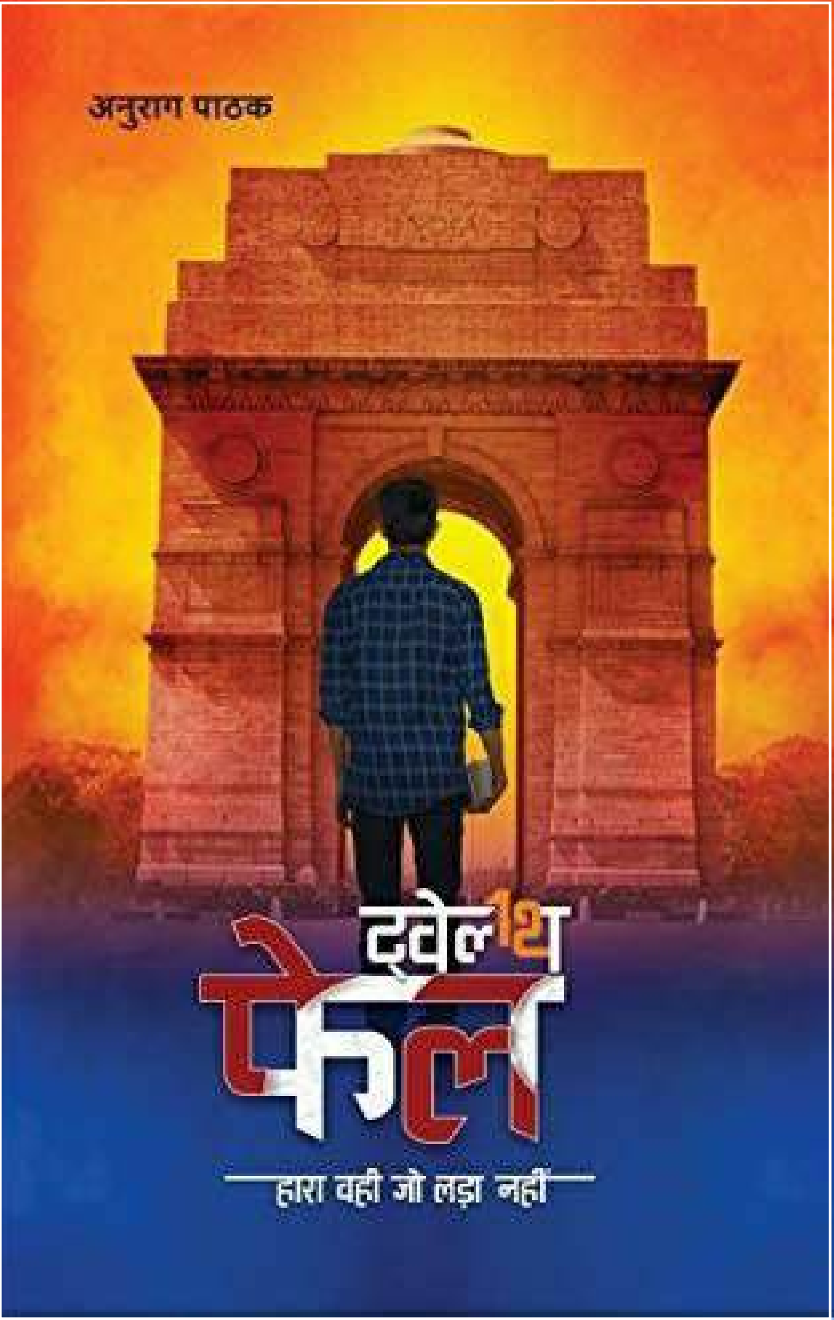
अनुराग पाठक
ट्वेल्थ
फेल
हारा वही जो लड़ा नहीं

SK Technology 30

सनी सरोज

ट्वेल्थ फेल

ड्राफ्ट 18

-अनुराग पाठक

1.

मार्च की एक सुबह थी। रात भर मक्खियाँ कहीं दुबकी हुई थीं। पर उजाला होते ही फिर से भिनभिनाने लगीं। घर की छत पर सो रहे मनोज की नींद मक्खियों के बार बार भिनभिनाने से खुल गई। उसका दोस्त विष्णु अपनी छत पर गणित के सवाल हल कर रहा था। गणित के सवाल तो मनोज को भी हल करने चाहिए, क्योंकि आज कक्षा बारह का पहला पेपर गणित का ही है, लेकिन उसे गणित के सवाल बिलकुल समझ नहीं आते। फिर भी उसने पास पड़ी गणित की किताब उठाई और पढ़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन कुछ ही देर में वह समझ गया कि इस तरह किताब पकड़े रहने का कोई लाभ नहीं।

मनोज अपनी तारीफ़ से बहुत उत्साहित होता है इसलिए जब उसने देखा कि उसके घर के सामने के कुँए पर मोहल्ले की महिलायें पानी भर रही हैं, तो उन्हें प्रभावित करने के लिये वह छत पर टहलते हुए गणित के सवाल ऊँची आवाज में पढने लगा। महिलाओं तक उसकी आवाज पहुँच गई।

एक महिला उसकी तरफ इशारा करके बोली - "हमारो मोड़ा बिलकुल ना पढ़त। एक मनोज है, रात भर छत पे लालटेन से पढ़त रहतो।"

मनोज का उद्देश्य पूरा हुआ, अपनी तारीफ़ सुनकर वह खुश हो गया। उसने गणित की किताब नीचे रख दी और गुलशन नंदा का उपन्यास 'जलती चट्टान' खोल लिया। रात को एक बजे तक लालटेन की रोशनी में पढ़ने के बाद भी उसके क्लाइमेक्स के दो पेज रह गए थे। उसने दस मिनिट में उपन्यास पूरा किया और बाहर कुँए पर आ गया। महिलायें अभी भी पानी भर रही थीं।

एक बुज़ुर्ग महिला को कुँए से बाल्टी खीचने में बहुत कष्ट होता था। मनोज ने उसका कष्ट देखकर उसकी बाल्टी भर दी।

पुरस्कार में उसे महिला का आशीर्वाद प्राप्त हुआ -"लल्ला तू फस्ट से पास होयगो।"

तब तक उसके सहपाठी विष्णु के पिता पण्डित कालीचरण कुँए पर आ गये। गाँव के स्कूल में कक्षा आठ तक गणित पढ़ाने वाले पंडित कालीचरण मनोज और उसकी योग्यता को अच्छे से जानते थे।

उसे देखते ही पण्डित जी बोल पड़े - "परीक्षा की तैयारी कैसी है मनोज? गणित में पास होना मज़ाक नहीं है।"

फिर पण्डित जी ने अपने बेटे विष्णु की तारीफ करना शुरु की - "मैंने तो विष्णु से कह दिया है कि फर्स्ट डिवीजन से पास नहीं हुआ तो मैं तो उसकी पढ़ाई बन्द करा दूंगा। पर मैं जानता हूँ विष्णु गणित में हुशियार है। उसके मन में ही पढ़ने की लगन है। "

मनोज इस सच्चाई को नकार नहीं सका। उसने पण्डित जी की मदद के उद्देश्य से उनके हाथ से पानी की बाल्टी ले ली और उनके साथ साथ चलने लगा।

उसने पण्डितजी से उनके बेटे की तारीफ़ की -"ताऊ विष्णु जैसा हुशियार लड़का तो पूरे जिले में नहीं है। मुझे तो पूरा भरोसा है कि वो इस बार जिले में फर्स्ट आयेगा।" यह कहते हुए मनोज की आँखों के सामने

उसके पिता की धुंधली छवि आई और फिर अचानक विलीन हो गई। हल्की टीस उदासी के रंग में उसके चेहरे पर दिखाई दी।

2 .

मुरैना जिला मुख्यालय से तीस किलोमीटर दूर जौरा तहसील से सटे बिलग्राम में दिन की शुरुवात हो चुकी थी। सामान्य सा यह दिन नया सिर्फ इस बात में था कि आज गाँव के कुछ लड़के लड़कियाँ ट्वेल्थ का पहला पेपर देने जा रहे थे। मनोज जब पण्डित जी को उनके घर छोड़कर वापस आया तो उसकी माँ अपने घर के दरवाजे पर दो महिलाओं के साथ बातचीत में मग्न थी।

मनोज द्वारा बुलाये जाने पर माँ ने इशारे से कह दिया -"रुक जा आती हूँ।"

वह जानता था कि माँ से वार्तालाप जल्दी खत्म करके आने की उम्मीद करना व्यर्थ है।इसलिए वह तैयार होकर परीक्षा देने के लिए निकल गया।

बेटे को तैयार होकर जाते हुए देख माँ देहरी पर बैठे बैठे बोली -"रुक जा मोड़ा,रजनी ने रोटी ना बनाई का? ।खाली पेट पेपर देबे मत जा।"

माँ ने रोटी बनाने का काम पन्द्रह साल की बेटी रजनी को सौंप दिया था और खुद को चर्चाओं में व्यस्त कर लिया था। मनोज की भूख आज मर चुकी थी। उसने गणित की गाइड हाथ में ले ली और बिना कुछ कहे घर से निकल गया। माँ फिर से चर्चा के काम में व्यस्त हो गई।

यह गाँव तहसील को जिले से जोड़ने वाली सड़क के किनारे पर बसा था। इसलिए आवागमन की सुविधा से भाग्यशाली था।हर दस मिनिट में मुरैना से जौरा और जौरा से मुरैना आने जाने वाली बसें इस गाँव से गुजरती थी। सुबह के नौ बजे बिलग्राम की पुलिया पर सवारियों की भीड़ बढ़ने लगी। मनोज पुलिया के पास बने हनुमान जी के मन्दिर में हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। वह हनुमान जी की मूर्ति के सामने बुदबुदाया –"हे हनुमान जी गणित में बेड़ा पार लगा देना, तुम्हारा ही सहारा है ।"

हनुमान जी से गणित में पास कराने की प्रार्थना करके जब वह पुलिया पर आया तो वहां पहले से विष्णु और उसके पिता पण्डित कालीचरण बस का इंतज़ार कर रहे थे ।

पुलिया पर बैठे एक लड़के ने पंडित कालीचरण से पूछा -"पण्डित जी क्या विष्णु को नकल कराने जा रहे हो जौरा?"

पण्डित जी विष्णु को परीक्षा दिलाने ले जा रहे थे। इस तरह का व्यंग्य सुनकर उन्हें पीड़ा हुई।

पण्डित जी नारजगी के स्वर में बोले-"न तुम लोगों ने कभी स्कूल का मुंह देखा, न हीं किताबें पढीं । तुम लोग क्या जानो पढ़ाई क्या होती है?"
इतना कहकर पण्डित जी ने अपनी नजर घुमाकर उस दिशा की ओर कर ली जहां से बस आने वाली थी।हार मानना इस गाँव में किसी ने नहीं सीखा था। पुलिया पर बैठे लड़के पण्डित जी के द्वारा किये गए अपमान से तिलमिला गए।

"पढ़के ना थानेदार होत कोउ,मास्टर बनके ऐसेई स्कूल में गिनती पहाड़े बुलवायंगे।"- उनमे से एक लड़के ने सड़क के उस पार बने स्कूल की तरफ इशारा करके कहा।
मनोज ने देखा कि माहौल बिगड़ रहा है तो उसने लड़कों से कहा- "मास्टरी तो बड़ी नौकरी है, मेरी लग जाए तो मजा ही आ जाए।”
"पर उसके लिए ट्वेल्थ पास करना जरूरी है। तुम कैसे करोगे मनोज ? सुना है इस साल एसडीएम नकल नहीं होने देगा।" –एक दूसरे लड़के ने मनोज को नई जानकारी दी ।
मनोज को उम्मीद नहीं थी कि परीक्षा शुरू होने के पहले इस तरह की बुरी खबर सुनने को मिलेगी।लेकिन उसने अपने मन को दिलासा दिया कि नकल इस तरह से खत्म नहीं होगी।पिछले कई सालों से गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जौरा में नकल होती आई है। उसने अपनी दसवीं की परीक्षा भी नकल से पास की थी।
तभी धड़ धड़ करता हुआ एक टेम्पो पुलिया पर आकर रुक गया । मनोज का दोस्त बल्ले टेम्पो चला रहा था। तभी टेम्पो के पीछे बालाजी बस सर्विस की बावन सीटर बस भी पुलिया पर आकर रुक गई। बस में लगभग सत्तर सवारियां भरी हुई थी। फिर भी उसके बीस साल के दुबले पतले कंडेक्टर को बल्ले का तीन सवारियां अपने टेम्पो में बिठाना अखर गया।
कंडेक्टर ने बल्ले से दबंग और धमकी भरी आवाज में कहा-"क्यों रे कितनी सवारी बिठायगो रे! तीन सवारी एक्स्ट्रा बिठाए लइ हैं, उतार बिने, बे मेरी सवारी हैं।
पिछले कुछ महीनों से इस सड़क पर तीन चार टेम्पो चलने लगे थे। बस ऑपरेटर इस बढ़ती प्रतियोगिता से आहत थे। टेम्पो के कारण बसों को नुकसान होता था। इसलिए बस और टेम्पो के संघर्ष इस सड़क पर अब बढ़ने लगे थे।
“तू काम कर अपना ,जे मेरो गाँव है ,बस ना चल पावेगी तेरी।“-बल्ले अपने गाँव में शेर बन गया ।
लेकिन बालाजी बस का मालिक धन और राजनीति से ताकतवर था। आरटीओ और दरोगा सभी उसके इस प्रभाव को मानते थे। इसलिए उसका स्टाफ सीमा से अधिक सवारी ढोना अपना विशेषाधिकार मानता था।

विवाद बढ़ता देख गाँव के कुछ लोग भी टेम्पो के पास आ गए। गाँव में एकता दिखाने का अच्छा मौक़ा था यह। बस कंडक्टर अकेला पड़ गया । बस में बैठे ड्राइवर ने कंडक्टर को वापस बुला लिया था।
अधेड़ उम्र के ड्राइवर ने अपने अनुभव से यही सीखा था कि जब किसी गाँव में अकेले घिर जाओ तो वहां से भाग लेना ही सही रणनीति है। बाद में अपने इलाके में इस संघर्ष को घसीटकर लाने की कोशिश करनी चाहिए। कंडक्टर भुनभुनाता हुआ वापस बस में चला गया।

कंडक्टर बस के गेट से लटकते हुए बल्ले को चेतावनी देते हुए चिल्लाया-"जा सड़क पे टेम्पो चलावो भुला देंगो ,होश में रहिये।"

इस चेतावनी का जवाब बल्ले ने भी ऊँची आवाज में दिया – "गाँव में से बस ना निकाल पावेगो, ध्यान राखिये । " इतना कहकर बल्ले ने टेम्पो का टॉप गियर डाला और टेम्पो धड़ धड़ करता जौरा की और बढ़ गया ।

गाँधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के गेट के पास मनोज,विष्णु और पंडित कालीचरण उतर गये। मनोज और विष्णु स्कूल में चले गये और पंडित कालीचरण विष्णु को सुरक्षित स्कूल पहुंचा कर अपने किसी रिश्तेदार के घर की ओर रवाना हो गये।

गांधी स्कूल के संचालक जगत सिंह ने बहुत मेहनत के बाद ट्वेल्थ बोर्ड परीक्षा का सेंटर अपने स्कूल में कराया था। जिस कारण उनके स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या क्षमता से अधिक बढ़ गई थी। विद्यार्थियों के झुण्ड भय आश्चर्य और आनन्द के मिले जुले भाव के साथ स्कूल में प्रवेश कर रहे थे । संचालक जगत सिंह अपने कमरे की खिड़की से आशीर्वाद की नजरों से इन झुंडों को देख रहे थे।

आज नकल कराने का जिम्मा गणित के शिक्षक दुबे जी पर था। नकल कराने के लिए प्रत्येक क्लास में जाना उनके लिए असुविधा का काम था ,इसलिए स्कूल के मैदान में टेंट लगा दिया गया था। नीचे टाट पट्टियां बिछाई गईं थीं,जिस पर परीक्षार्थी बैठ गये थे । मनोज घंटी बजने का इन्तजार करने लगा ।

घण्टी बज गई । पेपर बट गए ।मनोज ने पेपर को जमीन पर रख दिया और सभी के साथ अपने गणित के सर दुबेजी का इन्तजार करने लगा। दुबे जी ऑफिस में बैठकर प्रश्न पत्र हल कर रहे थे। एक प्रश्न हल करने के बाद उसे ब्लेकबोर्ड पर उतरवाना फिर दूसरे उत्तर की सप्लाई करना मेहनत का काम था।

अभी दुबे सर द्वारा दिया गया पहला उत्तर ब्लैक बोर्ड पर उतारा ही जा रहा था कि स्कूल के बाहर हलचल हुई । एक सफेद रंग की पीली बत्ती लगी बोलेरो स्कूल के कम्पाउंड में आकर रुक गई। पुलिस की वर्दी में पांच सिपाही सीधे परीक्षा वाले मैदान में पहुंच गए। पुलिस को देखकर दुबे सर पहले तो हड़बड़ाए फिर उन्हें लगा कि यह तो औपचारिक चेकिंग है जो हर साल पहले पेपर के दिन शासन द्वारा की जाती है,पर जब पुलिस के सिपाहियों ने लड़कों से गाइड,नकल की पर्चियां आदि लेकर एक बोरे में भरना शुरू किया तो दुबे को यह समझते देर नहीं लगी कि मामला गम्भीर है। दुबे जी ने घबराहट में बीड़ी सुलगा ली। वह ब्लैक बोर्ड डस्टर से साफ़ कर भाग लिए और स्कूल के संचालक जगत सिंह के पीछे खड़े हो गए। सभी विद्यार्थियों को भरोसा था कि दस मिनिट की कवायद के बाद पुलिस चली जायगी उसके बाद उत्तरों की सप्लाई फिर से शुरू हो जायगी। इसी भरोसे ने विद्यार्थियों ने धैर्य बनाये रखा था।

लेकिन दस मिनिट बीत गये और मामला सेटल नहीं हुआ तो विद्यार्थियों की बेचैनी बढ़ने लगी। उनके ऊपर फेल होने का खतरा मंडराने लगा।

आज के इस रंगमंच के केंद्र में खड़े एक युवक की ओर इशारा करते हुए एक लड़का बोला - "जे तो एसडीएम राघवेंद्र सिंह है।"

राघवेंद्र सिंह ने जगत सिंह से कहा -"आपको शर्म आनी चाहिए,आप खुले आम नकल करा रहे हैं।

घबराये हुए लड़के और अधिक घबरा गए। राघवेन्द्र सिंह के तेवर देखकर मनोज को लगा कि उसका यह साल तो गया। एक सरकारी अधिकारी की ताकत देखकर मनोज को आश्चर्य हो रहा था। एसडीएम का रौब रुतवा गजब का था। हमेशा अपनी दबंगई में रहने वाला जौरा थाने का थानेदार कुशवाह भी अपने से आधी उम्र के एसडीएम के सामने हाथ बांधे खड़ा था। लड़के एसडीएम को कोस रहे थे। जगत सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि उनकी नकल की जमी जमाई सेटिंग एक एसडीएम ने कैसे बिगाड़ दी ? जगतसिंह ने स्कूली शिक्षा के जॉइंट डायरेक्टर को फोन लगाया और एसडीएम की करतूत गुस्से में कह सुनाई।

जॉइंट डायरेक्टर एसडीएम की कार्य प्रणाली से परिचित था उसने कहा -" राघवेंद्र सिंह का कोई इलाज नहीं है। ऐसे अधिकारी ही होते है जिन्हें जमी जमाई व्यवस्था को उजाड़ने में मजा आता है। जौरा के बुरे दिन आ गए।”

मैदान उजड़ गया। विद्यार्थी चले गये । कापियां खाली छूट गईं । पर जुझारु मनोज ने अपनी कॉपी खाली नहीं छोड़ी । उसने सुना था कि कॉपी भरने से भी पास हुआ जा सकता है।इसलिए उसने पेपर में पूछे गये सवालों को ही उत्तर पुस्तिका में बार बार लिख कर उसे भर दिया। वह प्रश्नों के बीच बीच में'इति सिद्धम्' लिखता जा रहा था, जिससे यदि चेकर चाहे तो वह 'इति सिद्धम्' मात्र पढ़कर उसे पास कर सकता है। अंत में उसने चेकर से निवेदन भी किया कि उसकी दादी का स्वास्थ खराब होने के कारण वह ठीक से पढ़ाई नहीं कर सका था ,इसलिए यदि उसे पास कर दिया जाय तो वह चेकर का हमेशा अहसान मानेगा।

3.

मनोज की परीक्षा का रिजल्ट अभी तक नहीं आया था। एक सुबह बल्ले के घर के दरवाजे पर गाँव में क्रिकेट खेलने वाले लड़के प्लानिंग कर रहे थे। मनोज भी इस समूह का अच्छा खिलाड़ी माना जाता था। वह शॉट मारने के लिए नहीं, बल्कि बॉल को रोकने में माहिर था। जब टीम जल्दी जल्दी आउट होती थी तब वह क्रीज पर जाकर विकेट गिरने से रोक सकता था।

बल्ले ने लड़कों से बोलना शुरु किया- "आज जौरा में टूर्नामेंट शुरु हो रहा है। सौ रुपये एंट्री फीस है। दस रुपये की बॉल आयगी। इसलिए सबको दस दस रुपये देने हैं।

मनोज ने मन ही मन सोचा -"दस रुपये कहाँ से आएंगे ?"

वह जानता था कि उसके लिए दस रुपये जुटाना इतना आसान नहीं है। मम्मी से मांगने पर भी उसे दस रुपये की कोई उम्मीद नहीं थी।पापा को गए सात महीने हो गये थे। सात महीने पहले अक्टूबर में पापा डिंडोरी से आये थे तब मम्मी को दस हजार रुपये दे गए थे। सात महीने में सब रुपये खर्च हो गए । मम्मी अब उधार मांग कर घर चला रही है। आज तक न पापा आये न ही उन्होंने तनख्वाह भेजी। बस इसी भरोसे घर चल रहा है कि

पापा के आने के बाद सब ठीक हो जायगा। क्रिकेट की मीटिंग में अचानक मनोज के सामने उसके घर की दीन हीन और जर्जर दशा का दृश्य आ गया।

घर में घुसने से पहले उसने देखा कि मम्मी पड़ोस की ताई से उनके उनके दरवाजे पर खड़े होकर बातें कर रही हैं। छोटा भाई दीपक घर में नहीं है या तो वह सड़क किनारे पुलिया पर बैठा होगा या बिना कहे किसी बस या टेम्पो में बैठकर जौरा निकल गया गया होगा। निरुद्देश्य आवारा घूमना ही उसका शौक है। उसने माँ को अंदर बुलाया। माँ की बैठक भी खत्म हो गई थी। उन्हें मजबूरन घर आना पड़ा।
उसने पूछा -"मम्मी दस रुपैया दे रही है क्या,मैच खेलबे जानो है ?"
मम्मी ने चिढ़ते हुए उत्तर दिया -"मुझ पे नहीं है पैसा। तेरे बाप ने तो सात महीना से मुंह ना
दिखाओ,मैं उधार मांग मांग के घर चलाये रही हों। कहाँ से लाऊँ पैसा?"
मम्मी, पापा को कोसती हुई अंदर कमरे में चली गई। मनोज को लग रहा था कि उसका खेलना अब मुश्किल है। लेकिन मन की निराशा को दूर करते हुए उसने किसी उम्मीद के भरोसे सफेद से मटमैले पड़ चुके कपड़े के जूते पहने और लगभग दौड़ते हुए बल्ले के घर के बाहर पहुँच गया। आत्मविश्वास से भरा मनोज टीम में सिलेक्शन की उम्मीद लिए तैयार होकर आ गया था।
जौरा के गांधी आश्रम मैदान पर टूर्नामेंट का आयोजन रखा गया था। टीम के बैठने और कमेंट्री के लिए एक टेंट लगा दिया गया था। पचास प्लास्टिक की कुर्सियां डाल दी गईं थीं । बारह लोगों की टीम में मनोज को छोड़कर सभी ने फीस दे दी थी इसलिए उसका नाम बारहवें खिलाड़ी के रूप में लिख दिया गया।
कमेंट्री की बागडोर जौरा के दयाल बेंड में गाना गानेवाले पप्पू सिंह के हिस्से में आई । उसने कमेंट्री करना शुरु की -
 " हैलो माइक टेस्टिंग हैलो।मैच शुरु हो रहा है, मैच का मजा लेने वालों से गुजारिस है कि बैठ जाए। ए लाल शर्ट पिच पे मति चले,ए काली शर्ट वो गाय घुस रही है मैदान में जल्दी हटा।"-आँखों देखा वर्णन शुरु हो चुका था।
"मैच के मुख्य अतिथि एसडीएम साहब काम में फंसे है इसलिए वे बाद में आवेंगे।" -कमेंट्रेटर ने घोषणा की।
दस ओवर के मैच में टॉस बिलग्राम ने जीता और पहले गेंदवाजी का फैसला किया।विरोधी कैलारस की टीम धुंआधार बैटिंग के लिए क्षेत्र में जानी जाती थी।
 कैलारस के बल्लेबाज बिलग्राम के गेंदबाजों की पिटाई कर रहे थे।
दस ओवर में कैलारस ने एक सौ बारह रन बना लिए। मनोज बारहवे खिलाड़ी के रूप में टेंट में बैठा दुखी होता रहा ।
बिलग्राम की तरफ से बल्ले और प्रकाश ने ओपनिंग की। बल्ले ने पहली दो बॉल पर दो चौके जड़ दिए। तभी टेंट में कुछ हलचल हुई।
कमेंटेटर पप्पूसिंह ने उत्साह से घोषणा की -"मुख्य अतिथि एसडीएम साहब आये गये है, मैच रोक दो।
 "एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने खेल जारी रखने का संकेत आयोजकों को दिया पर पप्पूसिंह ने
बोलना जारी रखा-"देवेन्द्र अग्रवाल एसडीएम साहब को माला पहनाएँ।"

राघवेंद्र सिंह के मना करने पर भी टूर्नामेंट के आयोजक देवेन्द्र अग्रवाल ने इसी उद्देश्य के लिए पास रखी माला उनके के गले में पहना दी।
राघवेंद्र सिंह ने कहा -"अरे भाई मैच जारी रखिये ये स्वागत आवश्यक नहीं है,मैच डिस्टर्ब होता है।"
मुख्य अतिथि राघवेन्द्र सिंह कस्बे के इस मैच को गम्भीरता से ले रहे थे। मनोज आज एसडीएम को नजदीक से देख रहा था। परीक्षा के दिन राघवेंद्र सिंह की नकल रोकने की कार्यवाही से भले ही उसे नुकसान हुआ हो पर उनके दबंग व्यक्तित्व से वह बहुत प्रभावित हुआ था। उसके अभिवादन पर राघवेन्द्र सिंह ने मुस्कुराकर अभिवादन का उत्तर दिया।
मैच फिर शुरु हुआ। पप्पूसिंह ने खेल को देशभक्ति से जोड़ते हुए मोहम्मद रफ़ी की दो लाइन गा दी -"कर चले हम फ़िदा जान तन साथियो अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।"

राघवेंद्र सिंह को खेल के बीच गाना सुनने से व्यवधान महसूस हुआ
उन्होंने पप्पूसिंह से कहा – "कमेंट्री करो,गाना क्यों गा रहे हो?"
पप्पूसिंह ने आदेश का पालन करते हुए कमेंट्री जारी रखी- "बिलग्राम के दो विकेट गिर गए है। आउट होने वाले खिलाड़ी के खेत में भैंस घुस गई थी इसलिए वे जल्दी में थे। "
राघवेंद्र सिंह इस तरह की कमेंट्री सुनकर आश्चर्यचकित रह गए। उनके चेहरे पर नाराजगी के भाव आ गए। सात ओवर में बिलग्राम के पचपन रन में पांच विकेट हो गए थे। एक तरफ से बल्ले चालीस रन पर अभी भी खेल रहा था पर दूसरी तरफ से विकेट लगातार गिर रहे थे। मनोज को लग रहा था कि इस समय दूसरे छोर पर वह होता तो विकेट बचा सकता था और उसके गाँव की टीम आज जीत सकती थी, लेकिन दस रुपये के अभाव में उसके गाँव का सम्मान आज दांव पर लगा हुआ था ।वह इसी मानसिक जद्दोजहद में था तभी अचानक पप्पूसिंह ने अपना माइक कुछ देर के लिए उसे थमा दिया और बहुत देर से रुकी हुई पेशाब करने चला गया।
मनोज ने माइक पर अपने मन में चल रही उथल पुथल को शब्द देने शुरु किये-"इस समय बिलग्राम की टीम बहुत नाजुक स्थिति में है। कप्तान बल्ले की कमजोर रणनीति उनके लिए परेशानी का कारण बन गई है। उनकी अच्छी बेटिंग के बावजूद दूसरे छोर पर विकेट गिर रहे है। इस समय एक ऐसे बल्लेबाज की जरूरत है जो दूसरे सिरे पर विकेट रोक कर खेल सके। पर बिलग्राम की टीम में रुककर खेलने वाला कोई बल्लेबाज नहीं दिख रहा।"
कमेंट्री का अंदाज बदल चुका था। मजाक और हंसी की जगह अब कमेंट्री गम्भीर और विश्लेषण परक हो रही थी। राघवेंद्रसिंह का ध्यान अचानक बदली कमेंट्री की भाषा और विश्लेषण पर गया। वह इस तरह की कमेंट्री से प्रभावित दिखाई दिए। पप्पू सिंह पेशाब करके वापस आ गया था। उसने मनोज से माइक ले लिया।
तभी राघवेंद्र सिंह ने आदेश के स्वर में पप्पूसिंह से कहा -"उस लड़के को बोलने दो। तुम उधर बैठो।"
मनोज को मैच न खेलने का जो दु:ख था वह एसडीएम राघवेंद्र सिंह द्वारा की गई इस तारीफ़ से कम हो गया। उसने मैच खत्म होने तक कमेंट्री जारी रखी।अंतिम विकेट गिर गया।बिलग्राम की टीम हार गई । सर झुकाये बल्ले और दूसरा खिलाड़ी वापस टेंट की तरफ आ रहे थे।

मनोज ने कविता के माध्यम से अपनी कमेंट्री जारी रखी -"लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती , कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। बल्ले ने अपनी टीम को अकेले जिताने की भरपूर कोशिश की इसलिए आज का मैच बल्ले के अकेले संघर्ष के लिए याद किया जाएगा। हार के बावजूद बल्ले के लिए ताली बजनी चाहिए।"

मनोज की कमेंट्री के कारण सभी लोग बिलग्राम की हार को भूल कर बल्ले की बैटिंग पर ताली बजाने लगे।उसने अपनी कमेंट्री से अपने गाँव का सम्मान जौरा में बचा लिया।

दोनों टीमों को प्रमाण पत्र बाटने के बाद एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने मनोज से कहा-"तुम अच्छा बोलते हो,क्या नाम है तुम्हारा?"
उसने जवाब दिया -"मनोज कुमार शर्मा।”
बिलग्राम की टीम बल्ले के टेम्पो में बैठकर वापस अपने गाँव की ओर चल दी ।राघवेंद्र सिंह मनोज के दिल पर छा गये। अपनी तारीफ़ के लिए हमेशा लालायित रहने वाले मनोज को आज भरपूर तारीफ़ मिली थी। एक दीवानापन सा उसके दिल पर छा गया था ।

4.

मनोज के पिता ओमवीर शर्मा को गाँव आये हुए एक महीना हो चुका था। वेतन के रुके हुए पैसे मम्मी को मिल गये ।मम्मी ने उधार पटा दिए। लेकिन वह पापा की आदत जानती थी कि उन्हें घर की चिंता कभी नहीं रही। नौकरी पर जाते हैं तो महीनों घर नहीं लौटते। अब घर आये हुए भी उन्हें एक महीना हो गया पर नौकरी पर जाने का नाम नहीं ले रहे हैं। राज्य सरकार के कृषि विभाग में कृषि विस्तार अधिकारी के पद पर क्या इतनी छुट्टी मिलती है कि एक एक महीने नौकरी पर न जाया जाए?
माँ ने एक दिन पिता से ऊँची आवाज में पूछ ही लिया -" अब नौकरी पे कब जाबोगे?"

पिता को नौकरी करने के अपने अंदाज पर किसी का हस्तक्षेप पसन्द नहीं था ।
उन्होंने उसी ऊंचाई के स्वर में माँ को जवाब दिया -"तू काम कर अपना। तू क्या जाने नौकरी कैसे करते हैं ?तेरे खानदान में कौन ने करी है नौकरी ?गंवार। अनपढ़।”

माँ को अपने खानदान पर पिता का यह व्यंग्य पसन्द नहीं आया, उसने जवाब दिया-"मेरे खानदान में तो ना करी। पर तुम कैसी नौकरी कर रहे हो,मैं जानती हूँ। साल साल भर गायब रहते। यहां कौन के भरोसे छोड़ जाते हमें? उधार मांग मांग के घर चला रही हूँ ।”

लेकिन पिता इस तरह की खरी खोटी से डिगने वाले इंसान नहीं थे। वे माँ की तरफ ध्यान दिए बिना सरकारी कागजों को पढ़ते रहे। तभी उनका छोटा भाई श्यामवीर आ गया ।
श्यामवीर ने पलंग पर बैठते हुए अपने बड़े भाई ओमवीर को सम्बोधित करते हुए कहा- "भाई साहब मनोज फेल है गयो।"
श्यामवीर को उम्मीद थी कि भाई साहब मनोज के फेल होने की खबर सुनकर दुखी हो जायेंगे लेकिन पिता अपने भाई की इस सूचना से अप्रभावित रहे उन्होंने अपने फैले हुए कागज समेट कर पलंग के नीचे रखे सन्दूक में रखे और उठकर जाने लगे ।
श्यामवीर ने अपनी खबर को अधिक मसालेदार बनाते हुए फिर से कोशिश की- "हिंदी छोड़ सब विषय में फेल है गयो।"
पिता को देखकर लग रहा था कि उन्हें अपने बेटे के फेल होने की नहीं, किसी आपरिचित के फेल होने की खबर सुनाई गई है। सुख,दुःख,क्रोध,विषाद से परे उनका चेहरा पूर्ववत जड़ बना रहा। फेल-पास,यश-अपयश,उन्नति-अवनति से परे था उनका व्यक्तित्व। वे श्यामवीर को अनसुना कर बक्से में छोटा सा ताला लगाकर उसे एक दो बार हिलाकर देखने के बाद उस बक्से को पलंग के नीचे सरकाकर बाहर जाने लगे।
श्यामवीर मनोज के फेल होने के रोचक विषय पर शायद लम्बी चर्चा चाहता इसलिए उसने फिर से कोशिश की-"गणित,फिजिक्स,केमिस्ट्री में दस नम्बर भी ना छू पायो। अंग्रेजी में पचास में से बारह नम्बर आये हैं।"
मजबूत दिल के पिता ने अपने पुत्र की इस प्रोग्रेस रिपोर्ट को भी अनसुना कर दिया।
पिता को चुप देखकर माँ ने बोलना शुरु किया -"मोड़ा फेल है गयो और इनके कान पे जूँ ना रेंगती।"
पिता ने जब यह उलाहना सुना तो वह सिगरेट सुलगाकर पलंग पर बैठ गए। उन्होंने दो तीन लम्बे कश खींचे और श्यामवीर के चेहरे को देखा। श्यामवीर ने अपना अभियान जारी रखा।
उसने अपने बड़े भाई को उनके कर्तव्यों के बारे में कुछ भूली हुई बातें याद दिलाना शुरु की-"मैंने तो पहले ही कही थी कि मनोज को अपने साथ ले जाओ। साथ रहेगो तो कछु पढ़ लेगो। गाँव में तो आवारागर्दी ही करैगो। है गयो फेल !"
मनोज आठवी क्लास तक पिता के साथ ही रहा था। रायपुर,गरियाबंदऔर फरसाबाद में पूरा परिवार साथ रहा। लेकिन चार साल से मनोज, दीपक, छोटी बहन रजनी और माँ को गाँव में ही रहना पड़ रहा है। पिता उन्हें अपने साथ डिंडोरी नहीं ले गए। मनोज ने पढ़ाई के लिए सबसे जरुरी चार साल गाँव में रहकर बर्बाद कर दिए। दीपक को पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी। उसने तो आठवी के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी थी और रजनी तो लड़की थी पिता की नजर में उसे पढ़ाई की कोई जरूरत ही नही थी। पिता को अब श्यामवीर के इस एक तरफा डिस्कशन में बिल्कुल रुचि नहीं रही।
उन्होंने पलंग पर बैठे बैठे सिगरेट की राख को झाड़ा और भारी आवाज में निष्कर्ष वाक्य बोला- "अगले साल है जायगो पास।"
इतना कहकर वह लापरवाही से और झूमती हुई चाल से सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे।
उतरते हुए उन्होंने माँ से कहा-"दस बज गए। नाश्ता कब बनावेगी? भूख से मारबे को विचार है का?"

मनोज को जब पता चला कि वह हिंदी को छोड़कर सभी विषयों में फेल हो गया है तो वह दुखी होकर पुलिया के किनारे हनुमान जी के मन्दिर चला गया ।हनुमान जी की मूर्ति के सामने बैठा वह काफी देर आँसू बहाता रहा।

हिंदी के पेपर में उसे सौ में से बासठ नम्बर मिल गए थे। हिंदी सरल होने के अलावा उसकी रुचि का विषय भी था। उसे उपन्यास,कविताएँ और कहानियाँ पढ़ने का शौक था। पर केवल हिन्दी अकेले बेड़ा पार नहीं लगा सकती थी। अंग्रेजी ने भी धोखा दिया था। 'माय बेस्ट फ्रेंड' पर निबन्ध लिखते समय केवल पहली लाइन मनोज ने ठीक लिखी थी -'माय बेस्ट फ्रेंड इज राकेश' इसके बाद उसे टूटी फूटी गलत स्पेलिंग और गलत टेन्स का सहारा लेना पड़ा। वह दो तीन लाइन के आगे नहीं लिख पाया।

मन्दिर से बाहर निकलकर वह अपने दोस्त राकेश के घर चला गया। दुखी मनोज को राकेश ने सांत्वना देते हुए कहा-"अब तो दिन भर है गयो,कब तक मुंह लटकाये रहेगो? अगले साल पास है जायगो। कुम्भ को मेला नाने जो बारह साल बाद आवेगो। हर साल परीक्षा होयगी।"

विष्णु फर्स्ट डिवीजन से पास हो गया था,उसे अपने पास होने की ख़ुशी थी पर मनोज को सांत्वना देना उसकी मजबूरी भी थी उसने मनोज से कहा -"मैंने तो पहले ही कही थी के पढ़ ले। नकल को कोउ भरोसो ना है।”

मनोज ने विष्णु की समझाइश का उत्तर देते हुए कहा-"मोय समझ ही ना आते गणित के सवाल। कैसे पढ़ लूँ ? "

तीनों मित्र बातें करते करते मनोज के दरवाजे के सामने कुँए पर पहुंच गए। कुँए पर महिलायें पानी भर रही थी।

बूढ़ी महिला ने मनोज से कहा -"ए लल्ला तू आ गयो?नेकु बाल्टी खेंचि दे।"

मनोज ने बाल्टी खींच दी।

आदत के अनुसार बूढ़ी महिला ने अपना रटा रटाया आशीर्वाद दे दिया-"लल्ला तू फस्ट ते पास होयगो।”

मनोज ने आशीर्वाद सुना तो निराश फीकी हँसी उसके होठों पर आ गई। तब तक उसके चाचा श्यामवीर कुँए के पास आ चुके थे। उन्होंने भी बुढ़िया का दिया आशीर्वाद सुन लिया। उनसे नहीं रहा गया।

उन्होंने अपनी आवाज को तेज करते हुए सुनाना प्रारम्भ किया जिससे आसपास खड़े ज्यादा से ज्यादा लोग सुन सकें- "अरी ताई अब का फस्ट आवेगो। मनोज तो पास ना हो पायो,फस्ट की तो बात दूर।”

वहाँ खड़े सभी लोगों ने श्यामवीर द्वारा दी गई जानकारी को सुन लिया था।मनोज अपने इस सार्वजनिक अपमान से आहत हो गया।

राकेश के दिमाग में बहुत देर से एक बात रुकी हुई थी,उसने कहा –“मैं तो कह रहों पढ़ाई लिखाई में अब कछु ना धरो। बीए ,एमए, चप्पल चटका रहे हैं। मनोज तू तो कोऊ काम धंधों शुरु कर दे।”

मनोज को राकेश का विचार अच्छा तो लगा पर वह् अपने घर की आर्थिक स्थिति जानता था – “राकेश धंधे के लिए लाखों रुपये चाहिए,कहाँ से आयेंगे?”

निराश और अनिश्चित मनोज अपने घर पहुँच गया। छोटा भाई दीपक सुबह से गायब था। माँ अपने छोटे बेटे के इस तरह गायब होने से परेशान थी। माँ ने पिता से दीपक के अब तक घर न आने की चिंता व्यक्त की।
"सवेरे आ जायगो परेशान ना हो,तू रोटी बना।" –इतना कहकर पिता निश्चिन्त भाव से छत पर टहलने चले गये ।
अगले दिन सुबह सात बजे दीपक घर आ गया। दीपक अपने किसी दोस्त के यहां जौरा चला गया था।

5.

दीपक जौरा से खाली हाथ लौटकर नहीं आया था। वह विचारों की नई रौशनी लेकर आया था। वह परिवार को पटरी पर लाने की एक अभूतपूर्व योजना पिता को बता रहा था।
उसने पिता से कहा- "बल्ले न्यू ब्रांड टेम्पो खरीद रहो है,इसलिए अपनों पुरानों टेम्पो बेच रहो है। चालीस हजार में। महीना के आठ दस हजार कहूँ ना गए। मैं चला लेंगो।"
मनोज ने दीपक की इस योजना में कोई कमी नहीं देखी। वह जानता था कि उसके आसपास के सभी लड़के यही सब काम तो कर रहे हैं। कोई टेम्पो चला है ,कोई इलेक्ट्रीशियन का काम कर रहा है,जिस के पास कुछ पैसा अधिक था उसने जौरा में किराने की दुकान खोल ली । एसटीडी का चलन बढ़ रहा था तो किसी ने एसटीडी बूथ डाल लिया । सभी जानने वाले लोग यही सब काम कर रहे हैं। जिनके पास जमीन थी, वे खेती कर रहे हैं । मनोज के पिता और चाचा श्यामवीर दोनों के पास खेती के नाम पर केवल तीन बीघा जमीन ही थी, जिसमें साल भर के लिए खाने लायक गेंहू के अलावा कुछ नहीं होता। इसलिए नौकरी या धंधे के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। ट्वेल्थ में फेल होने के बाद नौकरी की कोई उम्मीद उसके लिए नहीं बची थी ,इसलिए दीपक का प्लान उसे ठीक लग रहा था ।
लेकिन पिता के पास टेम्पो खरीदने के पैसे नही थे। पिता ने बहाना बनाया- "टेम्पो चला के घर की इज्जत बिगाड़ोगे ? पढ़ो लिखो परिवार है हमारो।"
पिता का इनकार सुनकर दीपक और मनोज चुप हो गए।
पर माँ ने पिता से लोहा लेने का मन बना लिया- "वाह बहुत इज्जत है तुम्हारी। घर घर जाके उधार मांगती हों,तब इज्जत ना जावते तुम्हारी। मोड़ा मेहनत करके कछु करबो चाह रहे हैं तो जे मदद करबे की जगह टांग अड़ा रहे हैं।"
माँ का उलाहना सुनकर पिता ने मौन साध लिया।
अगले दिन सुबह जब माँ ऊपर कमरे में आई तो उसने देखा कि पिता अपने बैग में कपड़े जमा रहे हैं । माँ ने उन्हें कपड़े जमाते हुए देखा तो वह ठगी रह गई। माँ को लग रहा था कि वह पिता को टेम्पो खरीदने के लिए मनाने की कोशिश करेगी।पर पिता जो पिछले सवा महीने से नौकरी पर ध्यान दिए बिना घर पर टिके हुए थे उन्होंने आज अचानक वापसी की तैयारी कर ली ।

पिता ने कहा -"बहुत काम पेंडिंग है ऑफिस में। मैं अब निकलतों। जल्दी रोटी बना। खाके जाओंगो।"
माँ को पिता पर बहुत क्रोध आ रहा था। लेकिन जाते समय पिता को कुछ सुनाना माँ को उचित नहीं लगा।पिता नौकरी पर चले गए। ऐसा लग रहा था कि इसके साथ ही टेम्पो खरीदने की योजना पर विराम लग गया है।
लेकिन दीपक के अगली सुबह फिर से जिद करने पर माँ ने दीपक से कहा-"बाप तो तेयो एन मौक़ा पे भजि गयो। अब मों से का चाहत है। मैं कहाँ से चालीस हजार रुपया ले आऊँ।"
बहुत देर चर्चा होने के बाद माँ निष्कर्ष पर पहुंची।
माँ बोली-"दस हजार तो मो पे रखे है। तीस हजार उधार मिल जावेंगे। जेवर रखे हैं मो पे। गिरवी रख देउंगी।"
चालीस हजार में बल्ले का सेकेण्ड हैंड टेम्पो आ गया। उम्मीद और आत्मविश्वास से भर गया पूरा परिवार। दीपक ड्राइविंग सीट पर बैठ गया ।किराया इकट्ठा करने की जिम्मेदारी कंडक्टर का पद सम्हालने वाले मनोज को मिली। अपने गाँव से निकलते ही पांच सवारियां मुरैना की मिल गई। टेम्पो मुरैना की ओर बढ़ चला। मनोज ने नई जिम्मेदारी को जोश के साथ निभाना शुरू किया।
उसने सवारियों को आकर्षित करने के लिए आवाज लगाना शुरू किया- "छैरा,बाग़चीनी,मुरैना।"
व्यवसाय की शुरुआत अच्छी रही थी। रात को घर आकर मनोज ने आज की कमाई के दो सौ रुपये माँ को दे दिए।
माँ दोनों बच्चों को इस तरह पैसे कमाकर लाने के कारण भावुक हो गई।दिन भर की मेहनत के बाद मनोज का चेहरा रुखा हो गया,बाल धूल से सन गए,शर्ट मटमैली हो गई,होंठ पपड़ा गए। बच्चों की हालत देखकर माँ की आँखों में आंसू आ गए।
मनोज ने माँ को रोते हुए देखा तो उसने माँ को गले लगा लिया।
उसने माँ से कहा-"चिंता काय कर रही है। अब तेरे मोड़ा कमान लगे है।"
लगभग एक महीने तक टेम्पो चलता रहा। रोज शाम को दो सौ ढाई सौ रुपये दोनों बेटे कमा कर लाते रहे। माँ को लगा यदि इसी तरह टेम्पो चलता रहा तो जल्दी ही उधार पटा दिया जायगा। फिर एक दो साल में नया टेम्पो ले लेंगे। पिता की अनदेखी के कारण माँ को अपने बच्चों से उम्मीद थी कि उनकी मेहनत से यह घर फिर से पटरी पर आ जायेगा ।
आज टेम्पो जैसे ही बागचीनी चौराहे पर पहुचा, वहां पुलिस की चेकिंग चल रही थी । सिपाही ने मनोज को टेम्पो साइड में लगाने का आदेश दिया।
मनोज ने लाइसेंस और रजिस्ट्रेशन दिखाते हुए सिपाही से पूछा-"क्या बात है दीवान जी ?हमें क्यों रोका है? कागज तो पूरे है टेम्पो के । "
सिपाही ने कहा -"थानेदार साहब का आदेश है उनसे जाकर पूछो।"

सिपाही टेम्पो को स्टार्ट कर दो सौ मीटर दूर सड़क के किनारे बने बागचीनी थाने में ले जाने लगा।मनोज और दीपक टेम्पो के पीछे दौड़ लगा रहे थे। तभी पास से बालीजी बस सर्विस की बस निकली उसका कंडक्टर

दरवाजे से अपना सर निकालकर जोर से चिल्लाया-"काय रे कही थी ना के जा रोड पे टेम्पो चलावो भुला देंगो। अब चला टेम्पो।"

यह वही कंडक्टर था जिसका झगड़ा बल्ले से हुआ था। वह टेम्पो को पहचान गया था। मनोज ने जब उस कंडक्टर की बात सुनी तो समझ गया कि वे लोग बस ऑपरेटरों के षड्यंत्र का शिकार हो गए है।

थानेदार पचपन साल का पका हुआ थानेदार था। वह अपने कमरे में कुर्सी पर बैठा हुआ था।

डरते हुए मनोज ने थानेदार से कहा-"सर मेरे टेम्पो के सारे कागज सही है,फिर भी टेम्पो को थाने में बन्द कर दिया है।"

थानेदार ने दीवान को आदेश दिया-"दीवान जी बाहर फरियादी बैठा है,उसे ले आओ।"

दीवान एक बीस साल के युवक के साथ वापस आ गया। रात के अँधेरे में सेंधमारी करने वाले इस युवक का नाम दिनेश था जो कि पुलिस का मुखबिर भी था। थानेदार यादव ने दिनेश को कई कामों के लिए रख रखा था। बदले में उसे सेंधमारी करने का विशेषाधिकार दिया गया था।थानेदार ने दिनेश से पूछा -"बता दिनेश क्या फरियाद लेकर आया है।"

दिनेश ने जैसे रटा हुआ वाक्य बोलना शुरु किया-"सर मैं और मेरा दोस्त मोटर साइकिल से जा रहे थे। पीछे से इसके टेम्पो ने टक्कर मार दी। मेरा दोस्त जमीन पर गिरकर बेहोश हो गया, उसको बागचीनी के ही प्राथमिक स्वास्थ केंद्र में भर्ती करके आपके पास आया हूँ।"

थानेदार ने मनोज को देखकर कहना शुरु किया-"सुन लिया तूने। एक तो सड़क पर एक्सीडेंट करता है। ऊपर से जवान चलाता है।"

मनोज रुआंसा होते हुए बोला-"सर ये आदमी झूठ बोल रहा है। हमसे कोई एक्सीडेंट नहीं हुआ।"

थानेदार अब अपने असली रुप में आ चुका था-"चुप साले, जवान चलाता है। बन्द करो दोनों को अंदर। जेल में सड़ोगे तब पता चलेगा कि एक्सीडेंट किया है कि नहीं?"

बालाजी बस सर्विस के मालिक से प्राप्त फीस के बदले थानेदार ने अपना काम बखूबी कर दिया था। मनोज और दीपक के पैरों तले जमीन खिसक गई। दोनों के आंसू बहने लगे। पर थानेदार नहीं पसीजा। दोनों को दीवान ने लॉक अप में बंद कर दिया।मनोज और दीपक का रो रो कर बुरा हाल हो रहा था । दोनों डर के मारे काँप रहे थे उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब कहाँ जाएँ? किससे मदद मांगें?

दो घण्टे बाद दीवान ने मनोज से कहा -"तुम दोनों को रात भर थाने में बन्द नहीं कर रहे हैं,यही गनीमत है। थानेदार साहब बहुत रहम दिल हैं, अब जाओ। लेकिन अब यह टेम्पो तो कोर्ट से ही मिलेगा।"

दोनों अपनी जान बचाकर भागे। दोनों का पुलिस से यह पहला सामना था।दोनों भाई रोते हुए सड़क पर पैदल जा रहे थे। पीछे थाना छूट गया था। उनके लिए थाना रक्षक नहीं भक्षक बना था। रात हो गई थीं इसलिए अब कोई बस या टेम्पो सड़क पर नहीं था। दस किलोमीटर पैदल चलकर दोनों अपने गाँव पहुच गए। निराश,थके,दुखी,टूटे हुए,पराजित। आँखें आंसुओ से अब भी भरी हुई थी। माँ को देखकर मनोज फूट फूट कर रो पड़ा। दीपक ने सारी कहानी कह सुनाई। माँ की आँखों में भी आंसू आ गए।

पर उसने हिम्मत नहीं हारी-"सब ठीक हो जायगो,चिंता न करे।"

रात भर मनोज छत पर खाट पर पड़ा रहा। उसे नींद नहीं आई। वह जागता रहा। सारी रात।

6.

रात बीच चुकी थी। सुबह हो चुकी थी। कल की बेबसी ने जो आंसू बहाये थे वह सूख चुके थे। जिन सपनों को लेकर नया व्यवसाय शुरू किया गया था, वह सपना टूट गया था। पिछले एक महीने में आर्थिक रुप से बिखरे हुए परिवार को एक दिशा देने की कोशिश की गई थी,उम्मीद बन रही थी। पर अचानक सब धराशाई हो गया। मनोज चाहता था कि कोई उसके मन में उमड़ घुमड़ रहे तूफ़ान को थाम ले।वह अपने दोस्त राकेश के घर चला गया।

उसने बिना भूमिका के अपने मन की दुविधा को राकेश से कहना शुरू किया- "जो लोग मेहनत करके ईमानदारी से दो वक्त की रोटी कमाना चाहते है,उनको ही पकड़ के थाने में बन्द कर दिया जाता है। पुलिस ऐसा सुलूक करती है जैसे हम चोर लुटेरों हों। जिसके पास पांच पांच बसें हैं,पैसा है, क्या सड़क उनके बाप की है? गरीब अपना टेम्पो न चलाये?"

इतना कहकर मनोज ने राकेश को कल की पूरी कहानी कह सुनाई।

राकेश ने मनोज को अधिक गम्भीर होते हुए देखा तो वह माहौल को हल्का करने की कोशिश करने लगा- "कोउ नई बात बता। जे तो सब जानतें। आज तेरे साथ घटना घट गई तो तू परेशान है गयो। रोज जेई लड़ाई झगड़ा है रए हैं। गरीब एसेई पिस रहो है।"

मनोज के मन का विद्रोह और भड़क गया-"पर ये तो गलत है ना। जो सही है, ईमानदारी से, मेहनत से अपना काम कर रहा है, उसे क्यों सताया जाता है?"

राकेश ने जीवन का व्यवहारिक ज्ञान सपाट तरीके से मनोज को देने की कोशिश जारी रखी-" मनोज इसीलिये आदमी मेहनत करतो,पैसा कमावतो,अपने मोड़ा मोड़ियनें पढ़ावतो,नेता पुलिस से दोस्ती करतो। तुमाये पास पैसा होते तो थानेदार के मुंह पे मारते। तुम्हें नेता,विधायक,कलक्टर,एसपी जानते तो वे थानेदार से तुमारी सिफारिस कर देते। पर तुम हो ठन ठन गोपाल। कोई न जानतो तुम्हें,न तुम जानते काहू को।"

मनोज को यह कड़वी बात पसन्द नहीं आई-"मतलब पुलिस की कोई जिम्मेदारी नहीं है कि झूठे केस न बनाये,गरीबों पर अत्याचार न करे। उस थानेदार को तो नौकरी से निकाल देना चाहिए।"

वह नियम और सिद्धांत की बात ही पकड़े हुए था।

राकेश ने अब कठोर सच्चाई उसके सामने रख दी -" तेरे जैसे लोग गाड़ीबाजी ना कर सकत। मजबूत जिगर वाले चला सकत हैं बस,टेम्पो। सवारी बिठाने के चक्कर में गोली भी चल सकती है । पिछले महीना जौरा

पुलिया पे चली ना हती गोली? एक टेम्पो वाले की जांघ में घली हती। तू रहन दे। लड़ाई, झगड़ा,पुलिस कचहरी,सड़क पे मारपीट, जे तेय बस के ना है।”
मनोज कल से जिस घटना के कारण इतना परेशान था उस घटना को राकेश ने बहुत ही चलताऊ और रोजमर्रा की घटना मान लिया ।
पर थानेदार की शक्ल याद कर करके मनोज को रह रह कर क्रोध आ रहा था -"पर मैं उस थानेदार को भूल नहीं सकता।”
राकेश भी अपने सिद्धान्त पर डटा रहा -"तो ना भूल,सब थानेदार ऐसे ही होत है। राजा हरिश्चंद्र ना होत।“
"कुछ अच्छे भी होंगे,जो सही काम करते होंगे,झूठे केस नहीं बनाते होंगे। क़ानून के रक्षक होंगे।"- मनोज के मन ने कल्पना की।
मनोज की व्यथा अन्धकार में प्रकाश की खोज कर रही थी। कहीं से वह आश्वासन चाहता था कि न्याय की पक्षधरता अभी ज़िंदा है। पर राकेश उसे यह तसल्ली किसी तरह देने को तैयार न था।
राकेश ने कहा -"अच्छे थानेदार मैंने ना सुने ।पर मैंने सुनो है कि एसडीएम राघवेंद्र सिंह गरीबन की सुनतो है। ईमानदारी से काम करतो है । बड़ी तारीफ़ सुनी है।तू तो एसडीएम राघवेंद्र सिंह से मिल ले। हो सकत है टेम्पो छूट जाए।"
मनोज को राकेश की यह सलाह पसन्द आई। उसकी निराशा राघवेंद्र सिंह के नाम से ही कुछ कम होती मालूम पड़ी। उसे उम्मीद दिखने लगी।

7.

जौरा तहसील कार्यालय में भीड़ बढ़ने लगी थी । मनोज और दीपक अपने टेम्पो को छुड़वाने के लिए एसडीएम राघवेंद्र सिंह से मिलने तहसील पहुँच गये। लेकिन मनोज को समझ नहीं आ रहा था कि वह राघवेंद्र सिंह से टेम्पो छुड़वाने के लिए कैसे सिफारिश करेगा ? संकोच के कारण उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी।गेट पर दरबान ने उसे एक पर्ची पकड़ा दी जिस पर अपना नाम और एसडीम से मिलने का कारण लिखना था । उसने पर्ची पर अपना अपना नाम लिख दिया,लेकिन ‘मिलने का कारण’ कॉलम में ‘टेम्पो छुड़वाना है’, ऐसा वह् नहीं लिख सका । उसे लगा कि ऐसा लिखने से हो सकता है कि राघवेन्द्र सिंह उसे मिलने के लिए अंदर बुलाएं ही नहीं ।
इसलिए उसने पर्ची पर मिलने का एक अलग ही कारण लिख दिया-"कैरियर और पढ़ाई पर चर्चा करना है।" मनोज को लगा कि ऐसा लिखने से राघवेन्द्र सिंह उसे पढ़ने वाला स्टूडेंट समझेंगे और उससे अच्छे से बात करेंगे ।
उसने सोचा कि वह मौक़ा मिलते ही एसडीम सर से टेम्पो छुड़वाने की बात भी कर लेगा ।

मनोज इसी उधेड़बुन में गेट पर खड़ा था कि उसे अंदर बुला लिया गया। अंदर उसने देखा कि राघवेंद्र सिंह एक ऊँचे डाइस के पीछे बैठे हैं। उनका रीडर आज के केस की फाइलें उनकी टेबल पर रख रहा था। राघवेन्द्र सिंह ने जब मनोज और दीपक को अंदर आते हुए देखा तो मुस्कुराकर उनका स्वागत किया।

राघवेंद्र सिंह ने मनोज को देखकर अपने स्टाफ से कहा- "ये मनोज है। जौरा का बेस्ट कमेंटेटर। प्रशासन और वकीलों के बीच होने वाले अगले सन्डे के मैच में मनोज ही कमेंट्री करेगा।"

मनोज को उम्मीद नहीं थी कि राघवेंद्र सर उसे इतनी इज्जत देंगे। उसका मन गर्व,खुशी और राघवेंद्र सर के प्रति सम्मान से भर गया।

दीपक भी अपने मन की ख़ुशी छुपा न सका और फुसफुसाते हुए मनोज के कान में बोला -"मुझे लगतो है के अपनों टेम्पो छूट जायगो। एसडीएम तो तुझे जानतो है।"

उसने दीपक को चुपचाप बैठे रहने का इशारा किया ।

राघवेंद्र सिंह ने मनोज से कहा-"आज पहली बार कोई मेरे पास बिना सरकारी काम के आया है।नहीं तो यहां तो बन्दूक के लाइसेंस या जुआ सट्टा में पकड़े लोगों को छुड़ाने की सिफारिश के लिए ही लोग आते है।"

इतना कहकर राघवेंद्र सिंह हँसते हुए फ़ाइल देखने लगे। रीडर फ़ाइल की ओर इशारा करता हुआ बोला - "सर यह बागचीनी थाने का केस है,शान्ति भंग करने का।"

बागचीनी थाने के थानेदार यादव ने शान्ति भंग करने के अपराध में एक चालीस साल के आदमी को पकड़ लिया था। एसडीएम को यह निर्णय लेना था कि पकड़ा गया व्यक्ति वास्तव में अपराधी है या नही? मनोज और दीपक ने देखा कि बागचीनी थाने का थानेदार एसडीएम को सेल्यूट करके खड़ा रहा बैठा तक नहीं। इसी थानेदार ने टेम्पो पकड़ रखा था। इसी थानेदार की शिकायत लेकर दोनों आये थे। अपने थाने का खूंखार शेर एसडीएम के सामने पूँछ दबाये खड़ा था।

एसडीएम ने थानेदार से पूछा-"बताइये थानेदार साहब क्या मैटर है?"

थानेदार ने कहना शुरु किया-"सर मुल्जिम मुकेश ने कल अपने मोहल्ले में अपने पड़ोसी नरेश के घर के सामने देसी कट्टे से दो फायर किये। पुलिस चाहती है की लोक शान्ति भंग करने वाले मुकेश को जेल भेज दिया जाए।"

"कोई गवाह है तुम्हारे पास"-राघवेंद्र सिंह ने थानेदार से पूछा।

"जी सर ।"-इतना कहकर थानेदार ने गवाह को बुलाया

गवाह को देखकर मनोज और दीपक चौंक गए।

दीपक ने मनोज से कहा - "जे तो वोई दिनेश है। टेम्पो से एक्सीडेंट की झूठी शिकायत इसी ने की थी। अब मैं समझो जे आदमी तो थानेदार को पालतू कुत्ता है। झूठी गवाही देके केस बनावतो। आज को केस भी झूठो है। मुकेश बुरो फंसो। थानेदार तो अब मुकेश को जेल पहुँचा के मानेगो।" -आरोपी मुकेश पर दीपक और मनोज को दया आने लगी।

दिनेश ने एसडीएम के सामने अपनी रटी रटाई गवाही दे दी - "सर मैं शाम को मजदूरी करके साइकिल पर जा रहा था।तभी मैनें देखा कि इस आदमी ने एक घर के सामने देसी कट्टे से फायर कर दिया।"

मनोज की इच्छा हुई कि वह एसडीएम राघवेंद्र सिंह से कह दे कि यह गवाह झूठा और मक्कार है, इसका काम ही है झूठी गवाही देना। थानेदार भी बहुत बेईमान और लालची है झूठे केस में लोगों को फंसाता है। पर वह कुछ कह नहीं पाया।

एसडीएम ने आगे की कार्यवाही जारी रखते हुए आरोपी मुकेश से पूछा - "तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है मुकेश या तुम्हें जेल भेज दें?"

एसडीएम की बात सुनकर थानेदार के चेहरे पर चमक आ गई। लेकिन मुकेश डर के मारे थरथर कांपने लगा। घबराये हुए मुकेश ने हाथ जोड़कर निवेदन किया-" सर मैंने कोई अपराध नहीं किया। मेरी पत्नी और बेटी से पूछ लीजिये।" एक औरत और सत्रह अठारह साल की लड़की भी कमरे में आ गई थी।

औरत ने रोते हुए कहा-"हुजूर ये बिलकुल निर्दोष हैं। वो तो नरेश ने धमकी दी थी की इन्हें जेल भिजवा के दम लेगा। साल भर पहले नरेश को दस हजार रूपये उधार दिए थे। कई बार मांगने पर भी उसने वापस नहीं दिए अब पुलिस में फंसाये दये हमें।"

मनोज को इस केस में अपना केस नजर आने लगा। जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता थानेदार ने नहीं छोड़ा था ।

एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने गौर से देखते हुए गवाह से पूछताछ शुरु की -"गवाह दिनेश थोड़ा आगे आ जाओ, तुम्हारी शक्ल ठीक से नहीं दिख रही।"

दिनेश ने अपनी पतली शुतुरमुर्ग जैसी झुकी हुई गर्दन ऊँची की पर उसकी आँखे एसडीएम से नहीं मिल पा रही थी।

राघवेन्द्र सिंह ने कठोरता से पूछा - " गर्दन उपर करके जवाब दो ।महीने में कितने घरों में चोरी करते हो?"

दिनेश ने अपनी आँखें झुकाते हुए एसडीएम से कहा- "सर मैं चोर नहीं हूँ।"

राघवेन्द्र सिंह ने तीखी हंसी हँसते हुए गवाह दिनेश से कहा -"पर शक्ल से तो तुम चोर ही दिख रहे हो।"

दिनेश के चेहरे पर पसीना छलक आया। कुछ देर पहले तक निश्चिन्त खड़ा थानेदार भी असहज महसूस करने लगा। मनोज को समझ नहीं आया कि राघवेन्द्र सिंह केवल शक्ल देखकर दिनेश की वास्तविकता कैसे जान गये ? राघवेन्द्र सिंह की तीक्ष्ण बुद्धि और आदमी की पहचान पर उसे आश्चर्य हुआ।

एसडीएम राघवेंद्र सिंह दिनेश से प्रश्न करना जारी रखा - "कहाँ गोली चलाई थी इसने?" राघवेंद्र सिंह ने मुकेश की तरफ इशारा करते हुए दिनेश से पूछा।

दिनेश- "सर नरेश के घर पर ?"

"क्या तुम नरेश को पहले से जानते थे ?"-राघवेन्द्र सिंह ने दिनेश से पूछा

"नहीं सर।" –गवाह दिनेश ने उत्तर दिया

राघवेंद्र सिंह- "फिर तुम्हें किसने बताया कि वह नरेश का घर है ?"

इस प्रश्न से सकपकाए दिनेश ने थानेदार की तरफ देखा। थानेदार के पास भी इस समय कुछ कहने को नहीं था।राघवेन्द्र सिंह के सवालों के चक्रव्यूह में झूठा गवाह दिनेश फंस गया था ।उसकी कलई खुल गई ।

मनोज को अब सच्चाई जीतती हुए दिख रही थी। थानेदार की बेईमानी और षड्यंत्र पराजित होता हुआ दिख रहा था।

एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने अब थानेदार सर कहा - "यादव जी आप भी जानते है और मैं भी जानता हूँ कि यह केस आपके द्वारा रचा गया झूठा केस है।इस गवाह दिनेश ने कोई भी घटना होते हुए नहीं देखी ।यह झूठ बोल रहा है । "
इतना सुनते ही मनोज की इच्छा हुई कि खड़े होकर तालियां बजा दे। आज एक ईमानदार सरकारी तन्त्र ने एक बेईमान सरकारी तन्त्र को कटघरे में खड़ा कर दिया था। टेम्पो पकड़े जाने के बाद से उसके मन में यही बात चल रही थी कि गरीबों और कमजोरों का कौन रक्षक होगा? यदि किसी के पास पुलिस को देने के लिए पैसा नहीं है या नेता अफसर की सिफारिश नहीं है तो उसे कभी भी थाने में बन्द कर दिया जायगा? आज राघवेंद्र सिंह ने गरीबों पर होने वाले अत्याचार को एक झटखे में खत्म कर दिया। कोई तो है जो ढाल बनकर खड़ा है सच्चाई के पक्ष में, झूठ के विरुद्ध। वह राघवेंद्र सर में एक ईमानदार और सम्वेदनशील प्रशासक देख रहा था।

राघवेंद्र सिंह ने अपने रीडर को ऑर्डर लिखवाया -"केस समाप्त किया जाता है। मुकेश ने कोई अपराध नहीं किया है उसे छोड़ा जाए। इस गवाह दिनेश पर झूठी गवाही देने का केस चलाने के लिए पुलिस को निर्देश दिया जाता है। पुलिस विभाग को लिखा जावे की थानेदार यादव पर फेब्रिकेटेड केस के लिए डिपार्टमेंटल इन्क्वायरी चलाई जावे। चलिए केस खत्म हुआ।”

इतना कहकर राघवेंद्र सिंह ने केस की ऑर्डरशीट पर साइन करके फ़ाइल रीडर के पास अपनी टेबल की नीचे पटक दी। मनोज इस केस को देखकर अभिभूत हो गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी कोई व्यक्ति सच और झूठ का निर्णय कर सकता है। इतनी जल्दी किसी झूठे और मक्कार आदमी को सजा मिल सकती है। इतनी जल्दी किसी सच्चे और मजबूर आदमी को न्याय मिल सकता है। वह अपने टेम्पो की सिफारिश को भूल गया । वह तो आनन्द और आश्चर्य की अलग ही दुनिया में पहुँच गया था ।
मनोज तुम अपने कैरियर के बारे में बात करना चाहते थे।“-राघवेंद्र सिंह उसके आने कारण भूले नहीं थे।
"जी सर।" मनोज ने जैसे किसी स्वप्न से जागते हुए कहा।
उसकी स्वीकृति में सच्चाई भी थी। वह सचमुच अपने भविष्य की दिशा तलाशने की कोशिश कर रहा था। पर ट्वेल्थ में फेल होने के बाद वह अभी दिशाहीन सा भटक रहा था ।
"सर मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ।"-राघवेन्द्र सिंह के सम्मोहन के जादू से अचानक उसके मुंह से निकल पड़ा । पर ट्वेल्थ फेल मनोज को पता नहीं था कि कैसे बनते है एसडीएम। वह तो बस राघवेन्द्र सिंह और उनके पद के आकर्षण में बंध सा गया था ।
"बहुत बढ़िया। लक्ष्य हमेशा ऊँचा बनाना चाहिए। अगर कोई ठान ले तो कुछ भी असम्भव नहीं।किस क्लास में पढ़ते हो तुम?"-राघवेंद्र सिंह ने मनोज का उत्साह बढ़ाते हुए कहा।
कुछ देर पूर्व सपनीली डगर पर ले जाने वाले मनोज को राघवेंद्र सिंह ने अचानक कठोर कांटो वाले यथार्थ पर ला पटका।

"सर अभी अभी बारहवीं की परीक्षा पास की है।"- मनोज ने अपने आदर्श राघवेन्द्र सिंह से बड़ा झूठ बोल दिया। उसे लगा कि यदि उसने सच बोला कि कुछ दिन पहले ही वह ट्वेल्थ में फेल हुआ है और अब टेम्पो चला रहा है और टेम्पो छुड़वाने की सिफारिश करने आया है तो शायद राघवेंद्र सर उसे अपने पास बैठने के लिए नहीं कहते। अपनी हीनता की पीड़ा को झूठ के सहारे वह मिटाना चाह रहा था।
"मनोज स्टेट सर्विस में जाने के लिए पीएससी की परीक्षा देनी पड़ती है ।पीएससी में सिलेक्ट होकर डिप्टी कलेक्टर बनते हैं। तहसील में काम करने वाले डिप्टी कलेक्टर को एसडीएम कहते हैं।" - राघवेंद्र सिंह ने बहुत सरल तरीके से उसे समझाया।
"सर कैसे पास करते है पीएससी।" मनोज किसी रहस्यमयी राह पर आगे बढ़ रहा था।
"कोई भी अपनी मर्जी के दो विषय लेकर परीक्षा देनी पड़ती है। साथ में जनरल नोलेज का भी पेपर होता है।"- राघवेंद्र सिंह ने कहा
मनोज को यह जानकर अच्छा लगा कि पीएससी में गणित और अंग्रेजी का बहुत बड़ा रोल नहीं है। हिंदी साहित्य और इतिहास जैसे सरल विषय लेकर भी डिप्टी कलेक्टर बन सकते हैं।
राघवेंद्र सिंह ने बताया कि उन्होंने खुद मेकेनिकल से इंजीनियरिंग करने के बाद हिन्दी साहित्य और इतिहास विषय लेकर पीएससी परीक्षा पास की थी। इसके बाद राघवेन्द्र सिंह पीएससी की परीक्षा पद्धति और पढ़ाई के तरीके के बारे में देर तक मनोज को बताते रहे ।
कुछ महीने पहले ट्वेल्थ में फेल हुए निराश मनोज को राघवेन्द्र सिंह ने दूर झिलमिलाता हुआ धुंधला सा कोई सपना सौंप दिया । उस सपने को मन में बसाए वह अपने घर लौट आया। टेम्पो को छुड़ाने की कोई सिफारिश नहीं हो पाई। दीपक पूरे रास्ते उसको गालियां देता रहा।

8.

उत्साहित मनोज राकेश के घर पहुँच गया। विष्णु भी वहीं बैठा हुआ था। राकेश अपनी भैंस को चारा खिला रहा था।
मनोज ने अपने मन की इच्छा राकेश से कह दी- "राकेश मेरी इच्छा राघवेंद्र सर जैसा एसडीएम बनने की है।"

राकेश ने चारा खाती हुई अपनी भैंस को देखते हुए मनोज से कहा- "तो बन जायगो बामे कौन सी बड़ी बात है। ऊपर से कोउ ना आवतें । आदमी ही बनते हैं एसडीएम।"
विष्णु को कुछ दिन पहले ही ट्वेल्थ फेल हो चुके मनोज के मुंह से इतनी बड़ी इच्छा सुनकर अच्छा नहीं लगा। मनोज ट्वेल्थ पास तो कर नहीं पाया, चला डिप्टी कलेक्टर बनने के सपने देखने।ऐसा सोचकर विष्णु जोर जोर से ताली बजाकर हंसने लगा ।

विष्णु से रहा नहीं गया, उसने दोनों को सुनाते हुए कहा- "मनोज तू अपनी औकात में रहकर बात कर, डिप्टी कलेक्टर तो बहुत बड़ी बात है तुम तो पटवारी भी नहीं बन सकते। ट्वेल्थ पास कर नहीं पाए तुम । लाखों लोग परीक्षा देते हैं तब दस लोग बनते हैं डिप्टी कलेक्टर। आदमी को उतने बड़े सपने ही देखना चाहिए जितनी उसकी हैसियत हो। "

विष्णु ने मनोज के मन में पल रहे सपने को चकनाचूर करने की कोशिश की।

विष्णु की बात सुनकर मनोज का जैसे स्वप्न भंग हो गया, उसे लगा कि जो लड़का ट्वेल्थ में ही फेल हो गया हो क्या उसे इतने बड़े सपने देखने का हक है? निराश मनोज सर झुकाकर बैठ गया ।

लेकिन राकेश विष्णु की बातों से अप्रभावित रहा-"मैं तो अब भी जइ कहोंगो के आदमी मेहनत करेगो तो कछु भी बन सकतो है।"

विष्णु को राकेश की बात में अपनी पराजय महसूस होने लगी । उसने अब राकेश पर व्यक्तिगत आक्रमण करने का मन बना लिया-"राकेश तू तो भैंस चरा। तू क्या जाने पढ़ाई लिखाई की बातें।मैं ट्वेल्थ में फर्स्ट क्लास पास हुआ हूँ जब मैं डिप्टी कलेक्टर बनने की नहीं सोच पा रहा तो ये ट्वेल्थ फेल मनोज कैसे बन जाएगा डिप्टी कलेक्टर ?"

राकेश अपनी आदत के अनुसार शांत बना रहा। वह विष्णु के आक्रमण से राकेश भड़का नहीं।

मनोज के मन में कुछ देर पहले आया उम्मीद का झिलमिलाता प्रकाश अचानक दूर हो गया। विष्णु ने अपने विचारों से मनोज के मन में कुछ देर पहले उठे उत्साह के तूफ़ान को ठंडा कर दिया। वह सपनों की रंगीन दुनिया से अचानक यथार्थ की जमीन पर आ गया।

"मैं तो अनपढ़ गवाँर हूँ । मोय तो जो समझ आतो है बोल देतो हों। तू बुरो ना मान विष्णु ।" -राकेश ने पराजय स्वीकार करने के भाव से कहा।

मनोज और राकेश पर अपनी विजय से प्रसन्न विष्णु ने मनोज को सलाह दी –"देख मनोज तू इस जनम में तो ट्वेल्थ पास कर ना पावेगो इसलिए नौकरी करने के शेख चिल्ली के सपने देखना तो छोड़ ही दे,मैं तेरा दोस्त हूँ तुझे सही सलाह देता हूँ अपने गाँव में नाश्ते की अच्छी दुकान नहीं है। बढिया गर्म समोसे, पकोड़ी और जलेबी की बहुत डिमांड रहेगी गाँव में ।टेम्पो चलाने से अच्छा काम रहेगा तेरे लिए ।"

राकेश को विष्णु का यह सुझाव पसंद नहीं आया उसने कुछ देर सोचकर विष्णु से कहा- "विष्णु तू परेशान ना हो ।सब ठीक हो जायेगो ।तू एक काम कर मेरी भैंस को थोड़ा चारा डाल दे । मैं तब तक बछिया को बाँध देत हों।"

अपनी विजय से प्रसन्न विष्णु ने चारा लिया और भैंस के सामने टँकी में डालने लगा। भैंस ने राकेश के स्थान पर अपरिचित विष्णु को देखा तो बिगड़ गई। उसने अपनी गर्दन हिलाई और विष्णु को सींग मारने के लिए झपटी। विष्णु इस अप्रत्याशित आक्रमण से सम्हल नहीं पाया और वह पीठ के बल गिर पड़ा। राकेश और मनोज को भी इस तरह की दुर्घटना की आशंका नहीं थी, पर जब उन्होंने देखा कि विष्णु जमीन पर चित्त पड़ा

है और भैंस उसे फिर से मारने के लिए अपनी रस्सी को झटखे दे रही है तो दोनों ने लपक कर विष्णु को उठा लिया।

विष्णु की साँसे तेज चलने लगी थी। होश में आते ही उसने पूरी घटना का जिम्मेदार राकेश को घोषित कर दिया। विष्णु अब राकेश को खरी खोटी सुनाने लगा ।

राकेश ने मन्द मन्द मुस्कुराते हुए अपनी सफाई दी-" शुरू में दो तीन बार तो मुझे भी पटक दिया था रूपा ने।पर धीरे धीरे मोय पहचानने लगी। पहले बार बार खूंटा छुड़ाकर भागती । ”
इतना कहकर राकेश भैंस की गर्दन पर हाथ फेरता रहा। भैंस काफी देर तक राकेश का प्यारा स्पर्श महसूस कर अपनी गर्दन हिलाती रही।

"विष्णु जे भैंस भी लगातार अभ्यास से जा खूंटे पर रहनो सीख गई। जानवर भी लगातार एक ही काम करते करते सीख जात हैं। हम तो फिर भी आदमी है। आदमी के लिए कुछ भी काम कठिन ना है।"- राकेश ने एक आक्रामक विराम के बाद अपने मन में बहुत देर से रुकी हुई बात विष्णु से कही।
विष्णु को उम्मीद नहीं थी कि अनपढ़ राकेश भैस के उदाहरण से पढ़ाई और सफलता के सिद्धांत की बात समझाएगा। राकेश की बात सुनकर मनोज ने उसे गले लगा लिया। मनोज के मन में छाई घोर निराशा के बीच एक बार फिर उम्मीद की किरण फूट पड़ी। मनोज घर चला गया रात भर वह छत पर लेटा अपने सुदूर सपने में खोया रहा ।

9.

जून। गर्मी और उमस से भरे दिन। मनोज एक हाथ में थैला लटकाये रिश्ते के एक चाचा मूलचंद के साथ ग्वालियर की सड़क पर चला जा रहा है। दोपहर की चिलचिलाती धूप में वह पसीने से तरबतर हो गया है। लेकिन उसका मन आशा से भरा है। मूलचंद चाचा अपने साले त्रिलोकी के कमरे पर पहुँच गये ।

चाचा ने अपने साले त्रिलोकी से कहा- "त्रिलोकी मनोज को अपने साथ रख लो। यह एमएलबी कॉलेज से बीए करेगा। तुम इसका एडमीशन करवा देना।”

त्रिलोकी एमएलबी कॉलेज में बीए सेकेण्ड इयर का स्टूडेंट था उसने अपने जीजा मूलचंद को आश्वासन दिया –"जीजा जी आप चिंता मत करो ,मनोज को मैं अपने साथ ही रख लूंगा और इसका एडमीशन भी करा लूंगा । "

त्रिलोकी की बात से संतुष्ट होकर मूलचन्द वापस चले गए।

गणित से ट्वेल्थ में फेल होने के बाद मनोज ने दोबारा ट्वेल्थ की परीक्षा आर्ट के इतिहास, हिन्दी साहित्य ,राजनीति शास्त्र विषय लेकर पचपन प्रतिशत से पास कर ली थी। अंग्रेजी में पासिंग मार्क्स आ गए थे । बीए करने के लिए मनोज ग्वालियर आ गया। माँ ने उसे दो हजार रूपये दे दिए थे। पिता पिछले एक साल में केवल एक बार गाँव आये थे। दीपक ने थानेदार को दो हजार रूपये देकर टेम्पो छुड़वा लिया था। वह अब भी जौरा से मुरैना टेम्पो चला रहा था।

मनोज का एडमीशन एमएलबी कॉलेज में हो गया।कॉलेज अचलेश्वर मन्दिर के पास अंग्रेजों के जमाने की एक भव्य बिल्डिंग में लगता था । त्रिलोकी ने बताया कि यह कॉलेज ग्वालियर का सबसे अच्छा कॉलेज है। अटल बिहारी वाजपेयी जी भी इस कॉलेज के छात्र रहे हैं। मनोज इतने बड़े और प्रसिद्ध कॉलेज में पढ़ने के कारण अपने आप को खुशनसीब मान रहा था। त्रिलोकी का कमरा ललितपुर कॉलोनी में शंकर चौक के पास था,त्रिलोकी के घर से कॉलेज नजदीक ही था। मनोज त्रिलोकी के कमरे पर ही रहने लगा ।

कॉलेज में पढ़ाई का अच्छा माहौल था। शुरु में सब विद्यार्थी एक दूसरे से अपरिचित थे। लेकिन धीरे धीरे चेहरे जाने पहचाने लगने लगे। मनोज ने देखा कि कॉलेज में दो तरह के लड़के हैं। एक वे जो आसपास के गाँव से आये हैं। शिवशंकर गुर्जर,रविकांत द्विवेदी इसी वर्ग के छात्र थे।

दूसरा वर्ग उन लड़कों का था जो ग्वालियर के ही रहने वाले थे। आर्थिक रूप से यह लड़के गाँव के लड़कों से अधिक समृद्ध थे। ये लड़के स्कूटर या हीरोपुक से कालेज आते थे। मनीष द्विवेदी,संजय श्रीवास्तव,अमित दीक्षित और जगमोहन इस वर्ग के छात्र थे। इन छात्रों की एक खासियत और थी। ये सभी छात्र पहले गणित और बायोलॉजी के छात्र थे। पीईटी और पीएमटी में असफल होकर बीए के मैदान में कूदे थे।

आज क्लास खाली थी। पेड़ के नीचे चबूतरे पर इन दोनों ग्रुप के लड़कों का जमावड़ा था। सभी का परिचय आपस में हो तो चुका था पर आज लड़कों के इतिहास पर चर्चा चल निकली।

किसी ने पूछा तो मनीष द्विवेदी ने जवाब दिया- "ट्वेल्थ में मेरा बायोलॉजी सब्जेक्ट था। सेवेन्टी पर्सेंट आये थे मेरे। पर पीएमटी में नहीं हुआ,इसलिए बीए करने लगा। मैं अब पीएससी की तैयारी करूंगा।"

जगमोहन भी कम नहीं था उसने कहा कि उसकी कॉलोनी के एक भाईसाहब पीएससी की तैयारी कर रहे हैं। इसलिए वह भी पीएससी देगा। संजय श्रीवास्तव इंग्लिश लिटरेचर का विद्यार्थी था। वह लेक्चरर बनना चाहता था।अब मनोज की बारी थी। उसने सोचा कि यहां तो सभी लड़के होशियार हैं, अधिकतर तो ट्वेल्थ में फर्स्ट क्लास रहे हैं। वह तो एक बार ट्वेल्थ में फेल हो चुका है । दूसरी बार आर्ट के विषय से उसके पचपन प्रतिशत आये हैं । एक तो वह गाँव से आया है वैसे ही उसे ये शहरी लड़के सीरियसली नहीं ले रहे होंगे यदि वह यह बता दे कि ट्वेल्थ में आर्ट में उसके पचपन प्रतिशत थे और उसके पहले एक बार गणित में वह फेल हो

चुका है तो इतने होशियार लड़कों के ग्रुप में उसे खड़ा भी नहीं होने दिया जायगा। अच्छे लड़कों का साथ ही उसकी तरक्की का रास्ता बनाएगा ऐसा मनोज को लग रहा था।
इसलिए उसने अपने दोस्तों से कहा-"ट्वेल्थ मैंने भी गणित से किया है पर मेरे पर्सेंट थोड़े कम रह गए थे। पैसठ पर्सेंट आये थे।"
मनोज की हिम्मत सत्तर पर्सेंट तक नहीं पहुँच पाई । उसने पैसठ पर्सेंट से सन्तोष किया और महसूस किया कि वह इस ग्रुप के नजदीक आ गया है। वह जानता था कि यहां कोई किसी की मार्कसीट नहीं देखेगा। इसलिए झूठ बोलने के बाद भी पोल खुलने का कोई खतरा नहीं है।
एक अंतिम शहरी लड़के अमित दीक्षित ने तो जैसे धमाका दिया।
उसने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा -" पीएससी का स्तर मेरे लायक नहीं है। मैं तो आईपीएस बनूंगा। मेरी पर्सनेलिटी पर तो पुलिस की वर्दी ही सूट करती है। रोमांच चाहता हूँ मैं लाइफ में।"
सब आश्चर्य से अमित का चेहरा देखने लगे। वहां खड़े अधिकांश लड़कों को अमित में भविष्य का वर्दी पहने पुलिस कप्तान नजर आने लगा। मनोज अमित की बात सुनकर बहुत प्रभावित हुआ।
तभी किसी की भारी आवाज लड़कों को सुनाई दी-"आप लोग क्लास के वक्त यहां बातें क्यों कर रहे हैं।"
सामने कॉलेज के प्रिंसिपल गोविन्द प्रसाद शर्मा सर खड़े हुए थे। उनके शब्द कोमल किन्तु भारी थे। जब कोई लड़का अपनी जगह से हिला डुला नहीं और किसी के मुंह से डर के मारे कोई आवाज नहीं निकली तो प्रिंसिपल सर ने फिर कहा- "आप लोगों को इस समय क्लास में होना चाहिए।"

प्रिंसिपल सर कॉलेज में अनुशासन के कट्टर समर्थक थे। उनको सामने देखकर जब कोई भी कुछ नहीं बोला तो रविकांत द्विवेदी ने हिम्मत की- "सर आज पॉलिटिकल साइंस के सर छुट्टी पर हैं, इसलिए उनका पीरियड खाली है।"
प्रिंसिपल सर जानते थे कि लड़के यदि इस तरह खुले मैदान में पेड़ नीचे चर्चा करते रहेंगे तो कॉलेज में जो क्लास चल रही हैं उनको व्यवधान होगा तथा इन लड़कों को भी फ्री समय में गप्पें लगाने का शौक लग जाएगा । इसलिए प्रिंसिपल इस आदत को ही विकसित नहीं होने देना चाहते थे।

उन्होंने सब से कहा-"आप लोग क्लास रुम में चलिए। मैं आता हूँ।"

क्लास में पहुंचकर मनोज ग्रुप के सबसे स्मार्ट और सबसे महत्वाकांक्षी लड़के अमित के साथ बैठ गया। उसकी इच्छा अमित से दोस्ती करने की होने लगी। लेकिन अमित ने गाँव से आये दुबले पतले मनोज से मित्रता करने में ज्यादा रुचि नहीं दिखाई,बल्कि वह एक शहरी लम्बे लड़के मनीष द्विवेदी के पास जाकर बैठ गया।
प्रिंसिपल सर क्लास में आ गये। उन्होंने बातों में वक्त बर्बाद नहीं किया और लड़कों को सीधे पढ़ाना शुरु कर दिया।
उन्होंने पहला प्रश्न किया- "क्या आप लोगों में से कोई मार्क्सवाद के बारे में कुछ जानता है?"

सब चुप। गणित और बायलोजी में ट्वेल्थ पास लड़कों को मार्क्सवाद के बारे में कुछ नहीं पता था। कुछ देर पूर्व आईपीएस बनने की इच्छा रखने वाले अमित दीक्षित को भी मार्क्सवाद के बारे में कुछ नहीं पता था। सब तरफ सन्नाटा था। मनोज ने मार्क्स के बारे में बारहवीं में पढ़ा था। मार्क्स के बारे में प्रिंसिपल साहब को बताकर वह न केवल क्लास की नजर में बल्कि प्रिंसिपल सर की नजर में भी अपनी योग्यता सिद्ध कर सकता था।उसके लिए यह अच्छा मौक़ा था।

उसने हिम्मत करके अपना हाथ खड़ा किया तो प्रिंसिपल सर के चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट तैर गई ,उन्होंने कहा -"चलो इतनी बड़ी क्लास में कोई तो है जो मार्क्सवाद के बारे में कुछ जानता है। क्या नाम है तुम्हारा ?"

मनोज ने प्रिंसिपल सर के साथ साथ पूरी क्लास को अपना नाम बताया - "मनोज कुमार शर्मा।"

प्रिंसिपल सर ने कहा- "बहुत बढ़िया। बताओ क्या जानते हो तुम मार्क्सवाद के बारे में।"

मनोज ने मार्क्स के बारे में बताया- "सर दुनिया में अमीर और गरीब दो वर्ग हैं। अमीर वर्ग अपने लालच के लिए गरीब वर्ग का शोषण करता है। इसलिए गरीब वर्ग को अपने अधिकार अमीरों से छीन लेना चाहिए यही कार्ल मार्क्स कहते हैं।"

उसने ट्वेल्थ की राजनीतिशास्त्र में मार्क्सवाद पढ़ा था। उसे जितना और जैसा भी याद रहा वह बता दिया।

प्रिंसिपल सर ने कहा - "दोस्तों यहां अमीर वर्ग को पूंजीपति और गरीब वर्ग को सर्वहारा कहा गया है। वेरी गुड मनोज बैठ जाओ।"

इसके बाद प्रिंसिपल सर ने लगभग आधा घण्टा मार्क्सवाद पर बहुत अच्छा लेक्चर दिया। मनोज मन्त्रमुग्ध सा सुनता रहा। घण्टी बजने पर क्लास समाप्त हो गई।मनोज को आज क्लास में पहचान मिल गई थी। रविकांत द्विवेदी और शिवशंकर गुर्जर ने उसे आज की प्रशंसा पर बधाई दी।

प्रिसिपल सर द्वारा की गई प्रशंसा से वह आज बहुत उत्साहित था,ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त करना ही तो उसका लक्ष्य है ।

रविकांत ने मजाक में कहा-"मनोज यार मुझे तो लगता है हम अलग अलग गाँवों से आने वाले लड़के सर्वहारा वर्ग के हैं और ग्वालियर के मूलनिवासी स्कूटरमोटर साइकिल से आने वाले लम्बे और स्मार्ट लड़के पूंजीपति वर्ग के है,आज तुमने क्लास में सर्वहारा वर्ग की नाक ऊँची कर दी ।"रविकांत द्वारा की गई इस तारीफ़ से मनोज का चेहरा ख़ुशी से चमकने लगा

10.

ग्वालियर में मनोज के शुरुवाती महीने स्थायित्व खोजने में ही बीत रहे थे।फीस और किताबों के बाद उसके घर से लाये हुए पैसे भी खत्म होने लगे । तीन महीने उसे त्रिलोकी के साथ रहते हुए हो गये थे।

त्रिलोकी के कमरे में उसका एक रुम पार्टनर केशव भी रहता था इसलिए उस कमरे में दो की जगह अब तीन लोग हो गए । एक कमरे में तीन लोगों के रहने से त्रिलोकी को कोई कष्ट नहीं था । लेकिन उसके रुम पार्टनर केशव के विचार इतने सुलझे हुए नहीं थे।त्रिलोकी का रिश्तेदार होने के कारण केशव मनोज से अलग कमरा लेने के लिए सीधे सीधे कह नहीं पा रहा था लेकिन केशव चाहता था कि वह कहीं दूसरी जगह कमरा देख ले ।केशव पीजीवी कॉलेज से बीएससी कर रहा था, वह ज्यादातर समय किताब हाथ में लिए बैठा रहता था। साइंस से बीएससी करने के कारण वह आर्ट से बीए करने वाले मनोज को पढ़ाई में अगम्भीर और कमजोर मानता था ।

एक दिन केशव ने मनोज से कह ही दिया -"मनोज तुम अपने लिए जल्दी अलग कमरा देख लो। तीन लोगों के एक कमरे में रहने से मेरी पढ़ाई डिस्टर्ब होती है।"

मनोज ने केशव को आश्वासन दिया कि वह जल्दी ही अलग कमरा किराए पर ले लेगा ।

लेकिन जब त्रिलोकी को इस बात का पता चला तो उसने मनोज से अलग रहने से मना कर दिया ।त्रिलोकी ने केशव को आड़े हाथों लिया –"केशव तीन लोग आराम से रह सकते है कमरे में, मनोज ग्वालियर में नया है इसलिए पहली साल तो ये मेरे साथ ही रहेगा ।" त्रिलोकी ने मनोज को अपनी जिम्मेदारी मानते हुए केशव से स्पष्ट कह दिया ।

त्रिलोकी के निर्णय के विरोध में केशव कुछ नहीं कह पाया लेकिन वह मनोज से चिढ़ने लगा ।

एक सुबह त्रिलोकी किसी काम से अपने गाँव चला गया। मनोज कॉलेज चला गया । केशव अकेला कमरे पर रह गया।

कॉलेज में एक पीरियड खाली था। मनोज और संजय श्रीवास्तव ग्राउंड में एक बेंच पर बैठकर इंग्लिश विषय को बीए में चुनने को लेकर चर्चा करने लगे।

संजय ने इंग्लिश के लाभ गिनाने शुरु किये-"मनोज आजकल इंग्लिश के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। इंग्लिश बहुत जरुरी है।"

मनोज इंग्लिश के नाम से ही घबराता था।

उसने संजय से प्रतिवाद किया- "लेकिन संजय पीएससी में तो इंग्लिश की बहुत ज्यादा जरूरत ही नहीं पड़ती।"

संजय ने दृढ़ता से कहा -"पर जिंदगी में पड़ती है और किसने कहा कि तुम पीएससी में सिलेक्ट हो ही जाओगे। अगर पीएससी में नहीं हुए तो हिंदी का झुनझुना तुम्हारा पेट भी नहीं भर पायेगा। इंग्लिश आपके लिए नौकरी के कई ऑप्शन खोल देती है । आप ट्यूशन पढ़ा सकते हैं। किसी भी स्कूल कॉलेज में इंग्लिश पढ़ाने वाले लोगों की डिमांड ज्यादा होती है।"मनोज ने जब यह यथार्थ सुना तो घबरा गया। उसने पीएससी में सिलेक्ट न हो पाने के बाद की परिस्थिति पर विचार नहीं किया था।

श्रीवास्तव आज ज्ञान देने के मूड में था -"भाई मनोज आप पहले ही आर्ट जैसे अनुपयोगी सब्जेक्ट लेकर गलती कर चुके हैं। इन सब्जेक्ट के दम पर मार्केट में आप चार पैसे नहीं कमा सकते। अब कम से कम इंग्लिश बची है जिसे अच्छे से सीखकर अपना भविष्य कुछ तो सुरक्षित कर सकते हो।"

मार्केट आधारित भविष्य के हिसाब से श्रीवास्तव ने कुछ भी गलत नहीं कहा था। मनोज भी यह समझ रहा था कि इंग्लिश का ही भविष्य है। इसलिए उसने सोचा कि हिंदी साहित्य और इतिहास के साथ इंग्लिश लिटरेचर भी पढ़ना चाहिए। उसने बीए में एक सब्जेक्ट इंग्लिश लिटरेचर रखने का निर्णय ले लिया।

आज चर्चा में शाम के चार बज गये। कमरे पर पहुंचकर उसने देखा कि कमरे पर ताला लगा हुआ है। वह वहीं बैठकर केशव का इन्तजार करने लगा। इन्तजार करते करते दो घण्टे बीत गए तो उसकी चिंता बढ़ने लगी। उसे केशव के एक दोस्त के बारे में पता था जो पास ही रहता था।

केशव के दोस्त के घर जाकर उसे पता चला कि केशव तो अपने गाँव डबरा चला गया है।

11.

ललितपुर कॉलोनी में त्रिलोकी के कमरे का ताला अब भी बन्द था उसकी चाबी केशव अपने साथ ले गया था।मनोज को यह समझ नहीं आ रहा था कि केशव जानबूझकर उसे परेशान करने के लिए कमरे की चाबी अपने साथ ले गया या गलती से चाबी उसकी जेब में पड़ी रह गई होगी। लेकिन कुछ भी हो मनोज अब मकान मालिक के भय के कारण कमरे का ताला तोड़ नहीं सकता था। उसके लिए समस्या यह थी कि वह रात को कहाँ जायगा?

इतने बड़े शहर में इतने सारे मकानों के बीच एक लड़का रात को रुकने के लिए एक अदद छत ढूंढ रहा था, पर कोई आसरा उसे दिख नहीं रहा था। उसे भूख लग आई थी। पर उसकी जेब में बीस रुपये ही बचे थे। उसने एक छोले भटूरे के ठेले पर बीस रुपये के दो छोले भटूरे खा लिए। अब बड़ी और भारी रात बितानी थी। मनोज को राजपूत बोर्डिंग में रहने वाला शिवशंकर याद आ गया।वह राजपूत बोर्डिंग चला गया लेकिन वहां जाकर पता चला कि शिवशंकर बोर्डिंग में नहीं है वह अपने गाँव भिंड चला गया है । अब कोई रिश्तेदार या दोस्त पूरे ग्वालियर में मनोज का नहीं था जहां वह रात बिता सके।

मनोज कॉलेज के बाहर अचलेश्वर मन्दिर के पास बैठ गया। आज उसे महसूस हुआ कि रहने के लिए एक निश्चित कमरा कितनी बड़ी उपलब्धि होती है। वह देर तक फुटपाथ पर बैठे इन भिखारियों को देखता रहा। कमजोर औरतें,बूढ़े बीमार आदमी मैली गठरियों को अपने सर के पास रखे फुटपाथ पर सोने की तैयारी में थे।मनोज उन्हें देखकर अपना कष्ट भूल गया। वह तो आज पहली बार बेघर हुआ है ,ये गरीब भिखारी तो रोज ऐसे ही रहते है । ये लोग क्या सोचते होंगे? क्या इच्छाएं होंगी इनकी? इनके लिए सुख क्या होता है? एक दो

दुधमुंहे बच्चे अपनी कमजोर माँ की छाती से चिपके हुए थे। क्या ये बच्चे भी जब बड़े हो जायंगे तब ऐसे ही फुटपाथ पर सोयंगे? अपने कष्ट को भूलकर वह इन तमाम प्रश्नों में डूब गया पर उसे अपने प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं मिल रहा था।

सब भिखारी सो गए। पर मनोज की आँखों में नींद नहीं थी। आज वह इन बेघरबार भिखारियों का सहयात्री था। उसकी वेदना आज इन भिखारियों की वेदना से घुल मिल गई थी । उसे लगा कि क्या मैं कभी इस काबिल हो पाऊँगा जब इन लोगों के दुखों को दूर कर सकूं?

सारी रात उसकी जागते हुए कट गई।अपने कष्ट को भूलकर वह रात भर इन गरीब और मजबूर लोगों के बारे में सोचता रहा । सुबह उसने पास ही नल पर जाकर मुंह धोया पानी पिया और कटोरा तालाब के पार्क में जाकर बैठ गया। रात भर के जगे हुए मनोज को कटोरा तालाब की बेंच पर नींद आ गई। दो घण्टे सोने के बाद उसकी थकान कुछ कम हुई। अगले पूरे दिन वह कई बार रुम पर गया। हर बार वहां दरवाजे पर ताला ही लगा मिला। उसके पास एक भी पैसा नहीं बचा था । उसने दूसरा पूरा दिन कॉलेज में गुजार दिया और रात भूखे पेट कटोरा तालाब की बैंच पर करवटें बदलते हुए बिता दी ।

बेघरबारी का तीसरा दिन मनोज के लिए बहुत कठिन होने वाला था। गाँव जाने के लिए भी उसके पास अब पैसे नहीं बचे। वह सुबह सात बजे ही कमरे पर पहुँच गया। पर कमरा अभी भी बन्द था। उसने ताले को पकड़कर हिलाया लेकिन ताला हिलने से नहीं खुलने वाला था।वह कॉलेज चला गया। लेकिन उसकी हिम्मत क्लास में जाने की नहीं हो रही थी। वह ग्राउंड में बेंच पर बैठ गया।

बैंच पर बैठे बैठे मनोज ने विचार किया कि ऐसी तकलीफें तो आएंगी ही। इन्हीं कठिनाइयों को तो पार करना है। इस विपरीत समय में भी मैं पढ़ाई नहीं छोड़ सकता,मुझे पढ़ाई करना ही है चाहे कुछ हो जाए। अचानक उसने अपने भीतर हिम्मत महसूस की । वह उठा और तेज कदमों से क्लास की ओर चल पड़ा ।उसके बाद उसने   लगातार तीन क्लास लीं। उसने आज अपना ध्यान भूख और कमरे पर से हटाकर केवल पढ़ाई पर लगाया।

कॉलेज खत्म हो गया। मनोज ने अपनी समस्या किसी को नहीं बताई। उसने तय किया कि वह किसी के सामने रोयेगा नहीं, गिड़गिड़ायगा नहीं। किसी दोस्त से मदद नहीं मांगेगा। उसे लग रहा था कि इसी संघर्ष के रास्ते पर चलकर वह अपने जीवन में कुछ करने लायक बन पायेगा। उसे अब इस संघर्ष में अजीब सी सन्तुष्टि होने लगी थी।

रात हो रही थी दो दिन से मनोज के पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया था ।भूख से बेहाल मनोज के शरीर में ताकत नहीं बची थी ।उसे लग रहा था कि अब यदि उसे भोजन नहीं मिला तो वह चक्कर खाकर जमीन पर गिर जाएगा । चलते चलते वह ललितपुर कॉलोनी में सावित्री भोजनालय के सामने पहुँच गया। होटल के काउंटर पर एक तीस साल का युवक बैठा था, जो सावित्री भोजनालय का मालिक था।

उसने काउंटर पर बैठे मालिक से पूछा   –" मेरे पास पैसे नहीं हैं क्या मुझे मजदूरी के बदले आपके यहाँ भोजन मिल सकता है ?"

मनोज के इस वाक्य में कहीं से भी कोई निवेदन नहीं था बल्कि भरोसा था। जैसे वह अपना हक मांग रहा हो। भोजनालय के मालिक ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। दुबले पतले मनोज के चेहरे पर दाढ़ी थी ,ढीले ढाले पेंट शर्ट गन्दे हो गए थे। चेहरा कमजोर था। आँखे अंदर को धँस गई थी।

होटल मालिक ने कुछ सोचकर जवाब दिया-"होटल में काम करने के लिए तो मेरे पास पहले से ही वर्कर हैं।"

होटल मालिक की बात सुनकर मनोज निराश नहीं हुआ,उसने किसी उम्मीद के भरोसे कहा -"मेरे लिए भोजन जरूरी है। पैसे न होने के कारण मैं मजदूरी करके भोजन करना चाहता हूँ।"

होटल मालिक के यहां सैकड़ो लड़के खाना खाने आते थे। कइयों के पास समय पर देने के लिए पैसे नहीं होते थे,वे उधार भी खाते थे। कई बार उधार वापस मिलता भी नहीं था। कई बार लड़के पैसा न होने पर रोनी सूरत बनाकर फ्री में भी खा जाते थे। होटल मालिक लड़कों की रग रग से वाकिफ था।लेकिन ऐसा कोई लड़का अथवा इस तरह का कोई प्रस्ताव इस होटल में पहले कभी नहीं आया था।

होटल मालिक ने नौकर को आवाज लगाई-"इन भाई साहब को एक थाली लगाओ।"

मनोज के सामने दाल, आलू गोभी की सब्जी, पांच रोटी और चावल से सजी थाली आ गई।वह खाना खाने लगा। उसका दिमाग सुन्न हो रहा था। आज का भोजन साधारण नहीं था। भोजन पाने का आज का तरीका भी साधारण नहीं था। रोज कितनी आसानी से भोजन मिलता है। कितना कठिन हो सकता है पेट भर भोजन मिलना, यह आज मनोज को महसूस हो रहा था। उसकी आँखों में आंसू आ रहे थे जिन्हें वह रोक रहा था। वह होटल मालिक की इंसानियत पर भी भावुक हो रहा था।

भोजन करने के बाद वह होटल मालिक के पास गया -"धन्यवाद। अब आप मेरा काम बताइये। मैं कुछ भी काम कर सकता हूँ।"

होटल मालिक फिर से इस अजूबे से रुबरु हो रहा था-"काम करने की जरूरत नहीं है,आपने खाना खा लिया है,आपको इसके बदले मजदूरी करने की जरूरत नहीं है।"

तभी होटल में मनोज के कॉलेज का दोस्त रविकांत द्विवेदी आ गया। होटल मालिक ने उसे पूरी कहानी कह सुनाई। कारण जानकर रविकांत द्विवेदी ने खाने के तीस रुपये निकालकर होटल मालिक की तरफ बढ़ा दिए।पर मनोज भोजन के बदले मजदूरी करने पर अड़ा रहा। इस सीन को अब होटल में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति देख रहा था। एक दाढ़ी वाला कमजोर सा लड़का खाना खाने के बदले मजदूरी करने की जिद पर अड़ा हुआ है, एक होटल मालिक उससे मजदूरी कराने को तैयार नहीं है, एक दूसरा लड़का थाली की कीमत तीस रुपये निकाल कर अपने हाथ में पकड़ा है। बड़ा अजीब दृश्य था । निर्णय क्या होगा? किसी को नहीं पता। रविकांत द्विवेदी को भी नहीं पता था कि कॉलेज में सीधा सरल सा दिखने वाला मनोज इतना जिद्दी है। मनोज जैसे किसी नशे में बोल रहा था,उसका दिमाग जैसे एक जगह आकर अटक गया था। उसको नहीं पता था कि यह जिद उसके भीतर क्यों और कैसे आ गई?

उसने होटल मालिक से फिर कहा - "यदि मुझे काम नहीं करने दिया जायगा तो मैं यहीं खड़ा रहूँगा। आप होटल बन्द कर देंगे तो होटल के बाहर खड़ा रहूँगा। तब तक खड़ा रहूँगा जब तक आप मुझे काम करने की अनुमति नहीं दे देते।"

तीन दिन सड़क पर बिताने के कारण उसे अभ्यास हो गया था। वह कह सकता था कि वह होटल के बाहर तब तक खड़ा रहेगा जब तक उसे काम करने की अनुमति नहीं मिल जाती।

होटल मालिक के पास अब कहने को कुछ नहीं रहा। रविकांत द्विवेदी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? होटल में उपस्थित कुछ लोग इस दृश्य पर हँस रहे थे। कइयों को मनोज में एक बेवकूफ अथवा अति आदर्शवादी लड़का नजर आ रहा था।

होटल मालिक ने हारकर नौकर से कहा- "इन भाईसाहब को अंदर ले जाओ। ये बर्तन साफ़ करेंगे।"

नौकरों को अजीब लगा। इस होटल में कई लोग फ्री खाकर चले गए। कई उधार खाकर वापस नहीं आये। पर होटल मालिक ने कभी किसी से बर्तन नहीं धुलबाये। होटल मालिक का यह व्यवसाय था, पर उसने कभी भी पढ़ने वाले लड़कों को पैसों के लिए परेशान नहीं किया। फिर भी उसका होटल उसे बहुत कमाकर देता था। पर आज होटल मालिक को इस नौजवान की ज़िद ने मजबूर कर दिया। होटल मालिक ने एक बार वही बात दोहराई तो नौकर मनोज को अंदर ले गया।

मनोज ने अंदर जाकर आधा घण्टे तक बर्तन साफ़ किये। रविकांत द्विवेदी होटल में बैठकर उसके बाहर आने का इन्तजार करता रहा। मनोज ने वापस आकर होटल मालिक से कहा -"भोजन के लिये आपका बहुत बहुत धन्यवाद।"

उसकी आँखों में संतुष्टि की चमक थी । होटल मालिक अपनी कुर्सी से उठा और काउंटर से बाहर आ गया। मनोज को उसने दरवाजे तक छोड़ा और जाते समय हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया। मनोज ने होटल मालिक से हाथ मिलाया। होटल मालिक कुछ बोलना चाह रहा था पर बोल न सका। रविकांत द्विवेदी उसे अपने कमरे पर ले गया।

12.

रविकांत ने मनोज से कहा-"मनोज तुम तीन दिन से तुम बाहर भटक रहे थे , तुम्हें एक बार अपनी परेशानी मुझे बताना तो चाहिए थी।"मनोज रविकांत की बात सुनकर भावुक हो गया।

उसने रविकांत से कहा- "ये तो जीवन के अनुभव है जो मुझे मजबूत बनाते है।इसमें परेशानी कैसी? कितने ही लोग रात को खुली छत की नीचे सोते हैं। कितने ही भूखे पेट सोते हैं। इन तीन दिनों में मैं उस गरीब और दुखी वर्ग के और अधिक नजदीक पहुंचा हूँ, जिसे मार्क्स ने सर्वहारा की संज्ञा दी है। हमें अपनी निष्ठा इसी

सर्वहारा वर्ग के पक्ष में रखनी चाहिए। समाज के सबसे निचले तबके के साथ जुड़ने का यही अनुभव मेरी ताकत है।”

उसने अपने पिछले तीन दिन के अनुभव का मेल प्रिंसिपल सर के मार्क्सवाद के लेक्चर से कर दिया। अगले दो दिन वह रवि के कमरे पर ही रुका रहा ।

श्रीवास्तव की भाँति रविकांत द्विवेदी भी इंग्लिश लिटरेचर में बीए कर रहा था। रविकांत का लक्ष्य किसी कॉलेज में इंग्लिश का प्रोफेसर बनना था।

रविकांत के एक गुरूजी तिवारी सर नया बजार में कमरा लेकर रहते थे। वे नया बजार में ही एक हॉल किराए पर लेकर इंग्लिश स्पीकिंग और ग्रामर की कोचिंग चलाते थे ।

रविकांत ने मनोज से कहा- “तुम सबको छोड़ो, तिवारी सर को एक रुम पार्टनर की जरूरत है। उनके कमरे का किराया पांच सौ रुपये है आधे तुम देना। वे तुम्हें इंग्लिश भी पढ़ा दिया करेंगे।”

मनोज को यह प्रस्ताव अच्छा लगा।वह त्रिलोकी के कमरे से अपना सूटकेस और दरी लेकर तिवारी सर के कमरे पर आ गया। तिवारी सर नाटे कद के तीस साल के युवा थे। वह काले रंग का मोटा चशमा लगाये थे। कोचिंग में बैठे बैठे उनका पेट निकल आया था। वह कोचिंग पढ़ाकर आने के बाद थककर अपनी चारपाई पर आराम कर रहे थे।

मनोज ने उन्हें इंग्लिश का गुरु मानते हुए उनके पैर छू लिए। उसे उम्मीद थी कि उसकी इंग्लिश अब सुधर जायगी। उसने अपनी दरी को जमीन पर बिछा लिया। अब गुरु व्यास पीठ पर और शिष्य उनके चरणों में बैठे हुए दिखाई दे रहे थे। उसे एक स्थाई कमरा और एक योग्य इंग्लिश गुरु मिल गया। तिवारी सर को एक वर्कर मिल गया।अब मनोज की नई दिनचर्या शुरु हो गई। सुबह सात बजे दूध गर्म करके गुरु जी को देना। फिर कॉलेज जाने के पूर्व रोटी और सब्जी बनाना । शाम को फिर खाना बनाना। गुरूजी कोचिंग से थके हारे आते और आकर अपनी चारपाई पर लेट जाते।

एक दिन शाम को उसने थके हारे गुरूजी से कहा-"सर मुझे शेक्सपियर का नाटक मैकबेथ पढ़ा दीजिये मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा।”

गुरु जी थकान महसूस कर रहे थे।

उन्होंने कहा-"पढ़ा देंगे। आज तो मैं बहुत थक गया हूँ। एक काम कर दो , मेरे तलवे दर्द कर रहे है थोड़ा दबा दो।"

गुरु की सेवा करने में मनोज को कोई संकोच नहीं था। इस सेवा के द्वार से ही ज्ञान की प्राप्ति होगी ऐसा वह सोच रहा था। उसने गुरु की आज्ञा का पालन उनकी उम्मीद से भी बेहतर तरीके से करना चाहा। एक बाल्टी में गर्म पानी डालकर गुरु जी के पैर उसमे डाल दिए और रगड़ रगड़ कर तलवों की मालिश करने लगा।

मालिश का आनन्द लेते हुए गुरु जी ने उसे एक प्रस्ताव दिया-"लिटेचर से पहले ग्रामर और स्पीकिंग सीखना जरूरी है। तुम कल से मेरी क्लास में आना शुरू करो। एक काम करो शाम को खाना बनाकर सात बजे के बैच में तुम आ जाया करो । नया बैच है सब तुम्हारी उम्र के लड़के लड़कियाँ हैं।"

मनोज को यह प्रस्ताव उपयोगी लगा । गुरूजी उसे फ्री में कोचिंग देने वाले थे इसलिए उन्होंने नहाने के बाद अपने कपड़े धोना बन्द कर दिए। मनोज बाथरूम में नहाने जाता तो पहले गुरूजी के चड्डी बनियान धोकर डाल देता।शाम को वह् इंग्लिश की कोचिंग जाने लगा। एक घण्टे की क्लास में पन्द्रह मिनिट इंग्लिश की पढ़ाई होती थी। शेष समय में इंग्लिश के नाम पर लड़के लड़कियों का जमावड़ा ही अधिक होता था। गुरु जी प्रजेंट टेन्स से क्लास शुरु करते थे और तीन महीने में पास्ट टेन्स तक पहुचते थे। गुरु जी इंग्लिश का अखबार या कोई मैगजीन ले आते थे जिसे लड़के लड़कियाँ पढ़ते थे और गुरु जी उसका अर्थ बताते थे। गुरुजी जानते थे कि इंग्लिश सीखना एक अनन्त प्रकिया है, इसमें जल्दीबाजी नहीं करनी चाहिए। धीमी गति से सीखने पर ही यह विदेशी भाषा समझ आ पायेगी। इसलिए गुरु जी को इंग्लिश सिखाने और बच्चों को सीखने की कोई जल्दबाजी नहीं थी । दस लोगों की क्लास में चार लड़कियाँ थी और छः लड़के थे। मनोज को क्लास में आते आते महीना भर हो गया लेकिन वह् अब तक प्रजेंट टेन्स भी ठीक से सीख नहीं पाया था। 'ही गोज' 'ही गो' 'ही इज गोइंग' के प्रयोग में वह् कोई बन्धन नहीं मानता था।

कुछ लड़के गुरु जी के यहां साल भर पढ़ते पर उपलब्धि के नाम पर एक अदद प्रेमिका के अतिरिक्त उनके हाथ में कुछ नहीं आता था। कुछ प्रेमिकाओं को प्रेमी भी मिल जाते थे। अर्थात गुरूजी का यह संस्थान एक प्रेम केंद्र के रूप में अधिक विकसित हो गया था। एमएलबी कॉलेज में लड़कियाँ नहीं पढ़ती थी और केआरजी कॉलेज में लड़के नहीं पढ़ते थे इसलिए प्रेम के लिए लालायित लड़के लड़कियाँ कहाँ जाते? गुरु जी ने अपना कोचिंग सेंटर खोलकर इस दिशा में महान काम किया था।

चूंकि कोचिंग में सारा इन्वेस्टमेंट गुरु जी ने ही किया था इसलिए प्रेम करने का पहला अधिकार गुरु जी अपना ही मानते थे। प्रत्येक वर्ष गुरूजी औसतन दो या तीन प्यार करते थे। इस बैच में गुरु जी के लिए अभी तक कोई नया प्यार तैयार नहीं हुआ था।

एक दिन एक लड़की ने गुरु जी से कहा -"सर आज मोना का बर्थ डे है।"

मोना केआरजी गर्ल्स कॉलेज से बीएससी कर रही थी। पुराने बैच बिना इंग्लिश सीखे अपना एक वर्ष पूरा कर समाप्त हो चुके थे। उन बैचों में पनपने वाले गुरु जी के पिछले प्रेम भी शादी कर अपनी ससुराल जा चुके थे , इसलिए गुरु जी की मोना से प्रेम करने की जरूरत महसूस हो रही थी। पर मोना गुरु जी पर ध्यान नहीं देती थी।लेकिन गुरु जी पुराने खिलाड़ी थे जन्मदिन प्रेम को प्रारम्भ करने का बढ़िया मौक़ा हो सकता है ऐसा गुरु

जी जानते थे।प्रेम के लिए उताबले गुरूजी ने क्लास में रेंगती हुई इंग्लिश को रोक दिया और एक लड़के से कहा- "अरे आज मोना का बर्थ डे है और तुम लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे हो।“

गुरु जी ने एक लड़के को एसएस कचौड़ी वाले के यहां से सबके लिए जलेबी और कचौड़ी लाने के लिए भेज दिया।

इन दिनों में मोना ने मनोज को देखना शुरू कर दिया था, उसका सीधापन मोना को भाने लगा था । मोना कॉपी,पेन, मैगजीन की अदला बदली के नाम पर उससे बात करने के बहाने ढूंढने लगी थी ।

मोना ने उसे कचौड़ी देते हुए कहा-"लीजिये।"

उसने मोना से कहा-"हैप्पी बर्थ डे।"

मोना ने मुस्कुराकर कहा-"थेंक्स।"

मोना को लगा कि मनोज के हैप्पी बर्थ डे कहने से उसका बर्थ डे सचमुच हैप्पी हो गया है। गुरुजी के इन्वेस्टमेंट का प्रॉफिट मनोज के अकाउंट में जा रहा था। गुरुजी बिजनिस में इस तरह के लॉस पहले भी देख चुके थे।

मनोज और मोना के रास्ते अलग दिशा में थे लेकिन एक दिन क्लास के बाद दोनों ने साथ चलने की हिम्मत की।मनोज मोना से बात करने के लिए बातचीत का कोई सिरा ढूंढ रहा था।

उसने मोना से साधारण सा प्रश्न पूछा - "तुम बीएससी के बाद क्या करोगी? पीएससी की तैयारी करोगी क्या ?"

"नहीं,मैं तो शादी करूंगी।" –मोना ने मनोज की उम्मीद से उलट जवाब दिया। कुछ देर दोनों चुपचाप चलते रहे। मोना का घर जिस दिशा में था वह मोड़ आ गया था।

मोना अपने घर जाने के लिए दानाओली की गली में जाने लगी, मनोज वहीं खड़ा मोना को देखता रहा। जब मोना उसकी आँखों से ओझल हो गई तो वह् वापस चला गया।

एक दिन एक लड़के ने कोचिंग में सर से कहा कि कल मनोज का बर्थडे है, कल मनोज पार्टी देगा। क्लास का यह नियम बन गया था कि जिसका बर्थ डे होता वह समोसा जलेबी की पार्टी क्लास में देता। लेकिन मनोज के पास पैसे नहीं थे।

उसने कहा-"मैं कल पार्टी नहीं दे पाउँगा क्योंकि मेरे पास पार्टी में खर्च करने के लिए पचास रुपये नहीं है।"

मनोज ने अपना सच कह दिया । उसे सच कहने में कोई संकोच कोई शर्म महसूस नहीं हुई। अगले दिन पार्टी के अभाव में किसी ने उसे हैप्पी बर्थडे नहीं बोला। लेकिन मोना समोसे और जलेबी ले आई थी।मोना द्वारा की गई मनोज की यह विशेष चिंता गुरु जी को अखर गई। गुरु जी ईर्ष्या में जलने लगे। उन्हें मनोज पर क्रोध आने लगा ।

क्लास के बाद मोना ने मनोज को एक ग्रीटिंग कार्ड दिया।ग्रीटिंग में लाल रंग का दिल बना हुआ था। ग्रीटिंग में मोना की सुंदर राइटिंग में लिखा था - "हैप्पी बर्थ डे मन।“

मोना ने मनोज का पूरा नाम ग्रीटिंग कार्ड पर न लिखकर एक अलग नाम लिख दिया था जिस नाम से इस पूरी दुनिया में उसे कोई नहीं पुकारता था। मोना ही गुनगुनाती रहती थी यह नाम अपने मन में।

रात को तिवारी सर कमरे पर आये।मनोज कुर्सी टेबल पर बैठा पढ़ रहा था। मोना का ग्रीटिंग कार्ड वहीं टेबल पर रखा हुआ था। कई महीने से वह तिवारी सर की सेवा कर रहा था। लेकिन आज तिवारी सर की ईर्ष्या चरम पर थी । उन्होंने क्रोध में जलते हुए मनोज से उलटा सीधा कहना शुरू कर दिया जब इससे भी उनका मन नहीं भरा तो उन्होंने मनोज के द्वारा लाये गए हीटर और मटके में लात मार दी। हीटर और मटका टूट गया। तिवारी ने गुस्से में मोना द्वारा मनोज को दिया ग्रीटिंग कार्ड भी फाड़ कर फैंक दिया और उसे कमरा ख़ाली करने का अल्टीमेटम दे दिया।

मनोज की आँखों से आंसू बहने लगे।वह दुखी मन से अपना सामान समेटने लगा। अपना सामान उठाकर जैसे ही वह बाहर निकला तिवारी ने जोर से दरवाजा बन्द कर दिया।

13.

मनोज कुछ दिनों के लिए अपने गाँव चला गया। पिता जब से गए थे तब से एक बार भी गाँव नहीं आये थे। पर पिता ने इस बार कुछ पैसे घर भेज दिए थे जिससे अब घर की आर्थिक परेशानी कुछ कम हो गई थी। दीपक अभी भी टेम्पो चला रहा था। माँ ने उसे वापस ग्वालियर जाते समय आगे के खर्चे के लिए एक हजार रूपये दे दिए। बीए फर्स्ट इयर की परीक्षा नजदीक थीं ।

गाँव से लौटकर मनोज जीवाजीगंज में नाले के पास बसी हुई बस्ती टोपे वाले मोहल्ले में रहने आ गया। जबसे उसने तिवारी सर का कमरा छोड़ा उसे मोना फिर कभी नहीं मिली। छोटे से ग्वालियर में और बड़ी सी दुनिया में फिर कभी मोना और मनोज एक दूसरे से नहीं मिले।

टोपे वाले मोहल्ले में वह सबसे घुलमिल गया था। वह पड़ोसियों की तारीफ़ पाने की कोशिश करता रहता। इसलिए वह हमेशा पढ़ाई करता था। यहां तक कि रात को भी छत पर लैम्प जलाकर पढ़ता। कई कई बार तो सुबह चार पांच बजे तक वह छत पर पढ़ता रहता। टोपे वाले मोहल्ले में कोई लड़का इस तरह पढ़ाई करने वाला नहीं था इसलिए सभी पड़ोसी उसकी बहुत प्रशंसा करते। पड़ोसी महिलाएं अपने घुमक्कड़ और आवारा बच्चों को उससे सीख लेने लिए कहतीं। उसके पास ग्वालियर के समाज में सम्मान और प्रशंसा प्राप्त करने के लिए पढ़ाई के अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं था। फर्स्ट इयर की परीक्षा हो गई ।इंग्लिश लिटरेचर में पासिंग मार्क्स आने के कारण उसका टोटल केवल पचपन प्रतिशत ही रहा ।

छुट्टियाँ गाँव में बिताने के बाद सेकेण्ड इयर की पढ़ाई के लिए वह वापस ग्वालियर आ गया । दिसम्बर में एक दिन जगमोहन ने उससे कहा-"मनोज क्या तुम विवेकानन्द केंद्र के तीन दिन के युवा प्रेरणा शिविर में चलोगे?"

उसने जगमोहन से विवेकानन्द केंद्र के बारे में और अधिक जानकारी जानकारी चाही।

जगमोहन ने बताया- "यह एक समाजसेवी संगठन है जो युवा लोगों को देश भक्ति और समाज सेवा के लिए प्रेरित करता है। तुम्हारी रुचि का काम है तुम्हें जरूर चलना चाहिए।"

मनोज के लिए यह एक बहुत अच्छा प्रस्ताव था। यह केंद्र एक आश्रम जैसा था जो ग्वालियर की एक पहाड़ी पर स्थित था।लगभग साठ युवा लड़के और लड़कियाँ शिविर में तीन दिन रुकने वाले थे। वह भी सौ रुपये फीस देकर जगमोहन के साथ शिविर में पहुँच गया ।

शिविर के पहले दिन सुबह पांच बजे से शिविर की गतिविधियां शुरु हो गईं।" सर्वे भवन्तु सुखिनः" श्लोकपाठ से दिन की शुरुवात होती थी। फिर व्यायाम , नाश्ता। उसके बाद एक देश के महापुरुषों के जीवन पर प्रेरणा दायक भाषण देने ग्वालियर के विद्वान् वक्ता आते थे। शाम के चर्चा सत्र में युवाओं के ग्रुप बन जाते थे जिसमे 'आतंकवाद' 'युवाओं की सही दिशा' नारी सशक्तिकरण'जैसे विषयों पर ग्रुप डिस्कशन होते थे। मनोज बढ़ चढ़कर सभी गतिविधियों में हिस्सा लेता।

उसे एक विस्तृत और योग्य समाज मिल गया। जहां से वह केवल बहुत कुछ सीखना चाहता था, बल्कि उस योग्य समाज को अपनी योग्यता से प्भास्वित करना चाहता था । यहां तक कि उसकी इच्छा होने लगी उसे ही सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी का प्रमाण पत्र मिले। इसलिए ग्रुप डिस्कशन में सबसे आगे रहकर अपने विचार व्यक्त करता, विद्वानों द्वारा दिए गए भाषण के बाद प्रश्न पूछने में सबसे आगे रहता। यहां तक कि श्रमदान में भी वह सबसे ज्यादा मेहनत करता ।

शिविर के दूसरे दिन रात को सोने के पहले उसने अपनी डायरी में लिखा-"इतना आनन्द जीवन में पहली बार प्राप्त हो रहा है। कुछ तो दम है इन लोगों में जो खुद को कार्यकर्ता कहते हैं। राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा देते हैं ये लोग। एक श्रेष्ठ व्यक्ति जगदीश तोमर के व्यक्तित्व से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। वे कवि हैं और ग्वालियर के किसी स्कूल में प्रिंसिपल हैं। उन्होंने विवेकानन्द जी के जीवन पर जैसा भाषण दिया वैसा मैंने कभी नहीं सुना। मैं तो पवित्रता से भर गया हूँ। विवेकानन्द जी कहते हैं कि अपने आप को कमजोर मानने से बड़ा पाप कोई दूसरा नहीं है । यहाँ आकर मुझे लग रहा है कि मैं जीवन में कुछ भी कर सकता हूँ,असीम शक्ति मेरे भीतर भर गई है। देश से बड़ा दूसरा कोई धर्म नहीं है और देश भक्ति से बड़ा दूसरा कोई लक्ष्य नहीं हो सकता। यहाँ आकर मैंने संकल्प ले लिया है कि देश सेवा करना ही मेरा लक्ष्य है।”

मनोज विवेकानंद केंद्र के काम, उसकी विचारधारा एवं वहां के कार्यकर्ताओं से सम्मोहित सा हो गया था। जगदीश तोमर जी ने एक प्रोजेक्ट सबके सामने रखा जिसमें अगले रविवार घर घर जाकर सर्दियों के कपड़े इकट्ठा करने थे और उन्हें गरीब जरूरतमंदों को देना था।उसने अभी तक देशभक्ति के केवल भाषण सुने थे, पर यहां वह देशभक्ति कार्य रुप में बदल रही थी।

शिविर समाप्त हो गया। मनोज को सर्वश्रेठ प्रतिभागी का प्रमाणपत्र मिला। जिस कारण उसे अपने विचार शिविर में व्यक्त करने का मौक़ा मिला।उसने अपने भाषण में यह संकल्प लिया कि वह हमेशा ईमानदार रहकर देश की सेवा करेगा। वहां उपस्थित सभी लोगों नें ताली बजाकर उसके भावनात्मक संकल्प की प्रशंसा की। इन प्रशंसात्मक तालियों से वह आत्मविश्वास से भर गया ।

अगले रविवार उसने कपड़े एकत्रित कर बांटने का काम किया। वापस आकर उसने अपनी डायरी में लिखा- "मैंने खूब कपड़े इकट्ठे किये। किसी ने सम्मान किया, किसी ने अपमान। पर गरीबी को देखकर मन बहुत आहत हुआ। लोग किस तरह से टूट पड़ते थे कपड़ों पर। हे भगवान क्या होगा इनका? तोमर जी ने ठीक ही कहा कि घर घर जाकर समाज के लिए कुछ मांगने से हमारा इगो खत्म होता है और हम यह सीख जाते हैं कि समाज ही सब कुछ है हम कुछ भी नहीं ।”

उसके दिमाग में यह अब क्लियर हो गया था कि उसे देश के लिए कुछ करना है, समाज के लिए कुछ करना है। उसने विवेकानन्द केंद्र में प्रशिक्षण के बाद मिले प्रमाण पत्र को पूजा की अलमारी में भगवान की मूर्ति के ऊपर सजा के रख दिया।

14.

मनोज ने कोर्स की किताबों को किनारे कर दिया और विवेकानन्द के साहित्य को पढ़ना शुरू कर दिया। उसकी सेकेण्ड इयर की परीक्षा नजदीक आ रही थी। लेकिन उसके भीतर देश सेवा की आग लग चुकी थी। उसे लगा कि इसके लिए विवेकानन्द केंद्र से बेहतर कुछ नहीं हो सकता। इसलिए पीएससी का विचार पीछे छूटने लगा। उसके स्थान पर अब उसके मन में विवेकानन्द केंद्र में आजीवन कार्य करने की तीव्र इच्छा पैदा हो रही थी।

उसने बीए सेकेण्ड इयर की परीक्षा दे दी। सेकेण्ड इयर में भी वह सेकेण्ड डिवीजन से पास हो गया । इंग्लिश लिटरेचर में उसके फिर से पास होने योग्य अंक ही आ पाए थे ।

मनोज छुट्टियों में गाँव चला गया। वापस आकर फाइनल इयर की तैयारी करने लगा।सितम्बर में एक बार फिर वह विवेकानन्द केंद्र के शिविर में हो आया। इस बार पन्द्रह दिन का शिविर था। वह शिविर से पूरी तरह चार्ज होकर वापस आया। वापस आकर उसने विवेकानन्द का साहित्य पढ़ना शुरू किया।

उसने अपनी डायरी में लिखा-"विवेकानन्द को पढ़ने का प्रयास किया जरा सा। छः सात किताबें पढ़ी है बस। अब इसके आगे मुझमें दम नहीं। बिलकुल साहस नहीं कि आगे पढ़ सकूं। मन में आग लगी है। तन जल रहा है। उठते बैठते हर समय विवेकानन्द केंद्र का कार्यकर्ता बनने की अदम्य इच्छा उभर रही है।यह इच्छा कुछ इस कदर बलवती हो रही है कि मुझे वह दिन दूर नहीं लगता जब मैं स्वयं को राष्ट्र को समर्पित कर दूं।”

इस नई मंजिल के आकर्षण से उसके मन में दस पन्द्रह दिनों तक खलबली मची रही।

मनोज के पैसे खत्म हो गए । वह गाँव चला गया। माँ और छोटी बहन रजनी गाँव में नहीं थीं। कई महीनों से पिता के गाँव न आने से परेशान माँ रजनी को लेकर पापा की खबर लेने डिंडोरी चली गई थी।

वह राकेश के घर चला गया। वह अपने मन के द्वन्द्व को राकेश के सामने खोलकर रख देना चाहता था। उसने पीएससी की परीक्षा देने के स्थान पर विवेकानन्द केंद्र ज्वाइन करने का विचार राकेश को बताया। उसकी बात सुनकर राकेश गम्भीर हो गया।

उसने मनोज से पूछा -"तो अब तू पीएससी की तैयारी नहीं करेगो?"

मनोज ने कहा - "मेरा लक्ष्य देश की सेवा करना है। इस देश के जरूरत मंद लोगों के प्रति मैं खुद को समर्पित कर देना चाहता हूँ। "

राकेश ने फिर पूछा- "तो तू घर छोड़ देगो? मम्मी,पापा,दीपक,छोटी बहन रजनी सबे छोड़के गरीब की सेवा करेगो? "

मनोज अभी भी विवेकानन्द केंद्र के प्रभाव में डूबा हुआ था।

उसने कहा-"मेरे लिए ये पूरा देश ही मेरा घर है।"

राकेश के लिए अब मनोज को समझाना कठिन हो रहा था। फिर भी उसने कोशिश जारी रखी- "तेरे बाप को तो तू जानता है। अगर तू भी घर से भजि गयो तो रजनी को ब्याह कौन करेगो? घर कौन सम्हालेगो?"

"मेरे लिए देश की हर लड़की मेरी बहन है। हर महिला मेरी माँ है।"- मनोज पूरे जोश में था। उस पर राष्ट्र सेवा का भूत सवार था। राकेश भूत उतारने के लिए झाड़ फूंक में व्यस्त था।

राकेश -" क्या एसडीएम, थानेदार, जनता की सेवा नहीं करते? एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने कैसे दो मिन्ट में थानेदार के झूठे केस से मुकेश को बरी कर दिया था? वो समाज सेवा ना हती? आज जिसके पास ताकत है वही जनता को न्याय दिला सकता है। यदि थानेदार ईमानदार होता तो तेरा टेम्पो पकड़ता ? ना पकड़ता। पुलिस, कचहरी, थाने में अच्छे और ईमानदार लोगों की जरूरत है और तू पीएससी छोड़बो चाह रहो है। पढ़बे की दम ना बची का? बहाने ना बना।"

राकेश का यथार्थ कड़वा होता जा रहा था। मनोज की योग्यता को ललकार रहा था राकेश। उसे उम्मीद नहीं थी कि सीधा सरल राकेश उसके पीएससी छोड़ने के फैसले से इतना उग्र हो सकता है।

राकेश ने देखा कि दुश्मन घायल हो गया है तभी उसने दूसरा वार किया - "मनोज तुझे क्या लागता है, घर छोड़ छाड़ के संत महात्मा बनके ही देश की सेवा होत है? मास्टर, दुकानदार,पुलिस को सिपाही, किसान ,मजदूर , जे देश की सेवा नहीं कर रहे? जो आदमी अपनों काम ठीक ढंग ते कर रहो वो देश की सेवा कर रहो,

जो अपनों काम ईमानदारी ते नहीं कर रहो वो देश की सेवा नहीं कर रहो, चाहे वो फिर कलक्टर हो, एसपी हो, चाहे किसी मठ को महंत। देश की सेवा करबे के लिए पीएससी में पास होना जरुरी है।तुझे एसडीम बनके ही देश की सेवा करना चाहिए। नहीं तो ऐसे मठ आश्रम में अपनी जिंदगी से भागने वाले तमाम लोग टाईम काट रहे है। काशी ,वृन्दावन,प्रयाग में कई अपराधी पुलिस से बचने के लिए साधू बने बैठे हैं।"

मनोज को उम्मीद नहीं थी कि राकेश उसे ध्वस्त करने की तैयारी करके बैठा है। पर उसके दिमाग में राकेश ने हलचल मचा दी।उसने अपने मन की दशा को समझते हुए और अपने डगमगाते हुए संकल्प को विराम देते हुए राकेश से कहा- "राकेश मेरा उद्देश्य किसी भी तरह देश की सेवा करना है। तू सही कह रहा है, पीएससी की तैयारी से भागना कायरता होगी। लोग यही कहेंगे कि मुझमें परीक्षा पास करने की दम नहीं थी इसलिए तैयारी छोड़ दी।मुझे पहले अपनी योग्यता एवं क्षमता को जांचना है। इसलिए मैं पीएससी में सिलेक्ट होकर ही देश की सेवा करूंगा ।"

मनोज ने फिर से अपनी छूटी हुई राह थामने का निर्णय ले लिया।उसका द्वंद्व समाप्त हो गया। पीएससी में सफल होना ही एक मात्र लक्ष्य था अब उसका ।

माता पिता के डिंडोरी से न आने के कारण मनोज माता पिता से मिलने डिंडोरी चला गया ।डिंडोरी में एक सरकारी क्वार्टर में माता पिता और रजनी रह रहे थे। पता चला कि पिता सस्पेंड हो चुके हैं। पिता को आधा वेतन ही मिलता है जिससे बड़ी मुश्किल से गुजारा हो पा रहा हैं।

पूछने पर पिता ने कहा-"मैं डिप्टी डायरेक्टर को बर्बाद कर दूंगा। मैं हार नहीं मानूंगा। मैं ईमानदार हूँ। वे सब बेईमान हैं। मैं सबको ठिकाने लगा दूंगा। मैंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है। मैंने राष्ट्रपति को भी पत्र लिखा है। मुझे हाईकोर्ट से ही न्याय की उम्मीद है। "

माँ ने पिता के इन उद्गारों का विरोध किया -"इनसे नौकरी ना हो पावते। दुनिया नौकरी कर रही है के जे अनौखे नौकरी कर रहे हैं। बस लड़बो जानते। उल्टो सीधो बोल आवतें अधिकारी से। भरी मीटिंग में अपनी चप्पल निकाल के मार दई डिप्टी डायरेक्टर खों। कर दये सस्पेंड।"

पिता को माँ के द्वारा किया गया यह रहस्योद्घाटन पसन्द नहीं आया। पिता ने माँ को डाँटते हुए कहा-" तू कछु ना जानती। गरीब किसान को पैसा बेईमानी से खा रहे हैं सब, वे जूता से ही मानते।"

माँ आज रुकने वाली नहीं थी- "उनको कछु ना बिगड़ो। बर्बाद तो हम हो रये हैं। मोड़ा के पास फीस भरवे कों पैसा ना है। जा मोड़ी को ब्याह करोगे के नहीं?" माँ की बातों का पिता पर कोई असर नहीं हुआ ।इस चर्चा का कोई निष्कर्ष नहीं निकला ।

मनोज ट्रेन के जनरल डिब्बे में बैठ गया वापस जाने के लिए। वह रास्ते भर सोचता रहा-" कब तक? आखिर कब तक लड़ेंगे पापा? आपको दबाना ज्वालामुखी को दबाना है।“ मनोज अपने पिता के संघर्ष से प्रभावित हो रहा था ।

15.

मनोज बीए फाइनल के लिए वापस ग्वालियर आ गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि पीएससी की परीक्षा के लिए क्या पढ़ें? कैसे पढ़े? पीएससी की प्रिलिम्स परीक्षा कैसे निकाली जाती है यह रणनीति ही अभी उसने नहीं सीखी थी।मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार तो फिर बहुत दूर की बात थी। उसके आसपास कोई भी ऐसा सीनियर नहीं था जिसने पीएससी की परीक्षा पास की हो ।उसे अभी तक पूरे ग्वालियर में ऐसा कोई ग्रुप नहीं मिला था जो पीएससी की गम्भीर तैयारी कर रहा हो । इस कारण वह पीएससी के लिए अभी तक दिशाहीन पढ़ाई ही कर रहा था।

एक दिन कॉलेज में जगमोहन ने मनोज से कहा कि उसके एक परिचित सीनियर हैं जिनका इस साल की पीएससी का प्रीलिम्स एक्जाम क्लियर हो गया है और वह मुख्य परिक्षा की तैयारी कर रहे हैं ,मनोज उन सीनियर से मिलने का मौक़ा गंवाना नहीं चाहता था ।

दीनदयाल नगर में किराए के एक कमरे में वह भाईसाहब रहते थे,मनोज और जगमोहन उनके कमरे पर पहुँच गये ।दोपहर के दो बज चुके थे। दरवाजा अंदर से बन्द था। जगमोहन ने दरवाजा खटखटाने के लिए हाथ बढ़ाया। अचानक जगमोहन की नजर दरवाजे पर चिपकी एक स्लिप पर पड़ी। जिस पर भाईसाहब का टाइम टेबल लिखा था ' सुबह आठ से एक पढ़ाई,एक से दो भोजन ,दो बजे से तीन आराम (कोई दरवाजा न खटखटाये'),तीन से सात पढ़ाई, सात से आठ भोजन,आठ से नौ टहलना,नौ से बारह पढ़ाई। जगमोहन ने जोर से स्लिप की इबारत पढ़ी। टाइम टेबल के अनुसार यह समय भाईसाहब के आराम करने समय था इसलिए दोनों ने तीन बजे तक गेट के पास बैठकर और बाहर टहलकर अपना वक्त गुजारा। ठीक तीन बजे भाईसाहब का दरवाजा खुला।

दरवाजे पर परिचित जगमोहन को देखकर भाईसाहब ने मुस्कुराकर दोनों को अंदर कमरे में बुला लिया।अंदर बैठने के लिए जगह नहीं थी। पूरे पलंग पर किताबें फैली हुई थी। कुछ खुली हुई थी,कुछ बन्द थी। पूरे कमरे में भारत,विश्व और मध्यप्रदेश के नक्शे लगे हुए थे। कमरे में कुछ नोट्स भी चिपके हुए थे। जिसमे संविधान के

मूल अधिकार, इतिहास के राजाओं के शासनकाल, विभिन्न विटामिन की कमी से होने वाली बीमारी की जानकारी लिखी हुई थी। दोनों लोग किताबें ,कॉपी, रजिस्टर,पेन ,पेन्सिल, सरकाकर पलंग पर बैठ गए।

भाईसाहब ने अपना सर घुटवा लिया था। जगमोह्न को घुटा हुआ सर देखकर भाईसाहब के परिवार में किसी के मरने की आशंका हुई उसने भाईसाहब से पूछा-"भाई साहब क्या घर में गमी हो गई है? "

भाईसाहब को शायद इस तरह के प्रश्न दूसरों ने पहले भी पूछे थे,वह इस प्रश्न के अभ्यस्त थे। उन्होंने अपने सर पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया- “नहीं बालों से पढ़ाई में डिस्टर्ब होता था। इसलिए कटा दिए।”

मनोज को समझ नहीं आया कि बाल कैसे पढ़ाई को डिस्टर्ब कर सकते हैं। भाईसाहब दोनों के चेहरों पर चिपके प्रश्नचिह्न पहचान गए-"अरे बालों के कारण रोज नहाना पड़ता था। अब किस के पास रोज नहाने का टाइम है। नहाने के बाद भी बाल सुखाओ तेल, कंघा, हजार झंझट है अब पढ़ाई करें या ये सब करें? इसलिए बाल ही कटा दिए।"

भाईसाहब की तपस्या देखकर मनोज आश्चर्यचकित रह गया। इतनी खतरनाक पढ़ाई उसने पहले कभी किसी की नहीं देखी थी। अपनी अब तक की पढ़ाई भाईसाहब की फ़ैली हुई किताबों के सामने मनोज को बौनी लग रही थी।

मनोज ने पूछा -"भाई साहब प्रीलिम्स में आपका क्या विषय हैं?"

भाईसाहब ने कहा- "इतिहास।"

मनोज का भी एक विषय इतिहास था।उसे लगा कि भाईसाहब से पीएससी की तैयारी का अच्छा गाइडेंस मिल जाएगा ।उसने भाईसाहब से प्रिलिम्स परीक्षा के लिए इतिहास की किताबों के नाम पूछे। भाईसाहब ने भारतीय इतिहास की दस किताबों और तीन चार गाइड के नाम लिखा दिए। प्रीलिम्स परीक्षा के दूसरे जरुरी विषय सामान्य अध्ययन के लिए किताबों के नाम लिखा दिये ।

मनोज ने भाईसाहब से पीएससी की पढ़ाई करने की रणनीति के बारे में पूछा तो भाईसाहब ने बताया–“यदि सिलेक्ट होना है तो रोज अठारह अठारह घण्टे पढ़ाई करनी पड़ेगी ।सोना, खाना पीना, सब भूलना पड़ेगा।दोस्ती यारी,घूमना फिरना,फ़िल्में, तमाशे,शादी विवाह, रिश्तेदारी सब से दूर रहना पड़ेगा।”

भाईसाहब ने पीएससी के लिए तपस्या करने का भयावह चित्र खींच दिया।मनोज इस चित्रण से घबरा गया उसने भाईसाहब से पूछा –“कितने साल की तैयारी के बाद डिप्टी कलेक्टर बन सकते हैं?”

भाईसाहब ने उसकी शक्ल देखी और हंसते हुए कहा-" पीएससी में नायब तहसीलदार,ब्लॉक ऑफिसर, या सेलटेक्स इंस्पेक्टर आदि बनने के लिए पांच से सात साल लग जायंगे। डिप्टी कलेक्टर तो भाग्य से विरले लोग ही बनते हैं।”

जीवन के सारे सुख त्यागकर लगातार पांच साल रोज अठारह घंटे पढने के बावजूद भाई साहब डिप्टी कलेक्टर बनने का सपना नहीं देख पा रहे थे।भाईसाहब ने डिप्टी कलेक्टर बनने की जिम्मेदारी भाग्य को सौंप दी थी। मनोज को समझ नहीं आ रहा था कि क्या पीएससी सच में इतनी कठिन है जितनी भाईसाहब बता रहे हैं।मनोज तो सोच रहा था कि एक दो साल में मेहनत करके वह पीएससी निकाल लेगा पर भाईसाहब ने तो अलग ही समय सीमा तय कर दी।

मनोज के साथ आये जगमोह्न के मन में भी शायद यही बात चल रही थी उसने भाईसाहब से कहा– “भाईसाहब मुझे लगता है कि मैं ज्यादा से ज्यादा दो या तीन साल में मेहनत करके पीएससी की परीक्षा पास कर लूंगा।“

“शुरु में मुझे भी यही लगता था जग्गू ,पर ऐसा होता नहीं है। ” -भाई साहब ने कहा ।

तीन बजकर तीस मिनिट पर ठीक आधा घण्टे के बाद भाईसाहब ने अपनी इतिहास की किताब उठा ली और पढ़ने लगे। दोनों लड़के एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। भाईसाहब ने बोलना बन्द कर दिया जैसे रिकार्ड की हुई कैसेट में भरी हुई रिकार्डिंग खत्म हो गई हो। जगमोह्न ने दरवाजे पर लगे टाइम टेवल को देखा तो उसमे साढ़े तीन बजे इतिहास पढ़ने का वक्त था। घड़ी की सुई साढ़े तीन बजा रही थी। भाईसाहब ने इतिहास की किताब खोल ली थी। मनोज समय की इस पाबन्दी से हतप्रभ रह गया। दोनों लड़के खड़े हुए और भाईसाहब को नमस्ते करके कमरे के बाहर निकल आये। भाईसाहब ने अपनी किताब में नजर गड़ाये दोनों को बस अपनी गर्दन हिलाकर विदा कर दिया।

16.

बीए फाइनल की परीक्षा हो गई। मनोज ने पचपन प्रतिशत से बीए पास कर लिया। इंग्लिश लिटरेचर में हमेशा की तरह पासिंग मार्क्स आये। उसने अपनी डायरी में लिखा-"अब मुझे पीएससी के मैदान में कूदना है। पता नहीं कब और कैसे मैं सफल होऊँगा? पर जानता हूँ आगे के दो साल मुझे कड़ी मेहनत करना हैं।"

तैयारी पूरी न होने के बावजूद उसने बीए पास होते ही अनुभव लेने के लिए पीएससी का फ़ार्म भर दिया था।प्रिलिम्स परीक्षा का केंद्र नईसड़क पर माधव कॉलेज में था।इतिहास का पहला पेपर होने के बाद सामान्य अध्ययन के अगले पेपर में दो घण्टे का गेप था । चबूतरे पर बैठा मनोज प्रतियोगिता दर्पण पढ़ रहा था ।

तभी एक लड़के ने मनोज के पास आकर उससे हाथ मिलाते हुए अपना परिचय दिया -"हैलो मैं विक्रमादित्य पांडे। मेरा नाम बड़ा और बोलने में मेहनत कराने वाला है,इसलिए मुझे सिर्फ पांडे ही कहें तो आपको सुविधा रहेगी।” मनोज ने भी मुस्कुराकर अपना परिचय दिया ।

पांडे ने पूछा -" पेपर कैसा रहा?"

फिर बिना मनोज का कोई जवाब सुने खुद ही बोलने लगा-"वैसे तो परीक्षा हॉल के बाहर निकलते ही सभी के सौ में से नब्बे प्रश्न सही होते हैं। पर जैसे जैसे उन प्रश्नों को किताबों से चेक करते हैं। सही उत्तर कम होने लगते हैं।"

मनोज ने कहा -"मुझे लगता है कि मेरे अस्सी सही है।"

पांडे- "फिर तो तुम्हारी प्रिलिम्स नहीं निकलेगी। बीस तुम अभी गलत मान रहे हो। जिन अस्सी को तुम सही मान रहे हो उनमे से पन्द्रह या बीस अभी तुम्हारे और गलत होंगे।”

मनोज इस तरह की यथार्थवादी और कटु व्याख्या सुनने को तैयार नहीं था।उसे उम्मीद नहीं थी कि पहली बार मिलने वाला लड़का उससे इतनी कटु और निराश करने वाली बात करेगा। पांडे की व्याख्या के अनुसार उसकी प्रिलिम्स परीक्षा क्लियर नहीं होगी।लग तो उसे भी रहा था कि वह आज की परीक्षा क्लियर नहीं कर पायेगा,क्योंकि उसकी तैयारी तो अभी शुरू ही हुई थी ।

पांडे ने उसे एक दृश्य दिखाया जिसमे एक लड़का किसी दूसरे लड़के का पेपर चेक कर रहा था। पेपर चेक करते समय वह लड़का बेदर्दी से सामने वाले के उत्तरों पर क्रॉस लगा रहा था और कहता जा रहा था - "तुम्हें यह भी नहीं आता, इतना सरल प्रश्न गलत कर दिया ,यह तो मुझसे सोते समय भी पूछ लो। इसका ' ए' उत्तर

नहीं है बल्कि 'सी' है। मुश्किल है भाई इस बार तुम्हारा प्रीलिम्स क्लियर होना । आओ कभी तुम्हें यदि गाइडेंस चाहिये तो मेरे कमरे पे।”

पांडे ने दृश्य दिखाते हुए कहा मनोज से कहा - "देखो वो लड़का मेरा मित्र है। पास ही दतिया जिले के इंदरगढ़ गाँव का रहने वाला है। पिछले साल उसकी प्रिलिम्स क्लियर हो गई थी पर मुख्य परीक्षा में पास नहीं हो पाया था। प्रिलिम्स में उसका कॉन्फिडेन्स बहुत हाई है।”

पांडे ने उस लड़के को आवाज लगाई -"गुप्ता इते आओ। कैसो गओ पेपर?"

गुप्ता बुन्देलखण्ड के थे।इसलिए पांडे ने उनसे बुन्देलखण्डी में बात की। गुप्ता बहुत प्रसन्न और आत्मविश्वास से भरे हुए थे। उनका यह आत्मविश्वास पिछले साल प्रिलिम्स पास करने के कारण अधिक था -"बहुत बढ़िया गओ। धांसू। जो समझो के फाड़ दओ। सौ में सें सन्तानवे सही हैं। तीन डाउट में है।"

गुप्ता के बड़बोलेपन पर पांडे को यकीन नहीं हुआ। पांडे ने गुप्ता के प्रश्नों को जांचना शुरू किया- "गुप्त वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त प्रथम ने नहीं की थी, श्रीगुप्त ने की थी। ये गलत हो गया,तुम सही मान रहे थे। लो, एक और गलत हो गया । सल्तनत काल में 'लौह और रक्त की नीति' अलाउद्दीन खिलजी ने नहीं चलाई थी, बलबन ने चलाई थी। वहीं बैठे बैठे पांडे ने गुप्ता के दस प्रश्न गलत कर दिए। गुप्ता को पांडे के साथ अब मजा नहीं आ रहा था। अपने प्रश्न गलत देखकर गुप्ता थोड़ा दुखी भी हो गया था। पांडे के इन्हीं दुर्गुणों के कारण गुप्ता उसे पसन्द नहीं करता था।

उसने पांडे से पेपर छीना और बोला-" कमरा पे जाके चेक करेंगे। तुम्हारी बात काये मानें? जे सब गलत नहीं हैं। फिर भी इन्हें हम डाउट में डार देत हैं।”

गुप्ता चला गया।पांडे ने मनोज से गुप्ता से उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए कहा –“थोथा चना बाजे घना । “

मनोज को पांडे की बातों में अब रस आने लगा। पांडे मनोज से ऐसे बात कर रहा था जैसे उसका बहुत पुराना दोस्त हो। उसने पांडे को अपने कमरे का एड्रेस दे दिया ,उसे उम्मीद थी कि पांडे पढ़ाई में साथ देने वाला बढ़िया स्टूडेंट हो सकता है।पांडे को भी मनोज एक गम्भीर स्टूडेंट लगा।

पांडे के घर से मनोज का कमरा ज्यादा दूर नहीं था। इसलिए पांडे हर दूसरे तीसरे दिन उसके कमरे पर जाने लगा। इतने दिनों में पांडे यह जान गया था कि मनोज एक योग्य और गम्भीर स्टूडेंट है। दोनों की अच्छी दोस्ती हो चुकी थी। पांडे के नियमित उसके कमरे पर जाने और पढ़ाई पर डिस्कशन से मनोज की पढ़ाई भी अच्छी होने लगी।

मनोज के पिता अभी भी सस्पेंड थे। उस पर उन्होंने कंगाली में आटा गीला कर दिया । सस्पेंशन के बाद उन्हें डिंडोरी से झाबुआ अटैच कर दिया गया था पर पिता ने इस अटैचमेंट को अपने सम्मान के विरुद्ध माना और वह झाबुआ नहीं गए। अब उन्हें आधी तनख्वाह मिलना भी बन्द हो गई। आर्थिक समस्या विकराल हो गई। मनोज को अब महीने के एक हजार रुपये मिलने भी बंद हो गये ।पीएससी की पढ़ाई के शुरुवाती दौर में ही उसका सामना भीषण आर्थिक संकट से हो गया।लेकिन वह जानता था कि इस संकट को कोसने या दुखी होने से कोई लाभ नहीं है इसलिए उसने यह तय किया कि वह अब कोई काम करेगा। बच्चों को ट्यूशन पढ़ायेगा। यह तय था कि अब बिना पैसे कमाए वह ग्वालियर में किसी तरह नहीं रह सकता।

एक दिन पांडे मनोज के कमरे पर आया।पिता के सस्पेंशन और बढ़ते आर्थिक संकट से दुखी मनोज ने पाण्डे को अपने पिता के संघर्ष और उनके सस्पेंशन की कहानी सुनाई। कहानी सुनाते समय वह अपने पिता को एक हीरो के तौर पर प्रस्तुत कर रहा था। उसे उम्मीद थी कि पांडे उसके पिता की महानता की प्रशंसा करेगा और ऐसे महान पिता के पुत्र के नाते उसका सम्मान भी पांडे की नजर में बढ़ जाएगा ।

पर पांडे ने पूरी कहानी सुनकर उससे कहा - "आपके पिता अपने अहंकार में अपने बच्चों का जीवन नष्ट कर रहे हैं। उन्हें अपने परिवार और बच्चों को छोड़ सबकी चिंता है। वे दूसरों को घटिया और खुद को श्रेष्ठ मानने वाले व्यक्ति हैं। मेरा विचार है कि आपको उनसे मदद की कोई उम्मीद नहीं करना चाहिए।"

उम्मीद के विपरीत पांडे द्वारा किया गया पिता का चरित्र चित्रण उसे पसंद नहीं आया ।लेकिन पांडे की बात पर ध्यान न देकर वह अपने पिता को श्रेष्ठ व्यक्तित्व का धनी ही मानता रहा, उसने पांडे से कहा –"पांडे तुम अभी नहीं जानते कि ईमानदारी के रास्ते में कितने संकट आते है ।मेरे पिता खरा सोना है, एकदम ईमानदार।"

उसकी बात सुनकर पांडे के चेहरे पर व्यंग्यात्मक हँसी तैर गई। पर उसने मनोज से कुछ कहा नहीं ।

मनोज ने पास की रतन कॉलोनी में एक एक घर खटखटाकर,घण्टी बजाकर ट्यूशन के बारे में पूछा। तीन चार महिलाओं ने तो मना कर दिया कि उनके घर में बच्चे नहीं है। एक महिला ने कहा कि उसका बच्चा क्लास टेंथ में है उसे केवल गणित और फिजिक्स के टीचर की जरूरत है।गणित और फिजिक्स उसके बस की बात नहीं थी। एक महिला ने कहा कि उसके बच्चे सेवेंथ क्लास में है पर वे इंग्लिश मीडियम के विद्यार्थी है। वह पूरा सिलेबस इंग्लिश मीडियम में नहीं पढ़ा सकता था। कई दिनों तक घर घर जाकर ट्यूशन मांगने के बावजूद उसे एक भी ट्यूशन नहीं मिला।

मनोज को अब अपने ऊपर गुस्सा आने लगा । क्या वह सौ रुपये के ट्यूशन लायक भी नहीं है ? उसे अपने सपनों पर सन्देह होने लगा।

उसने अपनी डायरी में लिखा- "मैं अपने आपको कितना होशियार मानता था, पर आज समझ आ गया कि मैं कितना अयोग्य हूँ। मुझे कोई हक नहीं है इतने बड़े सपने देखने का। मुझे पता चल गया है अपना भविष्य। मुझे वापस गाँव जाना पड़ेगा। "

मनोज मानसिक और शारीरिक थकान महसूस कर रहा था।उसे बुखार आ गया।शाम हो चुकी थी, वह अपनी छत पर निराश बैठा सूनी आँखों से आसमान ताक रहा था। उसकी डायरी पास ही रखी थी । तभी पांडे आ गया। उसने एक फीकी मुस्कुराहट के साथ पांडे का स्वागत किया। मनोज और पांडे कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। पांडे ने उसकी डायरी उठाई और अंतिम पेज पढ़ने लगा। निराशा में डूबे मनोज का मन पांडे पढ़ रहा था ।

डायरी पढ़ने के कुछ देर बाद उसने केवल इतना कहा कि- "तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ,आज खिचड़ी बनाकर खा लेना।"

पांडे जब मनोज की डायरी पढ़ रहा था तब मनोज को लगा कि पांडे सम्वेदनशील है और उसके कष्ट को समझ रहा है। पर जब पांडे उसे खिचड़ी बनाकर खाने की सलाह देकर चला गया तो उसे पांडे पर बहुत गुस्सा आया।वह समझ गया कि शहर के लड़कों में सम्वेदनाएँ नहीं होती, इन्हें किसी के दुःख से कोई मतलब नहीं होता। उसके दूसरे दोस्त भी बीए के बाद से उसके सम्पर्क में नहीं थे।वह ग्वालियर में अब एकदम अकेला पड़ गया था।

सुबह मनोज का बुखार बढ़ गया। उसके पास डॉक्टर को दिखाने के लिए पैसे नहीं बचे थे। पूरा दिन वह बुखार में तपता हुआ। पड़ोस की आंटी उसके लिए खिचड़ी बना लाईं।अगले दिन दोपहर तक भी जब बुखार नहीं उतरा तो वह पास के डॉक्टर जैन के क्लीनिक पर चला गया।

डॉक्टर के सामने बैठकर उसने सबसे पहले कहा -"सर मेरे पास आपकी फीस देने को पैसा नहीं है।"

उसे लगा कि उसकी सच्चाई और दुःख से डॉक्टर उसे बिना फीस के देख लेगा और दवा दे देगा। पर डॉक्टर सावित्री भोजनालय के युवा मालिक जैसा भावुक और सरल नहीं था।मनोज के पास फीस न होने के कारण डॉक्टर ने उसे अपने क्लीनिक से भगा दिया। मनोज डॉक्टर के व्यवहार से अंदर तक हिल हो गया। वह

सोचता रहा कि कैसे कोई डॉक्टर जैसे पवित्र व्यवसाय करके भी इतना कठोर हो सकता है? उसके पास अब अपने गाँव जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था इसलिए वह कैसे भी उस नैरो गेज ट्रेन के स्टेशन पर पहुंचा जहां से छोटी लाइन की ट्रेन जौरा जाती थी। उसे लग रहा था कि बिना पैसे के बीमार हालत में निष्ठुर ग्वालियर में रहने का कोई मतलब नहीं। इसलिए वह बिना टिकिट छोटी ट्रेन में बैठ गया। उसे को याद नहीं कि वह किस बेहोशी की अवस्था में ट्रेन में तीन घण्टे बैठा रहा और कैसे अपने गाँव पहुंच गया ?

17.

तीन चार साल टेम्पो चलाने के बाद दीपक ने टेम्पो चलाना बंद कर दिया । सेकेण्ड हैंड टेम्पो बेच दिया गया जिससे उधारी के पैसे पटा दिए गए। घर की तरफ से पिता बेफिक्र हो गये थे। उन्होंने घर पर ध्यान देना पूरी तरह् बंद कर दिया।

गाँव में कुछ दिन रहने के बाद मनोज की तबियत ठीक हो गई। माँ ने उससे एक दिन कहा- "बेटा तू अब गबालियर चलो जा। पढ़ाई पे ध्यान देबे। जे पांच सौ रुपया मो पे धरे हैं तू रख ले।"

माँ की जीवटता और बेबसी पर उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने ग्वालियर जाने से पहले राकेश को अपने घर की मजबूरी बताई। राकेश यह जानता था कि मनोज इस समय बहुत कठिन समय से गुजर रहा है।

राकेश ने उसका उत्साह बढ़ाते हुए कहा - "मनोज कुछ भी हो जाए तू अपनी पढ़ाई ना छोड़ियो। हमेशा ऐसे ही दिन ना रहेंगे। ये कठिनाई ही तुझे आगे बढ़ावेगी।"

मनोज के मन में राकेश के प्रति अचानक प्यार फूट पड़ा।उसने महसूस किया कि राकेश में और शहर के दोस्तों में कितना अंतर है ,राकेश उसकी समस्याओं से कितना चिंतित हो जाता है जबकि पांडे उसकी समस्याओं से उदासीन ही रहता है ।इतना सोचकर उसने राकेश को गले लगा लिया।

इस बार मनोज यह तय करके ग्वालियर आया कि चाहे कुछ हो जाए वह कोई जरूर नौकरी ढूंढेगा और भयानक पढ़ाई करेगा। इतनी पढ़ाई करेगा जिससे कि अगले एक साल की तैयारी के बाद पीएससी में फाइनल सिलेक्शन हो जाए।

मनोज को ग्वालियर आये हुए दो दिन हो गए ।इस बार उसने कुछ प्राइवेट स्कूलों में नौकरी ढूंढी पर कहीं भी उसे नौकरी नहीं मिली । बिना पैसे के वह् आगे ग्वालियर में पीएससी की तैयारी कैसे करेगा?उसे समझ नहीं आ रहा था ।

शाम को पांडे उसके कमरे पर आया। उसने आते ही मनोज से कहा- "चलो तैयार हो जाओ, तुम्हारे लिए एक नौकरी ढूंढ ली है ।"

मनोज जिस चिंता में डूबा हुआ था उसे पांडे एक झटखे से खत्म कर देगा ऐसी उम्मीद उसे नहीं थी। लेकिन पांडे ने उम्मीद के उलट काम किया था। मनोज के लिए पांडे ने नौकरी ढूंढ ली थी।

दोनों अपनी अपनी साइकिल से जीवाजी गंज में पीजीव्ही कॉलेज की गली की ओर चल दिए। एक मकान के सामने पांडे और मनोज ने दीवार से अपनी साइकिल टिका दी। उस दरवाजे पर नेम प्लेट लगी थी जिस पर लिखा था -'जगदीश तोमर'।मनोज को यह नाम पहचाना हुआ लगा। फिर उसे याद आया कि ये तो विवेकानन्द केंद्र के तोमर जी है। तोमर जी से केंद्र में वह बहुत प्रभावित हुआ था।पर उसे नहीं पता था कि तोमर जी उसके कमरे से इतने नजदीक रहते है।

तोमर जी सफेद धोती कुर्ता पहने अपने पलंग पर बैठे हुए थे, पांडे और मनोज को देखकर प्रसन्नता में उन्होंने जोरदार ठहाका लगाते हुए कहा - "अहा आइये आइये।”

इतना कहकर फिर एक जोरदार ठहाका तोमर जी ने लगाया। पहले तो मनोज समझ ही नहीं सका कि तोमर जी अकारण ठहाका क्यों लगा रहें हैं, फिर उनके एक दो ठहाकों के बाद मनोज समझ गया कि तोमर जी आनन्द की अवस्था में ऐसे ही ठहाके लगाते हैं।

मनोज को देखकर तोमर जी ने कहा -" आप तो विवेकानन्द केंद्र के युवा प्रेरणा शिविर में रहे थे।" मनोज को सन्तुष्टि मिली की उसे तोमर जी ने पहचान लिया है।

तोमर जी ने पांडे से कहा- "यह तो बड़ा तेजस्वी युवक है। केंद्र के शिविर में इन्हें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी का पुरस्कार मिला था। ”

तोमर जी के मुंह से अपनी तारीफ़ सुनकर मनोज के चेहरे पर मुस्कान तैर गई ।

पर पांडे ने तोमर जी से कहा - "इन्हीं तेजस्वी युवक के लिए नौकरी चाहिए। इनके पिता इनसे भी ज्यादा तेजस्वी हैं। वे दुनिया को बदलने का महान काम कर रहे हैं, इसलिए परिवार पर ध्यान नहीं दे पाते। तेजस्वियों के परिवार से आते हैं मनोज जी।”

तोमर जी ने पांडे का व्यंग्य सुनकर जोरदार ठहाका मारा। फिर बोले- "तेजस्वी तो तुम भी कम नहीं हो पांडे,हा हा हा।”

पांडे और तोमर जी, जिनकी उम्र में चालीस साल का अंतर था, दोनों मित्रों की तरह बातें कर रहे थे। पांडे और तोमर जी के बीच ठहाकों का आदान प्रदान होता रहा। मनोज ने महसूस किया कि तोमर जी के आसपास कितना खुशनुमा और आनन्द से भरा वातावरण रहता है। दु:ख और तनाव तो जैसे तोमर जी के सामने ठहर ही नहीं पाते।

"नौकरी क्या है ! साहित्य सभा की लाइब्रेरी सम्हालना है। दौलत गंज में है। सुबह शाम दो दो घण्टे। तीन सौ रुपये मिलेंगे। मनोज चाहें तो लाइब्रेरी में रह भी सकते हैं। -तोमर जी ने मनोज से कहा।

मनोज प्रस्ताव सुनकर संतुष्ट हो गया। वह तीन सौ रुपये भोजनालय में खाने के देकर लाइब्रेरी में ही रहकर पढ़ सकता है। उसे अब ग्वालियर में टिके रहने का आधार मिल गया ।पीएससी की तैयारी करने की उम्मीद फिर से बनती हुई दिखने लगी ।

तोमर जी ने मनोज से पूछा- "तुम्हारा बीए का रिजल्ट कैसा रहा?"तोमर जी के प्रश्न से मनोज अचानक अपने ख्यालों से बाहर आ गया।

उसे तोमर जी के सामने अपने आपको योग्य सिद्ध करने का मौक़ा मिल गया। उसने ब्रेड का टुकडा मुंह में रखते हुए तोमर जी से कहा - "अच्छा रहा सर। सिक्सटी टू पर्सेंट आये हैं।"

वह भूल गया कि उसने पांडे को पचपन बताये थे। पांडे ने जब सुना कि मनोज तोमर जी को प्रभावित करने के लिए झूठ बोल रहा है तो उसने मनोज से पूछा - "मनोज जी जहां तक मुझे याद है, मुझे आपने पचपन पर्सेंट बताये थे। क्या मैं सही हूँ ? "

मनोज ने तो तोमर जी को प्रभावित करने के लिए सेकेण्ड डिवीजन को फर्स्ट डिवीजन में बदल दिया था।उसे उम्मीद नहीं थी कि पांडे उसके झूठ को तोमर जी के सामने उजागर कर देगा, लेकिन पांडे उसकी पोल खोलकर माहौल बिगाड़ रहा था। ब्रेड का टुकड़ा उसके गले में अटक गया। वह अंदर नहीं जा रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि पांडे को क्या जवाब दे ?

लेकिन चतुर मनोज ने तुरन्त विषय बदल दिया- "सर विवेकानन्द जी पर आपका भाषण मुझे बहुत अच्छा लगा था।"

इस नये विषय से उसने तोमर जी का ध्यान भटकाने की कोशिश की।लेकिन पांडे ने मनोज की सच्चाई को तोमर जी के सामने प्रकट करने का पूरा मन बना लिया था।

उसने सीधे सीधे मनोज से पूछ लिया - "मनोज जी विवेकानन्द को छोड़िये, ये बताइये कि बीए में आपके कितने पर्सेंट थे।"

मनोज ने पूर्व में भी इस तरह के सफल झूठ से लोगों की नजर में सम्मान प्राप्त किया था। पर आज दांव उलटा पड़ गया था । पांडे पर उसे बहुत क्रोध आ रहा था। अपनी चोरी पकड़ी जाने के कारण मनोज अपनी नजरें चुरा रहा था ।

इस उलझ चुके धागे का सिरा तोमर जी ने पकड़ा। वे समझ गए थे कि मनोज ने उनकी नजर में योग्य बनने के प्रयत्न में झूठ बोला है। तोमर जी को इस झूठ में कुछ भी गलत नहीं लगा। वह इसे गाँव के कमजोर माहौल से शहर में अपना स्थान बनाने आये लड़के का सामान्य मनोविज्ञान मान रहे थे।

तोमर जी ने अपने अनुभव से मनोज को अपराधबोध से मुक्त करने की कोशिश की - "मेरी तो एमए इंग्लिश में थर्ड डिवीजन थी। पर लोग मानने को तैयार नहीं होते। मैं भी नहीं कहता कि थर्ड डिवीजन पास हूँ। मेरे कुछ अति उत्साही प्रेमी तो मुझे पीएचडी मानकर डॉक्टर डॉक्टर कहते रहते है। मैंने पीएचडी तो क्या एमफिल तक नहीं की। पर लोग मानते हैं तो मानते रहें। मैं भी मना नहीं करता,हा हा हा।"

मनोज का तनाव तोमर जी की समझ और विनोदी प्रवृत्ति ने हल्का कर दिया। पांडे और मनोज अपने अपने घर को चल दिए।

रस्ते में मनोज ने पांडे से गुस्से में कहा- "पांडे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी। तुमने मुझे आज बहुत बेइज्जत किया।"

पांडे ने कुछ देर सोचा कि क्या बोलना है फिर बोला - " यह बहुत जरूरी था। जीवन में अब कभी भी तुम्हारे पर्सेंट से तुम्हारे व्यक्तित्व और तुम्हारी योग्यता का आंकलन नहीं होगा। इसलिए अपनी पुरानी कमजोरियों

को झूठ के सहारे छुपाने के स्थान पर सच्चाई के साथ उनका सामना करो।उन्हें भूलकर अपनी योग्यता बढ़ाने पर ध्यान दो।"

मनोज पांडे का चेहरा देखता रहा।फिर दोनों अलग अलग दिशाओं में चले गए।

18.

मनोज के पास सामान के नाम पर एक सूटकेस, बाल्टी, कुछ किताबें और एक गद्दा था। वह एक तांगे में अपना सामान रखकर दौलत गंज स्थित साहित्य सभा की लाइब्रेरी पहुँच गया। सामने सौ साल पुरानी बिल्डिंग थी। जिसके भूतल पर टिम्बर की दुकाने थीं और प्रथम तल पर पर 'साहित्य सभा' का बोर्ड लगा था। गोल चक्करदार सीढ़ियों से अपना सामान लिए वह सभा की लाइब्रेरी में पहुँच गया। इस बड़े हॉल में चारों तरफ किताबों से भरी अलमारियां,बीच में पाठकों के पढ़ने के लिए टेबल और बैंच,काव्य सम्मेलन और दूसरे साहित्यिक कार्यक्रम के लिए दो तख्त का छोटा सा मंच, मंच के पास में लेक्चर डेस्क और माइक रखा था। लाइब्रेरी की दीवारों पर देश के तमाम बड़े साहित्यकारों और महापुरुषों की तस्वीरें लगी हुई थीं।
मनोज ने रात को सोने के लिए मंच को ही अपना बिस्तर बना लिया। सुबह शाम दो घंटे लाइब्रेरी में लोग किताबें पढ़ने आते थे। बाकी समय वह लाइब्रेरी में अकेला ही रहता। इस अकलेपन को दूर करने का काम उसके लिए लाइब्रेरी की किताबें करती थीं।उसने लाइब्रेरी की किताबें पढ़ना शुरू कर दीं। वह इतिहास, साहित्य, जीवनियां , प्रतियोगिता दर्पण जैसी पत्रिकाएं पढ़ने लगा। उसने अब्राहम लिंकन, एडिसन, अल्बर्ट आइन्स्टाइन, एवरेस्ट पर चढ़ने वाले तेनजिंग नार्गे जैसे कई जुझारू लोगों की जीवनियाँ पढ़ डालीं ।

मनोज ने अपनी तनख्वाह के तीन सौ रुपये भोजनालय में जमा कर दिए। उसके रहने, खाने और पढ़ने का इंतजाम हो गया। महीने में दो बार शाम को लाइब्रेरी में काव्य गोष्ठी होती जिसमें शहर के कवि साहित्यकार इकट्ठा होते। समाजिक, साहित्यिक विषय पर परिचर्चा का आयोजन भी होता। मनोज को इन आयोजनों की जिम्मेदारी भी निभानी होती थी। फर्श बिछाने और माइक लगाने जैसे काम भी उसे ही करने पड़ते थे ।

मनोज ध्यान से विद्वानों के भाषण सुनता। उसकी इच्छा होती कि वह भी मंच से भाषण दे या अपनी लिखी कोई कविता सुनाये,पर मनोज को मौक़ा नहीं मिलता। उसे मंच पर खड़े होकर बोलना एक अद्भुत और दैवीय काम लगता।

जब सभा का कार्यक्रम समाप्त हो जाता और सभा में कोई नहीं होता तब मनोज माइक चालू करके भाषण देने का अभ्यास करता। अकेले। अपने विचार उस विषय पर देता जो कुछ देर पहले परिचर्चा में विद्वानों ने उठाया था। खाली हॉल में उसे सुनने वाला कोई नहीं होता। पर वह कल्पना करता कि सामने श्रोता बैठे हैं। इस तरह वह अपना ज्ञान बढ़ाने और बोलने का अभ्यास करता रहता।

एक रात काव्य सम्मेलन के बाद एक कवि लाइब्रेरी में ही रुक गये ।कवि की बस सुबह थी। सुबह कवि ने नहाने के बाद मनोज से कहा –"क्या आपके पास बालों में लगाने के लिए तेल मिलेगा ?"

मनोज ने संकोच से कहा –"तेल नहीं है।"

कवि निराश हुए पर उन्होंने उम्मीद नहीं छोडी –"कोई बात बहीं कंघा ही दे दो बिना तेल के ही बाल बना लूंगा।"

मनोज के पास कंघा भी नहीं था, उसने फिर संकोच से कहा –"कंघा भी नहीं है।"

पर कवि ने हार नहीं मानी उन्होंने अपनी फरमाइश को बदलकर फिर से कहा–"कैसे लड़के हो भाई तुम? चलो शीशा ही दे दो अपनी शक्ल ही देख लूं एक बार।"

मनोज ने फिर से वही उत्तर दिया – "शीशा भी नहीं है।" कवि को अब मनोज को देखकर आश्चर्य हो रहा था। उसने मनोज के उम्र के कई लड़के देखे थे जो सुंदर दिखने और फैशन करने के दीवाने रहते थे।

कवि ने कहा – जिस उम्र में लड़के नये नये फैशन करते है उस उम्र में तुम यह तपस्या क्यों कर रहे हो ?

मनोज ने कहा – "मैं पीएससी की तैयारी कर रहा हूँ। पढ़ाई के खर्च के लिए यहाँ नौकरी करता हूँ ।तेल ,कंघे की जरूरत ही नहीं पड़ती। एक साल से तो मैंने अपनी शक्ल ही आईने में नहीं देखी।" एक छुपा हुआ गर्व उसकी आवाज में झलक आया था।अनजाने कवि के सामने उसके चेहरे पर चमक आ गई थी।

अपनी बात पूरी करके मनोज कवि का थैला लिए नीचे टेम्पो में बिठाने जाने लगा। जाते समय कवि ने मनोज को आशीर्वाद दिया – "तुम जरूर सफल होओगे बेटा।"
मनोज ने जाते समय कवि के पैर छू लिए ।कवि की आँखे गीली थी।उसमें कोई सरल कविता झिलमिला रही थी।

चार तीन महीने मनोज को लाइब्रेरी में रहते हुए हो गये। लेकिन उसका कोई भी दोस्त हालचाल जानने नहीं आया,यहाँ तक कि पांडे भी इन तीन महीनों में एक दो बार ही उससे मिलने आया था। मनोज महसूस करने लगा कि उसका इस पूरे ग्वालियर में कोई नहीं है उसे अकेले ही रहना है। लाइब्रेरी के दो

घंटों को छोड़कर यह बिल्डिंग उसे भुतहा अकेलेपन का अहसास कराती। इस अकेलेपन से बचने के लिए उसके पास किताबों के अलावा कोई सहारा नहीं था ।

एक दिन वह लाइब्रेरी में मेक्सिम गोर्की का उपन्यास 'माँ' पढ़ रहा था। उपन्यास के नायक पावेल की माँ के संघर्ष और जिजीविषा को देखकर उसकी आँखे भर आई। वह पावेल की माँ में अपनी माँ की कल्पना करने लगा। उसकी माँ भी तो लगातार जूझ रही है, हर मुसीबत में माँ ही तो है जो उसे ग्वालियर में टिके रहने की ताकत दे रही है।

मनोज उपन्यास पढ़ ही रहा था कि उसके मम्मी पापा गाँव से उससे मिलने लाइब्रेरी में आ गये।उसने अधूरा उपन्यास बंद किया।माँ उसका रहन सहन देख कर समझ गई कि बेटा कष्ट में रह रहा है । माँ प्यार से उसके सर पर हाथ फेरने लगी।

पिता के पास कहने और समझने के लिए कुछ था नहीं इसलिए वे हॉल में लगी हुई साहित्यकारों और महापुरुषों की तस्वीरें देखने लगे। ज्यादातर चेहरे उन्हें अपरिचित ही लगे। लेकिन बातचीत के लिए विषय तलाशते पिता को विषय मिल गया।

इसके पहले कि मनोज उनकी नौकरी और सस्पेंशन से बहाली पर प्रश्न पूछे उन्होंने उससे एक तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए पूछा-"यह कौन हैं?"

मनोज ने उत्तर दिया -"मुक्तिबोध।"

पिता -"मतलब?"

पिता की सरल अज्ञानता पर उसने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया-"इनका नाम मुक्तिबोध है।कवि हैं। बहुत अच्छी कविताएँ लिखते हैं।"

"मोय तो वो मुंशी ठीक लागतो। मैंने पढ़ी थी स्कूल में कहानी, बूढ़ी डुकरिया वाली।"–पिता ने मुंशी प्रेमचंद के कथा संसार बारे में अपनी राय व्यक्त की।

माँ ने पिता को व्यर्थ की बातों में उलझा हुआ देखा तो नाराज हो गई-"तुम देख रहे हो मोड़ा कैसे रह रहो है? कैसो कमजोर हो गयो? अब तो नौकरी ठीक ते कर लो।" माँ ने अपने मन का दर्द पिता से कह सुनाया।

पिता को इस साहित्यिक चर्चा के बीच में माँ का आर्थिक हस्तक्षेप पसन्द नहीं आया। उन्होंने चिढ़ते हुए माँ से कहा-"तू कछू ना जानती। अनपढ़। जे देख कितनी किताबें रखी हैं। पढ़बे की कमी ना है।"-ज्ञान और पुस्तकों के महत्व को पिता ने अपनी अनपढ़ पत्नी को समझाया।

जब कुछ देर लाइब्रेरी में मौन बना रहा तब पिता ने अपनी नौकरी का रहस्य खोला-"अब तो मोय हाईकोर्ट ते ही उम्मीद है। मेई बहाली हाईकोर्ट ही करेगो। मैंने फैसला ले लियो है कि डिप्टी डायरेक्टर के कारनामों की जांच के लिए आमरण अनशन करेंगों।"पिता ने शासकीय खेमे में नए मोर्चे खोलने की जानकारी मनोज को दे दी। वह् पिता के आमरण अनशन की बात सुनकर घबरा गया।

उसने अपने पिता को समझाने की असफल कोशिश की–"पापा अनशन मत कीजिये,कोर्ट आपको जल्दी ही बहाल कर देगा और मेरी तो बिलकुल भी चिंता मत कीजिये मैं यहाँ बहुत अच्छे से हूँ।"
उसने अपनी जिम्मेदारी की चिंता से पिता को मुक्त करना चाहा पर पिता ने जिद नहीं छोडी –"जब तक डिप्टी डायरेक्टर को ठिकाने नहीं लगा दूंगा, मैं चैन से नहीं बैठूंगा।"
पिता ने अपनी बात कहकर मंच पर बैठे बैठे लाइब्रेरी के बड़े से हॉल को निहारा। महापुरुषों की तस्वीरें देखकर पिता के भीतर कुछ हलचल हुई । फिर पिता ने अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी की और कुछ बोलने के लिए तनकर बैठ गये।
मंच पर बैठे पिता मनोज से कहने लगे – "आज इस देश की सबसे बड़ी समस्या बेईमानी है,सब स्वार्थी हो गये है। सबको अपनी फ़िक्र है, देश की किसी को फ़िक्र नहीं है।"

पिता आगे कहना जारी रखते हैं- " तेरी माँ तो अनपढ़ है पर तू पढ़ा लिखा है,मेरी बात समझ सकता है ।"

पिता के मुंह से अपनी तारीफ़ सुनकर मनोज को खुद पर गर्व महसूस हुआ, उसने भी पिता की प्रशंसा करना जरुरी समझा –"पापा आप एकदम सही कह रहे हैं ।"

माता बहुत देर से पिता पुत्र को सुन रही थी। पिता पुत्र की एकराय और अपनी बुराई सुनकर माँ नाराज हो गई ।
माता ने गुस्से में पिता से कहा – "शर्म ना आवते तुम्हें।फालतू बात कर रहे हो।घर सुधार ना सकत, देश की चिंता कर रहे हो। मोड़ा ने तीन चार साल से नई बुसकट ना खरीदी, खाबे पीबे को कछु ठिकानों ना है।अब तो सुधर जाओ।अब घर बर्बाद होबे में देर ना है।"
पिता को अपने ओजस्वी भाषण की ऐसी प्रतिक्रिया देखकर कष्ट हुआ।
उन्होंने माँ से कहा –तू जीभ ना चलावे, नये कपड़ा से कछु ना होवते ,ईमानदार आदमी पुराने कपड़ा पहनके भी अलग से चमकतो है। और खा पी तो जानवर भी रहे हैं, आदमी तो वो है जो भले ही भूखो रह ले पर अपनी आत्मा ज़िंदा रखे। अब तू का जाने देश की समस्या। तुझे समझानों तो भैंस के आगे बीन बजाने जैसो है । "
माँ ने चिढकर पिता से कहा –"मोय ना पतो देश की समस्या।पर तुम्हें भी एक बात ना पतो।
माँ की बात सुनकर पिता को आश्चर्य हुआ कि उनसे पता करने में कौन बात रह गई है, पिता ने माँ से पूछा –मोय का ना पतो ?मोय तो सब पतो है ।
"यही के तुम पागल हो गये हो।"-माँ ने पिता से कहा

अब पिता का वापसी का समय हो रहा था उन्होंने माँ की बात को अनसुना करते हुए कहा – "चुप कर। देर हो रही है चल अब बस निकर जावेगी।"

मनोज माता पिता को नीचे टेम्पो में बिठाने चला गया। माता ने पिता से कहा –"मोड़ा को कछु पैसा दे दो के तुम्हारे भाषण से पेट भर लेगो।

पिता ने माँ की यह मांग अनसुनी करते हुए कठोरता से कहा –"मो पे नाने पैसा।"

इतना कहकर पिता उस दिशा की ओर देखने लगे जहां से टेम्पो आने की उम्मीद थी।

माँ ने मनोज को सौ दिए और कहा –"बेटा ठीक से रहियो।"माता पिता टेम्पो में बैठकर चले गये। मनोज वापस सुनसान लाइब्रेरी में लौट आया।

लाइब्रेरी में आकर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया और सोचता रहा कि क्या उसके पापा सच में पागल हो गए हैं? क्या माँ सही कहती है? पिता हमेशा देश, ईमानदारी, गरीबों की बातें करते रहते हैं। घर की उन्हें बिलकुल फ़िक्र नहीं रहती। पागलों की तरह उनका दिमाग एक ही जगह आकर अटक जाता है।

इतना सोचकर वह टेबल पर रखी मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' कविता जोर जोर से पढ़ने लगा –

"हाँ वहां रहता है,एक सिर-फिरा जन
किन्तु आज इस रात बात अजीब है।
आज एकाएक वह
जागृत बुद्धि है,प्रज्चलत धी है
गा रहा कोई पद कोई गान"
"बहुत बहुत ज्यादा लिया दिया बहुत बहुत कम
मर गया देश जीवित रह गये तुम"

इतना पढ़कर मनोज आगे कविता नहीं पढ़ सका। उसने किताब बंद कर दी। उसकी आँखों के सामने कविता के सिरफिरे जन की जगह उसके पिता का कठोर और भावहीन चेहरा आ गया। उसने अपनी डायरी उठाई और लिखने लगा –"जो घरबार की फ़िक्र न करके देश की फ़िक्र करते हैं वह पागल ही तो कहलाते हैं। मेरी माँ सही कहती है कि मेरा पिता पागल है। मैं ऐसे पागल पिता से बहुत प्यार करता हूँ।मेरे पिता मेरे आदर्श हैं।"

उसकी हिम्मत नहीं हुई आगे कविता पढने की।उसने किताब टेबल पर रख दी और लाइब्रेरी की बालकनी में चला गया।

माता पिता के जाने के बाद मनोज अकेला और उदास हो गया।अपनी उदासी दूर करने के लिए वह लाइब्रेरी की बालकनी में खड़ा होकर नीचे सड़क की चहल पहल देखता रहता था। एक ढलती शाम को वह लाइब्रेरी की बालकनी में खड़ा था।उसे को अपना गाँव याद आ रहा था। गाँव की मस्ती,राकेश के साथ खेतों में मूली और गाजर तोड़कर खाना याद आ रहा था। दिन दिन भर घर से गायब रहकर क्रिकेट खेलना याद आ रहा था। गाँव में कितना अच्छा और आनन्द से भरा जीवन था उसका।ग्वालियर में पिछले कुछ सालों में कैसा उदासी भरा जीवन हो चला है।यही सोचता हुआ वह दौलतगंज की सड़क देखने लगा।

शादियों का सीजन चल रहा था। नीचे सड़क पर एक बरात जा रही थी। बरात में गाना बज रहा था 'मेरा पिया घर आया ओ राम जी'। बाराती इस गाने पर झूम झूम कर डांस कर रहे थे। बरात में कुछ बूढ़े बरात को जल्दी आगे बढाने की कोशिश कर रहे थे पर युवा लड़के बार बार बरात को एक ही जगह रोक कर डांस का आनन्द ले रहे थे। बरात की मस्ती देखकर मनोज की उदासी कम होने लगी। वह सोचने लगा कि कब तक निराश रहा जाए? जीवन में आनन्द के क्षण ढूँढने चाहिए। हालात तो हमें परेशान करेंगे ही। पर मुझे उल्लास और सुख की तलाश नहीं छोड़नी चाहिए। ऐसा सोचकर वह बड़ी तल्लीनता से बारात देखने लगा। उसकी इच्छा इस समय इस बारात के साथ डांस करने की होने लगी। उसने लाइब्रेरी का गेट बंद किया और चप्पल पहनकर लगभग दौड़ता हुआ नीचे पहुँच गया।

अभी भी 'मेरा पिया घर आया ओ राम जी' गाना चल रहा था। लेकिन बारात के बूढ़े अब लडकों की लगातार एक ही जगह डांस करने की जिद से तंग आ गये थे।'शादी में डांस नहीं करेंगे तो कब करेंगे?' ऐसा कहकर लड़के बूढों से बहस कर रहे थे।पर शायद बूढ़ों को लड़की वाले के दरवाजे पर पहुँचने की जल्दी थी इसलिए वह बरात को जल्दी जल्दी आगे बढ़ाने लगे। युवा डांसरों के चेहरों पर डांस न कर पाने की निराशा दिखने लगी थी।

मनोज जब वहां पहुंचा तो बारात आगे बढ़ने लगी थी। उसने बारात के बीच में पहुंचकर बैंड वाले को आदेश सा दिया कि-"ये काली काली आँखें"। बैंड वाला शायद अपने गायन की कला का अभी तक मन भर के प्रदर्शन नहीं कर पाया था इसलिए मनोज का आदेश पाकर वह तुरंत बाजीगर फिल्म का 'ये काली काली आँखें ये गोरे गोरे गाल' गाना गाने लगा। बूढों के अनुशासन से निराश लड़के मनोज का जोश देखकर फिर रंग में आ गये।असहाय बूढ़े मिसमिसाकर रह गये।

मनोज अपनी आँखों और गालों पर हाथ फेर फेर कर ये काली काली आँखें ये गोरे गोरे गाल गाने पर झूम झूम कर डांस कर रहा था। बूढों की कुड़कुड़ से हतोत्साहित जवान लडकों में उसने नया जोश भर दिया। एक बार फिर बारात अपने रंग में आ गई। मनोज को अनजानी शादी में डांस करने में कोई झिझक नहीं हो रही थी। लड़के फिर से जबरदस्त डांस करने लगे। किसी बाराती को पता नहीं चला कि यह जोशीला डांसर बिन बुलाया मेहमान है। पन्द्रह मिनिट लगातार डांस करने के बाद मनोज पसीने से तरबतर हो गया। बरात आगे बढ़ गई।

19.

एक दिन लाइब्रेरी के मैनेजर हुकुमचंद जी ने मनोज से कहा कि हॉल की पुताई करानी है इसलिए पुरानी रद्दी निकाल कर कबाड़ी वाले को बेच देना।मनोज ने रद्दी निकालकर पांच हजार रुपये में बेच दी। हुकुमचंद जी ने हिसाब माँगा तो उसने पूरा हिसाब रख दिया।

उन्होंने मनोज को भेदती हुई नजर से देखा और कहा – "मनोज पिछले साल सात हजार की रद्दी बिकी थी। इस साल केवल पांच हजार की ही कैसे बिकी?"

हुकुमचंद जी इस प्रश्न से मनोज की ईमानदारी पर सन्देह व्यक्त कर रहे थे । उनकी नजर में तीन सौ रुपये कमाने वाले के लिए दो हजार रुपये की हेराफेरी करना लाभ का सौदा है। पर मनोज अभी केवल यही समझ रहा था कि उससे सामान्य पूछताछ हो रही है।

मनोज ने कहा - "सर इतने की ही रद्दी निकली थी। मैंने सात कबाड़ियों से सम्पर्क किया था, जिसने रद्दी के सबसे अधिक दाम लगाये थे उसी को बेचा।"

लेकिन हुकुमचंद जी का अविश्वास बढ़ता जा रहा था। हुकुमचंद ने अब अब अपने अविश्वास को स्पष्ट प्रकट कर मनोज पर सबसे गहरी चोट की।

हुकुमचंद जी ने मनोज पर अपना पूरा अविश्वास प्रकट कर दिया,उसकी सच्चाई का उन पर ओई असर नहीं हुआ - "मनोज तुम तो युवक हो। तोमर जी तुम पर भरोसा करते हैं ,तुमसे यह उम्मीद नहीं थी।"

ईमानदारी मनोज का सबसे बड़ा संकल्प था, जिसे हुकुमचंद जी ने छिन्न भिन्न करके उसे बेईमान सिद्ध कर दिया। हुकुमचन्द जी का निराधार आरोप सुनकर मनोज भयानक कड़वाहट से भर गया। उसकी इच्छा हो रही थी कि कोई कड़वा जवाब हुकुमचंद जी को दे दे। पर वह कुछ नहीं कह सका। वह हुकुमचंद जी को बिना कुछ कहे लाइब्रेरी से नीचे चला गया।

मनोज ने तय किया कि जहां उसकी ईमानदारी की कोई कद्र नहीं है वहां वह काम नहीं करेगा। पर अगले ही पल उसके मन विचार आया कि वह जाएगा कहाँ,रहेगा कहाँ,पढ़ेगा कहाँ ? पढ़ाई के लिए पैसा कहाँ से आयेगा? मनोज के मन में यही उहापोह बनी रही ।

शाम को मनोज लाइब्रेरी में अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसके सामने इतिहास की 'आधुनिक भारत' की किताब खुली हुई रखी थी पर उसका मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था।उसके मन को हुकुमचंद जी के आरोप परेशान कर रहे थे।अचानक उसने महसूस किया कि उसके सामने रखा मटका हिल रहा है,लाइब्रेरी की छत

पर लगा पंखा चलते चलते अचानक कुछ अधिक तेजी से हिलने लगा। उसे लगा कि दीवाल भी हिल रही है।फिर उसे नीचे सड़क से कुछ आवाजें सुनाई दीं।

उसने सड़क पर झाँककर देखा तो लोग इकट्ठे होकर चिल्ला रहे थे –"भूकम्प आ गया,भूकम्प आ गया।"

पुरानी जर्जर इमारतें कुछ सेकेण्ड थर्राकर थम गईं। वह भाग कर नीचे चला गया।मार्केट के कई दुकानदार भी घबराकर सड़क पर आ गए थे।सभी लोग भूकम्प के डर से सहम गये थे ,कुछ घंटे सभी लोगों ने सड़क पर ही गुजारी पर जब दुबारा भूकम्प नहीं आया तो लोगों ने राहत की सांस ली। लेकिन किसी ने शंका प्रकट कर दी थी कि रात को भूकंप आ सकता है। मनोज बिल्डिंग में अकेला रहता था, उसे बिल्डिंग में जाने से डर लग रहा था। वह शाम से लेकर रात बारह बजे तक सड़क पर अकेला भटकता रहा।

वह सड़क के किनारे बनी एक फर्नीचर की दुकान के बाहर बैठ गया। दुकान के बाहर बैठा बैठा वह सोचने लगा -"आज यह बिल्डिंग गिर जाती और मैं उसमें दब कर मर जाता तो किसी को क्या फर्क पड़ता? इस शहर में कौन मुझे ढूंढता? कोई नहीं। मैंने अपने चार वर्ष ग्वालियर की इन सड़कों पर भटकते हुए बिता दिए। क्या पाया मैंने? ईमानदारी से काम करने के बावजूद बेईमानी का आरोप? क्या मैं बेईमानी का आरोप लिए हुए ही मर जाता। कोई नहीं है जो मुझे प्यार करता हो। किस पीएससी के पीछे मैं पड़ा हूँ जिसका दूर दूर तक कोई अता पता नहीं।"

डरा, उदास, हतोत्साहित मनोज सुनसान सड़क पर बैठा रहा। उसके पास कोई नहीं था जिससे वह अपने मन का दर्द बाँट सके। उसकी निराशा, भय, बेईमानी का झूठा आरोप, भविष्य के प्रति उसकी अनिश्चिता, अभावों का जीवन उसे विचलित कर रहा था। सड़क अब पूरी तरह सूनी हो गई थी। वह भटकता हुआ पास के राम मन्दिर चौराहे पर चला गया।

मन्दिर के गेट बन्द हो गए थे।वह गेट के पास बनी सीढ़ियों पर बैठ गया। काफी देर तक वह राम की मूर्ति को एकटक देखता रहा जैसे उनसे बात करने की कोशिश कर रहा हो। शायद वह राम भगवान से पूछने आया था कि बताओ अब मुझे क्या करना है? कोई तो दिशा दिखाओ? उसे लग रहा था कि राम उसे देखकर शांत भाव से मुस्कुरा रहे हैं,आश्वस्त कर रही थी मनोज को उनकी मुस्कराहट। लगभग आधा घण्टा वह सीढ़ियों पर बैठा मूर्ति की ओर देखता रहा। खोया रहा वह भगवान की आँखों में।

अचानक वह सोचने लगा -"मैं भी तो राम की तरह ही एक अंतहीन यात्रा पर निकला हूँ। जिसके पड़ावों पर मिलने वाले दुःख तो मुझे सहने ही होंगे। प्रतिभाएं अकारण आगे नहीं बढ़तीं। वे बढ़ती हैं अपने पुरुषार्थ से,अपने समर्पण से,अपनी मेहनत से,अपने त्याग से,अपनी प्रबल इच्छाशक्ति से।"

पता नहीं कौन सी शक्ति मनोज ने मन्दिर की सीढ़ियों पर महसूस की। वह सीढ़ियों पर खड़ा होकर जोर जोर से बोलने लगा –" मैं किसी भी झूठे आरोप को नहीं सहूंगा। मुझे कोई नहीं हरा सकता । "
मनोज लाइब्रेरी की और लगभग दौड़ सा पड़ा। लाइब्रेरी पहुंचकर उसने मंच के पास रखी लेक्चर डेस्क का माइक चालू किया और अँधेरे बन्द हॉल में माइक पर जोर जोर से कवि निराला की 'राम की शक्ति पूजा' कविता का पाठ करना शुरु कर दिया। उसकी आवाज तेज थी, उसमे घरघराहट और कम्पन था।वह कविता के एक एक शब्द पर जोर देकर पढ़ने लगा-

"है अमानिशा उगलता गगन घन अन्धकार, खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवनचार।

अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल, भूधर ज्यों ध्यानमग्न केवल जलती मशाल। "

फिर उसने इस पंक्ति की व्याख्या करनी शुरु की-"राम पराजित अवस्था में पहुंच गए है। निराशा और अन्धकार है सब तरफ। पर एक उम्मीद की लौ उनके मन में इस निराश और पराजित माहौल में भी जल रही है।"

उसने इस कविता में खुद को ढूंढना शुरु किया -"एक मशाल मेरे भीतर भी उम्मीद के रुप में जल रही है। इसे मैं कभी बुझने नहीं दूंगा। मैं जरूर जीतूंगा। होगी जय होगी जय है पुरषोत्तम नवीन।"

अपने भाषण की अंतिम पंक्तियों तक पहुंचकर मनोज का भय और अकेलापन भरपूर उत्साह में तब्दील हो गया। वह कुछ देर तक काल्पनिक दर्शकों से भरा खाली हॉल देखता रहा। उसने माइक बन्द किया। अपनी टेबल पर पहुंचकर उसने टेबल लेम्प जलाया और बी एल ग्रोवर की 'आधुनिक भारत' किताब उठाई और सुबह की पहली किरण लाइब्रेरी में पड़ने तक प्लासी, बक्सर, आंग्ल-सिख और आंग्ल-मराठा सम्बन्ध पढ़ता रहा। रात में कोई भूकम्प नहीं आया।

20

अगले दिन मनोज लाइब्रेरी छोड़ने का अपना निर्णय सुनाने जगदीश तोमर के घर चला गया।

उसने कुर्सी पर बैठते हुए सीधे अपनी बात कही -"मैं अब लाइब्रेरी में काम नहीं कर सकता। जहां मेरी ईमानदारी की कद्र न हो वहां मैं काम नहीं करूंगा।"

तोमर जी ने जोर से ठहाका लगाया। मनोज समझ नहीं पाया कि उसकी इतनी गम्भीर बात पर भी तोमर जी क्यों ठहाका लगा रहे हैं?"

"चाय तो तुम पीते नहीं हो। लो गजक खाओ।" -इतना कहकर तोमर जी ने टेबल पर रखी गजक मनोज के सामने रख दी।

तोमर जी ने मनोज से कहा-"हुकुमचंद जी व्यवसायी आदमी हैं मनोज! जीवन भर उन्होंने सौ सौ रुपये की साड़ियां बेचकर मुनाफ़ा कमाया है। उन्हें साड़ियों की परख तो है पर आदमी की परख नहीं है। तुम व्यर्थ ही परेशान हो रहे हो। निश्चिन्त होकर नौकरी करो। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।"

तोमर जी के भरोसे से मनोज को बल मिला। इस बल ने उसका आत्मविश्वास और बढ़ा दिया। अपने इस बढ़े आत्मविश्वास से प्रेरित होकर उसने कहा - "हुकुमचंद जी का भरोसा मुझ पर नहीं रहा, मैं अब लाइब्रेरी में तो काम नहीं ही कर पाउँगा।"

इतने में पांडे तोमर जी के बेटे सुदीप के साथ आ गया। सुदीप भी पीएससी की तैयारी कर रहा था उसने दो बार पीएससी की मुख्य परीक्षा दी थी और अब तीसरी मुख्य परीक्षा की तैयारी कर रहा था। तोमर जी ने मनोज की पूरी कहानी पांडे और सुदीप को कह सुनाई।

पांडे कुछ बोलता उसके पहले सुदीप ने कहा -"मनोज तुम बताओ कि तुम महत्वाकांक्षी हो या नहीं ?

मनोज ने एकदम से कहा - "मैं पीएससी में सिलेक्ट होना चाहता हूँ। मैं महत्वाकांक्षी हूँ।"

सुदीप ने मनोज को व्यवहारिक सलाह दी-"फिर तुम्हें लाइब्रेरी में ही रहना चाहिए अभी तुम्हारी आर्थिक स्थिति तुम्हें कहीं दूसरी जगह रहने की इजाजत नहीं दे रहीं है।"

मनोज सुदीप की बात सुनकर भी अपनी बात पर अड़ा रहा – "भाईसाहब मैं वहां काम नहीं कर सकता जहाँ मेरी ईमानदारी पर संदेह किया जा रहा है।"

"फिर क्या करोगे, बिना नौकरी के पढ़ाई कैसे करोगे? कुछ दिनों के बाद ही एमपी पीएससी की प्रीलिम्स परीक्षा होने वाली है ?"-पांडे ने गजक खाते हुए मनोज के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

"पढ़ाई छोड़ दूंगा, सड़क पर रह लूंगा,पर अपने सिद्धांत से समझौता नहीं करूंगा।" –मनोज ने बिना एक सेकेण्ड गवाए तत्काल उत्तर दिया।

मनोज की इस जिद का किसी के पास कोई जवाब नहीं था। पर वहां बैठे सभी लोगों को मनोज की यह बात एक नवयुवक का जोश और आदर्शवाद अधिक लग रही थी।

पांडे को मनोज का यह संकल्प व्यवहारिकता से दूर लग रहा था। उसने मनोज के इस अति आदर्शवाद की व्याख्या की और तोमर जी को देखते हुए बोला–"मनोज जी अपने पिता से प्रभावित हैं। इनके पिता भी अपनी ईमानदारी से समझौता नहीं करते।समझौता न करना इनकी पारिवारिक विशेषता है।"

मनोज को उम्मीद थी कि ईमानदारी पर उसके संकल्प को सुनकर शहर का यह बुद्धिजीवी समूह उससे प्रभावित होगा पर पांडे की ऐसी ठंडी और व्यंग्य पूर्ण प्रतिक्रिया देखकर वह निराश हो गया।

तोमर जी ने पास ही रखी एक किताब उठाई और मनोज को दे दी। किताब के कवर पेज पर भगत सिंह का चित्र था।

तोमर जी ने मनोज से पूछा–"अच्छा बताओ मनोज तुम्हें भगत सिंह के इस चित्र में क्या विशेषता नजर आ रही है? "

मनोज कुछ देर तक भगत सिंह के चित्र को देखता रहा,पर कुछ बोल नहीं पाया ।
"मनोज मुझे भगत सिंह की आँखों में एक बेचैनी सी नजर आती है, उनके भीतर देश के लिए कुछ करने की तड़प दिख रही है।"-तोमर जी ने मनोज से कहा ।

कुछ देर रुककर तोमर जी ने आगे कहा - "मुझे तुम्हारी आंखों में भगत सिंह जैसी बेचैनी और देश के लिए कुछ करने की तड़प दिखाई देती है ।"

मनोज तोमर जी की बात सुनकर हतप्रभ रह गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि तोमर जी उसकी तुलना भगत सिंह से करेंगे। तोमर जी के प्रति उसका मन श्रद्धा से भर गया।

सुदीप ने अपने पिताजी का समर्थन किया –"मनोज का व्यक्तित्व मुझे भी विलक्षण लगता है।"

आज का दिन मनोज को बेहतरीन लग रहा था। उसे आज बढिया तारीफें मिल रही थीं ।उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी ।

पांडे ने मनोज की प्रसन्नता देखते हुए कहा–"मनोज जी कल तोमर जी के स्कूल में ग्यारवीं में पढ़ने वाला एक लड़का अपनी कविता सुनाने यहाँ आया था।बेहद घटिया कविता थी।"

फिर पांडे ने तोमर जी को सम्बोधित करते हुए कहा –"क्या कविता थी, आपको तो याद होगी?

हमसे तो बेहतर हैं वो घास चरने वाले,

हमसे तो बेहतर हैं वो बोझा धोने वाले।"

वहां उपस्थित सभी लोगों को पांडे की यह अप्रासंगिक बात समझ नहीं आई। सुदीप ने पांडे से पूछ लिया–"हाँ यही कविता थी मैंने भी सुनी थी पर तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"कल तोमर जी को इस महान काव्य के रचयिता में जयशंकर प्रसाद के दर्शन हो रहे थे। मैं मनोज जी से यह कहना चाह रहा हूँ कि आम लोगों में महापुरुषों के दर्शन करना तोमर जी की हॉबी है, इसे गम्भीरता से न लें और जीवन में व्यवहारिकता को अपनाएँ।" -पांडे ने तोमर जी द्वारा की गई मनोज की प्रशंसा को शून्य घोषित कर दिया। पांडे की बात सुनकर तोमर जी ठहाका मार कर हँस पड़े। मनोज समझ गया कि अभावों से दूर रहने वाला पांडे कभी उसे नहीं समझ सकता।मनोज बिना किसी निर्णय के वापस लाइब्रेरी चला गया।

दस दिन बाद पांडे मनोज से मिलने लाइब्रेरी पहुंचा। मनोज लाइब्रेरी में नहीं था। लाइब्रेरी के व्यवस्थापक हुकुमचंद कुर्सी पर बैठे हुए कोई रजिस्टर देख रहे थे। पूछने पर हुकुमचंद ने बताया कि मनोज तो दस दिन पहले ही लाइब्रेरी का काम छोड़कर चला गया हैं।

"कहाँ गया ?"- पांडे ने आश्चर्य से पूछा। पांडे को उम्मीद नहीं थी कि मनोज लाइब्रेरी का काम छोड़कर जा सकता है। लेकिन मनोज ने एक साल लाइब्रेरी में काम करने के बाद लाइब्रेरी छोड़ दी थी ।

हुकुमचंद से और अधिक पूछने पर उन्होंने पांडे को एक पर्ची दे दी जिस पर मनोज का नया पता लिखा था – 'घनश्याम आटा चक्की, गणेश मन्दिर,घोसीपुरा'। पर्ची हाथ में लिए पांडे लाइब्रेरी के नीचे उतर आया। पांडे ने अपनी साइकिल घोसीपुरा की ओर मोड़ दी।

घोसीपुरा ग्वालियर की एक पिछड़ी और घनी बस्ती है जहां जौरा सबलगढ़ जाने वाली नैरोगेज ट्रेन का स्टेशन भी है। ढूँढने पर पांडे को आसानी से 'गणेश मन्दिर' मिल गया।मन्दिर के पास जगह जगह घूरे और गन्दगी के ढेर लगे हुए थे। पास ही गंदे पानी की नाली बह रही थी। पांडे ने वहीं खड़े एक लड़के से घनश्याम आटा चक्की का पता पूछा और अगली गली में आटा चक्की के पास पहुँच गया। पांडे समझ गया था कि मनोज ने आटा चक्की वाले के यहाँ कमरा किराए से ले लिया है।आटा चक्की पर एक लड़का सफेद बनियान और लाल रंग का पेंट पहने गेंहू पीस रहा था और उड़ते हुए आटे के कारण सफेद आटे में लगभग नहा गया था। पांडे ने लड़के के नजदीक जाकर मनोज का पता पूछना चाहा। नजदीक जाकर पांडे ने देखा कि आटा चक्की में काम करने वाला लड़का मनोज ही है। मनोज को इस तरह चक्की पर पर काम करते देख पांडे चौंक गया।

मनोज ने जब पांडे को दुकान के सामने खड़ा देखा तो मुस्कुरा दिया। पांडे चक्की के भीतर चला गया। मनोज ने पांडे से कहा –"पांडे थोड़ी देर में मेरा काम पूरा हो जायगा फिर कमरे पर चलेंगे? पांडे चक्की के भीतर खड़ा होकर मनोज को काम करते देखता रहा। मनोज बोरी में से गेंहू निकालकर चक्की में डाल रहा था और चक्की से निकलने वाले आटे को उसी बोरी में भर रहा था। उसने लगभग चार पांच बोरी गेंहू पीसने में कोई हड़बड़ी नहीं दिखाई । आधा घंटा अपना काम करने के बाद उसने अपने शरीर और बालों से आटा साफ़ किया और पास ही खूंटी से टंगी शर्ट पहनी और दुकान के बाहर आ गया।उसने दुकान बंद की उसमें ताला लगाया और पांडे के साथ साथ चलने लगा ।

मनोज ने पांडे से कहा –"मुझे पता था कि तुम मुझे ढूंढते हुए जरूर आओगे।"

पांडे बिना कुछ कहे चुपचाप अपनी साइकिल हाथ में पकड़े मनोज के साथ चलता रहा। तंग गलियों में से गुज़रकर थोड़ी देर में मनोज एक मकान के सामने पहुंच गया। पांडे ने मकान की दीवाल से अपनी साइकिल टिका दी। मकान की गैलरी और छोटे से आँगन में से होकर मकान के सबसे पिछले हिस्से में पहुंचकर मनोज ने एक कमरे का दरवाजा खोला। दिन के उजाले में भी कमरे में अन्धेरा ही था। मनोज ने कमरे की लाईट जलाई। पीले रंग का धुंधला प्रकाश कमरे में फ़ैल गया। जमीन पर मनोज का गद्दा बिछा था। आले में उसकी किताबें रखी थी। कोने में एक स्टोब और कुछ बर्तन रखे थे। एक लकड़ी का स्टूल भी पास में रखा था। पांडे स्टूल पर बैठ गया। मनोज जमीन पर बिछे अपने गद्दे पर बैठ गया।

कमरे में खामोशी बनी रही।पांडे बस नजर भरकर मनोज के कमरे को देख रहा था।

" दो सौ रुपये किराया है कमरे का।वैसे तो ढाई सौ रुपये है पर एक साहित्यकार हैं घनश्यामजी उनका मकान है। लाइब्रेरी में आते थे। मुझे बहुत पसंद करते है। मैंने उन्हें अपनी समस्या बताई तो उन्होंने मुझे सस्ते में यह कमरा दे दिया रहने को। बहुत भले व्यक्ति हैं। दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है पांडे जी। उन्होंने तो अपनी पूरी आटा चक्की की जिम्मेदारी ही मुझे सौंप दी। दिन में चार पांच घंटे आटा पीसने का काम है। पांच सौ रुपये महीने मिलेंगे । बाकी पूरे दिन पढ़ाई करता रहता हूँ।आदमी यदि टाइम का सही मेनेजमेंट कर ले, तो समय की कमी नहीं रहती। भगवान एक रास्ता बंद करता है तो दूसरा जरूर खोलता है। -"मनोज ने अपनी आँखें पांडे के चेहरे से दूर रखकर अपनी बात पूरी की।

पांडे ने मनोज की बात ध्यान से सुनी पर वह बोला कुछ नहीं। पीले रंग का बल्व अचानक बंद हो गया।शायद लाईट चली गई थी। कमरे में अन्धेरा हो गया।कमरे में कोई खिड़की नहीं थी जिसे खोलकर मनोज प्रकाश की व्यवस्था कर सके। दरवाजा पहले से खुला था। मकान के इस हिस्से में सूरज की रोशनी बिलकुल नहीं आ रही थी। मनोज ने पास रखी मोमबत्ती जला दी। मनोज अपनी बात पांडे से कह चुका था अब वह पांडे से कुछ सुनने की उम्मीद में बैठा था।

"तुम माने नहीं मनोज तुमने लाइब्रेरी छोड़ ही दी।" - कुछ देर पहले छाई चुप्पी को तोड़ते हुए पांडे ने मनोज से कहा ।

"मुझे संतुष्टि हैं कि मैंने लाइब्रेरी छोड़ दी पर अपना सिद्धांत नहीं छोड़ा। ईमानदारी की रक्षा अभाव सहकर भी होनी चाहिए। - पांडे ने अचानक मनोज की आवाज में भारीपन महसूस किया ,पांडे ने देखा की मनोज एकटक जलती हुई मोमबत्ती को देख रहा था।

"पर अब तुम इस अँधेरे में पीएससी की तैयारी कैसे करोगे ?"-पांडे ने अँधेरे सीलन भरे कमरे को देखते हुए कहा।

"बाहर का अन्धकार समस्या नहीं है पांडे। समस्या तब होती है जब हमारा मन सुविधाओं के लालच में समझौतों के अन्धकार में डूब जाता है ।" – मनोज ने किसी गहरी भीतरी आवाज में पांडे से कहा ।
बाहर गुजरने वाली नेरो गेज ट्रेन का शोर सुनाई दे रहा था। पांडे को प्यास लग आई थी उसने पास रखे मटके में से एक ग्लास पानी भरकर पी लिया और वापस आकर स्टूल पर बैठ गया। कुछ देर स्टूल पर बैठे बैठे जब पांडे को बात करने के लिये कोई विषय नहीं सूझा तो उसने मनोज से कहा –"मनोज मैं अब चलता हूँ।"

पांडे और मनोज बाहर आ गये। पांडे ने मकान की दीवार से टिकी अपनी साइकिल उठाई और साइकिल पर बैठने से पहले कुछ देर रुककर मनोज को देखता रहा। मनोज ने अपने पिचके हुए गालों को छुपाने के लिए दाढ़ी बढ़ा ली थी, उसका गोरा रंग हल्का पीला हो गया था, उसकी आँखें अंदर को धंस गईं थी। कुछ देर और पांडे का साथ मिलने के लालच में मनोज पांडे के साथ साथ गली के मोड़ तक जाने लगा। पांडे भी साइकिल पर न बैठकर पैदल ही साइकिल लिए मनोज के साथ साथ चलने लगा।

गली का मोड़ आ गया । मनोज ने पांडे से कहा –"आते रहा करो पांडे ,तुम्हारे आने से अच्छा लगता है ।"

पांडे कुछ सोचता हुआ अपनी साइकिल पकड़े रहा। पांच छह सेकेण्ड उसी चिन्तन की अवस्था में साइकिल पकड़े रहने के बाद पांडे ने मनोज से कहा –"मनोज एक बात कहूं मानोगे?"

मनोज समझ गया कि घोसीपुरा और उसके कमरे का माहौल देखकर पांडे उसे फिर से लाइब्रेरी में नौकरी करने के लिए कहेगा।इसलिए उसने कहा –"मैं अब किसी भी कीमत पर लाइब्रेरी में नहीं जाउंगा ।"

पांडे ने मनोज की इस बात को लगभग अनसुना करते हुए अपनी बात जारी रखी –"मनोज मेरी अपने घर में पढ़ाई नहीं हो पा रही है। ए जी ऑफिस के पास एक पीलीकोठी है उसमें दस बारह कमरे है जिसमें पीएससी की तैयारी करने वाले लड़के किराए से रहते हैं। दतिया का मेरा दोस्त गुप्ता और जगमोहन भी वहां रहता है।

मैं सोच रहा हूँ एक कमरा किराए पर लेकर वहीं पीएससी तैयारी करूँ। तुम मेरे साथ पढ़ोगे तो मुझे लाभ होगा। क्या तुम मेरे साथ रहकर पढ़ाई करोगे?”

मनोज को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। उसे उम्मीद नहीं थी कि पांडे उसे इस तरह का कोई प्रस्ताव दे सकता है। इससे अच्छा प्रस्ताव इस समय उसके लिए दूसरा कोई हो ही नहीं सकता था। पांडे ने एक बार फिर उसकी जटिल समस्या का सरल समाधान निकाल दिया था।

मनोज ने पांडे से कहा –“पर मेरे पास किराए के पैसे तो नहीं है।”

पांडे ने साइकिल पर बैठते हुए कहा –“एक आदमी के खर्च में दो लोग आसानी से रह सकते हैं।”

इतना कहकर पांडे बिना मनोज का जवाब सुने अपनी साइकिल पर बैठकर चला गया।पांडे झूमता हुआ साइकिल चला रहा था मनोज तब तक पांडे को देखता रहा जब तक पांडे उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया।

21 .

पांडे ने पीली कोठी में कमरा ले लिया। दो मंजिला बिल्डिंग को पीली कोठी इसलिए कहा जाता है कि यह पीले रंग से पुती हुई थी। पीली कोठी में दस बारह कमरे थे जिनमें पीएससी की तैयारी करने वाले लड़के रहकर पढ़ाई करते थे। जिस कारण पीली कोठी में पढ़ाई का अच्छा महौल रहता था। मनोज घोसीपुरा से अपना सामान समेटकर पांडे के कमरे पर आ गया।

पीएससी की तैयारी के लिए जिस ग्रुप की तलाश मनोज को थी वह मिल गया। नवम्बर के पहले सप्ताह में पीएससी की प्रारम्भिक परीक्षा का नया विज्ञापन आ गया। पिछली बार ग्रेजुएशन के तुरन्त बाद दी गई पीएससी की प्रिलिम्स परीक्षा में वह् सफल नहीं हुआ था। उसने तय किया कि वह इस बार कोई कसर नहीं छोड़ेगा ।

उसने अपनी डायरी में लिखा-"पढ़ाई के लिए यहाँ बहुत अच्छा माहौल है इसलिए अब संकल्पित होकर पढ़ाई करना चाहिये । “

दो महीने मनोज और पांडे ने पीएससी प्रीलिम्स की अच्छी पढ़ाई की । परीक्षा के बाद प्रीलिम्स के रिजल्ट का इन्तजार किये बिना मनोज और पांडे मुख्य परीक्षा की तैयारी में जुट गये ।

दिलीप सोनी पीलीकोठी ग्रुप के पहले सदस्य थे जिन्होंने कुछ दिन पहले पीएससी का इंटरव्यू दिया था ।एक दिन दिलीप सोनी पीली कोठी में अपने कमरे पर पढ़ रहे थे तभी उनके पिता आ गये। दिलीप के पिताजी ने सूचना दी कि दिलीप डीएसपी पद के लिए पीएससी में चयनित हो चुके है अभी एक घण्टे पहले ही पिछले साल की परीक्षा का फाइनल रिजल्ट आया है। दिलीप इस ग्रुप के पहले विद्यार्थी थे जो पीएससी में सिलेक्ट हुए थे।

दिलीप के पिता जी ने भावुक होकर कहा - "हमे तो केवल पांच हजार पेंशन मिलती है। लला ने जब पीएससी की तैयारी शुरु की थी तब सब कहते थे कि पीएससी में लाखों रुपये रिश्वत देनी पड़ती है। पर देखो एक रुपया नहीं लगा और हमारे लला डीएसपी बन गए।”

ख़ुशी और सन्तुष्टि के कारण बाबूजी की आँखें भीग गईं थीं। बाबूजी इतना कहकर अपने किसी रिश्तेदार को खुशखबरी सुनाने चले गये।

मनोज ने दिलीप से पूछा - "भाईसाहब आप आज कैसा महसूस कर रहे है ?"

दिलीप ने मनोज से कहा - "मैं बहुत खुश हूँ। पर एक बात जरूर कहूँगा। इस पीलीकोठी में जितने लोग तैयारी कर रहे हैं,गारन्टी देता हूँ कि सभी लोग पीएससी में सिलेक्ट होंगे।”

पीलीकोठी के सदस्य जगमोहन, गुप्ता, मनोज और पांडे अपने भविष्य के सिलेक्शन की इतनी बड़ी गारन्टी पर बहुत खुश हुए। मनोज समझ गया कि सफल लड़के भी उन्हीं के बीच से आते हैं ।उसने खुशी के मारे दिलीप भाईसाहब के पैर छू लिये । दिलीप के सिलेक्शन से पूरी पीलीकोठी में जश्न का माहौल बन गया देर रात तक सभी लड़के आनन्द और आत्मविश्वास में डूबे भविष्य की सफलता पर चर्चा करते रहे ।

मनोज और पांडे ने इसबार पीएससी प्रिलिम्स की परीक्षा गम्भीरता से दी थी। पर तीन महीने बाद आये रिजल्ट में मनोज और पांडे का प्रिलिम्स क्लियर नहीं हुआ।पीली कोठी में अच्छी मेहनत के बाद भी मनोज असफल हो गया ।मनोज को लगा जैसे वह बर्बाद हो गया है। उसकी सारी मेहनत बेकार चली गई।मनोज ने इस प्रीलिम्स की चार पांच महीने मेहनत से तैयारी की थी लेकिन वह प्रीलिम्स क्लियर नहीं कर पाया ।वह गहरी निराशा से भर गया । चार पांच दिन उसे होश नहीं रहा । वह अपनी कमियाँ ढूंढता रहा ।

सुदीप की यह प्रीलिम्स क्लियर हो गई थी उन्होंने जब मनोज को दुखी देखा तो समझाया -"मनोज पीएससी की तैयारी में इस तरह की असफलता स्वाभाविक है, लेकिन तुम्हें असफलता से घबराना नहीं है। बस यह बता लगाना है कि असफलता का क्या कारण है? कारण हमेशा एक ही निकलेगा कि हमारी

पढ़ाई में कमी रह गई है । तुम्हें फिर से मेहनत का संकल्प लेना है ,फिर अपनी कमियाँ पहचानकर उन्हें दूर करना है । हमेशा जूझते रहना है तभी सफलता मिलेगी । "

सुदीप का प्रेरक उद्बोधन सुनकर मनोज का दुःख कुछ कम हुआ । वह यह भी समझ गया था कि पीएससी की राह उतनी आसान नहीं है जितनी वह समझ रहा था। उसके पास अब पुरानी असफलता को भूलकर आगे की पढ़ाई करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

22 .

मनोज के पिता पर हाईकोर्ट ने कृपा कर दी और उन्हें बहाल कर दिया। मनोज के पैसे की समस्या अब कम हो गई। प्रीलिम्स में फेल होने के बाद उसने इस साल फिर से अच्छी मेहनत कर ली थी, उसे उम्मीद थी कि इस साल वह प्रीलिम्स जरूर क्लियर कर लेगा।हर साल नवम्बर तक आने वाला पीएससी का विज्ञापन इस साल नवम्बर खत्म होने तक नहीं आया। विज्ञापन न आने के कारण तैयारी करने वाले लड़कों की बेचैनी बढने लगी। एक दिन अचानक अखबार में पढ़ने को मिला कि सरकारी खर्चे में कटौती करने के लिए इस साल मध्य प्रदेश में पीएससी की परीक्षा आयोजित नहीं होगी। पूरे प्रदेश में पीएससी की तैयारी करने वाले लड़के लड़कियों के लिए यह बुरी खबर थी। पीली कोठी में भी निराशा का वातावरण छा गया ।

पीली कोठी के लड़के मनोज के कमरे पर आज की इस खबर से दुखी बैठे थे और भविष्य की प्लानिंग पर बात कर रहे थे।

जगमोहन ने कहा –"जब पीएससी की परीक्षा ही आयोजित नहीं होगी तो कितना भी पढ़ लो उससे होगा क्या ? मैंने तो तय कर लिया है मैं अपने पिता का ट्रांसपोर्ट का बिजनिस सम्हालूँगा।

दतिया का गुप्ता दुखी स्वर में बोला –" मेरी पहली प्रीलिम्स क्लियर हो गई थी पर उसके बाद दो प्रीलिम्स क्लियर नहीं हुई।लेकिन इस बार तो मेरी तैयारी ऐसी हो गई है कि दिलीप भाईसाहब जैसी डीएसपी की पोस्ट मुझे जरूर मिलती पर जब परीक्षा ही नही होगी तो पोस्ट कहाँ से मिलेगी ?-बडबोले गुप्ता ने अपनी तैयारी को बढ़ा चढ़ा कर बताया।

पांडे ने निराश माहौल में उम्मीद की राह दिखाई –" जहां चाह वहां राह, हमें अब उत्तर प्रदेश और राजस्थान पीएससी की तैयारी करना चाहिए।"

गुप्ता ने पांडे की बात काटते हुए कहा – “तुम कुछ नहीं जानते पांडे, दूसरे स्टेट वालों का यूपी और राजस्थान में सिलेक्शन नहीं होता। इंटरव्यू में दो सौ में से तीस नम्बर देकर भगा देते हैं।”

प्रतियोगी लडकों को बहुत ढूँढने पर भी आगे की तैयारी की कोई राह नहीं दिख रही थी।

मनोज ने निराश होकर कहा –“हम लोग अब क्या करें समझ नहीं आ रहा।”

सुदीप भी इस महत्वपूर्ण चर्चा में सम्मिलित हो गये।

सुदीप ने कहा –“तुम लोगों को अब आईएएस पर ध्यान देना चाहिए। राज्य लोकसेवा का अब कोई भविष्य नहीं दिख रहा, इसलिए संघ लोकसेवा पर फोकस करो ।”

आईएएस, आईपीएस,इनकम टेक्स और दूसरी अखिल भारतीय और सेन्ट्रल सर्विस के लिए संघ लोकसेवा योग दिल्ली परीक्षा आयोजित करता है । पर मध्य प्रदेश पीएससी की तैयारी करने वालों के लिए आईएएस आईपीएस की तैयारी करना दिवास्वप्न के समान ही था । सब जानते थे कि आईएएस या आईपीएस बनने का स्टेंडर्ड उन लोगों का नहीं है ।सुदीप का सुझाव वहां बैठे सब लड़कों को अपनी पढ़ाई के स्तर से बहुत आगे का लगा ।

आईएएस की परीक्षा पास करना गुप्ता की कल्पना से ही बाहर था, उसने सुदीप से कहा -"सर आईएएस, आईपीएस तो बहुत कठिन है। उसकी तो कभी प्री भी नहीं निकलेगी। मेहनत करके पीएससी में तो कहीं लटक सकते थे पर आईएएस में होना तो नामुमकिन है।” कुछ देर पहले डीएसपी बनने का दावा करने वाला गुप्ता अब वापस पीएससी में लटकने की बात करने लगा ।

पांडे ने सुदीप को ही आइना दिखा दिया –“आपने भी तो आईएएस की मुख्य परीक्षा तीन बार दी थी पर एक बार भी इंटरव्यू तक नहीं पहुँच पायें।”

सुदीप ने लड़कों को प्रेरित किया- “मैं लास्ट अटेम्प्ट में केवल छह महीने ही दिल्ली के जिया सराय में रहकर पढ़ा। मैं जानता हूँ कि यदि तुम लोग दो साल दिल्ली में आईएएस की कोचिंग करोगे तो आईएएस कोई बहुत कठिन नहीं है। वहां कोई आसमान से लड़के नहीं आते।

मनोज का खोया आत्मविश्वास सुदीप की बातें सुनकर लौट आया, उसने अपने भीतर जोश को महसूस किया और सुदीप से कहा –“ यह सपना नौकरी पाने का सपना नहीं है, खुद को साबित करने का सपना है। रास्ता जो हमने चुना है उसी पर चलकर हमें स्वयं को साबित करना है। भय, आशंका, तो लड़ाई में रहती ही है वह नहीं रहे तो लड़ाई कैसी? इसलिए अब कुछ भी हो जाए मैं आईएएस प्रीलिम्स की परीक्षा देकर दिल्ली

कोचिंग करने जाउंगा। इस दुनिया की कोई ताकत मुझे सफल होने से नहीं रोक सकती।” मनोज ने पता नहीं कहाँ से अपने भीतर ताकत भरी और उस ताकत के प्रभाव से एक मजबूत संकल्प सभी लडकों के सामने ले लिया।

गुप्ता ने मनोज की हँसी उड़ाते हुए कहा उस पर व्यंग्य किया –“एमपी पीएससी की प्रीलिम्स कभी क्लियर नहीं हुई, चले आईएएस आईपीएस की परीक्षा क्लियर करने हुंह !दिन में सपने देखना छोड़ दो मनोज। आईएएस आईपीएस हम जैसे गाँव के सरकारी हिन्दी मीडियम के लड़कों के लिए बनना असम्भव है। एमएलबी कालेज से कितने निकले हैं आजतक आईएएस आईपीएस? जीरो। आइआइटी, दिल्ली, इलाहबाद यूनिवर्सिटी जैसी जगह से ही निकलते हैं आईएएस आईपीएस।”

गुप्ता की नकारात्मक बात पर ध्यान दिए बिना मनोज ने उत्साह से कहा –“ कुछ भी हो, तुम सब देखना मेरी पहली बार में आईएएस प्रीलिम्स क्लियर होगी और मैं मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिए दिल्ली जाउंगा।” निराशा के वातावरण में मनोज ने हिम्मत और उम्मीद को नहीं छोड़ा।

गुप्ता नही माना उसने अपनी बात जारी रखी –“ग्वालियर का लड़का आईएएस का प्रीलिम्स ही निकाल ले यही बड़ी बात है। ख्याली पुलाव मत पकाओ मनोज। सुदीप जी तो सीनियर हैं वे ही बता दें ग्वालियर के कितने लोग प्रोपर आईएएस आईपीएस बन गये हैं। ”
गुप्ता की बात सुनकर सुदीप ने ग्वालियर के कुछ लड़कों के नाम याद किये जो आईएएस या आईपीएस बने हों पर उन्हें कोई नाम याद नहीं आया। लेकिन सुदीप फिर भी अपनी बात पर टिके रहे –“अब तक नहीं बने तो अब बनेंगे और आप लोग ही शुरुवात करेंगे।हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा। ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है जो खुद हिम्मत करते हैं। “- सुदीप ने पीलीकोठी के निराश लड़कों को प्रोत्साहित करने की कोशिश की।
आईएएस प्रिलिम्स की तैयारी कैसे करते हैं? उसके लिए किताबें एवं उन्हें पढ़ने के तरीके सुदीप से मनोज ने समझ लिए।अब मनोज पीली कोठी में पांडे के साथ आईएएस प्रीलिम्स की तैयारी करने लगा। चार महीने सुदीप के बताये गए तरीके से उसने आईएएस प्रिलिम्स की तैयारी जमकर की और मई में आईएएस प्रीलिम्स की परीक्षा दे दी। उसने अपनी डायरी में लिखा- "आईएएस प्रिलिम्स अच्छा हुआ है। मैं पूरी ताकत से मुख्य परीक्षा की तैयारी करना चाहता हूँ। लेकिन पैसा फिर प्रॉब्लम करेगा। इतना पैसा कहाँ से आयेगा?"

“आईएएस प्रीलिम्स परीक्षा से मुख्य परीक्षा तक लगभग पांच महीने का वक्त मिलता है। यह पांच महीने प्रतियोगी के लिए सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। प्रीलिम्स के रिजल्ट के इन्तजार में यह दो महीने बर्बाद नहीं किये जा सकते। आदर्श तरीका यही है कि प्रीलिम्स परीक्षा के तुरंत बाद बिना उसके रिजल्ट का इन्तजार किये मुख्य परीक्षा की तैयारी में जुट जाया जाये।” मनोज ने जब सुदीप की यह सलाह सुनी तो उसने दिल्ली

जाने का निर्णय ले लिया। पांडे ने डर और कम तैयारी के कारण आईएएस प्रीलिम्स की परीक्षा नहीं दी थी । लेकिन भविष्य की तैयारी के लिए पांडे भी मनोज के साथ दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गया।

दिल्ली के लिए पैसा एकत्र करना मनोज की बड़ी समस्या थी। मनोज ने दिल्ली जाने के लिए पैसों की उम्मीद से अपने पिता को फोन किया।

पिता ने मनोज से कहा- “वे अब मेरो रुको पैसा ना दे रए,डिप्टी डायरेक्टर को तो मैं देख लेंगों।ऐसी जगह फसाओंगो के याद रखेगो।”

सस्पेंशन के समय पिता का मुख्यालय डिंडोरी से झाबुआ कर दिया था पर पिता एक जगह टिके रहने की अपनी आदत के कारण झाबुआ नहीं गये थे।इस कारण डिप्टी डायरेक्टर ने उनके सस्पेंशन का एक साल का आधा वेतन भी रोक लिया था। मनोज ने अपनी माँ से दिल्ली जाने के लिए दस हजार रुपये मांगे, माँ ने किसी तरह जेवर गिरबी रखकर पंडित कालीचरण से रुपये उधार लेकर मनोज को दे दिए ।

23 .

मनोज और पांडे सपनों और उम्मीदों से भरी दिल्ली पहुँच गये। निजामुद्दीन स्टेशन से किंग्सवे कैंप ऑटो से और वहां से रिक्शे से मुखर्जीनगर। बोरियों में किताबें भरे। दोनों रिक्शे में बैठे उत्सुकता और कौतूहल से मुखर्जी नगर में जगह जगह लगे आईएएस कोचिंग सेंटर के बोर्ड देख रहे थे।आईएएस की परीक्षा में सफल हो चुके प्रतियोगियों के फोटो लगे होर्डिंग देखकर दोनों अचम्भित हुए जा रहे थे।मुखर्जी नगर आने वाला हर स्टूडेंट इसी उम्मीद और सपने को पाले हुए यहाँ आता है कि कभी वह भी सफल होगा और उसकी तस्वीर भी होर्डिंग पर लगेगी। पर कौन सफल होकर अपना सपना पूरा करेगा और कौन असफल होकर वापस यहाँ से चला जाएगा? कोई नहीं जानता। साल में चार पांच सौ लोग ही तो सफल होंगे क्योकि उतने ही पद हर साल निकलते हैं । लेकिन परीक्षा देने वाले तो हजारों लाखों में हैं। बाकी का क्या? वे तो अपने सारे अटेम्प्ट पूरे करके असफल और निराश होकर वापस चले जाते हैं। पर असफलता का अनुपात ज्यादा होने के बावजूद उम्मीद तो नहीं छोड़ी जा सकती। बिना संघर्ष के हार भी तो नहीं मानी जा सकती। इसलिए असफलता और हार की आशंकाओं को भुलाकर जीत के संकल्प को लिए हजारों स्टूडेंट हर साल मुखर्जी नगर आते हैं। मुखर्जी नगर दिल्ली शहर की एक सामान्य कॉलोनी न रहकर सकारात्मक ऊर्जा और ज्ञान से भरे देश के तमाम युवाओं की कर्म भूमी बन गई हैं । परीक्षा की तैयारी करने वालों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है मुखर्जी नगर। मनोज के मन में मुखर्जी नगर के प्रति एक पवित्र अहसास सा भर गया।

आश्चर्य,उत्सुकता से मुखर्जी नगर को देखता हुआ मनोज सम्मोहित हुआ जा रहा था। कोचिंग के बाहर,चाय जूस की दुकानों के सामने तैयारी करने वाले लड़के लड़कियाँ खड़े हुए थे। कुछ लड़के किताबों की दुकान पर पत्रिकाएँ पलट रहे थे। कोई प्रीलिम्स के पेपर में आये किसी प्रश्न के सही उत्तर को जानने के लिए आपस में बहस कर रहा था, कोई हाल ही में घटित किसी समसामयिक घटना पर चर्चा कर रहा था। पूरा मुखर्जीनगर जैसे पढ़ाई में डूबा हुआ था। मनोज को पढ़ाई का यह माहौल देखकर अद्भुत खुशी हो रही थी। पढ़ाई का ऐसा माहौल उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसने महसूस किया कि अभी तक वह व्यर्थ ही ग्वालियर में अपना समय नष्ट कर रहा था। पहली बार वह सही जगह आया है।

मनोज और पांडे ने मुखर्जी नगर से लगे हुए नेहरू विहार के सी ब्लॉक में कमरा किराए से ले लिया। नेहरुविहार मुखर्जी नगर से कम समृद्ध बस्ती थी। संकरी गलियों में तीन चार मंजिलों के मकान पूरे नेहरुविहार में फैले हुए थे।नेहरु विहार में कमरे मुखर्जी नगर से सस्ते थे इसलिए कम पैसा खर्च करने वाले लड़के नेहरू विहार में रहते थे।

मनोज मुख्य परीक्षा के लिए हिन्दी साहित्य की कोचिंग करना चाहता था। दिल्ली आने के कुछ दिन पहले पीएससी की उस परीक्षा का रिजल्ट आया था जिसकी प्रीलिम्स मनोज क्लियर नहीं कर पाया था ।सुदीप उसमें डिप्टी जेलर बन गये थे। बुन्देला नाम का लड़का उस परीक्षा में पूरे प्रदेश में दूसरे स्थान पर आया था ।एक पत्रिका में दिए अपने इंटरव्यू में उस लड़के ने हिन्दी साहित्य में आये अपने अधिक नम्बर का श्रेय दृष्टि कोचिंग में पढ़ाने वाले विकास दिव्यकीर्ति सर को दिया था। इस कारण मनोज विकास सर के यहाँ हिन्दी साहित्य की कोचिंग करना चाहता था ।

सात हजार फीस जमा करके मनोज ने विकास सर की कोचिंग में एडमीशन ले लिया। पांडे अपने आपको हिन्दी का विद्वान् मानता था इसलिए उसने विकास सर के यहाँ कोचिंग न करने का फैसला लिया। हिन्दी साहित्य की दृष्टि कोचिंग बत्रा सिनेमा के पीछे एक बिल्डिंग के बेसमेंट में लगती थी। केबिन में कोचिंग की डायरेक्टर वर्मा मैडम बैठती थी। उसके भीतर एक बड़ा हॉल था जिसमें विकास दिव्यकीर्ति सर क्लास लेते थे।

मनोज की पहले ही दिन कुछ लड़कों से बात हुई जो क्लास के बाहर खड़े थे और कोचिंग में कुछ दिन पहले से आ रहे थे। ये लड़के देश के कोने कोने से यहाँ पढ़ने आये थे। कुछ लड़के अपने राज्य की पीएससी में पहले ही सिलेक्ट हो चुके थे। वे अब यहाँ आईएएस या आईपीएस बनने आये थे। कुछ लड़के लडकियां दो दो तीन तीन बार आईएएस का इंटरव्यू दे चुके हैं। प्रीलिम्स परीक्षा पास करके मुख्य परीक्षा देने वाले तो तमाम लड़के मनोज को मिल गये। ग्वालियर में तो मुश्किल से कोई आईएएस की प्रीलिम्स क्लियर कर

पाता है और यहाँ तो इंटरव्यू दिए लड़कों की भरमार है । आश्चर्य और खुशी के साथ साथ मनोज के मन में घबराहट भी हो रही थी। क्या वह इतने योग्य और पहले स्टेट सर्विस में सिलेक्ट लड़कों से कॉमपीट कर पायगा? उसे लगा कि इन लोगों के सामने वह कुछ भी नहीं हैं। वह ट्वेल्थ फेल का कलंक लिए यहाँ आया है और यहाँ सब उद्भट विद्वान और सफल लोग। पता नहीं वह कैसे टिक पायगा इन लोगों के बीच?

एक महीना हो गया मनोज को विकास सर की क्लास में जाते हुए। अजीब सा आकर्षण था विकास सर के पढ़ाने में। क्लास के सभी लड़के लड़कियां उन्हें मन्त्रमुग्ध होकर सुनते थे। विकास सर ने अब तक पढ़ाये गये सिलेबस का टेस्ट लेने की घोषणा की ।

क्लास खत्म होने पर जब मनोज क्लास के बाहर गया तो कुछ लड़के चाय की दुकान पर झुण्ड में खड़े थे और तीन दिन बाद होने वाले टेस्ट के बारे में चर्चा कर रहे थे।मनोज भी उनके साथ खड़ा हो गया ।

एक लड़के ने कहा –"हिन्दी साहित्य में विकास सर ने जिसका लिखा हुआ पसंद कर लिया समझो वह जरूर आईएएस या आईपीएस बनेगा। पिछले साल दीपेन्द्र नाम के लड़के के बारे में विकास सर ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि यह आईएएस या आईपीएस बनेगा और उसी साल दीपेन्द्र आईएएस बन गया। "

एक दूसरा लड़का कट चाय पीते हुए बोला –"तो विकास सर इस साल मेरे बारे में घोषणा करेंगे। मैंने जयशंकर पसाद पर कम से कम पांच किताबें पढ़ी हैं। मैं प्रसाद पर ऐसा उत्तर लिखूंगा कि विकास सर को भी लगेगा कि ऐसा धुरंधर कौन आ गया उनकी क्लास में? "

इसके साथ ही उस लड़के ने प्रसाद की 'कामायनी' कविता सुनानी शुरु कर दी ।लड़का तब तक कविता सुनाता रहा जब तक उसके साथ वाले लड़के ने उसे रोका नहीं । मनोज को इस कविता की शुरुवाती चार पांच पंक्तियाँ ही याद थी। एक लड़के के मुंह से इतनी लम्बी कविता सुनकर मनोज आश्चर्यचकित रह गया ।

पूर्वी उत्तर प्रदेश से दिल्ली तैयारी करने आये एक लड़के ने इलाहबाद को याद करते हुए कहा –"कोई कुछ भी कहे। मैं ताराचंद होस्टल में था तब से संजीऊ जी को जानता हूँ। एम ए हिन्दी गोल्ड मेडलिस्ट है यह आदमी।वह भी इलाहबाद यूनिवर्सिटी से।ये टेस्ट टॉप न करे तो मेरा नाम बदल देना।" साथ में खड़े संजीऊ जी केवल मंद मंद मुस्कुरा रहे थे।अपनी प्रशंसा के बदले में उन्होंने प्रशंसा करने वाले लड़के के चाय के पैसे अदा कर दिए।

एक लड़के ने अलग राग अलापा –"मुझे तो लगता है कि टेस्ट में राहुल रुसिया टॉप करेंगे। यूपी पीएससी में दो बार सिलेक्ट हो चुके हैं,एक बार ट्रेड टेक्स में और दूसरी बार डीएसपी बने। दोनों बार हिन्दी में बम्पर

नम्बर पाए थे।" राहुल रुसिया ने अपनी लम्बी बाहें हवाई जहाज के डैनों जैसी फैलाकर अपने समर्थक को गले लगा लिया ।

मनोज ऐसे उद्भट विद्वानों को देखकर घबरा गया। इनके सामने वह कहीं नहीं ठहरता। वह समझ नहीं पा रहा था कि इन लड़कों जैसा योग्य और विद्वान् बनने के लिए कितना और कब तक पढ़ना पड़ेगा? विद्वान् और पूर्व से सिलेक्ट लड़कों के सामने अपनी कमजोर स्थिति से निराश वह अपने कमरे की ओर चल दिया।

मनोज जानता था कि मुख्य परीक्षा में पास होने के लिए हिन्दी में अच्छे नम्बर लाना जरुरी है इसलिये वह विकास सर के टेस्ट को बहुत गम्भीरता से देना चाह रहा था,यदि इस टेस्ट में अच्छे नम्बर आ जाते हैं तो वह समझ जाएगा कि उसकी पढ़ाई की दिशा और लेखन शैली आईएएस मुख्य परीक्षा के लिए एकदम सही है ।कमरे पर पहुँच कर उसने पांडे को अपने मन की इच्छा बताई।

हिन्दी के विद्वान् पांडे ने मनोज को ज्ञान दिया –"तुम्हें यदि टेस्ट में अच्छे नम्बर लाना है तो सबसे अलग लिखना पड़ेगा, भाषा शैली इतनी खतरनाक और आतंकित करने वाली हो कि कॉपी चेक करने वाला हैरान रह जाए और उसे आपका उत्तर दो तीन बार पढ़ना पड़े, जब तक वह आपको विद्वान् नहीं मानेगा अच्छे नम्बर नहीं देगा। "

इतना कहकर पांडे ने निराला पर लिखीं पांच छह किताबें मनोज के सामने रखी और बोला –"इन किताबों में निराला की कविताओं पर बहुत गहराई से लिखा है, इन्हें अपना बेस बनाओ। रामविलास शर्मा, दूधनाथ सिंह, सूर्य प्रसाद दीक्षित ,जैसे विद्वान् लेखकों की किताबें मनोज के सामने थी।

मनोज ने किताबों को देखकर कहा –"ये किताबें मैंने पढ़ीं हैं,बहुत श्रेष्ठ लिखा है।पर इनसे प्रश्नों के उत्तर कैसे लिखें जायेंगे? दो दो सौ पेज की इन किताबों से छह सौ शब्दों का उत्तर लिखना बहुत कठिन काम है। "

ज्ञान के इन अमृत कुंडों में से कौन से अमृत बिन्दुओं को लेकर अपना उत्तर लिखना चाहिए यह मनोज को समझ नहीं आ रहा था ।वह अब कन्फ्यूज़न की स्थिति में था। उसने एक किताब उठाई और पढ़ने लगा। एक घंटा पढ़ने के बाद वह समझ गया कि इन किताबों से ज्ञान तो बढ़ाया जा सकता है पर परीक्षा के प्रश्न का सटीक उत्तर लिखना मुश्किल है।

उसने किताबें वापस रख दीं। कुछ देर बाद उसने विकास सर के क्लास नोट्स उठा लिए और उन्हें पढ़ने लगा। चूंकी उसने क्लास में विकास सर के लेक्चर भी सुने थे इसलिए वह नोट्स उसे अच्छे से समझ आ रहे थे। जटिलता नहीं थी उनमें।सरल भाषा में और विस्तार से विकास सर ने टॉपिक समझाया था। मनोज ने तय किया कि वह इन्हीं नोट्स को टेस्ट के लिए पढ़ेगा।

टेस्ट हो गया। टेस्ट के अगले दिन अगले दिन विकास सर ने क्लास में पूछा –"मनोज कुमार शर्मा कौन है? मनोज ने अपना हाथ उठाया।

विकास सर ने कहा –"इस लड़के में आईएएस एग्जाम क्लियर करने की क्षमता हैं, टेस्ट में इसके सबसे ज्यादा नम्बर आये हैं।"

मनोज को अपने कानों पर भरोसा नहीं हुआ। उसके उत्तर इतने अच्छे कैसे हो सकते हैं कि विद्वानों से भरी क्लास में वह टॉप कर सके? क्या उसने सच में सबसे अच्छा लिखा है? इलाहबाद के उद्भट विद्वानों से भी अच्छा? स्टेट सर्विस में सिलेक्टेड लड़कों से भी बेहतर? मनोज आज पूरी क्लास में हीरो बन गया। सभी लड़के लड़कियां उसकी तरफ देख रहे थे। उसने अपने जीवन में ऐसा दृश्य पहले कभी नहीं देखा था। विकास सर की प्रशंसा पाने के लिए क्लास के सभी लड़के लड़कियों में होड़ लगी रहती थी। विद्यार्थियों की तारीफ़ करने में कंजूसी बरतने वाले विकास सर ने उसकी भरपूर तारीफ़ की थी। जिस कारण वह आज क्लास में सभी के आकर्षण का केंद्र बन गया। वह जब क्लास से निकला तो कुछ लड़कियों ने उसे घेर लिया।

लड़कियों को उसमें भविष्य का आईएएस या आईपीएस दिखाई दे रहा था। लड़कियाँ उससे बहुत कुछ पूछना चाहती थीं।

"आपने इतने अच्छे उत्तर कैसे लिखे? आप किस लेखक की किताब पढ़ते हैं? आप कहाँ के रहने वाले हैं?" आप किस स्टेट में सिलेक्ट हो चुके हैं?" आपको आईएएस बनना पसंद है या आईपीएस?" आपका यह कौन सा अटेम्प्ट है?"

लड़कियों ने नये नये योग्य सिद्ध हुए मनोज पर प्रश्नों की बौछार कर दी। मनोज एक प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करता तब तक दूसरा प्रश्न दाग दिया दिया जाता और यह सब इतनी गति से हुआ कि वह एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया।उसे को उम्मीद नहीं थी कि वह एक ही महीने में दिल्ली में अपनी ऐसी मनमोहक पहचान बना लेगा। वह अभिभूत सा लड़कियों से घिरा खड़ा रहा। उसे उम्मीद नहीं थी कि एक टेस्ट में टॉप करने से उसे इतना सम्मान मिलेगा। क्या विकास सर के मूल्यांकन का इतना महत्व हैं? वह कोचिंग से अपने कमरे की ओर जाने लगा लगा तभी एक लडकी उसके के पास आई ।

उस लड़की ने मनोज के साथ चलते हुए कहा –"मेरा नाम सुप्रिया है मैं राजस्थान से हूँ, इसी साल इनकम टेक्स इंस्पेक्टर बनी हूँ । अब यहाँ आईएएस बनने आई हूँ ।"
लड़की मनोज की तारीफ करती हुई उसके साथ चलती रही। लड़की का होस्टल आ गया ,उसने मनोज से विदा ली -"अच्छा बाय ,कल मिलते हैं ।"

लड़की ने मनोज से मेलजोल बढ़ाने के संकेत दे दिए। मनोज आज फूला नहीं समा रहा था। हमेशा लोगों की नजर में श्रेष्ठ बनने की कोशिश करने वाले मनोज को लोगों ने वास्तव में श्रेष्ठ मान लिया था ।

उसने कमरे पर पंहुचकर कोचिंग में मिले नम्बरों का पूरा किस्सा पांडे को सुनाया। पांडे को उम्मीद नहीं थी कि मनोज क्लास में टॉप कर सकता है।

पांडे ने मनोज के उत्तर को सरसरी निगाह से देखा और पेपर पलंग पर लगभग फेंकते हुए कहा – "क्लास में इस तरह के आयोजनों को कोचिंग चलाने के हथकंडों के रुप में देखा जाना चाहिए, आप व्यर्थ ही खुश हो रहे हैं। आपके उत्तर सामान्य हैं, मुझे इनमें कोई विशिष्ठता नजर नहीं आ रही ।"

पांडे के भीतर ईर्ष्या पैदा हो गई थी। पांडे खुद को हिन्दी का विद्वान मानता था और मनोज को हिन्दी का एक सामान्य विद्यार्थी। इसलिए पांडे आज उसकी उपलब्धि पर कुढ़ रहा था ।पांडे की नकारात्मक प्रतिक्रिया देखकर मनोज को दुःख हुआ,पर उसने पांडे से कुछ नहीं कहा वह फिर से अपने लिखे उत्तर पढ़ने लगा।

एक दिन क्लास में सुप्रिया ने मनोज से पूछा कि क्या वह उसे प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' समझा सकता है। मनोज उसका आग्रह वह टाल नहीं सका। दोनों मुखर्जी नगर के एक पार्क में बैठ गये। मुखर्जी नगर के इस पार्क की रंगत निराली थी। आसपास की कई बैंचों पर कई लड़के लड़कियां जोड़ों में बैठे हुए थे। कुछ आपस में बातें कर रहे थे ,कोई किसी किताब को संयुक्त रूप से पढ़ रहा था। एक जोड़ा एक दूसरे की आँखों में आखें डालकर बैठा हुआ था।मनोज के लिए पार्क का यह दृश्य एकदम नया और रोमांचित करने वाला था ।

लड़की ने मनोज को एक फाइव स्टार चॉकलेट दी। मनोज को समझ नहीं आया कि वह चॉकलेट खा ले या जेब में रख ले। वह चॉकलेट हाथ में पकड़ा रहे। लड़की के पास शायद समय का अभाव था,वह व्यर्थ समय बर्बाद नहीं करना चाहती थी इसलिए वह सीधे विषय पर आ गई। उसने अपने हाथ में पकड़ी 'कफन' कहानी की किताब साइड में बैंच पर रखकर मनोज से बोली –"मनोज मैं तुम्हें पसंद करने लगी हूँ ।"

इतना कहकर सुप्रिया की नजर पास की बैंच पर बैठे उस जोड़े पर चली गई जो एक दूसरे की आँखों में खोया हुआ था। अब उस जोड़े ने एक दूसरे के हाथ अपने हाथों में थाम लिए थे। मनोज को समझ नहीं आया कि वह लड़की की बात पर क्या प्रतिक्रिया दे ? वह अपनी नजरें लड़की से मिला नहीं पा रहा था। आज की चर्चा से उसने यही समझा कि यदि सब कुछ ठीक रहा तो लड़की की पसंद प्यार में बदल सकती है। सब ठीक से यहाँ मतलब उसके आईएएस या आईपीएस बनने से था। लड़की उसमें उम्मीदों वाला लड़का खोज रही थी। लडकी दिल्ली में आईएएस बनने आई थी, यदि वह खुद न बन पाए तो उसकी कोशिश एक आईएएस या आईपीएस प्रेमी ढूँढने की थी। लड़की ने उसके लिए अच्छी भूमिका बना ली थी ।

आईएएस प्रिलिम्स का रिजल्ट आ गया।मनोज और पांडे दोनों नेहरुविहार के एक साइबर कैफे रिजल्ट देखने पहुंचे। मनोज का दिल जोर जोर से धड़क रहा था। पांडे ने यह प्रीलिम्स नहीं दी थी इसलिए वह अविचलित था। मनोज ने इंटरनेट पर रिजल्ट देखा उसके जीवन की पहली प्रिलिम्स क्लियर हो गई।

मनोज की कोचिंग का समय हो गया था इसलिए प्रीलिम्स निकलने की ख़ुशी में वह् उत्साह और प्रसन्नता में लगभग दौड़ता हुआ कोचिंग की ओर चल दिया। कोचिंग के बाहर प्रीलिम्स में सफल हुए कई लड़के लड़कियां आपस में बातें कर रहे थे। ग्वालियर में बड़ी मुश्किल एक या दो लड़कों की आईएएस प्रीलिम्स निकलती है। यहाँ तो जिसकी देखो उसी की आईएएस प्रीलिम्स क्लियर हो गई है । अभी तक उसे प्रीलिम्स बहुत बड़ी उपलब्धि लग रही थी पर जब उसने देखा कि उसकी आधी क्लास की प्रिमिम्स क्लियर हो गई तो उसे समझ आ गया कि प्रीलिम्स तो केवल मुख्य परीक्षा देने का प्रवेश द्वार है, असली लड़ाई तो मुख्य परीक्षा में होगी । मनोज कोचिंग के अंदर पहुंचा तो पता चला कि प्रीलिम्स के रिजल्ट के कारण क्लास आज पन्द्रह मिनिट लेट लगने वाली है। मनोज फीस काउन्टर के पास ही खड़ा हो गया। कोचिंग की डायरेक्टर वर्मा मैडम एक लड़की को हिन्दी साहित्य के बारे में बता रही थी।

मैडम ने उस लड़की से पूछा –"आपने हिन्दी साहित्य पहले कभी पढ़ा है ?"

"नहीं।" –लड़की ने कहा

पास खड़े मनोज ने मैडम को नमस्ते किया तो मैडम ने भी मुस्कुराकर मनोज के अभिवादन का उत्तर दिया।

मैडम ने उस लड़की से कहा –"देखिये ये मनोज है, इसने पिछले टेस्ट में क्लास में टॉप किया है।" लड़की ने एक नजर मनोज को देखा और वापस वर्मा मैडम की ओर देखने लगी।

मैडम ने लड़की से कहा –"आप मनोज से कोचिंग की पढ़ाई के बारे में बात कर सकती हैं ,एक महीने में मनोज के लेखन में बहुत सुधार हुआ है।"

फिर मैडम ने मनोज अपनी बात की पुष्टि करानी चाही – "क्यों मनोज मैं ठीक कह रही हूँ ना।"

"जी मैडम।" -मनोज ने उत्तर दिया। मनोज को वास्तव में विकास सर की कोचिंग के कारण हिन्दी साहित्य में गुणात्मक परिवर्तन नजर आ रहा था।

“मेरा नाम श्रद्धा है, मैं अल्मोड़ा की रहने वाली हूँ। आज ही दिल्ली आई हूँ। मैंने हिन्दी साहित्य पहले कभी नहीं पढ़ा। कैसी है यह कोचिंग? क्या मैं एकदम नया विषय कवर कर लूंगी? “-श्रद्धा के चेहरे पर एक नये विषय का खौफ साफ़ नजर आ रहा था। विकास सर के यहाँ कोचिंग करने का उसका निर्णय सही है इसका समर्थन वह एकदम अजनबी लड़के से चाह रही थी। मनोज कुछ देर तक श्रद्धा की उत्सुकता और उम्मीद में डूबी आँखों को देखता रहा।

मनोज ने अजनबी लड़की की शंका का समाधान किया –“विकास सर बहुत अच्छा पढ़ाते हैं, उन लोगों के लिए तो बहुत उपयोगी हैं जो हिन्दी में एकदम नये हैं।चिंता करने की कोई बात नहीं हैं तुमने सही निर्णय लिया है।”

क्लास का समय हो गया था। दोनों क्लास में साथ साथ बैठ गये।

विकास सर ने क्लास में आकर सबसे पहला प्रश्न किया –“प्रीलिम्स किस किस का क्लियर हुआ हैं?” मनोज के साथ साथ लगभग आधी क्लास ने हाथ खड़े कर दिए, विकास सर ने भीड़ को बधाई दी।

पास बैठी श्रद्धा ने मनोज से आश्चर्य से पूछा –“आपका प्रीलिम्स क्लियर हो गया?”

मनोज ने कहा –“जी।”

श्रद्धा ने आगे पूछा –“कौन सा अटेम्प्ट था?”

मनोज ने फिर उत्तर दिया –“पहला।”

आईएएस में केवल चार अटेम्प्ट देने को मिलते हैं ,ऐसे में पहले ही अटेम्प्ट में मनोज की प्रीलिम्स क्लियर होना उसे श्रद्धा की नजरों में योग्य बना रही थी क्योकि श्रद्धा के अल्मोड़ा की स्थिति भी ग्वालियर जैसी ही थी वहां भी आईएएस प्रीलिम्स निकालने वाले बिरले ही होते थे।

एक दिन शाम को मुखर्जी नगर में बत्रा सिनेमा के सामने मेरठवाला रेस्टोरेंट पर कोचिंग से फ्री हुए कुछ लड़के लड़कियां समोसे खा रहे थे। कुछ लोग चाय पी रहे थे । मेरठवाला से लगी हुई किताबों की दुकान पर खड़ा मनोज इस महीने आई प्रतियोगिता दर्पण खरीद रहा था ।

तभी उसने एक आवाज सुनी-“हैलो मनोज।”

मनोज ने पलट कर देखा तो सामने आसमानी रंग के सूट में श्रद्धा खडी थी। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी।

मनोज ने बातचीत का सिलसिला चलाया –"कहाँ कमरा लिया है आपने ?

"मुखर्जी नगर बारह सौ उनतीस में। -श्रद्धा ने कहा

"पढ़ाई कैसी चल रही है आपकी ?"–मनोज ने बात आगे बढाते हुए श्रद्धा से पूछा ।

"हिन्दी साहित्य उतना भी सरल नहीं है जितना लोग कहते हैं ,मुझे तो बहुत कठिनाई हो रही है। "–श्रद्धा ने उदास स्वर में पढाई की अपनी तकलीफ मनोज से कही ।

मनोज को लगा कि यह लड़की दिल्ली में पढ़ने वाली दूसरी लड़कियों से अलग हैं, उसे श्रद्धा सरल और पढ़ाई के प्रति चिंता करने करने वाली लड़की लगी।

श्रद्धा का होस्टल नेहरू विहार के पुल के पहले ही था। दोनों साथ साथ ही चलने लगे। दोनों के बीच एक दो मिनिट चुप्पी बनी रही ।मुखर्जीनगर से नेहरुविहार जाने वाले रास्ते में प्रकाश कम था। मनोज और श्रद्धा कम चहल पहल वाले अँधेरे रास्ते पर बढ़ रहे थे।

"शुरू में कोई भी नया विषय इसी तरह तकलीफ देता है पर कुछ महीनों में आपको हिन्दी साहित्य समझ आने लगेगा ।"-मनोज ने बातचीत आगे बढ़ाने के साथ साथ श्रद्धा के पढाई के तनाव को कम करने की भी कोशिश की ।

"पता नहीं । "- असमंजस में थी श्रद्धा । उसे तो हिन्दी साहित्य कठिन लग रहा था इसलिए मनोज की बात का समर्थन नहीं किया उसने ।
चुप्पी बनी रही कुछ देर तक दोनों के बीच । कुछ तो था इस लड़की में जो मनोज को बाँध रहा था।

चुप्पी खत्म हो इस उद्देश्य से उसने श्रद्धा से पूछा - "अच्छा तुम अब्बू खां की बकरी को जानती हो?"

बात बढ़ाने के उद्देश्य से पूछा गया यह अप्रासंगिक प्रश्न श्रद्धा को समझ में नहीं आया।प्रश्न का रहस्य समझने के लिए उसकी आँखें सामान्य से बड़ी हो गईं।

मनोज ने उसकी जिज्ञासा शांत करते हुए कहा–"हमारे यहाँ कक्षा पांच में अल्मोड़ा के 'अब्बू खां की बकरी' की कहानी कोर्स में चलती थी, तभी से अल्मोड़ा मेरे दिमाग में बसा है एक खूबसूरत पहाड़ी शहर।" मनोज को याद था कि श्रद्धा ने पहली मुलाक़ात में बताया था कि वह अल्मोड़ा की रहने वाली है । मनोज का उत्तर सुनकर श्रद्धा ने आश्चर्य व्यक्त किया–"क्या तुम्हें अब तक वह कहानी याद है ?"

“हाँ, मुझे वह कहानी आज भी याद है,याद कैसे न रहती? इतने सुंदर शहर की कहानी कोई भूल सकता है भला ?”-मनोज ने हंसते हुए श्रद्धा से कहा। इस सुंदर लड़की के नजदीक जाने के लिए उसने उसके सुन्दर शहर की तारीफ़ को आधार बनाया ।

मनोज की बात सुनकर श्रद्धा हँस दी। उसकी भरोसेमंद हँसी ने मनोज को उत्साहित कर दिया ।

मनोज श्रद्धा को जानना चाहता था इसलिए उसने कुछ प्रश्न श्रद्धा से पूछने शुरु किये –“श्रद्धा क्या तुम्हारे यहाँ बर्फ गिरती है? क्या तुम्हारे घर में कूलर पंखों की जरुरत पड़ती है? वहां तो इतनी ठंड पढती है कि कूलर पंखे की जरुरत ही नहीं पड़ती होगी? तुम दिल्ली की भयानक गर्मी में कैसे रह लेती हो? तुम्हें तो इतनी गर्मी की आदत ही नहीं होगी? क्या पहाड़ों पर चढ़ते चढ़ते तुम थक नहीं जाती? क्या जब तुम्हारी बस पहाड़ों का गोल गोल चक्कर लगाकर आगे बढती है तो नीचे देखकर तुम्हें डर नहीं लगता?” मनोज बिना श्रद्धा के उत्तर की प्रतीक्षा किये ढेर सारे सवाल उससे पूछता रहा ।

श्रद्धा को मनोज के सारे प्रश्न रुचिकर लग रहे थे, उसके शहर के बारे यह लड़का कल्पना मात्र से कितनी सारी बातें कर रहा है।सुनसान रास्ते से श्रद्धा अपने बारह सौ उनतीस नम्बर के होस्टल की ओर जाने लगी।श्रद्धा को अभी भी मनोज के प्रश्न लगातार उस सुनसान रास्ते में सुनाई दे रहे थे। जिनके उत्तर श्रद्धा नहीं दे पाई थी ।

मनोज ने श्रद्धा के साथ अधिक समय बिताने के लालच में बंधकर श्रद्धा से पूछा –“क्या मैं तुम्हारे होस्टल तक तुम्हें छोड़ दू ?”

श्रद्धा ने हाँ में अपनी गर्दन हिला दी। मनोज ने श्रद्धा को उसके होस्टल तक छोड़ दिया और वापस मुड़कर तेज चाल नेहरुविहार के पुल की तरफ जाने लगा। आज मनोज ने अपने मन में अजीब सी खुशी को महसूस किया ।ऐसी ख़ुशी उसने अपने जीवन में पहली बार महसूस की थी, उसे लग रहा था कि इस लड़की के मौन में एक भरोसा है और इसकी आँखों में अपनापन।उसका मन श्रद्धा के आसपास ही चक्कर लगा रहा था। अपने कमरे पर आने के बाद भी वह् श्रद्धा के ख्यालों में खोया रहा ।

एक दिन विकास सर की क्लास में घुसते हुए ही मनोज ने देखा कि सर के यहाँ साफ़ सफाई और पानी पिलाने का काम करने वाला लड़का बाहर स्टूल पर बैठा है और श्रद्धा जमीन पर बैठकर उसके पैर पर मरहम पट्टी कर रही है। दो तीन स्टूडेंट वहां खड़े यह दृश्य देख रहे हैं। पूछने पर वहीं खड़े एक लड़के ने बताया कि छोटू के पैर में चोट लग गई है और श्रद्धा अपने कमरे से फर्स्ट एड किट लाकर उसकी ड्रेसिंग कर रही है।

श्रद्धा ने कहा –"भैया ,चिंता मत करो ,दो दिन बाद पट्टी बदल दूंगी।"

लड़का इस दीदी को आश्चर्य से देख रहा था।श्रद्धा ने मनोज को देखा तो मुस्कुरा दी।पता नहीं क्यों श्रद्धा को इस तरह एक गरीब लड़के की मदद करते देख मनोज की आँखें भीग गईं ।

श्रद्धा ने मनोज को भावुक होते हुए देखा तो पूछा-"क्या हुआ मनोज? "

मनोज कुछ नहीं बोला, दोनों क्लास में चले गये।क्लास के बाद दोनों साथ साथ वापस जाने लगे। श्रद्धा के एक हाथ में उसका फर्स्ट एड किट था, दूसरे हाथ में किताबें। मनोज ने श्रद्धा के हाथ से किट ले लिया।

मनोज अपने आप को श्रद्धा की तारीफ़ करने से नहीं रोक सका –"श्रद्धा तुम बहुत सम्वेदनशील हो, जो उस लड़के की मरहम पट्टी कर रही थी।"

श्रद्धा को मनोज की तारीफ़ में कुछ अतिश्योक्ति लगी, उसने मनोज द्वारा की गई तारीफ़ को संतुलित करते हुए कहा –"नहीं मनोज मैं एक बीएएमएस डॉक्टर हूँ मेरा यह कर्तव्य था।"

मनोज ने अपने अतीत की किसी तकलीफ को याद करते हुए कहा –"श्रद्धा कुछ डॉक्टर ऐसे भी होते हैं जो पैसा न होने पर किसी बुखार से तपते लड़के को अपने क्लीनिक से भगा देते हैं। इस दुनिया में तुम जैसे अच्छे लोग बहुत कम रह गये हैं।"

श्रद्धा को अपनी तारीफ़ सुनकर ऐसा लगा जैसे कि उसकी मेहनत का पुरस्कार उसे मिल गया हो । मनोज ने ग्वालियर के डॉक्टर जैन की घटना श्रद्धा को सुनाई। श्रद्धा ध्यान से वह घटना सुनती रही। उसका होस्टल आ गया। मनोज नेहरुविहार की ओर मुड़ गया, आज श्रद्धा अपने गेट पर खड़ी मनोज को जाते हुए देखती रही।उसने महसूस किया कि क्लास के इस योग्य लड़के के भीतर कोई अलग ही लड़का छिपा है जिसके बारे में अभी बहुत कुछ जानना है।

श्रद्धा से मिलने के बाद मनोज को इनकम टेक्स इंस्पेक्टर लड़की गणित के किसी जटिल सवाल सी लगने लगी थी । सफल होने पर प्यार हो जाएगा असफल होने पर प्यार कैसे कर पायेंगे? गणित में हमेशा फेल होने वाले मनोज का मन उससे दूर होने लगा ।साहित्य में रुचि रखने वाले मनोज के मन पर सरल कविता सी श्रद्धा असर करने लगी थी ।

उस लड़की को जब महसूस हुआ कि मनोज उसे इग्नोर कर रहा है तो उसने ज्यादा लोड नहीं लिया। मुखर्जी नगर में लड़कों की कमी नहीं थी, एक ढूंढों हजार मिलते थे। उसने उत्तर प्रदेश में डीएसपी पद पर सिलेक्ट

हुए राहुल रुसिया के साथ पार्क बैठना शुरु कर दिया। रुसिया हवाई जहाज के पंखों सी बाहें फैला फैला कर उससे पार्क में बैठा बैठा बातें करता रहता ।

विकास सर ने दस दिन के लिए निबन्ध की केप्सूल क्लास शुरु की। पांडे ने मनोज के साथ विकास सर की निबन्ध की क्लास ज्वाइन कर ली ।मनोज पांडे के साथ न बैठकर उसके आगे वाली पंक्ति में बैठी श्रद्धा के साथ बैठ गया। श्रद्धा के साथ उसका बैठना पांडे को अखर गया। वह् श्रद्धा से हँस हँस कर बात कर रहा था पर पीछे पांडे का चेहरा अपनी रंगत बदल रहा था। उसने जब पीछे मुड़कर देखा तो पांडे उसे घूर रहा था। पांडे को इस बात से कष्ट हो रहा था कि मनोज की दोस्ती एक लड़की से कैसे हो गई? मनोज ने जब पांडे को घूरते हुए देखा तो समझ गया कि मामला बिगड़ रहा हैं।

मनोज ने पांडे के गुस्से को कम करने के उद्देश्य से श्रद्धा का परिचय पांडे से कराते हुए कहा –"पांडे जी ये श्रद्धा हैं, इनका भी एक विषय हिन्दी है। बीएएमएस डॉक्टर हैं। बहुत योग्य हैं।"

मनोज ने श्रद्धा के व्यक्तित्व से पांडे को प्रभावित करने की कोशिश की जिससे वह श्रद्धा को अच्छा स्टूडेंट मानकर उससे चिढ़ना बंद कर दे। पर उस पर श्रद्धा की तारीफ़ का कोई असर नहीं हुआ।

पांडे ने अपनी सीट पर बैठे हुए अपनी आवाज को थोड़ा उंचा करते हुये मनोज से कहा –"मनोज जी श्रद्धा तो बहुत योग्य हैं,पर क्या आपने इन्हें बता दिया है कि आप ट्वेल्थ में फेल हो गये थे।"

मनोज का दिल धक से रह गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि पांडे उसे श्रद्धा के सामने इस तरह से बेइज्जत कर देगा। श्रद्धा ने पांडे का वाक्य सुन लिया।वह मनोज की तरफ देखने लगी। मनोज उससे नजरें चुरा रहा था। उसे श्रद्धा अच्छी लगने लगी थी। पता नहीं अब श्रद्धा उसके बारे में क्या सोचेगी? उससे दोस्ती रखेगी या उसे पढ़ाई में कमजोर मानकर मिलना बंद कर देगी?

क्लास शुरु हो गई। श्रद्धा पूरी क्लास में गम्भीर बैठी रही। श्रद्धा की इस गम्भीरता से मनोज आशंकित बना रहा।मनोज समझ गया था कि श्रद्धा अब उसे किसी तरह पसंद नहीं करेगी। पांडे अपना काम करके विकास सर द्वारा पढ़ाये जा रहे 'आर्थिक विकास और बाजारवाद' विषय पर बड़ी तल्लीनता से उनका लेक्चर सुन रहा था।

क्लास खत्म होने के बाद श्रद्धा ने मनोज से कहा -"क्या मैं आपसे दस मिनिट बात कर सकती हूँ।"

इस प्रश्न से मनोज घबरा गया, पता नहीं क्या बात करना चाहती है श्रद्धा? शायद श्रद्धा यही कहना चाहती है कि वह एक ट्वेल्थ फेल लड़के से कोई दोस्ती नहीं रखना चाहती। श्रद्धा भी तो किसी ऐसे लड़के से दोस्ती

करना चाहती होगी जिसका आईएएस या आईपीएस बनना तय हो? मनोज इसी उधेड़बुन में श्रद्धा के साथ साथ चलता रहा।

पांडे ने मनोज को श्रद्धा के साथ जाते हुए देखा तो उसने पीछे से आवाज लगाई – “मनोज जी रुकिये।” शायद पांडे के पास उससे कहने लिए के लिए और भी कुछ था।

पांडे की आवाज सुनकर वह वापस आ गया।

“मनोज जी आप दिल्ली पढ़ने आये हैं, ये प्रेमलीला बंद कीजिये। क्या तुम्हारी माँ ने इसीलिये जेवर गिरवी रखकर पैसे दिए दिए थे?” -पांडे ने उसे अपने विशिष्ठ तरीके से पढ़ाई के लिए प्रेरित किया।

मनोज को अभी भी पांडे पर गुस्सा आ रहा था पर उसने पांडे से अपना गुस्सा दबाते हुए बड़े विनम्र स्वर में इतना ही कहा –”पांडे श्रद्धा बहुत अच्छी लड़की है।”

इतना कहकर उम्मीद और नाउम्मीदी के भंवर में डूबता उतराता मनोज श्रद्धा के पास पंहुँच गया। मुखर्जीनगर में जूस की दुकान के नजदीक पहुंचकर श्रद्धा ने उससे पूछा–“क्या आप ट्वेल्थ में फेल हो गये थे ? फिर आपकी फर्स्ट अटेम्प्ट में प्रीलिम्स कैसे निकल गई ?”

मनोज की जैसे सांस अटक गई थी, उससे कुछ बोलते नहीं बन रहा था।कहीं श्रद्धा उसे झूठा तो नहीं समझ रही? कहीं उसे ऐसा तो नहीं लग रहा कि मेरी प्रीलिम्स नहीं निकली मैं झूठ बोल रहा हूँ ?

मनोज अपने आपको कैसे भी इस विकट स्थिति से बचाना चाहता था। उसने कुछ देर सोचा कि कैसे वह अपने ट्वेल्थ फेल के कलंक को श्रद्धा से छुपाये? फिर उसने निर्णय लिया कि इस लड़की से उसे कुछ नहीं छुपाना।इस लड़की को जरूर जाननी चाहिए उसकी वास्तविकता ,इस लड़की से कुछ भी छुपाने का कोई लाभ नहीं।फिर उसे लगा कि यदि श्रद्धा ने मनोज को पढ़ाई में कमजोर मानकर उससे मिलना बंद कर दिया तो? लेकिन पता नहीं कौन सा भरोसा मनोज को अपने सारे सच श्रद्धा से कहने को मजबूर कर रहा था ।

मनोज ने श्रद्धा से कहा –“हाँ उस साल स्कूल में नकल नहीं हुई थी श्रद्धा इसलिए मैं फेल हो गया था। टेंथ में नकल हो गई थी इसलिए थर्ड डिवीजन से पास हो गया था।”

मनोज ने श्रद्धा से सच कहने का निर्णय ले लिया था । उसकी इच्छा हो रही थी कि श्रद्धा के सामने वह अपने जीवन के सारे पन्ने खोल कर रख दे। झूठ के सहारे दूसरों को प्रभावित करने वाला मनोज श्रद्धा से झूठ नहीं बोल पाया । उसे लग रहा था कि यह लड़की उसके भीतर बस गई है, इसलिए उसके बारे में सब जानती है।

कुछ भी इससे छुपा नहीं है इसलिए कुछ भी इससे छुपाने की जरूरत नहीं है।श्रद्धा के होस्टल के नजदीक पहुँच कर दोनों होस्टल के सामने वाले पार्क में जाकर बैठ गये।

श्रद्धा ने मनोज से कहा –"मनोज मैं जानती हूँ असफलता क्या होती है? मैंने मेडिकल एग्जाम दो बार दिया पर एमबीबीएस के लिए नहीं चुनी गई। बीएएमएस किया मैंने। मैंने अपने पापा को निराश कर दिया था। मैंने उस परीक्षा में बहुत मेहनत की थी पर मुझे नहीं पता मैं क्यों असफल हो गई थी? शायद आईएएस में सफल होकर पापा की उम्मीदों को पूरा कर पाऊं? असफलता की कड़वाहट क्या होती है, मैं जानती हूँ।"

श्रद्धा ने मनोज के सच्चे मन को परख लिया था शायद। मनोज की सच्चाई जानकर भी श्रद्धा उससे दूर नहीं हुई बल्कि उसकी कहानी में श्रद्धा को अपनी कहानी नजर आई । श्रद्धा के इस उदार मन को देखकर मनोज की इच्छा हुई कि आज वह अपने अतीत के बारे में श्रद्धा से बात करे। मनोज देर तक अपने गाँव, ग्वालियर के किस्से श्रद्धा को सुनाता रहा। श्रद्धा कभी उसके संघर्ष के किस्से सुनकर गम्भीर हो जाती ,कभी आश्चर्य से अपनी आँखे बड़ी करके उसे देखती रहती ,कभी किसी बात पर देर तक हंसती रहती। शाम अब रात में तब्दील हो गई थी। पर मनोज का मन अब हल्का हो गया था ट्वेल्थ फेल मनोज की असफलता से श्रद्धा ने अपनी असफलता को जोड़ दिया था । अतीत की इन असफलताओं को भुलाकर दोनों भविष्य में सफलता की राह पर बढना चाह रहे थे ।

24 .

एक दिन विकास सर ने फिर से टेस्ट लिया, क्लास खत्म होने पहले विकास सर ने सभी की उत्तर पुस्तिकाएं

बाँट दी। श्रद्धा ने जब अपनी टेस्ट की कॉपी देखी तो उसे बहुत दुःख हुआ।उसके अच्छे नम्बर नहीं आये थे।मनोज ने श्रद्धा को देखा तो उसने आंसुओं से भरी अपनी आँखे झुका लीं। वह क्लास से उठकर बाहर चली गई।मनोज भी उसके पीछे चला गया। सूरज डूब चुका था। बत्रा सिनेमा पर कई लड़के लड़कियाँ बैठे चाय पी रहे थे। मनोज भी जाकर श्रद्धा के साथ बत्रा पर बैठ गया। श्रद्धा अभी भी अपना टेस्ट पेपर हाथ में ही लिए थी, उसका दुःख कम नहीं हुआ था। मनोज को उम्मीद थी कि चाय से शायद उसका मूड अच्छा हो जाए इसलिए मनोज पास की दुकान से चाय ले आया।

उसने श्रद्धा को एक हाथ से चाय दी और दूसरे हाथ से वह टेस्ट पेपर ले लिया। श्रद्धा ने एक भरपूर दृष्टि मनोज के चेहरे पर डाली। असफलता का दुःख और उम्मीद की तलाश दोनों ही उसके चेहरे पर मनोज को दिखाई दिए।

दुखी स्वर में श्रद्धा ने मनोज से कहा-" मुझे लगता है कि मेरा कभी सिलेक्शन नहीं होगा,कितना खराब लिखा है।"

मनोज की नजरे अभी भी श्रद्धा के टेस्ट पेपर पर जमी हुई थी। श्रद्धा के टेस्ट पेपर को गौर से देखते हुए उसने कहा –"तुम्हारी चांदनी पर एक बार एक भेड़िये ने आक्रमण कर दिया था ,पर वह तब तक भेड़िये से लड़ती रही जब तक बेदम होकर गिर न पड़ी। पता हैं क्यों ?"

श्रद्धा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मनोज क्या पूछ रहा है, श्रद्धा के पास कोई जवाब नहीं था वह बस मनोज को देखती रही। वह मौन दृष्टि में मनोज से 'क्यों' का जवाब पूछ रही थी।

"क्योंकि उसने पहाड़ों में स्वतंत्र विचरने का निर्णय ले लिया था। वह अपने निर्णय से समझौता नहीं करना चाहती थी।" -मनोज ने अपनी अधूरी बात पूरी की।

श्रद्धा को बिना सन्दर्भ की मनोज की बात समझ नहीं आई थी, उसने मनोज से आश्चर्य से पूछा –"कौन चांदनी ?"

–"तुम्हारे पड़ौसी चचा अब्बू खां की बकरी।" -मनोज ने गम्भीर बात का अंत मजाक से किया।

मनोज ने हल्के मजाक के बाद फिर अपनी अधूरी बात गम्भीरता से आगे बढ़ाई –"हमें अपने निर्णय की रक्षा खुद करनी पडती है, इसमें कई परेशानियां आती हैं पर हमें हर बार उन परेशानियों को हराने के लिए पूरी ताकत से खड़ा होना पड़ता है। तुमने खुद निर्णय लिया है आईएएस की परीक्षा देने का। अब इसके रास्ते में कितने भी अवरोध आयें तुम्हें हार नहीं माननी ,पीछे नहीं हटना।"

मनोज ने आगे कहना जारी रखा –"श्रद्धा तुम तो बचपन से ही बहुत इंटेलीजेंट हो,जब मैं ट्वेल्थ फेल होकर सफलता का सपना देख सकता हूँ फिर तुम जैसी मेहनती और योग्य लड़की को सफल होने से कौन रोक सकता है ।"-मनोज ने श्रद्धा को मोटीवेट किया ।

मनोज की बात सुनकर श्रद्धा के चेहरे पर बहुत देर से रुकी हुई मुस्कराहट आ गई ।वह अपने मन में ऊर्जा महसूस कर रही थी।मनोज के प्रोत्साहन से उसे अपना खोया हुआ आत्मविश्वास वापस मिल गया था । वह मनोज से कुछ कहना चाहती थी,पर कुछ कह नहीं सकी।

मनोज भी सिर्फ इतना ही कह पाया–"श्रद्धा तुम्हारी चाय ठंडी हो रही है।"

आईएएस मुख्य परीक्षा को केवल दस दिन बचे थे । अव्यवस्थित सी तैयारी थी मनोज की। इतिहास और हिंदी साहित्य के अतिरिक्त सामान्य अध्ययन के दो कठिन पेपर भी होने है। जिसकी तैयारी बहुत अच्छी नहीं हुई। इन पेपरों में संविधान, भूगोल, इकॉनोमी, साइंस , करन्ट अफेयर सभी कुछ पूछा जाएगा। पैसों के अभाव में वह सामन्य अध्ययन और इतिहास की कोचिंग नहीं कर सका। इंग्लिश का तीन सौ नम्बर का पेपर पास करना भी बहुत जरूरी है। सुकून की बात यह है कि इस पेपर के नम्बर मुख्य परीक्षा में जुड़ते नही है पर तीन सौ में से यदि पासिंग मार्क्स सौ नम्बर नहीं आये तो शेष किसी भी पेपर की कॉपी ही चेक नहीं की जायेंगी।

हिंदी साहित्य के बचे हुए सिलेबस को पूरा करने के लिए विकास सर ने अंतिम क्लास रात को ली। मनोज को अब वापस ग्वालियर जाना है। वह नहीं जानता कि श्रद्धा अब उसे कब मिलेगी? मिलेगी भी या नहीं? इतनी बड़ी दुनिया? इतनी दूरी? दो तीन महीने की दोस्ती क्या जीवन भर की दोस्ती बन पायेगी? उसे नहीं पता। पर उसकी इच्छा है कि कितनी भी बड़ी दुनिया हो, कितनी भी दूरी हो,श्रद्धा उसमें हर जगह मौजूद रहे। हमेशा मौजूद रहे। इस अंतिम क्लास में मनोज श्रद्धा को देखकर यही कल्पना करता रहा कि वह इस लड़की के साथ ही हमेशा रहे तो कितना अच्छा हो ,वह इसे ग्वालियर ले जाए अपना कॉलेज, अपनी लाइब्रेरी दिखाए । दिल्ली की अपनी आख़िरी क्लास में मनोज श्रद्धा की कल्पनाओं में ही डूबा रहा।

क्लास सुबह छः बजे तक चलती रही। मनोज कल्पना और सपनों में डूबा रहा।वह सोचता रहा अपने अनिश्चित भविष्य के बारे में।यहां से जाने के बाद क्या होगा? सफलता असफलता कुछ भी निश्चित नहीं। क्या सफलता इतनी आसान होती है? क्या आईएएस,आईपीएस में सिलेक्ट होना इतना आसान होता है? पता नहीं। अगर सिलेक्ट हो जाए तो? तो सब ठीक हो जायगा। वह श्रद्धा से कह देगा कि वह उससे प्यार करता है। पर यदि अभी कह दे तो? श्रद्धा एक असफल लड़के को क्यों चुनेगी? आख़िरी क्लास में उसके दिमाग में यही सब चलता रहा ।

क्लास खत्म होने के बाद मनोज ने श्रद्धा से कहा –"श्रद्धा रुकना ,मैं विकास सर से मिलकर आता हूँ।

मनोज अंदर विकास सर से मिलने चला गया ,विकास सर को क्लास के लड़के लड़कियां घेरे हुए थे। मनोज को देखकर विकास सर ने उसे मुख्य परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दी।उसने विकास सर के पैर छुए और वापस बाहर आ गया।

बाहर आकर उसने देखा कि श्रद्धा सामने के पार्क में बेंच पर बैठी हुई है।वह उसके पास चला गया। पार्क में सुबह की धुली हुई धूप निखर आई थी। श्रद्धा के अलसाये चेहरे पर सुबह की पीली धूप सोने जैसी चमक रही

थी। श्रद्धा ने आँखे बन्द कर ली। मनोज उसके पास आकर बैठा रहा। उसने मनोज को अपने पास में महसूस किया तो आँखे खोल ली।

मनोज ने हिम्मत करके श्रद्धा से कहा –"श्रद्धा मैं आज शाम को ग्वालियर चला जाउंगा।" मनोज श्रद्धा से कुछ और भी कहना चाहता था लेकिन उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी ।

श्रद्धा ने मनोज को आगे की परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दी -" मनोज तुम बहुत मेहनती हो। तुम जरूर सफल हो जाओगे। खूब मेहनत से मुख्य परीक्षा देना। जीवन में कभी हम लोग फिर से मिलें तो मैं गर्व से कह सकूंगी कि सफल मनोज दिल्ली में मेरा दोस्त था।"

अंतिम वाक्य सुनकर मनोज को लगा कि वह श्रद्धा को हमेशा के लिए छोड़कर जा रहा है।वह इस तरह से श्रद्धा को हमेशा के लिए नहीं छोड़ना चाहता था इसलिए उसने हिम्मत करके श्रद्धा से कहा - "क्या हम हमेशा दोस्त नहीं रह सकते ?"

श्रद्धा ने कुछ देर सोचते हुए मनोज को जवाब दिया-" हम दोस्त तो है हीं मनोज,पर मुझे नहीं पता कि मैं आगे कहाँ पढूंगी? आईएएस की तैयारी का क्या भविष्य है? मुझे कुछ नहीं पता कि मैं आगे तैयारी करूंगी या बीएएमएस ही रह जाऊँगी। मुझे डिग्री के बाद इंटर्नशिप भी करनी है। सब कुछ अनिश्चित है मेरा। अगले महीने मैं भी यहां से चली जाउंगी। आगे की तैयारी मैं शायद अपने घर से ही करूँ।"

श्रद्धा मनोज के बारे में अनिश्चय की स्थिति में थी ,उसे नहीं पता था कि वह मनोज से कब तक और कितनी दोस्ती रखना चाहती है ?

लेकिन मनोज को श्रद्धा अपने से दूर जाती हुई दिख रही थी। जिन्दगी की डगर सीधी सरल नहीं है वह इतनी उबड़ खाबड़ है कि कोई सपना इतनी आसानी से अपनी मंजिल पर नहीं पहुंचता। मनोज नहीं जानता था कि एक बार दूर होने पर दुबारा कैसे ढूंढ पायेगा वह श्रद्धा को?

मनोज ने कहा -"क्या तुम्हारा अल्मोड़ा का एड्रेस और फोन नम्बर मुझे मिलेगा?" श्रद्धा ने मनोज की कॉपी पर अल्मोड़ा का फोन नम्बर और एड्रेस लिख दिया। उम्मीद खत्म नहीं होती कभी।

मनोज की इच्छा हो रही थी कि वह श्रद्धा की कॉपी पर रखी उसकी हथेली को थाम ले। पर बिना श्रद्धा की इच्छा से कैसे सम्भव होता यह ?काश वह इस हथेली पर विदा के समय पेन से अपना नाम लिख पाता। सीने में ही दबी रही उसकी यह इच्छा ।

मनोज ने अपने मन की बात को कहने की फिर हिम्मत की -"श्रद्धा मेरा अभी तक का जीवन संघर्ष में बीता है।पर मैंने सपने देखना नहीं छोड़ा। न ही कभी छोड़ पाऊँगा। पता नहीं क्यों तुम्हें देखकर लगता हैं कि मेरे सपने जरूर साकार हो जायेंगे । "

मनोज ने अपने सपनों को श्रद्धा के साथ एकमेक कर दिया पर श्रद्धा उसकी भावनाओं में नहीं बही, उसने मनोज की भावनात्मक बातें सुनकर संतुलित जवाब दिया -"मनोज तुमसे मैंने बहुत कुछ सीखा है।किस तरह ट्वेल्थ फेल होने बाद भी अपनी असफलताओं से न घबराकर उन्हें पीछे छोड़कर आगे बढ़ा जाता है ।तुम्हें देखकर मुझमें भी पढ़ाई की ललक बनी रहती हैं।"

मनोज को लगा कि यही लड़की है जिसके साथ वह अपनी पूरी जिंदगी बिता सकता है। यही लड़की है जिसके साथ वह दुनिया की कोई भी लड़ाई जीत सकता है। कुछ देर खामोशी बनी रही फिर मनोज ने अपने हाथ में पकड़ी जयशंकर प्रसाद की किताब 'कामायनी'को देखते हुए श्रद्धा से पूछा -" क्या हम आख़िरी बार मिल रहे हैं श्रद्धा ? "

मनोज पढ़ना चाह रहा था श्रद्धा का मन। पर इतना आसान कहाँ होता है किसी के मन को पढ़ना ।

" पता नहीं मनोज । " श्रद्धा के स्वर में उदासी थी ।

क्या सच में श्रद्धा के साथ वाला यह दिन फिर कभी लौट कर आयेगा या बस यह लड़की यादों में रहेगी अब । मनोज को नहीं पता। मनोज के होंठ अब सिले हुए थे।श्रद्धा अपने होस्टल की ओर चल दी ,मनोज वहीं खड़ा रहा। मनोज श्रद्धा को तब जाते हुए देखता रहा जब तक श्रद्धा उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गई ।

25 .

ताज एक्सप्रेस के जनरल डिब्बे में अपना सामान बोरियों में भरकर मनोज और पांडे वापस ग्वालियर की ओर चल दिए। आईएएस की मुख्य परीक्षा की तैयारी करने दिल्ली जाने वाला मनोज वापसी में श्रद्धा के प्यार को अपने मन में बसाए लौट रहा था । उसे अपना मन भरा भरा सा लग रहा था।मनोज सोचने लगा कि

यदि पहले ही अटेम्प्ट में वह आईएएस या आईपीएस बन जाए तो श्रद्धा से कितनी आसानी से कह सकता है कि वह उससे प्यार करता है। इन्हीं सपनों में डूबा मनोज ग्वालियर पहुँच गया।

ग्वालियर में पीली कोठी में मनोज और पांडे ने फिर से एक कमरा किराए से ले लिया। दो दिन बाद मनोज भोपाल मुख्य परीक्षा देने चला गया। दिलीप सोनी भोपाल में ही डीएसपी थे और पुलिस हेड क्वार्टर में सरकारी आवास में रहते थे।उनके यहाँ रुक कर मनोज पेपर दे आया।सामान्य अध्ययन और कम्पलसरी इंग्लिश पेपर के बाद दस दिन का गेप था। मनोज पेपर देकर वापस ग्वालियर आ गया। सामान्य अध्ययन के पेपर में मनोज एकदम से सटीक उत्तर नहीं लिख पाया था। दिल्ली से वापस लौटते समय जो मनोज पहले ही अटेम्प्ट में आईएएस या आईपीएस बनने की कल्पना कर रहा था उसने अपनी कल्पना को थोड़ा छोटा कर दिया। अब वह् सोचने लगा कि यदि उसके आगे के पेपर अच्छे चले जाएँ तो वह भले ही आईएएस या आईपीएस न भी बने पर उसे इनकम टेक्स या सेंट्रल एक्साइज या कोई न कोई छोटी पोस्ट तो मिल ही सकती है। पहली बार में छोटी पोस्ट मिलने से अगले अटेम्प्ट में प्रोपर आईएएस या आईपीएस बना जा सकता है।

पीली कोठी में अश्विन मुद्गल नाम के लड़के ने पढ़ाई के लिए कमरा किराए पर लिया था।उसने इसी साल बीकॉम किया था,वह पीलीकोठी के पास ही हरिशंकरपुरम कॉलोनी में रहता था।उसने मनोज के सामान्य अध्ययन और इंग्लिश कम्पलसरी के पेपर चेक किये।

अश्विन के पूछने पर मनोज ने बताया- "मुझे लगता है कि इंग्लिश में तो मैं पास हो जाऊंगा। मैंने'टेररिज़्म इन इंडिया' का एस्से बहुत अच्छा लिखा है।”

अश्विन ने पेपर देखते हुए मनोज से पूछा –“मनोज कहाँ है 'टेररिज़्म इन इंडिया' का एस्से?”

“अश्विन भाई आप भी ठीक से नहीं देख पाते, पीछे के पेज पर देखो तीसरे नम्बर पर है।” -मनोज ने आत्मविश्वास से कहा।

“इस एस्से में मैंने बहुत विस्तार से टेरेरिज्म के बारे में लिखा हैं।टेरेरिज्म के कारण,उसके इंडिया पर इम्पेक्ट, हाउ टू सॉल्व दिस पोब्लम, डीफ्रेंस बिटवीन कश्मीर एंड पंजाब टेरेरिज्म।” मनोज ने जोश और उत्साह से परीक्षा में लिखे गये अपने एस्से की विशेषताएं अश्विन को गिनाईं।

अश्विन अभी भी पेपर में ‘टेरेरिज्म इन इंडिया’ टॉपिक ढूंढ रहा था। पर जब अश्विन वह एस्से नहीं ढूंढ पाया तो मनोज ने पेपर लिया और उस स्थान पर उंगली रख दी जहां वह टॉपिक लिखा था।

“ये रहा तुम देख नही पा रहे अश्विन।” - मनोज ने अश्विन से खीझते हुए कहा।

अश्विन ने उस स्थान को देखते हुए कहा जहां मनोज की उंगली रखी हुई थी-"यह तो 'टूरिज्म इन इंडिया' है।”

मनोज ने जब दुबारा ध्यान से पेपर पढ़ा तो वहां 'टेररिज़्म' नहीं 'टूरिज्म' लिखा हुआ था। मनोज को समझ नहीं आया कि यह कैसे हो गया? इतनी बड़ी गलती कैसे हो गई? वह जिस एस्से को सही समझ रहा था, वह गलत हो गया था। वह ‘टूरिज्म’ और ‘टेररिज़्म’ की स्पेलिंग में कन्फ्यूज़ हो गया था। मनोज को लगा कि उसके भीतर का खून सूख गया। उसकी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। उसने बहुत बड़ी गलती कर दी थी। यह पेपर पास नहीं हुआ तो उसकी दूसरे सब्जेक्ट की एक भी कॉपी चेक नहीं होगी। गलत विषय पर एस्से लिखने पर निश्चित ही वह इंग्लिश कम्पलसरी के पेपर में फेल हो जायगा। बड़ी मुश्किल से उसकी प्रीलिम्स क्लियर हुई थी क्या वह इस तरह बर्बाद हो जायगी ?

मनोज अपने कमरे पर जाकर रोने लगा। वह समझ गया कि इंग्लिश ने एक बार फिर उसका जीवन बर्बाद कर दिया है।एस्से ही उसकी उम्मीद थी। जिसमे सौ में से उसे जीरो नम्बर मिलेंगे। ग्रामर,अनसीन तो वैसे भी वह अच्छा नहीं कर पाया था। उसका आत्मविश्वास पूरी तरह से धराशाई हो गया। उसने निर्णय लिया कि वह आगे के पेपर देने भोपाल नहीं जायगा। उसके इस निर्णय का अश्विन ने विरोध किया। अश्विन ने कहा कि यदि तुम पास नहीं भी हुए तो परीक्षा में पेपर देने का मौक़ा तो मिलेगा। तुम्हें अनुभव के लिए जरूर पूरे पेपर देने चाहिए। पर मनोज की हिम्मत हिन्दी साहित्य और इतिहास के पेपर देने की नहीं हुई। मनोज आगे के पेपर देने भोपाल नहीं गया।

पहला अटेम्प्ट एक घटिया प्रयोग के तौर पर इंग्लिश की बली चढ़ गया। अब फिर से एक साल की मेहनत सामने है। मनोज को फिर से प्रिलिम्स से शुरुवात करनी है। दुःख का दौर फिर से शुरू हो गया। मनोज अपनी इस असफलता को किस मुंह से श्रद्धा को बताएगा? इच्छा होने के बावजूद मनोज श्रद्धा से बात करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था ।

पीलीकोठी में रहने वाले लड़कों ने उत्तर प्रदेश पीएससी की प्रीलिम्स परीक्षा दी थी। मनोज, पांडे, अश्विन, गुप्ता सभी की यूपी प्रीलिम्स क्लियर हो गई। मनोज सोचने लगा कि यदि यूपी में किसी भी पोस्ट पर सिलेक्शन हो जाए तो उसके बाद आईएएस की तैयारी अच्छे से कर सकते हैं। कई लड़के नायब तहसीलदार,सेल टेक्स इंस्पेक्टर, बनने के बाद भी आईएएस की तैयारी करते है और सफल भी होते हैं।

आईएएस की मुख्य परीक्षा बर्बाद होने से हताश हुए मनोज ने उत्तर प्रदेश पीएससी की प्रीलिम्स क्लियर करने के कारण अपने भीतर फिर से उम्मीद को जगाया। रेगिस्तान में तड़पते हुए आदमी को जैसे दो बूँद पानी

की मिल गई थीं। उसके सामने फिर से एक मुख्य परीक्षा देने का लक्ष्य था भले ही वह मुख्य परीक्षा आईएएस की न होकर किसी स्टेट पीएससी की हो। इस उम्मीद से पैदा हुए आत्मविश्वास के कारण उसकी की इच्छा एक बार फिर श्रद्धा से बात करने की होने लगी। उसने तय किया कि वह आज श्रद्धा से जरूर बात करेगा।

मनोज ने श्रद्धा के द्वारा दिया हुआ उसके घर का फोन नम्बर ढूंढा पर फोन नम्बर नहीं मिला। उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने श्रद्धा का फोन नम्बर कहाँ रख दिया? उसने फिर से अपनी किताबों में श्रद्धा का नम्बर ढूँढने लगा,बहुत देर तक जब नम्बर नहीं मिला तो वह् निराश होकर पलंग पर बैठ गया।

मनोज को उजड़ा हुआ देखकर पांडे ने पूछा -" क्या ढूंढ रहे हो मनोज? आईएएस तो गई तुम्हारी। यूपी सर पर है। पढ़ लो। कहाँ भटक रहे हो?"

मनोज श्रद्धा में डूबा हुआ था -"श्रद्धा का फोन नम्बर नहीं मिल रहा हैं, मुझे उससे बात करना है।”

पांडे ने अपनी किताब बन्द कर दी और वार्ता की मुद्रा में बैठ गया- "तो कर लो बात किसने रोका है? पर कहोगे क्या? हैलो श्रद्धा, मैं फेल हो गया हूँ। ट्वेल्थ के बाद मैं आईएएस के कम्पलसरी इंग्लिश पेपर में भी फेल हो गया हूँ।‘टूरिज्म’ की जगह ‘टेरिरिज्म’ पर एस्से लिख आया था। करो करो, फोन करो, मेरी भी बात कराना।” पांडे ने श्रद्धा को फोन करने की एक्टिंग करते हुए मनोज से कहा।

जब मनोज ने पांडे के इस व्यंग्य पर कुछ नहीं कहा तो पांडे ने अपनी अधूरी बात मनोज से फिर कही –“ मनोज जी असफल लड़कों को प्यार नहीं मिलता।अगर श्रद्धा से प्यार करना है तो पढ़ाई करो। यूपी में सिलेक्ट हो जाओ। तब शायद श्रद्धा तुमसे प्यार कर ले।अभी तो दुत्कार ही देगी।” पांडे ने 'प्यार में सफलता' विषय पर यथार्थवादी भाषण मनोज को दे दिया।

तभी कमरे में गुप्ता और अश्विन आ गये। पांडे ने कमरे में सबसे कम उम्र के पर दिमाग में सबसे तेज अश्विन मुदगल से पूछा-"आज की चर्चा का विषय प्यार है। अश्विन जी प्यार के विषय में आपके क्या विचार हैं?”

अश्विन पढ़ाई में गम्भीर और दुनियादारी के झंझटों से दूर रहने वाला लड़का था।उसे इस तरह की निरर्थक चर्चाओं में कोई रुचि नहीं थी।

"पढ़ लो सालों। पांच छह महीनें बाद यूपी मुख्य परीक्षा होनी है, तुम्हे अभी ही प्यार करना है?"- अश्विन ने छूटते ही गाली दी।

लेकिन पांडे ने जब एक बार फिर अश्विन से प्यार पर अपने विचार व्यक्त करने का आग्रह किया तो अश्विन ने जवाब देना शुरू किया -"पहला बिंदु,प्यार एक जौंक है।जो विद्यार्थी से उसी समय चिपकती है जब उसे अपना सबसे ज्यादा समय पढ़ाई में देना होता है। दूसरा,प्यार व्यार कुछ नहीं होता यह महज अभावों का आकर्षण है। अभाव माने समझ रहे है ना पांडे ? जो चीज हमारे पास नहीं होती उसका आकर्षण।"

मनोज को अश्विन की यह फिलॉसफी पसन्द नहीं आई। मनोज ने विरोध किया - "मेरे लिए प्यार आंतरिक शक्ति है, जो मुझे पढ़ने को प्रेरित करती है।"

गुप्ता को अश्विन के स्थान पर मनोज की बात पसन्द आई थी। उसने मनोज से कहा-"वाह मनोज जी क्या बात कहीं है, मेरे मुंह की बात छीन ली। अश्विन जी को क्या पता प्यार के बारे में। प्यार के बारे में ये निरक्षर हैं।"

अश्विन को गुप्ता का मजाक पसन्द नहीं आया। वह गम्भीर हो गया। उसने उसी गम्भीरता से कहा - "पहले सिलेक्ट हो जाओ, फिर कर लेना प्यार। अगर प्यार करोगे तो सिलेक्शन होना मुश्किल है। इसलिए सब छोड़छाड़ कर केवल पढ़ो। किताब सामने रखकर प्रेमिका के बारे में सोचने से सिलेक्शन नहीं होता।"

कमरे में सन्नाटा खिंच गया।अब किसी के मुंह से कोई आवाज नहीं निकल रही थी।इस गम्भीर चर्चा में किसी के पास अब बोलने के लिए कुछ नहीं बचा था ।

26 .

इंग्लिश आगे कोई रुकावट न डाले इसलिए मनोज और पांडे ने मनोज के पुराने दोस्त रविकांत द्विवेदी के यहां इंग्लिश की कोचिंग शुरु कर दी। कोचिंग में छः लड़कियां और दस बारह लड़के थे। एक दिन रविकान्त सर ने क्लास में योगिता नाम की लड़की को किसी बात पर डांट दिया। योगिता की आँखों से आँसू बहने लगे। आँसू बहाती योगिता पांडे को अचानक मासूम लगने लगी। आज पहली बार पांडे ने देखा कि योगिता की आँखे दूसरी लड़कियों से बड़ी और खूबसूरत हैं। पांडे की इच्छा इन बड़ी आँखों में डूबने की हो गई। मनोज के प्यार के विरोधी पांडे को आज अचानक योगिता से प्यार हो गया। पांडे को भी इस समय पढ़ाई की सख्त

जरुरत थी पर पढ़ाई के सबसे जरुरी समय में प्यार की जोंक उससे चिपक गई थी। अश्विन द्वारा कही गई प्यार के विषय में पहली बात पांडे के सन्दर्भ में सही सिद्ध हो चुकी थी।

मनोज को यह जानकर सुकून मिला कि पांडे भी प्यार करने लगा है, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि पांडे अब श्रद्धा का विरोध नहीं करेगा। पांडे और मनोज ने योगिता से दोस्ती बढ़ा ली। आईएएस की तैयारी करने वाले दोनों प्रेमियों के पास वक्त की कमी थी जिस कारण योगिता को पांडे से प्यार करने के लिए राजी करने में ज्यादा वक्त बर्बाद नहीं किया जा सकता था। इसलिए योगिता के मन की थाह लेने दोनों एक दिन उसके घर पहुँच गये।

योगिता ने मनोज से कहा -"रवि सर आप लोगों की बहुत तारीफ़ करते हैं, कहते हैं कि आप लोग जरूर पीएससी में सिलेक्ट हो जाओगे ।”

मनोज ने वक्त बर्बाद न करते हुए पांडे को एक योग्य प्रेमी के रूप में योगिता के दिल में स्थापित करने की कोशिश की-"मेरा तो पता नहीं पर पांडे जरूर सिलेक्ट हो जायगा। लेखन क्षमता बहुत अच्छी है इनकी। कॉलेज में निबन्ध लेखन में हमेशा फर्स्ट आते थे।

मनोज ने पांडे के विषय में एक काल्पनिक झूठ बोल दिया, पांडे के व्यक्तित्व में यह झूठ चार चाँद लगा रहा था इसलिए मनोज के द्वारा पूर्व में बोले गये झूठ का विरोध करने वाले सिद्धांतवादी पांडे ने इस झूठ का खंडन नहीं किया।

मनोज के इस झूठ का तत्काल असर हुआ। योगिता ने पांडे की तरफ मुस्कुराते हुए देखा। पांडे को प्यार की ऐसी स्पीड की उम्मीद नहीं थी, वह योगिता का मुस्कुराता हुआ चेहरा देखकर समझ गया कि योगिता उसमें रुचि ले रही है। योगिता की मम्मी ने पोहे की प्लेट मेहमान के वेश में आये प्रेमियों के सामने रख दी। कुछ देर कमरे में चुप्पी रही। मनोज ने पांडे को देखा कि पांडे योगिता से कुछ कहे पर पांडे पोहे खाने में व्यस्त रहा। मनोज ने पांडे को इशारा किया कि वह बातचीत आगे बढ़ाये।

मनोज के इशारे से हड़बड़ाए पांडे ने योगिता से कहा-"तुम्हारी मम्मी पोहे बहुत अच्छे बनाती हैं। मैंने आज तक इतने अच्छे पोहे नहीं खाये। मनोज जी के गाँव में तो पोहे बनते ही नहीं है। ग्वालियर आकर ही इन्होंने पहली बार पोहे खाये हैं । हा हा हा।”

मनोज ने सर पीट लिया। पांडे समदर्शी था। वह योगिता से भी वैसी ही बातचीत कर रहा था जैसी वह जगदीश तोमर या अश्विन मुदगल से करता था।

योगिता के कमरे में एक सितार रखा था। सितार को देखकर पांडे की कुछ कहने की इच्छा हुई उसने कहा - "सितार कौन बजाता है?"

"मैं कभी कभी बजाती हूँ"-योगिता ने अपनी बड़ी आँखे नचाते हुए कहा।

पांडे ने योगिता से कहा -" संगीत हमारे मन को बहुत सुकून देता है।मैं एक अच्छा गायक तो नहीं हूँ पर एक अच्छा श्रोता हूँ।"

योगिता को पांडे का मजाक अच्छा लगा उसने कहा-"अच्छे श्रोता नहीं होंगे तो अच्छा गायक सुनायेगा किसे?"

पांडे ने योगिता के घर से विदा लेते समय योगिता से कहा -"अगली बार तुम्हारा सितार सुनेंगे।"

पांडे ने एक बार और इस घर में आने की भूमिका बना दी। मतलब पांडे ने यह बता दिया कि अब रिश्ता लम्बा चलना है। आना जाना लगा रहेगा। इतना कहकर उसने एक भरी हुई नजर योगिता के चेहरे पर डाली। योगिता की बड़ी सी आँखे झुक गई और योगिता मुस्कुरा दी।

प्यार का अंकुर मन में लिए पांडे मनोज के साथ पीली कोठी आ गया।

पांडे ने वापस आकर अपने कमरे में फ़ैली किताबों को अजनबी निगाहों से देखा। कुछ किताबें पलंग पर खुली हुई पड़ी थी, जिन्हें वह प्यार की तलाश में निकलने के पहले खुला हुआ छोड़ गया था। इन किताबों को उसने बन्द करके रख दिया। दीवाल पर चिपके टाइम टेबल में यह समय मुगल कालीन अर्थव्यवस्था के पढ़ने का था। आज पांडे और मनोज योगिता से बात करने में वह समय बिता आये थे। इसलिए अब दोनों को पढ़ाई की चिंता सताने लगी। दिसम्बर शुरु हो चुका था और मई के पहले रविवार को आईएएस प्रिलिम्स और उसके बाद यूपी मुख्य परीक्षा होनी है। पांडे ने बगल के कमरे में झाँक कर देखा। वहां अश्विन मुदगल चुपचाप अपनी किताबों में डूबा हुआ था। एक अजीब सा अपराधबोध मनोज और पांडे को महसूस हुआ। दोनों ने अपनी अपनी किताबें उठाई और पढ़ने बैठ गए।

छूट चुकी मुगल अर्थव्यवस्था आधा घण्टा पढ़ने के बाद पांडे के दिमाग में फिर से योगिता घूमने लगी। उसने इतिहास की किताब को बन्द करके रख दिया और आँखे बन्द करके लेट गया। अब मामला समानता का था। मनोज और पांडे दोनों प्यार में डूब चुके थे और सामने परीक्षाएं थी। पांडे ने हाल ही में रिलीज फ़िल्म 'मोहब्बतें' का गाना अपने टेप पर चालू कर दिया। जिसके बोल थे-'सोणी सोणी अँखियों वाली।" गाना सुनकर वह योगिता की बड़ी और सोणी सोणी अँखियों में डूब गया।

27 .

"ये नवनीत भसीन हैं।"– मनोज और पांडे का परिचय अश्विन ने एक लड़के से कराया जो सफेद एलएमएल स्कूटर से पीली कोठी के गेट पर अश्विन के साथ खड़ा था।

उस नए लड़के के हाथ में कुछ नोट्स थे।चारों गुप्ता के कमरे में आ गए। गुप्ता पूजा करके निपटा था और भोजन करने की तैयारी कर रहा था।

अश्विन ने कहा - "ये नवनीत भी पीलीकोठी में रहकर तैयारी करना चाहता है।"

गुप्ता उत्साहित होकर बोला - "बहुत बढ़िया। पीलीकोठी में पढ़ाई का बहुत अच्छा माहौल है। तुम्हें पढ़ाई में कोई भी प्रॉब्लम हो तो मुझसे पूछ लेना। पोलिटी और इंटरनेशनल रिलेशन में पूरी पीली कोठी में मेरा डंका बजता है। किसी को कोई भी समस्या आती है सब मुझसे ही पूछने आते हैं। क्यों अश्विन?" गुप्ता ने नवनीत को नौसिखिया मानते हुए अपने आप को विषय विशेषग्य घोषित कर दिया और अश्विन से अपनी योग्यता की स्वीकृति चाही ।

अश्विन ने गुप्ता का भ्रम बनाये रखा, उसने कहा – "पीली कोठी क्या, गुप्ता का तो पूरे ग्वालियर में डंका बजता है।"

गुप्ता के वक्तव्य को नवनीत ने चुनौती के रूप में ले लिया। नवनीत ने गुप्ता के साथ साथ पूरी पीली कोठी की ग्रेविटी जांचने का मन बना लिया। उसने अपने नोट्स निकाल लिए और एक प्रश्न इस समूह के सामने उछाल दिया-"अच्छा चलिए बताइये अभी जापान के प्रधानमन्त्री भारत आये थे। भारत सरकार से उनके किन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर समझौते हुए?"

यह पूरी पीलीकोठी की परीक्षा का अवसर था।लेकिन अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषग्य गुप्ता को नवनीत के इस प्रश्न का उत्तर नहीं पता था इसलिए प्रश्न सुनते ही उसे भूख लग आई। इस बार उसका डंका खामोश रहा।

समय का सदुपयोग करते हुए गुप्ता किचिन से अपने भोजन की प्लेट ले आया जिसमे आलू की सब्जी और घी में डूबी चार रोटियां रखी थी। गुप्ता के गाँव में भैंस पली हुई थी इसलिए उसे घी की कोई कमी नहीं थी।

औपचारिकतावश गुप्ता ने मेहमानों से भोजन के लिए पूछा जिसे सभी मेहमानों ने शर्मवश मना कर दिया।गुप्ता ने अपने लिए केवल चार रोटियाँ बनाई थीं मेहमानों के मना करने पर उसने राहत की साँस ली ।गुप्ता को नवनीत के पूछे गये प्रश्न के उत्तर का ओर छोर भी नहीं पता था इसलिए उसने खुद को इस परीक्षा से अलग ही मान लिया था। गुप्ता विरक्त भाव से घी में डूबी रोटियाँ खाता रहा।

नवनीत ने चुनौती की तरह अपना प्रश्न याद दिलाया - "बताइये। ये तो बहुत इम्पोर्टेन्ट यात्रा थी। इतना तो पता होना चाहिये। गुप्ता जी आप तो अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विशेष रुचि रखते हैं, आपको तो पता होना चाहिए।"

नवनीत ने जब यह बात गुप्ता से पूछी तो रोटी का टुकडा उसके मुंह में था। नवनीत की चुनौती के कारण गुप्ता रोटी चबाना भूल गया और बड़ी बड़ी आँखें करके उत्तर याद करने का सफल अभिनय करने लगा। पर उसे इस प्रश्न का उत्तर नहीं पता था। फिर भी उत्तर याद करने का गुप्ता का अभिनय ऐसा था कि बस उत्तर उसकी जबान पर आ ही रहा है लेकिन मुंह में रोटी होने का कारण वह बोल नहीं पा रहा।

नवनीत ने वहां बैठे अश्विन ,मनोज ,और पांडे को ललकारा –"आप लोगों को पता है?"

किसी को उत्तर नहीं पता था। किसी को यह उम्मीद भी नहीं थी कि पहली बार मिलने वाला लड़का उनकी परीक्षा ले सकता है। अश्विन की पढ़ाई से भी जापानी प्रधानमन्त्री के भारत आगमन की घटना छूट गई थी। अश्विन भी चुप रहा।पर नवनीत कट्टर था। उसने सभी परीक्षार्थियों को पराजित देखते हुए भी विषय नहीं बदला पर उसने दया करते हुए प्रश्न को थोड़ा सरल कर दिया।

नवनीत ने कहा - "चलिए नाम ही बता दीजिये जापानी प्रधानमन्त्री का ?"

नवनीत की नजर में सरल प्रश्न शेष लोगों की नजर में जटिल ही बना रहा। प्रश्न सुनकर लोगों के चेहरे के भावों में कोई बदलाव नहीं आया। पहले प्रश्न जैसी स्थिति ही बनी रही। इस सरल प्रश्न का उत्तर भी चारों नहीं जानते थे। गुप्ता ने इस समय का बेहतर उपयोग किया और वह जूठे बर्तन मांजने चला गया। सभी ने नवनीत के सामने हथियार डाल दिए।

नवनीत ने अपनी पढ़ाई युद्ध की तैयारी की तरह की थी, आज मौक़ा पाते ही वह सामने बैठे लड़कों को अपना दुश्मन मानते हुए वह उन पर टूट पड़ा था। आज नवनीत को लग रहा था कि उसने अपने हथियारों से अपने दुश्मनों को गाजर मूली की तरह काट दिया है और उसके दुश्मन युद्ध भूमि में पड़े तड़प रहे हैं। विजयी मुस्कान लिए नवनीत ने अपने लहुलुहान दुश्मनों से कहा -" तुम लोगों को इतना भी नहीं पता ? उनका नाम है जूनीकीरो कोईजूमी। वे नीला कोट और लाल टाई पहनकर भारत आये थे।"

नवनीत का उत्तर सुनकर सभी लोग अवाक रह गये । इतना सूक्ष्म अध्ययन कैसे कर सकता है कोई? सभी को नवनीत भयावह लगने लगा ।मनोज और पांडे के पास इस पराजय के बाद एक दुसरे का चेहरा देखने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। नवनीत अगले दिन अपना सामान ले आया और पीलीकोठी में कमरा लेकर रहने लगा।

28 .

नये साल के पहले दिन की उमंग ने मनोज को विचलित कर दिया। नये साल पर अगर वह श्रद्धा से बात नहीं करेगा तो फिर कब करेगा? नये साल का बहाना उसके लिए एक अवसर था जिसे वह गवाना नहीं चाहता था ।

मनोज ने जब पांडे को अपना दर्द बताया तो योगिता के प्यार में डूबे पांडे को उसके प्यार का दर्द सच्चा लगने लगा। पांडे की इच्छा मनोज की सहायता करने की होने लगी। उसने काफी देर तक कमरे में श्रद्धा का फोन नम्बर ढूंढा। पर फोन नम्बर नहीं मिला ।

योगिता के प्यार के कारण दयालू हो चुका पांडे मनोज से कहता जा रहा था –"मनोज परेशान मत हो, श्रद्धा का नम्बर मिल जायगा।"

पन्द्रह मिनट मेहनत करने के बाद पांडे को भी नम्बर नहीं मिला। उदार पांडे को मनोज का दुखी चेहरा अच्छा नहीं लग रहा था, उसके उर्वर दिमाग ने एक तरकीब मनोज को बताई - "मनोज विकास सर की कोचिंग में जरूर होगा श्रद्धा के घर का नम्बर।"

पांडे की तरकीब सुनकर मनोज उत्साहित हो गया । मनोज और पांडे द्दष्टि कोचिंग का नम्बर लेकर एसटीडी पर चले गए। मनोज को द्दष्टि कोचिंग की डायरेक्टर वर्मा मैडम अच्छे से जानती थीं। उसे लगा कि उसे कोचिंग से श्रद्धा का नम्बर आसानी से मिल जायगा। उसने द्दष्टि कोचिंग फोन लगाया।

एक महिला की आवाज आई -" नमस्कार द्दष्टि कोचिंग से बोल रही हूँ, बताइये मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ।"

मनोज ने आत्मविश्वास से कहा - "नमस्कार मैडम मैं मनोज,ग्वालियर से बोल रहा हूँ।द्दष्टि में कोचिंग की है। मेरी मित्र श्रद्धा भी द्दष्टि में पढ़ती थी। उनका फोन नम्बर मिल सकता है?"

मैडम मनोज के आत्मपरिचय से बिलकुल प्रभावित नहीं हुई। मैडम ने उत्तर दिया - "जी नहीं। हम किसी का फोन नम्बर नहीं दे सकते।" मनोज को लगा कि मैडम ने उसे पहचाना नहीं है।

उसने मैडम को अपना परिचय फिर से याद दिलाया –"आप वर्मा मैडम बोल रही हैं ना? मैं मनोज शर्मा बोल रहा हूँ ग्वालियर से।"

महिला ने रुखे स्वर में मनोज को जवाब दिया – "वर्मा मैडम आज कोचिंग नहीं आईं। मैं राखी बोल रही हूँ।"

श्रद्धा का फोन नम्बर लेने की मनोज की यह आख़िरी उम्मीद भी खत्म होती जा रही थी। लेकिन उसने हार नहीं मानी- "मैडम आप समझ नहीं रही हैं। श्रद्धा से बात करना बहुत जरूरी है उनके आईएएस का परीक्षा फार्म रिजेक्ट हो गया है उसी के बारे में बात करना है।"

मनोज ने अपने पुराने पर अब तक न भूले उपयोगी हथियार 'झूठ' का उपयोग किया।पर आज उसका यह हथियार भी बेकार चला गया।उसकी बात पूरी होती उसके पहले दूसरी तरफ से अपने काम में परिपक्व महिला ने फोन पटक दिया। उसने गुस्से में फिर से फोन लगाया। महिला ने फिर फोन उठाया। मनोज को लगा कि विकास सर उसकी बहुत तारीफ़ करते हैं। इसलिए इस बार सीधे विकास सर से ही बात करेगा। उसे पूरी उम्मीद थी कि विकास सर उसे निराश नहीं करेंगे।

मनोज ने लड़की से कहा- "विकास सर से बात कराइये। मैं उनका स्टूडेंट बोल रहा हूँ। मैंने इस बार आईएएस मैन्स दिया है।"

मनोज को लगा कि मैन्स का नाम सुनकर महिला उसे जरूर महत्व देगी और उसकी मांग पूरी कर देगी। लेकिन अप्रभावित लड़की ने यन्त्रवत् जवाब दिया- "विकास सर छुट्टी मनाने राजस्थान गए है।"

यह सुनकर मनोज की आख़िरी उम्मीद भी जाती रही। बात वहीं आ गई जहां से चली थी। सारी मेहनत बेकार गई। श्रद्धा का फोन नम्बर नहीं मिला।

प्यार की तलाश में असफल हुए मनोज का दुखी चेहरा देखकर पांडे भी दुखी हो गया।

मनोज के प्यार को मंजिल तक पहुचाने को आतुर पांडे ने रास्ते में फिर एक नई सलाह मनोज को दे दी- "मनोज अब तुम्हारे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा, तुम्हें अल्मोड़ा की ओर कूच करना चाहिए। श्रद्धा को अपने दिल का हाल सुनाये बिना अब तुम नहीं रह सकते।"

ग्वालियर से अल्मोड़ा एक हजार किलोमीटर है,मनोज कैसे जायगा? फिर अल्मोड़ा में श्रद्धा से मिलेगा कैसे? क्या सीधे उसके घर चला जायगा? उसके मम्मी पापा होंगे? क्या कहेगा श्रद्धा से ? क्यों आया है? केवल फोन नम्बर लेने? मनोज को कुछ समझ नहीं आ रहा था ।

मनोज ने पांडे से कहा –" पांडे अल्मोड़ा जाना आसान नहीं है।" उसके मन में अल्मोड़ा के नाम से भय और घबराहट पैदा हो गई।

मनोज को दुविधा में देखकर पांडे ने उसे समझाया –"मनोज प्यार में लोग क्या क्या नहीं करते? नदी, नाले, पहाड़, पर्वत सब लांघ जाते हैं और तुम अल्मोड़ा तक नहीं जा पा रहे? है कितना दूर अल्मोड़ा? अभी निकलो तो सुबह अल्मोड़ा पहुँच जाओगे। " योगिता के प्यार में डूबे पांडे को अब दुनिया के सारे प्रेमी अपने हमदर्द नजर आ रहे थे। जिनकी मदद करने को वह उताबला हो रहा था ।

पांडे द्वारा कठिन यात्रा के सरलीकरण से मनोज को बल मिला। उत्साहित होकर मनोज अल्मोड़ा जाने के लिए तैयार हो गया।

पांडे के पास हिंदी साहित्य के कुछ नोट्स पड़े हुए थे। पांडे ने कहा –"मनोज लो ये नोट्स रख लो, ये नोट्स श्रद्धा के घर में घुसने के लिए तुम्हारी मदद करेंगे।" दुश्मन के एरिये में घुसने के लिए हथियार सौपने की तरह पांडे ने मनोज को हिन्दी के नोट्स दे दिए ।

पांडे ने पांच सौ रुपये मनोज को दिए कुछ पैसे मनोज के पास भी थे। पांडे मनोज को रेलवे स्टेशन छोड़ आया। मनोज को छोड़ने के बाद पांडे ने एसटीडी से योगिता को फोन लगाया और हँस हँस कर फोन पर बात करता रहा।

29 .

दिल्ली पहुंचकर मनोज को आनन्द विहार बस अड्डे से अल्मोड़ा के लिए हिना ट्रेवल्स की बस मिल गई।

रात भर वह यही कल्पना करता रहा कि अल्मोड़ा में श्रद्धा से कैसे मिलेगा? श्रद्धा उसे अचानक देखेगी तो क्या सोचेगी? उसके मम्मी पापा से मनोज क्या बहाने बनायेगा? पर कुछ न कुछ तो रास्ता जरूर निकलेगा ऐसा सोचकर मनोज अल्मोड़ा आने का इन्तजार करता रहा। सुबह हो गई । चारों तरफ ऊँचे ऊँचे पहाड़ उसे

दिख रहे थे, इन पहाड़ों के उपर घने धुंए से बादल तैर रहे थे। उसे लग रहा था कि बस के बाहर हाथ बढ़ाकर वह इन बादलों को छू सकता है। बादलों के साथ धुंध भी चारों तरफ फ़ैली हुई थी। इस धुंध के कारण बस अब रेंग रेंग कर चल रही थी। किताबों में पढ़ा और श्रद्धा से सुना खूबसूरत अल्मोड़ा मनोज की आँखों के सामने था। वह बादल और धुंध के कारण अल्मोड़ा के पहाड़ी सौन्दर्य को ठीक से नहीं देख पा रहा था। श्रद्धा भी शायद किसी धुंध के पीछे कहीं अदृश्य सी थी।

मनोज की घबराहट कम नहीं हुई। क्या वह अपने प्यार का इजहार श्रद्धा से कर पायगा? क्या श्रद्धा उसकी तड़प को महसूस कर पायगी? या वह केवल बहाना बना देगा कि किसी काम से अल्मोड़ा आया था तो सोचा तुमसे मिल लूं ? पता नहीं क्या होगा? उसने आँखें बंद करली।

अल्मोड़ा पहुंचकर मनोज एक सस्ते से लॉज में जाकर तैयार हुआ और पांडे द्वारा दिए गये हिन्दी साहित्य के नोट्स का लिफाफा लेकर बाहर सड़क पर आ गया। उसने श्रद्धा से अल्मोड़ा के बारे में बहुत कुछ पूछा था। श्रद्धा ने बताया था कि अल्मोड़ा में माल रोड है, माल रोड से नीचे सर्वोदय नगर है। यहीं से पचास सीढ़ियाँ नीचे उतर कर उसका घर है। जिन सीढ़ियों पर रोज श्रद्धा जाती थी आज वह उन सीढ़ियों पर था।इन सीढ़ियों पर श्रद्धा के नजदीक होने का अहसास उसे हो रहा था। लेकिन जैसे जैसे वह सीढ़ियाँ उतर रहा था वैसे वैसे उसके भीतर का आत्मविश्वास भी कम होता जा रहा था। उसके पैरों की गति कम होने लगी ।

पचास सीढ़ियाँ नीचे उतर कर मनोज एक बड़े से घर के सामने आ गया। घर के दरवाजे पर एक नेमप्लेट लगी थी जिस पर लिखा था –'गणेशचन्द्र जोशी' प्रोफेसर। घर के अंदर बड़ा सा बगीचा था। जिसमे कई रंगों के फूल और सब्जियां लगी हुई थी। मनोज की हिम्मत अपनी प्रेमिका के दरवाजे पर आकर जवाब दे गई ,उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह श्रद्धा का सामना कैसे करेगा? क्या कहेगा उससे ? उसकी सारी कल्पना, सारी रणनीति गायब होती हुई दिखने लगी।

मनोज ने हिम्मत करके घर की घण्टी बजाई। उसे अब अपनी धड़कनों की धमक का शोर खुद सुनाई दे रहा था। कुछ देर तक किसी ने घंटी की आवाज नहीं सुनी। अगर कुछ देर तक कोई न आये तो उसे लगने लगा कि वह गिर पड़ेगा। उसमे खड़े रहने की ही शक्ति नहीं बची। क्या प्रेमिका के घर पहली बार आने पर ऐसा ही लगता है? उसका यह अनुभव एकदम नया और अकथनीय था।उसके पैर अब काँप रहे थे । तभी एक नौकर नुमा लड़का बाहर आया।

मनोज ने दो तीन लम्बी सांसे लेकर गले को बोलने लायक बनाया और उस लड़के से बोला- "मैं दिल्ली से आया हूँ, श्रद्धा जोशी से मिलना है।"

लड़का मनोज से पीछे आने को कहकर आगे आगे चलने लगा। वह अब उस घर में था जहाँ उसकी श्रद्धा रहती है, वह अब उस बगीचे से गुजर रहा था जिसका एक एक पौधा, गुलाब ,गेंदे,सेवंती के फूल श्रद्धा के हाथ के स्पर्श से खिलखिला रहे हैं। लड़का उसे बैठक में बिठाकर अंदर चला गया।

मनोज को कांच की अल्मारी में वादविवाद, निबन्ध, गायन प्रतियोगिता में जीतीं ढेर सी ट्राफियां और कप दिखाई दिए। हर एक पर श्रद्धा जोशी नाम लिखा है।पास ही एक तस्वीर तंगी थी जिसमें श्रद्धा रंगोली निकाल रही थी ।श्रद्धा को तस्वीर में देखकर उसने सुकून की लम्बी गहरी साँस ली जैसे उसने अपना लक्ष्य पा लिया हो ।

मनोज अब श्रद्धा के आने का इन्तजार कर रहा था। उसकी आँखें, उसका चेहरा, उसका मन, उसके कंट्रोल में नहीं था।श्रद्धा का अब तक कोई अता पता नहीं था। उसकी नजरे श्रद्धा को ढूंढ रही थीं।उसके कान श्रद्धा की आवाज सुनने को तरस रहे थे। तभी अंदर से श्रद्धा की मम्मी आ गईं।

मनोज ने श्रद्धा की मम्मी को नमस्ते किया –"आंटी जी मैं दिल्ली में श्रद्धा के साथ पढ़ता था।"

श्रद्धा की मम्मी ने अभी तक श्रद्धा को नहीं बुलाया था। क्या पता पहले वह मनोज को परख लेना चाहती हों फिर श्रद्धा को बुलाएं या मुरैना की माताओं जैसे किसी अनजाने लड़के से अपनी लड़की को न मिलने देने का रिवाज अल्मोड़ा में भी हों।उसे को समझ नहीं आ रहा था कि सच्चाई क्या है? श्रद्धा कहा हैं? ऐसा तो नहीं श्रद्धा घर पर न हो कहीं बाहर गई हो। कई तरह के प्रश्न, आशंकाएं, उम्मीदें मनोज के मन में आ जा रही थीं।

"तुम दिल्ले के रहने वाले हो ?"-श्रद्धा की मम्मी ने मनोज से पूछा। उसे अब मम्मी को जवाब देने थे।

"मैं ग्वालियर का रहने वाला हूँ।" - मनोज ने छोटा सा उत्तर दिया।

मनोज मम्मी से ज्यादा बात करना नहीं चाहता था। पर मम्मी के पास आज शायद पर्याप्त समय था।

" ग्वालियर, भिंड, मुरेना का तो बहुत नाम सुना है।" - मम्मी ने मनोज से कहा।

मनोज को यह सुनकर अच्छा लगा कि उसके शहर का नाम दूर पहाड़ों तक रोशन है।

मम्मी ने अपनी अधूरी बात पूरी की–"अभी भी वहां डाकू बंदूक लिए दिख जाते है क्या?" सुना है बहुत लड़ाई झगड़े वाले लोग होते हैं,बात बात पर बंदूक चला देते हैं।"संगीत की शिक्षिका अब समाजशास्त्र में रुचि ले रही थी। अपनी की गई प्रशंसा की वह अब वह व्याख्या कर रही थी।

मनोज को यह चर्चा अपने भविष्य के लिए खतरनाक लगने लगी। उसे पता नहीं था कि चम्बल की बंदूकें बिना चले अल्मोड़ा तक खौफ पैदा करती हैं।

पर उसने बात सम्हालने की कोशिश की–"अब ऐसा नहीं है,पढ़ाई में ग्वालियर बहुत आगे है।ग्वालियर का सिंधिया स्कूल तो पूरे देश में फेमस हैं ।"मनोज ने सिंधिया स्कूल का नाम सुना था ।अपने इलाके के समर्थन में मनोज ने देश भर में प्रसिद्द सिंधिया स्कूल के नाम का सहारा लिया ।इतने बड़े स्कूल का नाम सुनकर श्रद्धा की मम्मी आगे कुछ नहीं बोली ।

श्रद्धा की बात को छोड़कर मम्मी सब बातें कर रही थीं। मनोज को समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे मम्मी से कहे कि श्रद्धा को बुला दे। उसने पांडे के दिए हुए हिन्दी साहित्य के नोट्स लिफ़ाफ़े में से निकालकर अपने हाथ में ले लिए और मम्मी से बोला – "आंटी जी ये नोट्स श्रद्धा के लिए लाया था।"

श्रद्धा की मम्मी ने अब जाकर रहस्य खोला "–श्रद्धा तो इंटर्नशिप करने हरिद्वार गई है।लाओ ये नोट्स मुझे दे दो मैं दे दूंगी।"

कल्पना और सपनों का बड़ा सा महल भरभराकर जमीन पर गिर पड़ा और अदृश्य हो गया। बड़ी सी योजना शुरू होते ही समाप्त हो गई। उसका आना निरर्थक हो गया, मनोज को लगा। पर जल्दी हार न मानने वाले मनोज ने अपनी आदत के अनुसार समस्या से जूझना नहीं छोड़ा।

मनोज ने हिम्मत करके मम्मी से कहा- "श्रद्धा का फोन नम्बर है? मेरे पास था पर मुझसे कहीं खो गया।" मनोज ने इस बात की चिंता छोड़ दी कि श्रद्धा की मम्मी उसके बारे में क्या सोच रही होगी।लेकिन श्रद्धा की मम्मी उदार निकलीं, उन्होंने श्रद्धा के होस्टल का फोन नम्बर मनोज दे दिया।

मनोज वापस बस स्टेण्ड आ गया। उसके पास श्रद्धा का फोन नम्बर आ चुका था। उसने अल्मोड़ा से विदा होने के पहले श्रद्धा से बात करना चाही।

उसने बस स्टेण्ड के पास से श्रद्धा को हरिद्वार होस्टल फोन लगाया। घण्टी जा रही थी। धडकनें फिर बढ़ने लगीं। बात न करो तब भी बेचैनी और बात करने को तैयार हो तब भी बेचैनी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे वह अपनी बढ़ती हुई धड़कनों को कंट्रोल करे। वह इन्तजार करता रहा। घंटी जा रही थी।

किसी महिला ने फोन उठाया तो उसने कहा - "मैं अल्मोड़ा से बोल रहा हूँ, श्रद्धा जोशी से बात करना है।"

महिला ने कहा - "रुकिए बुलाती हूँ।”

थोड़ी देर बाद श्रद्धा फोन पर आ गई। मनोज अब वह आवाज सुनने वाला था जिसके लिए वह पता नहीं कब से तरस रहा था। दिल थाम कर खड़ा रहा।

"हैलो।”-क्या यही वह आवाज है, जो उसके लिए संजीवनी है? जिसे सुनना उसके लिए साँसे लेने जैसा है। जो दुनिया की सबसे प्यारी आवाज है। क्या इसी आवाज को सुनने के लिए वह यहां इतनी दूर आया है? मनोज कुछ नहीं बोल सका।

फोन में से फिर आवाज आई -"हैलो कौन है?"

अब मनोज चुप नहीं रह सकता था - "मैं मनोज बोल रहा हूँ श्रद्धा।”

"मनोज तुम?"- श्रद्धा मनोज को पहचान गई । उम्मीद,कल्पना, सपने, फेंटेसी गायब हो गई थी। यथार्थ सामने था।

"क्या तुम अल्मोड़ा से बोल रहे हो?"- श्रद्धा ने आश्चर्य से कहा।”

हाँ मैं अल्मोड़ा से ही बोल रहा हूँ।” मनोज ने बेहोशी के अंदाज में बोला।

"अल्मोड़ा क्यों आये हो मनोज?"-श्रद्धा को लगा कि मनोज किसी काम से अल्मोड़ा आया है।

"तुमसे मिलने आया था।” – मनोज श्रद्धा से झूठ नहीं बोल पाया।

"क्या मेरे घर गए थे?" - श्रद्धा के स्वर में तल्खी थी।

श्रद्धा समझ गई थी कि मनोज को उसके घर से ही हरिद्वार का फोन नम्बर मिला है।

"तुम ग्वालियर से अल्मोड़ा मुझसे मिलने आये हो? पूछ सकती हूँ क्यों?” - श्रद्धा अब असहज हो रही थी। मनोज का उतावलापन उसे पसन्द नहीं आ रहा था ।

क्या श्रद्धा दिल्ली को पूरी तरह भूल गई है? क्या लड़कियां इतनी जल्दी सब भूल जाती हैं? क्या लड़कियों की स्मरणशक्ति इतनी कमजोर होती है? या लड़कियां सब भूलने का अभिनय करती हैं। मनोज को समझ नहीं आया। पर उसे सब याद था। एक एक पल जो श्रद्धा के साथ बिताया था।

"मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता श्रद्धा। मैं तुमसे मिलने के लिए, बात करने के लिए तड़प रहा हूँ।" आँखे बन्द किये, आँखों में श्रद्धा को बसाये, लरजती हुई आवाज में, डगमगाते स्वर में मनोज ने श्रद्धा से वह कह दिया जिसे कहने के लिए वह अल्मोड़ा आया था।

"आर यू मेड मनोज, क्या तुम पागल हो गये हो? मैं तुम्हें समझदार और अच्छा लड़का समझती थी। आगे से मुझे फोन मत करना।" -बिजली सी कड़की और मनोज के दिल पर गिर पड़ी।फोन पर टूँ टूँ की टोन बजती रही।अमृत पिलाने वाली आवाज ने मनोज का साथ छोड़ दिया। अभी तक प्यार को आसान समझने वाला मनोज समझ गया था कि प्यार उतना आसान नहीं है जितना वह समझ बैठा था। प्यार अब अपने मूल स्वभाव में था, कठिन और दम घोंटने वाला।

आंसुओं से पूरा टेलीफोन भीग चुका था। आंसुओं में डूबा चेहरा लिए मनोज एसटीडी के बाहर ही बस स्टेण्ड पर बैठा रहा। उसे श्रद्धा से ऐसी कठोरता की उम्मीद नहीं थी । क्या वास्तव में श्रद्धा के मन में उसके लिए कोई जगह नहीं है? क्या यह सब केवल उसके मन की कल्पना थी ? वह चुपचाप वहीं बैठा रहा। फिर उसकी आँखों के सामने श्रद्धा का भोला चेहरा आ गया ।

मनोज सोचने लगा –नहीं ,मैं किसी को भी पहचानने में गलती कर सकता हूँ लेकिन श्रद्धा को नहीं ।श्रद्धा सबसे अच्छी है, वह कभी गलत नहीं हो सकती। मेरी ही गलती है जो उसके घर पहुँच गया। मुझे अल्मोड़ा नहीं आना चाहिए था।" कुछ देर पहले श्रद्धा के व्यवहार से दुखी मनोज ने श्रद्धा के प्रति अपने भरोसे और प्यार को कम नहीं होने दिया ।

तभी मनोज को किसी की आवाज सुनाई दी –"आप मनोज शर्मा हैं ?" -यह एसटीडी वाला था।

"आपका फोन है।" -उसने कहा।

मनोज फिर एसटीडी पर पहुंचा। श्रद्धा फिर से फोन पर थी।

इस बार उसने अपनी नाराजगी को छुपाते हुए मनोज से कहा –"मनोज ये तुम क्या कर रहे हो? तुम्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। तुम्हारा मेंस एग्जाम कैसा गया?"

प्यार की तलाश में हजार किलोमीटर दूर आये मनोज को अब अपनी पढ़ाई का रिपोर्ट कार्ड श्रद्धा को देना था।उसके जीवन की असफलताओं की लम्बी श्रंखला में एक और कड़ी जुड़ गई थी। उसने अपना मैन्स

एग्जाम इंग्लिश के पेपर में गलत एस्से लिखने के कारण अधूरा छोड़ दिया था। श्रद्धा उससे उसकी यही उपलब्धि पूछ रही थी।

मनोज से श्रद्धा से कहा -"मैंने मैन्स पूरा नहीं दिया ,इंग्लिश कॉम्प्लसरी पेपर में एस्से गलत लिख दिया था।"

मनोज ने झिझकते हुए अपने अधूरे एग्जाम की कहानी श्रद्धा को कह सुनाई। श्रद्धा कुछ देर खामोश रही।

फिर श्रद्धा ने मनोज को समझाते हुए कहा– "मनोज इस समय तुम्हें पढ़ाई के अलावा कुछ भी दिमाग में नहीं लाना चाहिए। बहुत मुश्किल से मुख्य परीक्षा देने को मिलती है और वह तुमने अधूरी छोड़ दी। अपनी उन कमियों को दूर करने की जगह तुम यहाँ अल्मोड़ा बेकार की बातों को दिमाग में लिए चले आये। क्या इस तरीके से तुम कभी एग्जाम में सफल सकते हो? तुम्हीं बताओ?"

मनोज कहना तो चाहता था कि तुम एकदम सही कह रही हो लेकिन वह कुछ कह नहीं पाया ।वह चुपचाप फोन पर श्रद्धा को केवल सुनता रहा। लेकिन श्रद्धा की बातों से उसे लग रहा था कि उसका रीता मन फिर से भरने लगा है। उस भरे मन में अब कहीं कोई भय या आशंका नहीं बची। न श्रद्धा के प्रति न अपनी सफलता के प्रति ।

SK Technology 30

30 .

मनोज जिस प्यार की तलाश में अल्मोड़ा गया था वह प्यार तो उसे नहीं मिला। लेकिन प्यार की जगह उसे श्रद्धा की उम्मीद और भरोसा जरूर मिल गया था। इसी उम्मीद और पढ़ाई के संदेश को मन में बसाए वह वापस ग्वालियर आ गया । दूसरे अटेम्प्ट की आईएएस प्रारम्भिक परीक्षा में अब केवल तीन महीने बचे थे ।

मनोज ने अपने मन की बात डायरी में लिखी-“मैं तुम्हारी उम्मीद को टूटने नहीं दूंगा,तुमने मुझे सही राह दिखाई है। यदि मैं अल्मोड़ा नहीं जाता तो शायद मुझे यह रास्ता भी दिखाई नहीं देता।अब मेहनत के दिन आ गये।अब मुझे लगातार मेहनत करना चाहिए।”

दिन के ग्यारह बज चुके थे।मनोज और पांडे ने तय किया कि वे दोनों आज लगातार शाम तक पढ़ेंगे। साथ के कमरों में अश्विन, नवनीत और गुप्ता भी पढ़ रहे थे। तभी पीलीकोठी के नीचे की एसटीडी पर योगिता का फोन आ गया। योगिता ने फोन पर कहा कि वह मिलने आ रही है।

पांडे का दिन भर पढ़ने का विचार पीछे छूट गया। पांडे ने नहा धोकर जींस टी शर्ट पहनी और योगिता का इन्तजार करने लगा। देखने के लिए सामने इतिहास की किताब खुली थी लेकिन पांडे उस किताब में कुछ पढ़ नहीं रहा था। पांडे ने व्यर्थ खुली किताब को कष्ट देना बन्द कर दिया और किताब बन्द करके रख दी। पूरी दोपहर ऐसे ही इन्तजार करते हुए उसकी कट गई पर योगिता नहीं आई। न पढ़ाई हुई। वह कभी छत पर जाता कभी नीचे। वह पीलीकोठी में योगिता के इन्तजार में मचलते भूत की तरह भटकता रहा ।

पांडे ने प्रेमिका के इन्तजार का कठिन समय काटने के लिए दूसरे लडकों के कमरों में ताक झाँक शुरू की। अश्विन और नवनीत पढ़ाई कर रहे थे। उससे बात करने के मूड में कोई नहीं था।

योगिता अभी तक नहीं आई थी। पांडे को अभी कुछ और वक्त बिताना था इसलिए वह नवनीत के कमरे में चला गया। पांडे को देखकर नवनीत के कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। अर्थात नवनीत नहीं चाहता था कि पांडे वहां खड़ा रहकर उसकी पढ़ाई डिस्टर्ब करे। कुछ देर नवनीत का सपाट चेहरा बना रहा तो पांडे समझ गया कि नवनीत चाह रहा है कि पांडे वहां से चला जाए । पांडे अपने मन में नवनीत को गालियाँ देता हुआ उसके कमरे से बाहर चला गया ।

इन पूरे चार पांच घण्टे में पांडे ने एक अक्षर भी नहीं पढ़ा। पांच बजे योगिता आई। प्रेमी पांडे ने चार पांच घण्टे बाद राहत की सांस ली।

योगिता ने बड़ी सी आँखें नचाते हुए कहा -"सॉरी लेट हो गई। बीस तारीख को मेरी दीदी की शादी है। ” इतना कहकर योगिता ने शादी का एक कार्ड निकालकर पांडे के सामने टेबल पर रख दिया।

योगिता ने मुस्कुराकर दोनों से कहा- "आप दोनों शादी में जरूर आइये।”

इतना कहकर योगिता चली गई। पांच घंटे के इन्तजार के बाद पांडे को अपनी प्रेमिका का पांच मिनिट का साथ ही नसीब हुआ। पर पांच मिनिट का साथ भी विरही प्रेमी को जीवित रखने के लिए पर्याप्त था । वह लम्बी सांस लेकर पलंग पर लेट गया।यह सुख की सांस थी। उसने महसूस किया कि अब वह पढ़ सकता है। आईएएस की प्रिलिम्स के लिए अब माहौल सकारात्मक है। उसने किताब उठा ली।

दस मिनिट किताब पकड़े रहने के बाद पांडे ने योगिता की दीदी की शादी का कार्ड उठा लिया और उसे बहुत बारीकी से निहारता रहा। फिर उसकी इच्छा हुई कि अब टेप पर गाने सुने जाएँ। उसने फिर से मोहब्बतें फ़िल्म

का गाना लगा दिया- 'सोणी सोणी अँखियों वाली' गाने की आवाज फुल थी। शायद पास के कमरे में नवनीत को इस गाने से पढ़ाई में डिस्टर्ब हो रहा था।
नवनीत ने आकर मनोज से कहा -" मनोज गाने की आवाज कम कर दो।”
मनोज ने गाने की आवाज कम कर दी। नवनीत मनोज को धन्यवाद देकर वापस अपने कमरे में चला गया।
पांडे ने मनोज से कहा -"ये नवनीत पढ़ने का अभिनय बहुत करते हैं। हम क्या पढ़ाई नहीं करते? हमे तो गाने से भी डिस्टर्ब नहीं होता। उलटे जब गाना चलता है तो हम और अच्छा पढ़ते हैं।” पांडे ने उसके बाद नवनीत को मन भरकर गालियां दी।

31 .

मनोज के पैसे खत्म हो गए थे। उसे पता चला कि पिता गाँव आये है तो वह पिता से मिलने और आगे की पढ़ाई के लिए पैसे लेने गाँव चला गया। बस से उतरते ही पुलिया पर उसे विष्णु और बल्ले मिल गये। विष्णु सरकारी स्कूल में संविदा शिक्षक बन गया था।
मनोज को देखते ही विष्णु बोला- "क्यों मनोज आ गया? कब तक बनेगा डिप्टी कलेक्टर ? बहुत साल हो गए अब तो।”
मनोज को उम्मीद नहीं थी कि गाँव में प्रवेश करते ही उसे इस तरह का व्यंग्य सुनना पड़ जायगा।
उसने विष्णु को समझाते हुए कहा - "हो जायगा गोविन्द। समय लगता है।”
पर विष्णु अपने पुराने ट्वेल्थ फेल दोस्त का स्तर जानता था। विष्णु मानता था कि मनोज सिर्फ मस्ती मजे के लिए ग्वालियर में रह रहा है। उसकी नजर में मनोज को शहर की हवा लग चुकी है।
“तू मुझे पागल नहीं बना सकता, मैं जानता हूँ तुझे और तेरी पढ़ाई को ” –विष्णु को मनोज पर बिलकुल भी भरोसा नहीं था।
विष्णु के साथ मनोज का एक और दोस्त बल्ले भी वहीं खड़ा था बल्ले ने टेम्पो चलाना बन्द कर दिया था।वह जौरा में कन्सट्रक्शन का काम करने लगा था।
उसने मनोज पर व्यंग्य करते हुए कहा- "जे मूंछे काय कटाय लई। चश्मा लगाये लओ। मोय तो तेय लच्छिन ठीक ना लग रहे। मोय तो लागते कि तैनें मोड़ी फसाए लई है गवालियर में। देखिये भैया नाक ना कटाय दिए गाँव की। सिंधी, पंजाबिन के चक्कर में तो ना फंस गयो।” मनोज को बल्ले की बात बुरी लगी। लेकिन उसने बल्ले की बात को अनसुना सा कर दिया।
मनोज अपने दोस्तों से बिना कुछ कहें अपने घर की ओर बढ़ गया ।

पिता कमरे के बाहर बरामदे में अपने कागज लिए बैठे थे। दीपक कहीं बाहर गया हुआ था। माँ पड़ोस में चर्चा के लिए गईं थी। छोटी बहन रजनी ने मनोज को देखा तो दौड़कर भैया से गले लग गई। गाँव आते ही मनोज को लगा कि श्रद्धा कितनी दूर की कल्पना है। वह श्रद्धा का घर और उसका खूबसूरत शहर अल्मोड़ा देख आया था। श्रद्धा के शहर और उसके घर के सामने मनोज का यह घर उसका गाँव कितना घटिया कितना कमजोर है। यहां इस माहौल में जहां किसी को बात करने की तमीज नहीं है। सब गन्दा बोलते हैं व्यंग्य करते है। कहाँ श्रद्धा का घर? कहाँ उसके पढ़े लिखे माता पिता? और कहाँ उसका गाँव? उसके घर का यह माहौल? उसे समझ आ गया कि श्रद्धा को लेकर उसकी कल्पना कितनी अव्यवहारिक है।

पिता के पास पहुंचकर मनोज ने उनके पैर छुए और जमीन बैठ गया।

पिता ने उसे देखा तो हुंकारते हुए बोले -" हूँ। कब आयो।"

मनोज के जवाब का इन्तजार किये बिना पिता ने अपनी बात कहनी शुरु कर दी।

पिता -"अब वे फिर मेरो ट्रासंफर करबो चाह रहे है। देखें कैसे करते है। मैं सबकी खटिया खड़ी कर देंगो। क्या समझता है डिप्टी डायरेक्टर। बेईमान साला।"

एक साल से पिता की नौकरी व्यवस्थित चल रही थी। पर पिता ने अब फिर से जंग खा रहे अपने हथियारों को चमकाना शुरु कर दिया था। मनोज समझ गया कि पिता विश्राम के बाद फिर से जंग के लिए तैयार हो गए है।कभी भी वह फिर से सस्पेंड हो सकते है।

मनोज ने आज पहली बार अपने पिता से घर की अर्थव्यवस्था को ठीक बनाये रखने की विनती की - "पापा दो तीन साल ठीक से नौकरी कर लो। मेरी पढ़ाई चल रही है। दिल्ली जाऊंगा कोचिंग के लिए। दिल्ली में पैसों की जरूरत पड़ेगी।" लेकिन इस तरह की विनतियों का असर पिता पर कभी नहीं हुआ।

पिता बोले- "तू जानता नहीं है इन लोगों को। बहुत हरामी हैं । मैं सबको ठीक कर दूंगा।"

मनोज समझ गया कि संकट बढ़ने वाला है। पिता फिर से संघर्ष के मूड में आ चुके हैं अब उन्हें किसी भी तरह रोका नहीं जा सकता। किसी भी दिन खबर आ सकती है कि पिता सस्पेंड हो गए हैं। दूसरी तरफ दिल्ली जाए बिना सिलेक्शन नहीं होगा। आईएएस प्रीलिम्स ग्वालियर से निकल सकती हैं पर मुख्य परीक्षा के लिए दिल्ली जाना जरूरी था।

मनोज अगले दिन माँ से दो हजार रुपये लेकर वापस ग्वालियर चला गया। रास्ते भर वह सोचता रहा कि वह व्यर्थ ही इतने बड़े सपने देख रहा है। आईएएस,श्रद्धा,पीएससी। उम्मीद के साथ गाँव जाने वाला मनोज लौटते समय अपने साथ नाउम्मीदी और हताशा लेकर आया था।

32 .

योगिता की दीदी की शादी में जाने के लिए पांडे और मनोज तैयार हो गए। अश्विन के पास लाल रंग की मारुती कार थी, कार से प्रेमिका के यहाँ जाने से पांडे का प्रभाव बढ़ता इसलिए पांडे ने योगिता की दीदी की शादी में जाने के लिए अश्विन को भी तैयार कर लिया। शादी के सुस्वादु भोजन के बदले अपनी कार ले जाने को अश्विन तैयार हो गया। पांडे मनोज और अश्विन तीनों शादी में पहुँच गए। योगिता ने तीनों मेहमानों का स्वागत किया। पांडे आज योगिता के सौंदर्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गया था। वह अपनी पसन्द पर गर्व कर रहा था।
उसने अश्विन को कोहनी मारते हुए कहा -" देखो अश्विन, योगिता कितनी सुंदर है। ”

अश्विन स्पष्ट उद्देश्य से आया था, उसे इन बेकार की बातों में कोई रुचि नहीं थी। उसने व्यर्थ समय बर्बाद नहीं किया। वह खाने के स्टॉल तलाशने लगा और अपनी प्लेट सजा के पांडे के पास आकर खड़ा हो गया।

अश्विन - "पांडे मटर पनीर अच्छा बना है। तुम भी प्लेट ले लो। ज्यादा वक्त बर्बाद करने की जरूरत नहीं है चलकर पढ़ना भी है।”

अश्विन ने पांडे को इस रोमांटिक मौके पर पढ़ाई की याद दिला दी। पर पांडे की भूख प्यास मर चुकी थी। पढ़ाई वह भूल चुका था। वह चारों तरफ चहकती हुई, मुस्कुराती हुई, योगिता को ही देख रहा था।योगिता कभी मेहमानों से बात करती, कभी किसी बात पर हँसती दिखाई देती।

पांडे ने इस बार मनोज से कहा - "देखो मनोज योगिता कितनी खुश है।”

मनोज ने पांडे को सन्तुष्ट किया - "मुझे तो लगता है कि वह तुम्हारे आने के कारण ही ज्यादा खुश है।उसकी ख़ुशी छुपाये नहीं छुप रही।”

अश्विन ने बहुत दिनों से दहीबड़ा नहीं खाया था, उसने दहीबड़ा खाते हुए कहा –”पांडे दही बड़ा अच्छा बना है,खाओगे?”

योगिता के सौंदर्य में डूबने के कारण पांडे को भूख नहीं लग रही थी।

"तुम ठूंस लो पहले "- पांडे ने अश्विन से गुर्राते हुए कहा।

मनोज कहीं खोया हुआ था। पांडे की नजर सिर्फ योगिता पर टिकी हुई थी हँसती और खिलखिलाती बड़ी बड़ी आँखों वाली योगिता पर। उत्सव और सौंदर्य के इस माहौल में मनोज को श्रद्धा की याद सताने लगी। एक प्रेमी अपनी दूरस्थ प्रेमिका को याद कर रहा था दूसरा प्रेमी अपनी निकटस्थ प्रेमिका को निहार रहा था। पांडे इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि योगिता उसी के कारण आज बेहद खुश है। अश्विन के मुंह में कढ़ी

और चावल भरे हुए थे।वह पांडे की बात पर हँसना चाहता था पर इस डर से चुप रहा कि हँसने से उसके मुँह के कढ़ी चावल गिर जायंगे।

पर फिर भी मुँह में कढ़ी चावल भरे हुए ही अश्विन ने मजबूरी में अपने मन की बात कह दी -" पाण्डे तुम्हारी आँखें फूट गईं हैं क्या?"

अश्विन बिन बुलाई शादी में केवल भोजन करने आया था। पर वह अपने दूसरे दायित्व भी निभाना चाहता था, उसने पांडे को यथार्थ के दर्शन कराने का अपना दायित्व निभाया।

पांडे को समझ नहीं आया कि अश्विन क्या कहना चाहता है।

उसने अश्विन से गुस्से में पूछा -" उल्टी सीधी बातें बहुत करते हो तुम, तुम्हें यहाँ लाकर हमने बहुत बड़ी गलती कर दी। बताओं अब क्या कहना चाहते हो? "
अश्विन की नजर बारीक थी। उसने पांडे को वह दिखाया जो प्यार में अंधा पांडे नहीं देख पा रहा था।

अश्विन ने चासनी वाले गरम गुलाब जामुन का आनन्द लेते हुए पांडे से कहा - "योगिता तुम्हारे कारण नहीं चहक रही है पांडे। वो देखो काले कोट में तुमसे लम्बा और सुंदर लड़का खड़ा है ना! उसके कारण चहक रही है।”

पांडे और मनोज ने देखा कि योगिता एक स्मार्ट लड़के से हँस हँस कर बात कर रही है। बात करते करते कभी योगिता शरमा जाती, कभी मुस्कुरा जाती।

पांडे ने अश्विन का विरोध किया - "अश्विन तुम विघ्नसंतोषी हो। यहां कई लोग हैं जो योगिता के मेहमान हैं, हँसकर बात करना मेहमान का धर्म है।”

"मत मानो पांडे यदि नहीं मानना है तो,पर उस लड़के से ही चक्कर है योगिता का। तुम बेकार ही बीच में कूद रहे हो।” - अश्विन ने आत्मविश्वास से कहा।

पांडे अब चौकन्ना हो गया। अश्विन की लगाई आग अब भड़क रही थी। पांडे को उम्मीद नहीं थी कि योगिता उसके कारण नहीं किसी और लड़के के कारण खुश है।अश्विन का खाना पूरा हो गया था।पर अभी कॉफ़ी बची हुई थी।

अश्विन कॉफ़ी पीने लगा। उसने कॉफी पीते हुए फाइनल निर्णय सुनाया - "पांडे तुम्हारा अब यहां कोई काम नहीं है। तुम्हारी योगिता ने तुमसे ज्यादा स्मार्ट और संभावनाशील लड़का ढूंढ लिया है। चलो अब चलकर पढ़ाई करो।”

पांडे अब तनाव में था। उसने चिढ़कर कहा -" मैं नहीं मानता तुम्हारी बात। मैं खुद पता लगाता हूँ।"

मनोज रोकता रहा पांडे को, पर पांडे वहां पहुँच गया जहां योगिता उस लड़के से बात कर रही थी। मनोज को डर था कि पांडे कहीं कोई बवंडर न कर दे।

मनोज ने अश्विन से कहा - "ये पांडे कहीं कुछ उल्टा सीधा न बोल दे योगिता से।"

मनोज पांडे का साथ देने उसके पीछे पीछे चला गया। योगिता के पास पहुंचकर पांडे योगिता को परखने के उद्देश्य से बोला - "योगिता अब हम लोग चलते हैं।"

जब तक योगिता कुछ बोलती मनोज ने योगिता के साथ खड़े लम्बे और स्मार्ट लड़के से हाथ मिलाकर कहा –" हैलो मैं मनोज।

लड़के ने भी विनम्रता से मनोज से हाथ मिलाया - "हैलो मैं शशांक।"

योगिता ने शशांक का परिचय दिया -"ये शशांक है,जीजाजी के रिश्तेदार। इंग्लैंड में सॉफ्टवेयर इंजीनयर हैं।"

यह एक अधूरा और आशंकित करने वाला खतरनाक परिचय था। पर पांडे समझ गया कि इस लड़के के सामने वह कुछ भी नहीं है। शादी की लाइटिंग और चकाचौंध में पांडे का चेहरा फीका पड़ गया। पांडे समझ गया कि योगिता अब इस लड़के से ही प्यार करेगी। उसे अपनी हार एकदम सामने दिखाई देने लगी। इस हार से पांडे बुझ गया। लड़का उन लोगों से विदा लेकर चला गया। मनोज पूरी तरह कन्फर्म करना चाह रहा था कि वास्तविकता क्या है ?

मनोज ने योगिता से कहा- "योगिता शशांक अच्छा लड़का है।"

योगिता को मनोज का कथन समझने में वक्त नहीं लगा। मनोज का आशय भी शायद वह समझ गई थी।

उसने मनोज से बड़ी उत्सुकता से पूछा -"सच में?"

मनोज ने पूरी जांच पड़ताल के उद्देश्य से योगिता से कहा - "योगिता इंग्लैंड जाकर हम लोगों को भूल मत जाना।"

योगिता शरमा गई। उसने अपना सर केवल 'ना' के इशारे में हिलाया जिसका अर्थ था कि वह इंग्लैंड जाकर इन दोनों को नहीं भूलेगी। पांडे को अब कोई फर्क नहीं पड़ता कि इंग्लैंड जाकर योगिता उसे याद करेगी कि

भूल जायगी। कुछ देर खामोशी बनी रही। पांडे की हिम्मत योगिता के चेहरे की ओर देखने की नहीं हो रही थी।

योगिता ने मनोज से कहा - "आप लोग खाना खाकर ही जाइए।"

योगिता की नजरें पांडे से बच रही थीं। मनोज ने सच उगलवा लिया था। पांडे वही खड़ा था। उसके पैर और दिमाग पत्थर हो गए थे। योगिता ने पांडे की तरफ देखा भी नहीं। वह दूसरी तरफ चली गई। अश्विन ने देखा कि अब पांडे और मनोज अकेले हैं तो वह लपक कर आ गया।

मनोज ने अश्विन से कहा - "पांडे का खेल ख़त्म। तुम सही थे अश्विन। योगिता उस इंग्लैंड वाले लड़के से प्यार करती है।"

अश्विन ने पांडे से व्यंग्य में कहा - "पांडे अब चलें या खाना खाकर जाओगे। एमए हिंदी में लात मारकर सॉफ्टवेयर इंजीनियर के साथ तुम्हारी प्रेमिका निकल ली इंग्लैंड। पढ़ लो। नहीं तो कहीं के नहीं रहोगे।"

मनोज ने पांडे से कहा - "पांडे खाना खा लेते हैं। देर हो रही है।"

पांडे अश्विन से कुछ नहीं बोला था पर उसके भीतर आग लगी हुई थी । उसे योगिता पर क्रोध आ रहा था।

योगिता से कुछ कहने की हिम्मत पांडे की नहीं थी इसलिए पांडे मनोज पर फट पड़ा - "जिस दिन श्रद्धा तुम्हें छोड़ कर जायगी उस दिन खा लेना तुम खाना। तुम्हें क्या करना मुझसे ? तुम्हें श्रद्धा की याद आ रही होगी, जाओ तुम श्रद्धा को फोन कर आओ। मेरी चिंता करने की तुम्हें जरुरत नहीं है।"

पांडे ने अपने लुट चुके प्यार का गुस्सा मनोज पर उतार दिया। मनोज समझ गया था कि इस समय पांडे से कुछ भी कहना खतरे से खाली नहीं है।अश्विन पांडे को दूर खींच ले गया।मनोज वहीं खड़ा रहा।

दूर स्टेज पर 'कमबख्त इश्क है जो, सारा जहां है वो' गाने पर कुछ लोग डांस कर रहे थे।मनोज को सुखविंदर और आशा भोंसले के इस गाने से जैसे नशा हो गया। अपने अधूरे इश्क में मनोज फिर से डूब गया। मनोज को लग रहा था कि यह गाना जैसे उसी के लिए गाया जा रहा है। 'ये इश्क इश्क हिम्मत है,ये इश्क इश्क किस्मत है ,ये इश्क इश्क ताकत है।' श्रद्धा के इश्क में डूबे मनोज के सामने इस समय श्रद्धा के अलावा कोई नहीं था।

गाना खत्म होने के बाद यह भरा प्रेमी वापस अपने दोनों साथियों के पास आ गया। लुटा प्रेमी पांडे कन्फ्यूज़न में था कि खाना खाये या नहीं। उसके दिल और पेट में जद्दोजहद चल रही थी। उसे पता था कि आज पीलीकोठी में भी उसे खाना नहीं मिलेगा इसलिए उसने भूख से समझौता नहीं किया।भरपेट खाने के बाद तीनों

कार से पीलीकोठी चल दिए। पेट में भोजन जाने के बाद पांडे में फिर से दुखी होने की ताकत आ गई। वह दुखी मन से सड़क पर देखने लगा। पांडे की रोने की इच्छा होने लगी। पर रोने के लिए कार उसे उपयुक्त नहीं लग रही थी।

अश्विन ने दोनों प्रेमियों से कार चलाते हुए कहा- "कॉम्पटीशन की तैयारी करने वालों के लिए प्रेमिकाएं कुतियाएं होती है, जिन्हें शुरुवात में ही लतिया देना चाहिए नहीं तो ये बहुत परेशान करती है।”

अश्विन ने प्रेम और प्रेमिका के बारे में अपना विचार दोनों प्रेमियों को बता दिया।

दोनों प्रेमी अश्विन की बात से सहमत नहीं दिखे तो अश्विन ने अपनी बात आगे बढ़ाई -" और प्रेमी कुत्ते होते हैं जो उनके पीछे पढ़ाई छोड़कर लपलपाई जीभ निकालकर भागते रहते हैं। क्यों पांडे? "- अश्विन ने पांडे को कुत्ता कह दिया था और अश्विन उसकी स्वीकारोक्ति भी पांडे से चाहता था।

पांडे जोर जोर से बोलने लगा - "हां मैं कुत्ता हूँ। हूँ मैं कुत्ता।”

इतना कहकर उसकी रुलाई फूट पड़ी और वह अश्विन से लिपट कर रोने लगा। अश्विन को इस लिपटने से कार चलाने में असुविधा हो रही थी।

उसने पांडे को अपने से अलग किया और कहा - "पांडे कार चलाने दो, अभी घुस जायगी किसी में। प्रेमिका से हाथ धोया है, जान से भी हाथ धोना पड़ेगा। हटो अलग।”

मनोज अभी भी उसी गाने के सुरुर में था। जब अश्विन ने मनोज से पूछा कि -" मनोज जी बताइये क्या मैं गलत कह रहा हूँ?"

मनोज ने पूरे गले से, पूरी आवाज में, उसी गाने की लाइनें गाना शुरु कर दी- "ये इश्क इश्क हिम्मत है, ये इश्क इश्क किस्मत है, ये इश्क इश्क ताकत है, ये इश्क दिल की दौलत है।”

गाना इतना तेज और बेसुरा था कि कार के बाहर सड़क पर चलने वाले कुछ लोग भी मनोज को देखने लगे।

तीनों पीली कोठी पहुँच गए। इस अव्यवस्थित रात में पढ़ाई नहीं होनी थी। पांडे कमरे में पड़ा पड़ा अपनी छूट चुकी प्रेमिका के लिए दुखी होता रहा। उसे अपनी पीड़ा का जहर खुद ही पीना था। ‘सोणी सोणी अँखियों वाली’ गाना आज पांडे ने नहीं चलाया। उसने लगान फ़िल्म का भजन 'ओ पालनहारे निर्गुण और न्यारे तुम बिन

हमरा कौनु नाहीं,हमरी उलझन सुलझाओ भगवन तुम बिन हमरा कौनु नाहीं ' अपने टेप रिकार्ड पर लगा दिया और पलंग पर लेट कर रोता रहा। दोनों प्रेमी फिर से भूल गए थे कि उनका प्रिलिम्स सामने है।

SK Technology 30

33 .

आईएएस प्रिलिम्स की परीक्षा हो गई। मनोज और पांडे की इस बार आईएएस प्रीलिम्स क्लियर नहीं हुई ।

सांप सीढ़ी के खेल की तरह मनोज फिर से जीरो पर आ गया ।अश्विन और नवनीत ने धमाका कर दिया। दोनों की प्रीलिम्स क्लियर हो गई ।युद्ध का यह पहला मोर्चा जीतने के कारण नवनीत की इच्छा फिर से अपने दुश्मनों को अपमानित करने की होने लगी ।

मनोज और पांडे के कमरे पर नवनीत ने मंद मंद मुस्कुराते हुए व्यंग्य के तीर से पांडे को घायल करना शुरू किया –"पांडे एश्वर्या राय ने तुम्हें बर्बाद कर दिया ।"

पांडे को नवनीत का यह कथन समझ नहीं आया , उसने चिढ़ते हुए पूछा –"कौन एश्वर्या राय ?"

"वही सोणी सोणी अंखियों वाली जिसके इन्तजार में तुम प्रीलिम्स ठीक से नहीं दे पाए ।" –नवनीत ने पांडे पर व्यंग्य किया ।

"मैं किसी लड़की के कारण डिस्टर्ब नहीं हुआ ,वो तो इस साल इतिहास के पेपर में प्रागैतिहासिक भारत और दक्षिण भारत से ज्यादा प्रश्न आ गये थे जिसकी तैयारी हमलोग ठीक से नहीं कर पाए ।"-पांडे ने सफाई दी

नवनीत ने हँसते हुए पांडे से कहा –"नाच न जाने आँगन टेढा ।" –नवनीत का व्यंग्य सुनकर पांडे कलप कर रह गया ।

अश्विन ने पांडे से कहा – "पांडे प्रीलिम्स की तैयारी पूरे सिलेबस की करनी पड़ती है ,अंदाज और पुराने पेपर के आधार पर तैयारी करने से यही रिजल्ट होता है ,जो आपका हुआ है ।"

अश्विन की बात सही थी ,पांडे के पास इसका कोई जवाब नहीं था ।

नवनीत ने इस बार मनोज से कहा – "मनोज जी एक बार प्रीलिम्स क्लियर होने के बाद दूसरी बार फेल हो जाना सच में चिंता की बात है।"

मनोज इस बात का कुछ उत्तर देता इसके पहले ही नवनीत ने अश्विन से कहा –"अश्विन मैं अब ग्वालियर में समय बर्बाद नहीं करना चाहता इसलिए कल ही कोचिंग के लिए दिल्ली चलो ।ग्वालियर में मैन्स का कोई माहौल नहीं है । "

इतना कहकर नवनीत उठा और पड़ोसन फिल्म के गाने की पंक्तियाँ गुन गुनाने लगा – 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा।'इसके बाद 'टेढ़ा' शब्द को मन्ना डे की तरह अलग अलग तरीके से गाता हुआ नवनीत अपने कमरे की ओर चला गया । पांडे और मनोज दोनों नवनीत के घातक व्यंग्य को सुनकर मन मसोसकर रह गये ।

मनोज के आत्मविश्वास की धज्जियां उड़ चुकी थीं। मनोज को यह समझ आ गया कि इस परीक्षा में हर साल नये सिरे से उसी मेहनत से तैयारी करनी पड़ती है जैसी कि सफल होने के लिए की जाती है। पिछले अटेम्प्ट की सफलता अगले अटेम्प्ट सफलता की गारंटी नहीं हो सकती ।अब मनोज को लगने लगा कि जब प्रिलिम्स में ही नहीं हुआ तो मैन्स और इंटरव्यू तो बहुत दूर की बात है। दिल्ली में पहले अटेम्प्ट की प्रीलिम्स की सफलता और हिन्दी में योग्यता के लिए विकास सर द्वारा की गई तारीफ़ सब बेमानी हो गई थी। उसके सामने अब उत्तर प्रदेश पीएससी की मुख्य परीक्षा थी। पर उसकी अभी कोई डेट नहीं आई थी।

मनोज अपने मन की निराशा को कम करने के लिए पांडे के साथ जगदीश तोमर जी के घर चला गया। तोमर जी अपनी बैठक में पलंग पर बैठे कोई किताब पढ़ रहे थे। पांडे और मनोज को देखकर तोमर जी ने जोरदार ठहाका लगाकर दोनों का स्वागत किया। दोनों पराजित से तोमर जी के सामने बैठ गये।

तोमर जी ने पूछा –"क्या बात है आज कुछ परेशान दिख रहे हैं?"

मनोज ने कहा –"प्रीलिम्स में हम दोनों का नहीं हुआ।"

तोमर जी ने बड़ी बेफिक्री से कहा – " असफलता यही सिद्ध करती है कि सफलता के लिए पूरे मन से प्रयत्न नहीं किया गया।आप लोग अपनी असफलता से दुखी हैं। पर क्या आप यह कह सकते हैं कि आपने सफलता के लिय सौ प्रतिशत प्रयत्न किया था? पढ़ाई के समय आपकी रणनीति, आपकी लगन, आपकी मेहनत में कोई कमी नहीं रह गई थी? यदि ऐसा है तो आपको दुखी होने का अधिकार है अन्यथा नहीं।" – स्कूल के पूर्व प्रिंसिपल तोमर जी के इस शिक्षकीय उद्बोधन के समय मनोज और पांडे केवल एक दूसरे का

चेहरा देख रहे थे।वे दोनों जानते थे कि प्रीलिम्स की तैयारी का अधिकाश समय उन दोनों ने अपने अपने प्रेम की खोज में बिता दिया था।

तोमर जी ने कहना जारी रखा –"जाकर उन लड़कों से मिलो जो इस परीक्षा में सफल हुए हैं। उनसे पूछना कि उन्होंने यह सफलता कैसे पाई? उसकी क्या प्लानिंग थी? उन्होंने कितनी मेहनत की? पढ़ाई के मध्य आने वाले व्यवधानों को कैसे दूर किया? तुम पाओगे कि उनकी रणनीति उनकी लगन तुमसे बेहतर थी।"

पांडे को नवनीत का कमरा याद आ गया जिसमें वह निर्विघ्न पढ़ाई कर रहा है और पांडे योगिता के इन्तजार में भटक रहा है।

तोमर जी के घर से प्रेरणास्पद उद्बोधन सुनकर दोनों पीलीकोठी वापस आ गये। दोनों के पास अब अगले साल की प्रीलिम्स की तैयारी पढ़ाई करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था ।

जल्दी सिलेक्शन के सपने देखने वाले मनोज के लिए सफलता दूर होती जा रही थी। आईएएस के चार में से दो अटेम्प्ट तो उसके बेकार ही चले गये थे। तीसरे अटेम्प्ट की प्रीलिम्स अगले साल मई में होगी । लम्बी मैराथन के लिए उसे फिर से तैयार होना है ।

लेकिन इस असफलता के बावजूद श्रद्धा के प्यार को मनोज दिल से नहीं निकाल पा रहा था। दो महीने तक उसने अपने आप को दृढ़ करके बिना विचलन के अच्छी पढ़ाई की। पर प्यार की तड़प आसान नहीं होती। कुछ दिनों तक शांत रही यह भावना फिर से हिलोरें मारने लगी। उसे श्रद्धा की याद फिर सताने लगी, उसके दिलो दिमाग पर श्रद्धा का चेहरा, उसकी बातें, उसकी हँसी उसकी आवाज,फिर छाने लगी। प्रातः स्मरण सी श्रद्धा फिर से उसकी नींदे उड़ाने लगी ,सपनों में आ आकर श्रद्धा फिर से उसे जगाने लगी ।

एक उदास शाम मनोज पीली कोठी की छत पर रेलिंग के पास खड़ा श्रद्धा की याद में दूर डूबते सूरज को निहार रहा था। पांडे की स्थिति मनोज से अलग थी उसकी प्रेमिका उसे छोड़कर बेहतर प्रेमी के साथ निकल गई थी। प्रेम और प्रेमिका से दूर होने के कारण पांडे के भीतर 'प्रेम से नुकसान' नाम का ज्ञान अचानक पैदा हो गया ।

पांडे ने प्रेम वियोग में विचलित मनोज को समझाया –"मनोज प्यार ने मुझे और तुम्हें बर्बाद कर दिया है ।अब हमें सब कुछ छोड़कर केवल पढाई पर ध्यान देना चाहिए ।"

मनोज अपने आपको प्रेम में बर्बाद नहीं मान रहा था उसने डूबते हुए सूरज को देखते हुए जवाब दिया –मेरी रणनीतिक गलती के कारण प्रीलिम्स क्लियर नहीं हुई, श्रद्धा के प्रति मेरा प्यार तो मुझे अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित करता है ।"

पांडे के विपरीत मनोज अपनी असफलता का कारण अपने प्यार को नहीं मान रहा था । उसने अपनी बात आगे बढाते हुए पांडे से कहा –"श्रद्धा मेरे लिए क्या है तुम नहीं समझ सकते। मैं अब श्रद्धामय हो गया हूँ। रात दिन मुझे श्रद्धा ही दिखती है। तुम इसे प्यार कह सकते हो मैं इसे भक्ति कहता हूँ। मेरी भक्ति कभी धोखा नहीं दे सकती। परीक्षा अवश्य ले सकती है।"

मनोज ने इन दिनों प्यार, भक्ति, भय, पढ़ाई, संकल्प का आपस में घालमेल कर लिया।पांडे ने उसे समझाने की असफल कोशिश बंद कर दी ।

दो महीने अच्छी पढ़ाई करने के बाद फिर से मनोज को श्रद्धा की याद सताने लगी। मनोज का मन जब पढ़ाई से उचट गया तो उसने पांडे से कहा –"पांडे हम जगदीश तोमर जी के घर चलें ? उनसे बात करके मोटीवेशन मिलता है।"

मनोज छूट चुकी पढ़ाई को पटरी पर लाने की कोशिश कर रहा था इसलिए उसकी इच्छा जगदीश तोमर जी से मिलने की होने लगी। पांडे भी बहुत दिनों से जगदीश तोमर जी से नहीं मिला था। इसलिए दोनों जगदीश तोमर जी के घर चले गये ।

तोमर जी अपनी बैठक में हमेशा की तरह अपने पलंग पर लोढ़ से टिके किताब पढ़ रहे थे। मनोज और पांडे को देखकर तोमर जी ने ठहाका मारकर उनका स्वागत किया ।

"कैसी चल रही है पढ़ाई?" –तोमर जी ने मनोज और पांडे से पूछा ।

मनोज अपनी बात कहने के लिए मुंह खोलने ही वाला था कि पांडे बोल पड़ा –"पढ़ाई नहीं अब भक्ति चल रही है।

"किसकी भक्ति चल रही है ?" –तोमर जी को पांडे का कथन समझ नहीं आया । इसलिए उन्होंने सहज उत्सुकता से पूछ लिया।

"श्रद्धा की।"-बम सा पांडे ने मनोज के सामने फोड़ दिया। पांडे शायद तोमर जी के घर कुछ और ही तय करके आया था। मनोज को अपने कानों पर भरोसा नहीं हुआ कि पांडे जगदीश तोमर जैसे गम्भीर व्यक्तित्व के धनी, अनुशासनप्रिय रिटायर स्कूल प्रिंसिपल, शहर के सम्मानीय विद्वान के सामने ऐसी कोई बात कह सकता

है। पर पांडे मनोज के प्यार का राज खोलकर तोमर जी के रिएक्शन का इन्तजार कर रहा था। मनोज का मुंह शर्म से लाल हो गया। वह तोमर जी के कमरे से भाग जाना चाहता था। पर वह अपनी जगह से हिल भी नहीं पाया ।

तोमर जी कुछ पूछते उसके पहले पांडे ने कहना शुरु किया –"श्रद्धा से कुछ दिन पहले तक मनोज जी प्रेम करते थे, पर अब वह कह रहे हैं कि वह भक्ति करने लगे हैं। आप तो सुदर्शन हैं।मुझे उम्मीद है कि आपका इतिहास इस क्षेत्र में अवश्य समृद्ध रहा होगा । इसलिए इस मार्मिक विषय पर आपके विचार जानने हम आज यहाँ आये हैं।"

मनोज तोमर जी के घर पढ़ाई की भटकी हुई दिशा तलाशने आया था पर पांडे शायद किसी दूसरे उद्देश्य से तोमर जी के घर आया था ।मनोज की पोल खोलकर पांडे अब रिटायर प्रिंसिपल जगदीश तोमर की कोई गोपनीय प्रेम कहानी जानना चाह रहा था। मनोज की आँखों के सामने अन्धेरा छा रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि पांडे इतना बेशर्म कैसे हो सकता है।

"हाहाहा, समृद्ध तो नहीं था, पर ठीक ठाक था।"-जगदीश तोमर ने ठहाका मारते हुए पांडे की बात का जवाब दिया । मनोज को विवेकानन्द साहित्य के मर्मग्य जगदीश तोमर से इस तरह की किसी स्वीकारोक्ति की उम्मीद नहीं थी।

'ठीक ठाक' का नाम बतायेंगे या रहने दें।" –पांडे अपने दोनों हाथ मसलते हुए अब तोमर जी की किसी पुरानी प्रेम कहानी की खोज कर रहा था ।

"अब तो बुढ़ा गईं होंगीं।"-तोमर जी ने अपने दोनों हाथों को फैलाकर जोर से ताली पीटते हुए कहा। मनोज की आँखें फटी जा रही थीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये सब क्या बातें हो रही हैं। लेकिन तोमर जी की सहजता देखकर वह अब संतुलित हो रहा था ।

पांडे ने तोमर जी पर कृपा कर दी । उसने तोमर जी की बूढ़ी हो चुकी पूर्व प्रेमिका का नाम जानने की ज्यादा जिद नहीं की ।

"मनोज जी श्रद्धा से बात किये बिना नहीं रह पा रहे हैं ।श्रद्धा के कारण ये अत्यंत विचलित हैं ।मैं जानता हूँ कि इसी विचलन के कारण मनोज की पढ़ाई डिस्टर्ब हो गई है जबकि ये कह रहे हैं कि श्रद्धा इन्हें प्रेरित करती है।"-पांडे ने तोमर जी से मनोज की मनोदशा का वर्णन किया ।

“यदि प्रेम है तो विचलन का तो प्रश्न ही नहीं उठता, प्रेम तो स्थिर करता है,एकाग्र करता है। मन की सारी नकारात्मकताओं को दूर करता है। प्रेम तो विस्तार का नाम है । यदि आप प्रेम में हैं तो आप जो भी कार्य कर रहे हैं वह उत्साह से करेंगे, प्रसन्नता से करेंगे, पवित्रता से करेंगे, एकाग्रता से करेंगे ।”-तोमर जी ने प्रेम पर अपने विचार व्यक्त किये ।

मनोज को तोमर जी के विचार उसके मनमाफिक लगे, वह ध्यान से तोमर जी के विचार सुनने लगा ।लेकिन पांडे तोमर जी के विचारों से सहमत नहीं दिख रहा था ।

“पर समस्या यह है कि श्रद्धा मनोज को प्रेम नहीं करती । ” –पांडे ने तोमर जी को मसाला प्रदान किया ।

“तो न करे। प्रेम की यही तो ख़ूबसूरती है। यह अकेले भी किया जा सकता है। प्रेम को अभिव्यक्त करने की जरूरत भी नहीं पड़ती । मनोज श्रद्धा से प्रेम करते हैं इससे श्रद्धा को क्या? इस प्रेम से लाभ भी तो मनोज को ही हो रहा है। समृद्ध तो मनोज ही हो रहे हैं ना। पवित्र तो मनोज ही हो रहे है ना। ‘मुझे जगत जीवन जीवन का प्रेमी बना रहा है प्यार तुम्हारा’। श्रद्धा से प्रेम करने के कारण ही तो मनोज का ह्रदय इस चराचर जगत को प्रेम करने के काबिल बन पा रहा हैं। प्रेम तो हमेशा लाभ का सौदा होता है। ”-तोमर जी ने मनोज को प्रेम का अलग और नया रुप दिखाया ।

मनोज ने तोमर जी से अपने मन की बात कहने की हिम्मत की –“आप एकदम सही कह रहे हैं, मैं भी यही मानता हूँ पर फिर मुझे तनाव क्यों होता है । मैं विचलित क्यों हो जाता हूँ । ”

तोमर जी ने शांत भाव से मुस्कुराते हुए मनोज से कहा –“उम्मीद नहीं, अपेक्षा नहीं, इच्छाएं नहीं, सिर्फ प्रेम। सिर्फ प्रेम है जो आपके अधिकार में हैं। शेष सब बेमानी हैं। क्योकि तुम उम्मीद कर रहे हो कि श्रद्धा भी तुमसे प्रेम करे। जब कि प्रेम का यह नियम है ही नहीं। जैसे ही आपने प्रेम को इच्छाओं की ज़ंजीर पहनाई वैसे ही ‘प्रेम’ अद्दश्य हो जाता है।आपके अधिकार में केवल आपका मन है दूसरे किसी का नहीं।”

“मुझे लगता है कि बिना सफलता, के बिना पीएससी में सिलेक्ट हुए प्रेम मिलना सम्भव नहीं है।” -पांडे ने अपने दिल का दर्द तोमर जी को सुनाया ।

तोमर जी ने कहा –“सफलता असफलता का प्रेम से क्या सम्बन्ध? आप सफल हैं तो प्रेम मिल जाएगा, असफल हैं तो प्रेम नहीं मिलेगा। ये कौन सा नियम है भाई? और सफलता क्या है? क्या तहसीलदार,थानेदार बनना ही सफलता है? जिस तरह से प्रेम को लोग ठीक से नहीं समझते उसी तरह सफलता को भी लोग ठीक से नहीं समझते। क्या शक्ति, सत्ता, धन, प्रतिष्ठा प्राप्त करना ही सफलता है? मुझे लगता है संतुष्टि और

आनन्द के साथ देश हित में कोई भी काम आप पूरी ईमानदारी से करें तो आप सफल हैं । फिर चाहें आप थानेदार बन जाएँ या सुबह सुबह शहर की सड़क पर झाड़ू लगाएं ।" –तोमर जी ने कहा ।

पांडे को उम्मीद थी कि तोमर जी मनोज को श्रद्धा से प्यार करने से रोकेंगे और पीएससी की पढ़ाई को अधिक गम्भीरता से करने की सलाह देंगे पर तोमर जी ने तो दूसरा ही राग अलापा जिसे पांडे ने पसंद नहीं किया ।

लेकिन मनोज को लग रहा था कि तोमर जी एकदम सही कह रहे है। श्रद्धा से अपने प्यार के बारे में बात करने का कोई अर्थ नहीं। यदि उसमें ताकत होगी तो श्रद्धा अपने आप उसे प्यार करेगी। मनोज तोमर जी के घर से संतुष्ट होकर और पांडे असंतुष्ट होकर वापस पीली कोठी चले गये ।

सच में प्यार की राह इतनी आसान नहीं होती। संकल्प लेकर मन को नियंत्रित करना कठिन होता है।संकल्पों और विकल्पों में बार बार संघर्ष होता रहता है। तोमर जी ने मनोज को अपने प्यार को अपने मन में ही रखने का सुझाव दिया था। अभिव्यक्ति के स्थान पर अनुभूति पर बल दिया था। कुछ दिन मनोज ने श्रद्धा को फोन लगाने की कोशिश नहीं की । पर कब तक ? कब तक केवल अनुभूति को पालता रहे वह ?

जब बहुत दिनों तक श्रद्धा से बात नहीं हो पाती तो थोड़ी देर के लिए संशय का,अविश्वास का धुंआ उठने लगता है। कितना क्षणिक है ना सब, एक पल में भरपूर विश्वास तो दूसरे ही पल अविश्वास । अजीब प्यार है यह। जो एक समय में मजबूत दिखता है। फिर खुद को परखने में लग जाता है। डगमगाने लगता है। फिर यह अविश्वास ,यह परखना ,यह डगमगाना सब अस्थाई लगता है । स्थाई लगता है तो सिर्फ प्यार, उस प्यार की तड़प, और उस प्यार की याद ।

कुछ दिनों श्रद्धा से बात न करने की तपस्या के बाद मनोज को फिर लगने लगता है कि श्रद्धा से बात किये बिना रहना मुश्किल है। न करूँ प्यार की बात आवाज ही सुन लूं। एक बार बात कर लूं फिर दो तीन महीने की छुट्टी। श्रद्धा भूल तो नहीं गई? अगर नहीं भूली तो क्या वह भी मुझे को उतना ही याद करती हैं जितना मैं उसे याद करता हूँ ? यह जानना भी तो जरूरी है। बिना फोन पर बात किये कैसे जाने यह सब ?

इसलिए एक दिन मनोज ने हिम्मत करके श्रद्धा को एसटीडी से फोन लगा ही दिया। प्यार की बात तो वह कर नहीं सकता था श्रद्धा से, इसलिए उसने केवल पढ़ाई की बात की ।अब वह महीने दो महीने में एक बार श्रद्धा से पढ़ाई की बात करता और संतुष्ट हो जाता। एक दिन श्रद्धा ने उसे फोन पर बताया कि उसकी इंटर्नशिप पूरी हो गई है इसलिए फिर से तैयारी के लिए वह दिल्ली जा रही है। मनोज के लिए यह अच्छी खबर थी। वह भी अपने तीसरे अटेम्प्ट और श्रद्धा के साथ के लिए दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गया ।

34 .

फिर दिल्ली। फिर मुखर्जी नगर। दृष्टि कोचिंग के सामने वाला पार्क। मनोज श्रद्धा का इन्तजार कर रहा है।

दो दिन पहले वह और पांडे ने दिल्ली के नेहरुविहार में कमरा ले लिया और नये सिरे से पढ़ाई करना शुरु कर दी। उसके पिता अभी सस्पेंड नहीं हुए थे वह झाबुआ में ही नौकरी कर रहे थे। इसलिए घर की अर्थव्यवस्था पटरी पर थी। माँ ने उसे दिल्ली जाने के लिए पांच हजार रुपये दे दिए थे। अश्विन नवनीत पहले ही दिल्ली आ गये थे उन्होंने गान्धीविहार में कमरे किराए से ले लिए थे और आईएएस की मुख्य परीक्षा दे दी थी । गुप्ता ने भी अश्विन के बगल में गांधी विहार में कमरा किराए से लिया था ।

श्रद्धा भी दिल्ली आ गई थी, उसने बारह सौ उनतीस मुखर्जी नगर में उसी होस्टल में कमरा ले लिया था जिसमें वह पहले रहती थी। जिद्दी वक्त का पहिया एक बार फिर पीछे घूम गया था। मनोज पर समय भरपूर मेहरबानी कर रहा था। उसकी नजरें लगातार उस रास्ते की ओर देख रही थी जहां से श्रद्धा आने वाली थी। तभी श्रद्धा सुर्ख लाल रंग पर काले फूल वाली ड्रेस पहने उसे आती हुई दिखाई दी। रेगिस्तान में ठंडी फुहार सी,सारी भटकन के बाद एक सुखद आरामगाह सी। उम्मीदों के बनने फिर उसके बिखर जाने की पृष्ठ भूमि तो नहीं है यह? मनोज सोचता रहा ।

कुछ देर दोनों चुप बैठे रहे। फिर श्रद्धा ने मनोज से कहा –"कैसे हो?"

सब बता देना चाहता है मनोज कि वह कैसा था बिना श्रद्धा के ? मुझे तुम्हारी बहुत याद आती थी। आदमी कितना मजबूर होता है,कुछ नहीं कर पाता।जो उसे जिन्दगी देता है उसे देख भी नहीं पाता और वैसे न जाने कितनी भीड़, लाखों लोग उसे रोज दीखते है बस एक चेहरा नहीं दिखता।

पर मनोज ने सिर्फ इतना के कहा –"अच्छा हूँ। फिर आ गया दिल्ली। देखते हैं दिल्ली अब क्या रंग दिखाती है।"

मनोज का दार्शनिक अंदाज देखकर श्रद्धा ने कहा - “दिल्ली अब केवल भरपूर मेहनत ही करायेगी मनोज। टूटकर मेहनत करना है बस।”

इसके बाद मनोज और श्रद्धा एक घंटे तक पार्क में बैठे बातें करते रहे। उसके लिए श्रद्धा का साथ ही बड़ी बात थी। रोज श्रद्धा से मिलने के लिए उसने पढ़ाई को अपना आधार बनाया। इसलिए जब मनोज ने श्रद्धा से रोज शाम को दो घंटे साथ में हिन्दी साहित्य पढने का प्रस्ताव दिया तो श्रद्धा तैयार हो गई ।

श्रद्धा रोज शाम को घंटे दो घंटे मनोज के कमरे पर हिन्दी साहित्य पढने जाने लगी। पढ़ाई करने के बाद मनोज उसे छोड़ने उसके होस्टल तक जाता लगातार एक महीने तक यह क्रम चलता रहा।

एक दिन दो घण्टे पढ़ाई करने के बाद मनोज श्रद्धा को उसके कमरे पर छोड़ने गया।

नेहरु विहार से मुखर्जी नगर को जोड़ने वाले संकरे पुल पर मनोज ने श्रद्धा से कहा -"श्रद्धा पिछले एक महीने से पढ़ाई में जो सघनता आई है वैसी पढ़ाई यदि साल भर कर ली जाए तो सिलेक्शन पक्का है।”

श्रद्धा ने पुल की सीढ़ियाँ उतरते हुए मनोज से कहा-"हम लोग जब तक सिलेक्ट नहीं हो जाते ऐसे ही पढ़ेंगे।”

श्रद्धा का ध्यान केवल पढ़ाई पर रहता था। मनोज को अब यह उम्मीद सच में हो चली थी कि इस तरह की पढ़ाई चलती रहे तो सफलता मिल जायगी।

होस्टल पहुँचने पर श्रद्धा कुछ देर खड़ी रही। फिर मनोज से बोली-“ मुझे बत्रा तक जाना है किताबें रखने के लिए एक रैक खरीदना है।क्या तुम चलोगे?”

मनोज तो अधिक से अधिक श्रद्धा के साथ रहना चाहता था। दोनों बत्रा चल दिए। बत्रा पहुंचकर श्रद्धा ने एक रैक खरीदी। श्रद्धा ने रैक के लिए रिक्शा बुलाया तो मनोज ने कहा कि छोटी सी रैक तो है, मैं ही ले चलता हूँ ।श्रद्धा कुछ कहती उसके पहले मनोज अपनी मस्ती में मुस्कुराते हुए अपने कंधे पर रैक उठाकर चलने लगा।

होस्टल पहुंचकर श्रद्धा ने मनोज से कहा - "थैंक्यू मनोज।”

मनोज कुछ देर तक थैंक्यू बोलने के बाद श्रद्धा के चेहरे पर आये आत्मीयता के भाव को देखता रहा।

फिर मनोज ने पूछा -"जाऊं ?

श्रद्धा ने मुस्कुराकर हल्के से सर हिलाया और मनोज को जाते हुए देखती रही।

मनोज जब कमरे पर पहुंचा तो पांडे नाराज बैठा था, पांडे ने उससे पूछा – "इतनी देर कहाँ हो गई ?"

मनोज ने कहा – "श्रद्धा को रैक दिलवाने गया था।"

योगिता से जब तक पांडे का प्यार चल रहा था तब तक वह मनोज के प्यार का समर्थक था। यहाँ तक की मनोज को अल्मोड़ा जाने को प्रेरित किया था। पर पांडे गिरगिट की तरह था। योगिता के जाते ही उसने प्यार के विरोध का धूसर रंग ओढ़ लिया ।

उसने मनोज से कहा-"मनोज जी श्रद्धा पर्याप्त चतुर है।वे तुमसे प्यार व्यार नहीं करतीं । उन्हें हिंदी साहित्य पढ़ना है इसलिए आती है यहां। ये लड़कियां खूब जानती है किससे क्या काम निकालना है? आज उसने तुमसे रैक उठवाई है। कल तुमसे दूसरे काम करवाएंगी। मुखर्जी नगर में लड़कियां लड़कों से इसीलिये दोस्ती करती हैं कि उन्हें अच्छा वर्कर मिल जाए। श्रद्धा कोई अलग नहीं है।" पांडे की व्याख्या मनोज को पसंद नहीं आई। वह तो आज विदा के समय आये श्रद्धा के चेहरे के आत्मीय भाव में ही डूबा रहा ।उसने पांडे की बात पर ध्यान नहीं दिया ।

35 .

प्रगति मैदान में पुस्तक मेला लगा हुआ था।श्रद्धा ने मनोज से पुस्तक मेले में चलने के लिए पूछा तो वह तैयार हो गया। दोनों मेले में पहुँच गये।

श्रद्धा ने तीन चार किताबें खरीद ली। मनोज एक स्टॉल पर खड़ा हो गया और किताबें उठा उठाकर देखने लगा।विवेकानन्द, महात्मा गांधी,भगतसिंह, लिंकन ,आदि महापुरुषों की जीवनियाँ उस स्टॉल पर थीं ।वह उन किताबों को उठा उठा कर देखता और देखकर वापस रख देता ।
श्रद्धा ने मनोज से कहा – "मनोज तुम ये किताबें लेना चाहते हो क्या, महापुरुषों की ये जीवनियाँ बहुत प्रेरणादायक हैं ?"
श्रद्धा की बात सुनकर मनोज मुस्कुराया फिर उसने श्रद्धा से कहा – "श्रद्धा मैंने ये सारी किताबें पढ़ी हैं ,लिंकन की जीवनी तो तीन चार बार पढ़ी है ।" उसके कथन में गर्व था, उसे श्रद्धा के सामने अपनी तारीफ़ करने का मौक़ा मिल गया । "
सरल श्रद्धा ने प्रभावित होकर उससे पूछा –"ये तुमने कब पढ़ ली ?"

श्रद्धा के सुखद आश्चर्य से मनोज प्रसन्न हो गया, वह चाहता भी यही था। उसे अपनी तारीफ़ की डिग्री बढ़ाने का मौक़ा मिल गया –"बीए में ही पढ़ ली थी।"

श्रद्धा ने उससे प्रभावित होकर कहा – "क्या तुमने इतना सब पढ़ा है ?"

"हाँ श्रद्धा मैंने ग्वालियर में एक लाइब्रेरी में नौकरी की थी वहां बहुत सारी किताबें पढ़ी थी।" –श्रद्धा का प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य देखकर उसने ने कहा ।

मनोज के हाथ में एपीजे अब्दुल कलामकी किताब'अग्नि की उड़ान' थी।

किताब की कीमत देखकर उसने वह किताब वापस रख दी।

किताबों के स्टॉल से आगे बढ़कर दोनों कॉफ़ी की एक दुकान पर आकर बैठ गई। श्रद्धा ने अपनी तीन चार किताबें टेबल पर रख दी। तीन घंटे से घूमते घूमते वह थक गई थी। मनोज श्रद्धा के लिए कॉफ़ी ले आया। श्रद्धा ने मुस्कुराकर कहा –"थेंक यू मनोज।"

श्रद्धा कॉफ़ी पीती रही। मनोज की इच्छा बहुत समय से श्रद्धा से अपने मन की बात बोलने की हो रही थी। पुस्तक मेले के खुशनुमा माहौल में उसने हिम्मत की –"श्रद्धा मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ ?

श्रद्धा उसके चेहरे की रंगत देखकर मामला समझ गई। श्रद्धा ने बात बदलते हुए उससे कहा –"मनोज तुम्हें अब इंग्लिश एस्से और ग्रामर पर भी ध्यान देना चाहिए, रोज एक घंटा इंग्लिश पढ़ना चाहिए। मनोज का ध्यान श्रद्धा की इस बात पर नहीं था, आज उसका मन कहीं और ही घूम रहा था ।

श्रद्धा ने जैसे मनोज को जगाते हुए कहा –"सुन रहे हो न मेरी बात ।"

श्रद्धा की बात सुनकर मनोज ने कहा –"श्रद्धा तुम कुछ कहती हो, तुम्हारी आँखें कुछ कहती हैं। मैं किसकी सुनूं ?"

मनोज की बात सुनकर श्रद्धा ने अपनी नजरे कॉफ़ी के कप पर टिकाये हुये मनोज से कहा – "मैं तुम्हें सरल इंग्लिश में एस्से लिखना सिखाउंगी, पहले अटेम्प्ट जैसी गलती अब दुबारा नहीं की जा सकती। "

प्यार की बात करने के मनोज के अरमानों को श्रद्धा ने इंग्लिश की पढ़ाई के नाम पर ठंडा कर दिया । मनोज फिर से कुछ नये शब्द तलाशने लगा, आज वह श्रद्धा से कुछ कहने की ठान कर आया था शायद। लेकिन कुछ कहने उसकी हिम्मत श्रद्धा के सामने जवाब दे रही थी ।

कॉफ़ी पीने के बाद श्रद्धा ने मनोज से कहा –"मनोज मेरी एक किताब स्टॉल पर रह गई है, मैं अभी उसे लेकर आती हूँ।"

पांच मिनिट बाद श्रद्धा अपने हाथ में एक किताब लिए तेज चाल से उसके पास आ गई।

श्रद्धा ने अपने साथ लाई हुई किताब उसे देते हुए कहा –"मनोज यह तुम्हारे लिए।"

मनोज ने किताब उठाई, उसके हाथ में कुछ देर पहले अधिक कीमत के कारण स्टाल पर छोड़ी गई किताब'अग्नि की उड़ान ' थी।

मनोज ने किताब का पहला पन्ना खोलकर देखा जिस पर लिखा था –'मनोज की उड़ान के लिए'।

"श्रद्धा क्या तुम्हे पता चल गया था कि मेरा मन इस किताब को खरीदने का था ?"-मनोज ने श्रद्धा से पूछा

श्रद्धा कुछ नही बोली बस उसने एक भरपूर दृष्टि मनोज के चेहरे पर डाली और टेबल पर रखी अपनी किताबें उठा लीं।

मनोज ने 'अग्नि की उड़ान' के कवर पेज को देखते हुए श्रद्धा से कहा –" श्रद्धा इस किताब को देखकर मुझे लग रहा है कि तुम सच में पढ़ाई में बहुत तेज हो । "

क्यों ?- श्रद्धा ने आश्चर्य से पूछा

"क्योकि तुम बहुत अच्छे से मेरा मन पढ़ना जानती हो।"-मनोज पुरानी लीक ही पकड़े रहा,छूटी हुई हिम्मत बटोरता रहा ।पर श्रद्धा भी जिद्दी थी, वह मनोज की बातों की लीक पर चलने को बिलकुल तैयार नहीं थी ।

"मनोज अब चलें? लेट हो रहे हैं।" श्रद्धा ने मनोज की बात का जवाब टाल दिया और दोनों मुखर्जी नगर जाने के लिए बस स्टेंड पर खड़े होकर बस का इन्तजार करने लगे।

बस में मनोज के पास बैठी श्रद्धा को लग रहा था कि क्या किसी को इतना छोटा सा गिफ्ट देने के बाद इतना सुकून मिल सकता हैं जितना उसे आज मिल रहा हैं? श्रद्धा बस की खिड़की के बाहर देखती रही ।

मनोज शाम को कमरे पर पहुंचा तो पांडे बिस्तर पर लेटा हुआ था। मनोज आनन्दित था, उसने पांडे को श्रद्धा द्वारा दी हुई किताब दिखाई । मनोज सुख से किसी लड़की के साथ मेले में घूमे और पांडे अकेला कमरे डला रहे यह बात पांडे को बहुत कष्ट दे रही थी ।

पांडे ने किताब हाथ में ली, किताब का पहला पेज खोला जिस पर लिखा था-'मनोज की उड़ान के लिए'।

पांडे ने यह वाक्य जोर से पढ़ते हुए कहा -" मनोज की उड़ान के लिए, ओहो तो अब आप प्रेमिका की दी हुई इस किताब से मोटिवेट होंगे। अपने घर की भुखमरी से नहीं? कोर्स की किताब पढ़ने से सिलेक्शन होगा मनोज जी। प्रेमिका द्वारा दी गई इस किताब को पढ़ने से कुछ नहीं होने वाला।"

इतना कहकर पांडे ने मनोज की किताब को दूर पलंग पर फेंक दिया। पांडे के इस व्यवहार पर आज मनोज को गुस्सा आने लगा ।

पर उसने अपने गुस्से को दबाते हुए कहा –"पांडे हमें इस तरह की मोटीवेशनल किताबें पढना चाहिए,पता नहीं इस किताब की कौन सी बात कब हमारे काम आ जाये।"

प्रेम कर रहे मनोज से पांडे चिढ़ रहा था, चिढ़ते हुए पांडे ने मनोज से कहा –"प्रेम में डूबे लोगों को प्रेमिका की हर बात मोटिवेशन लगती है।मनोज जी तुमसे मुझे बहुत उम्मीदें थी ,तुम्हारा संघर्ष और लक्ष्य के प्रति गम्भीरता देखकर लगता था कि तुम जरूर सफल हो जाओगे । पर अब प्यार में फंसकर तुम अपने पतन की ओर अग्रसर हो रहे हो।मैं स्पष्ट कह रहा हूँ कि श्रद्धा से दूर रहने में ही तुम्हारा भला है। एक तरफ़ा प्यार के चक्कर में तुम अपने आप को बर्बाद कर लोगे।"

“श्रद्धा मेरे लिए क्या है तुम अच्छे से जानते हो, तुमसे कुछ भी नहीं छुपा।श्रद्धा के कारण मैं और अधिक गम्भीरता से पढ़ पा रहा हूँ ,श्रद्धा मेरी पढ़ाई में लाभ ही पहुंचा रही है । ” उसने पांडे को समझाने की कोशिश की।

“ये सब बेकार की बातें हैं ,अपने आप पर नियंत्रण बेहद जरुरी है मनोज।”-पांडे ने मनोज से नाराज होते हुए कहा ।

“जब तक योगिता से तुम्हारा प्यार चल रहा था तब तक तुम्हें श्रद्धा से कोई प्रोब्लम नहीं थी, अब तुम्हें फिर से कष्ट होने लगे।” मनोज ने पांडे को उसकी असलियत बता दी।

मनोज की इस सच्चाई से पांडे तमतमा गया, वह अपने पलंग से खड़ा हुआ , उसने खड़े खड़े मनोज से कहना शुरु किया -” मनोज जी अब आपको तय करना पड़ेगा कि आप मेरे साथ रहना चाहते हैं या श्रद्धा के साथ। यदि श्रद्धा इस कमरे में आई तो मैं आपका रुम पार्टनर नहीं रह सकता। अपना निर्णय सुनाएँ। मैं या श्रद्धा ?”

मनोज पांडे के व्यवहार से आहत हो गया। उसे पांडे से इस तरह की जिद की उम्मीद नहीं थी। उसने उदास होकर पांडे से कहा –“मैं श्रद्धा के बिना नहीं रह पाऊँगा।”

“मुझे आपसे यही उम्मीद थी मनोज जी ।” इतना कहकर पांडे ने तुरंत अपना सूटकेस उठाया, उसमें अपनी किताबें और कपड़े भरे और दीवार पर उसके द्वारा चिपकाया गया सम्विधान के मौलिक अधिकारों का पेज उखाड़ दिया और मनोज से फिर कहा –“यहाँ अपनी प्रेमिका का फोटो चिपका लेना मनोज। मौलिक अधिकार पढ़ने की जरुरत तो अब तुम्हें नहीं रही श्रद्धा का फोटो देखकर ही पास हो जाओगे।”
मनोज कुछ कहता इसके पहले पांडे कमरे से बाहर निकल गया।
मनोज पांडे के पीछे पीछे गया लेकिन पांडे एक रिक्शे पर बैठकर जा चुका था।

36 .

एक दिन अश्विन और नवनीत भागते हुए मनोज के कमरे पर आये। मनोज से घबराए हुए स्वर में अश्विन बोला –“मनोज, गुप्ता को पुलिस ने पकड़ लिया है मुखर्जीनगर की पुलिस चौकी में बिठा लिया हैं।जल्दी

चलो।" तीनों मुखर्जी नगर पुलिस चौकी पहुंचे तो देखा कि गुप्ता एक स्टूल पर घबराया बैठा है और उसे एक हवलदार डांट रहा है।

 हवलदार –"यदि तुम पर केस बन जाए तो तुम्हारी जिन्दगी बर्बाद हो जायगी, आईएएस की बात तो दूर चपरासी बनने लायक भी नहीं रहोगे। बोलो बनाऊं केस ?"

मनोज हवलदार का व्यवहार देख कर घबरा गया। पर उसने बड़े शालीन तरीके से उससे पूछा –"क्या हुआ सर क्या गलती हो गई गुप्ता से ?"

हवलदार ने देखा कि एक आरोपी के तीन साथी उसे छुड़वाने आ गये हैं तो वह चिढ़ गया।

उसने मनोज से कहा –"भाईसाहब बत्रा के पीछे बैठकर खुलेआम शराब पी रहे थे, मना किया तो बोलने लगे कि आईएएस की तैयारी कर रहा हूँ। मैं अपनी औकात में रहूँ। मैं इन पर सार्वजनिक स्थल पर शराब पीने का केस बना रहा हूँ इसे, अपनी औकात दिखाता हूँ।"

गुप्ता ने धीरे से हवलदार की दी हुई जानकारी में संशोधन किया –शराब नहीं थी वो ,बीयर थी ।

गुप्ता के इस व्यर्थ के संशोधन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मनोज अश्विन और नवनीत समझ गये कि गुप्ता अपनी गलती और नशे के कारण बड़ी मुसीबत में फंस गया है।

अश्विन ने हवलदार से कहा –"सर इसे माफ़ कर दीजिये ,आगे से कभी ऐसी गलती नहीं करेगा।"

नवनीत ने हवलदार को संतुष्ट करने के लिए गुप्ता के सर पर चपत लगाते हुए कहा –"क्यों गुप्ता तुम्हें शर्म नहीं आती सर से बदतमीजी करते हुए। माफी मांगों सर से।"

गुप्ता तुरंत हवलदार के पैरों में गिर गया। उसे शायद समझ आ गया था कि अब अकड़ने का कोई फायदा नहीं।

मनोज ने हवलदार से कहा –"सर माफ़ कर दीजिये,प्लीज।"

हवलदार पिघल गया था उसे ऐसे कई केस मुखर्जीनगर में देखने को मिलते थे।पर वह डरा धमकाकर ऐसे लड़कों को छोड़ देता था। गुप्ता भी छूट गया।

हवलदार ने जाते जाते कहा –"तुम्हारे माँ बाप ने बड़ी उम्मीदों से तुम लोगों को यहाँ पढ़ने भेजा हैं,पढ़ाई पर ध्यान दो, कभी भी अपने माँ बाप को धोखा मत देना।"

मनोज को हवलदार भला आदमी लगा। उसने हवलदार को धन्यवाद दिया और सभी लोग गांधी विहार पहुँच गये।

गुप्ता ने सब से कहा –"इस हवलदार को मैं नहीं छोडूंगा । अब मेरी जिन्दगी का एक ही लक्ष्य है, आईपीएस बनना और इस हवललदार को सस्पेंड करना।"

गुप्ता की बकवास पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

पांडे मनोज का कमरा छोड़कर गुप्ता का रुम पार्टनर बन गया था। मनोज, गुप्ता को छोड़ने गांधी विहार गया तो पांडे उसे मिल गया। चार पांच दिन हो गये थे पांडे को मनोज से अलग रहते हुए लेकिन पांडे का गुस्सा कम नहीं हुआ था मनोज को देखकर पांडे ने उससे कोई बात नहीं की।

36.

पांडे के जाने के बाद मनोज को अब तक कोई नया रुम पार्टनर नहीं मिला था जिस कारण उसके ग्वालियर से लाये पैसे जल्दी खत्म होने लगे । उसे इतिहास और सामान्य अध्ययन की कोचिंग भी करनी थी, इसलिए उसने तय किया कि वह पापा से कहेगा कि उसे एक साल तक हर महीने दो हजार रुपये भेजते रहें जिससे वह दिल्ली में पढ़ाई ठीक से कर सके।
एसटीडी पर पहुंचकर उसने अपने पापा को फोन किया। जब तक वह अपनी बात पिता से कहता पिता ने कहना शुरु कर दिया -"साले सब हरामी हैं। किसी को देश की चिंता नहीं। मोय फिर सस्पेंड कर दओ। मैं ना मानंगो। डिप्टी डायरेक्टर की अक्कल ठिकाने लगा देंगों।मैंने भी ठोक के कह दी है कि भूखों मर जाउंगा, पर मैं पीछे नहीं हटूंगा।"

पिता की अमूर्त बातों से मनोज यह नहीं समझ सका कि इस बार उनके सस्पेंशन की क्या वजह है,पर वह इतना जरूर समझ गया कि उसे उनसे पैसों की उम्मीद नहीं करना चाहिए।वह वापस निराश होकर अपने कमरे पर आ गया।उसने आज अपने पिता से चर्चा के बाद यही सीखा कि उसे अपने पिता से केवल एक चीज मिल सकती है वह उनकी जिद्दी प्रवृत्ति और कभी हार न मानने का हौंसला।

मनोज कमरे में बैठकर अपने पिता के बारे में सोच ही रहा था कि श्रद्धा आ गई ।***उसने श्रद्धा को अपने पिता के सस्पेंशन और आज के फोन की पूरी घटना कह सुनाई। श्रद्धा मनोज के पिता से प्रभावित हो रही थी , उसने मनोज से कहा –"मनोज तुम्हारे पिताजी सच में अपने सिद्धांतों पर चलने वाले इंसान हैं***।"

श्रद्धा के मुंह से अपने पिता की तारीफ़ सुनकर मनोज उत्साहित हो गया । इस उत्साह में उसने श्रद्धा से पूछा- "क्या तुम मेरे साथ नेहरु विहार के हनुमान मन्दिर तक चलोगी?"

श्रद्धा मनोज के साथ मन्दिर चल दी। मनोज मन्दिर में हनुमान जी की मूर्ति के सामने आँखें बंद किये बैठा रह। कुछ देर आँखें बन्द करने के बाद मनोज ने आँखे खोल लीं।

मनोज ने श्रद्धा से कहा-"श्रद्धा मैंने आज संकल्प लिया है चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे कैसी भी परिस्थिति आये मैं हमेशा अपना संघर्ष जारी रखूंगा। मुझे सफलता मिले, न मिले मैं इमानदारी का रास्ता कभी नहीं छोडूंगा, मैं अपने पिता जी के सिद्धांत पर चलूँगा ।" मनोज संकल्प लेकर श्रद्धा की प्रतिक्रिया का इन्तजार करने लगा ।

श्रद्धा ने मनोज को संकल्पवान होते हुए देखा तो उसने मनोज को प्रेरित किया – "मनोज तुम्हें जरूर सफलता मिलेगी।"

श्रद्धा द्वारा संकल्प पर मोहर लगा देने से उसका उत्साह दुगुना हो गया । आत्मसम्मान और श्रेष्ठत्व के भाव को लिए वह मन्दिर से बाहर निकला।

मन्दिर के बाहर गरीब मजदूर का एक परिवार भीख मांग रहा था।मनोज और श्रद्धा से उन्होंने कुछ पैसे मांगे। पूछने पर पता चला कि वह लोग भिखारी नहीं है,बल्कि बुन्देलखण्ड के खेतिहर मजदूर हैं। चार पांच दिन तक भटकने के बाद भी उन्हें दिल्ली में कोई मजदूरी नहीं मिली। उनके सारे पैसे समाप्त हो गए। इसलिए उन्हें अब वापस जाने के लिए किराए की जरूरत है।

मनोज ने उस आदमी से पूछा-"कितने रुपये चाहिए तुम्हें वापस अपने गाँव जाने के लिए।" "एक हजार रुपया किराओ लग है महोबा तक को।" -मजदूरों के दल के बुजुर्ग आदमी रोनी सूरत बनाकर बोला।

मनोज ने सोचने में एक पल भी गवाए बिना अपनी जेब में पड़ा सौ रुपये का नोट उस बुन्देलखण्डी मजदूर को दे दिया।

"मनोज ये क्या किया तुमने? तुम्हारे पास ये आख़िरी सौ रुपये थे। क्या पता ये लोग सही भी कह रहे हैं या नहीं? इनका यह पैसे कमाने का तरीका भी हो सकता है।" श्रद्धा ने अपने मन की आशंका मनोज के सामने प्रकट की।

मनोज ने श्रद्धा से कहा- "हो सकता है कि यह झूठ बोल रहा हो। मुद्दा यह नहीं है कि ये सही हैं या गलत। मुद्दा यह है कि मेरी भावना क्या है? मुझे ये जरूरतमंद दिख रहे हैं। मुझे इनकी मदद करनी है बस। मेरे मन में इस समय इनकी मदद करने के संकल्प के अतिरिक्त कोई संदेह आ ही नहीं रहा।" मनोज ने उस आदमी से कहा-" चिंता मत करो। तुम्हें एक हजार रुपये मिल जायंगे।"

श्रद्धा ने आश्चर्य से मनोज से पूछा-"क्या तुम्हारे पास इन्हें देने को एक हजार रुपये हैं मनोज?"
"नहीं।" -मनोज ने उत्तर दिया ।
फिर कहाँ से दोगे इन्हें एक हजार रूपये?"- श्रद्धा को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

"कहीं से भी दूँ। अब मुझे इन्हें एक हजार रुपये देना ही है।" – मनोज शायद अब तर्क और दिमाग से ठसाठस भरी इस दुनिया में नहीं था। बल्कि भावनाओं के गीलेपन में डूब गया था। उसने शर्म और संकोच त्यागकर आसपास खड़े लोगों से इन मजदूरों की व्यथा सुनाकर कुछ पैसे मांगने शुरु किये। वह   हर आने जाने वाले से, दुकानदारों से पैसे मांग रहा था। कुछ लोग उसे दुत्कार रहे थे,कुछ पागल कह रहे थे। राहगीरों और दुकानदारों ने उसे पैसे नहीं दिए।
श्रद्धा ने मनोज से कहा – "मनोज तुमने अपनी पूरी कोशिश कर ली, किसी ने मदद नहीं की। अब चलो।"

"मैंने संकल्प लिया है इन्हें एक हजार रुपये देने का। अब चाहे मुझे यहाँ मजदूरी करके भी पैसे जुटाने पड़ें मैं जुटाउंगा।" –मनोज ने अपने संकल्प को दोहराया ।कुछ देर पहले मन्दिर में लिए गये संकल्प की परीक्षा की घड़ी उसके सामने आ गई थी ।

श्रद्धा उसे कुछ भी नहीं समझा पा रही थी। वह बस उसके पीछे पीछे घूम रही थी ।

मनोज जैसे किसी गहरे नशे में डूब गया था। वह फिर से मन्दिर में चला गया। उसने मन्दिर के पुजारी को पूरी कहानी सुनाई।

पुजारी ने कहा -"बेटा इस तरह पैसे मांगने वाले बहुत आते हैं। किस किस को पैसे देंगे?"

उसने पण्डित जी को समझाते हुए अपनी बात कही -"पण्डित जी आप जैसा तपस्वी और लोगों का भला करने वाला दूसरा कोई नहीं है।आपको देखकर मन अपने आप श्रद्धा से भर जाता है।आप तो ईश्वर के सबसे नजदीक हैं, हम सांसारिक लोगों से ज्यादा उसकी लीला समझते हैं।पता नहीं ईश्वर कब इंसान की शक्ल में हमारे सामने आ जाए,वो देखिये वह छोटी बच्ची कैसी कातर निगाहों से आपकी ओर देख रही है। आप तो जानते ही है, विवेकानन्द जी ने कहा है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है।"

वह कुछ देर पुजारी जी पर अपनी बात की प्रतिक्रया जानने के लिए चुप हो गया। पुजारी जी पर उसकी बातों का शायद सकारात्मक असर हो रहा था वह उस गरीब परिवार को देख रहे थे।

"आप यहाँ आने वाले भक्तों से बोल देंगे तो इन गरीबों की मदद हो जायगी।" –उसने मौक़ा देखते हुए कहा।

पण्डित जी को मन्दिर में भगवान की सेवा करते तीस साल हो गए थे। पर आज तक उनके काम की कभी किसी ने इतनी प्रशंसा नहीं की थी। मनोज की प्रशंसा सुनकर पुजारी जी का मन गरीब परिवार की मदद करने का होने लगा।

पण्डित जी ने उसे आश्वासन दिया -"ठीक है बेटा,कुछ करते हैं।"

इसके बाद अगले एक घण्टे तक मन्दिर में आने वाले भक्तों से पण्डित जी गरीबों के लिए दान मांगने लगे। पण्डित जी की बात अधिकतर लोग नहीं टाल पाये। थोड़ी ही देर में एक हजार रुपये इकट्ठे हो गए। रुपये लेकर,पण्डित जी को धन्यवाद देकर मनोज वहां आ गया जहां गरीब परिवार था। उसने पूरे पैसे उस आदमी को दे दिए। श्रद्धा को आज उसका एकदम नया रूप देखने को मिला। श्रद्धा उससे कुछ कहना चाहती थी पर वह कुछ कह नहीं पाई दोनों चुपचाप नेहरु विहार की ओर चल दिए।श्रद्धा को लग रहा था कि उसने आज कोई अलौकिक दृश्य देखा है जिसके कारण उसका मन आनन्द से भर गया था।

38 .

अब यह तय हो चुका था कि मनोज को अपने घर से आर्थिक मदद नहीं मिलेगी। पैसे न मिलने से दिल्ली में उसका रुकना असम्भव हो जायगा, यह मनोज जानता था।पांडे के जाने के बाद मनोज को एक रूम पार्टनर की जरूरत थी अगर रूम पार्टनर नहीं मिला तो उसे कमरे का पूरा पन्द्रह सौ किराया खुद भरना पड़ेगा। यही समय उसके लिए उत्तर प्रदेश मुख्य परीक्षा और तीसरे अटेम्प्ट की आईएएस प्रीलिम्स की तैयारी करने का है। पर बिना नियमित दो हजार रुपये के यह सम्भव नहीं था।

मनोज मकान के जिस फ्लोर पर रहता था उसके साथ वाले कमरे में अरुण नाम का सीनियर रहता था। इन दोनों कमरों से लगी हुई एक छोटी सी किचिन थी जिसमें मनोज, अरुण और अरुण के रुम पार्टनर का खाना बनता था।एक साथ खाना बनाने से खर्चा भी कम आता था और टिफिन से अच्छा खाना भी मिल जाता था। इन लोगों का खाना बनाने एक कुक आता था।कुल मिलाकर यह व्यवस्था उपयोगी और सस्ती थी। पैसे खत्म होने के कारण मनोज इस समूह में कैसे सम्मिलित होगा उसे समझ नहीं आ रहा था।

मनोज ने अरुण से बात की –"अरुण सर क्यों न हम लोग कुक को हटा दें, आजकल अच्छा खाना नहीं बना रहा,लेट भी आता है। कुक की जगह मैं खाना बना दिया करूंगा। बाजार से सब्जी और दूसरा सामान लाने का

काम भी मैं कर दूंगा। मेरे पास अभी घर से पैसे आना बंद हो गये हैं इसलिए खाने के लगने वाले पैसे मैं नहीं दे पाउँगा।”

अरुण और उसका पार्टनर कुक की लेट लतीफी और बेस्वाद खाने से पहले ही दुखी थे। मनोज का प्रस्ताव उन्हें बुरा नहीं लगा। उन्होंने मनोज को कुक की जगह खाना बनाने का और किचिन के दूसरे काम काम करने की अनुमति दे दी। इस तरह मनोज की दिल्ली में भोजन की व्यवस्था हो गई।
मनोज को अभी भी दिल्ली में रहने के लिए किराए और दूसरे खर्च के लिए पैसों की जरूरत थी। एक दिन ग्वालियर में शब्द प्रताप आश्रम के पास रहने वाला लड़का सचिन शर्मा दिल्ली तैयारी करने आ गया। उसे भी रुम पार्टनर की जरूरत थी इसलिए वह मनोज का रुम पार्टनर बन गया

एक दिन मनोज ने अपनी समस्या श्रद्धा को बताई -“ श्रद्धा मुझे यदि दिल्ली में रहना है तो अब कुछ न कुछ काम करना पड़ेगा।खाने की व्यवस्था तो मेरी हो गई, मैंने कमरे पर अपने पार्टनरों का खाना बनाना शुरु कर दिया है,पर कमरे के किराए और दूसरे खर्चे के लिए एक हजार रुपये तो हर महीने चाहिए ही।”

श्रद्धा ने कहा –“हम विकास सर के यहाँ चलते हैं, हो सकता है वहां कुछ काम मिल जाए।”

“नहीं श्रद्धा, मैं विकास सर को अपनी समस्या नहीं बता सकता ,मेरी सफलता की उन्हें बहुत उम्मीद है मैं उन्हें अपनी परेशानी बताकर निराश नहीं कर सकता ।“-मनोज विकास सर की नजरों में अपना महत्व कम नहीं करना चाहता था ।

ठीक है फिर हम दूसरी कोचिंग में चलते हैं कहीं न कहीं काम जरूर मिल जाएगा ।

दोनों ने मुखर्जी नगर की कई कोचिंग में काम की तलाश की पर किसी ने कहा कि उनके पास कोई काम नहीं था। किसी ने कहा उनके पास ऑफिस में बैठकर कोचिंग में पूछताछ करने आ रहे लडकों की काउंसलिंग करने का काम है जिसमें रोज आठ घंटे देने पड़ेंगे, किसी ने कहा कि उनके यहाँ क्लास नोट्स बनाने का काम है पर उस काम के लिए आईएएस की मुख्य परीक्षा पास होने की शर्त लगा दी। मनोज की वही स्थिति हो गई जो लाइब्रेरी में नौकरी करने के पहले थी।वही निराशा उसके सामने फिर से थी जो एक बार ग्वालियर में वह देख चुका था।

मनोज ने श्रद्धा को उसके कमरे पर छोड़ा और हताश होकर नेहरु विहार जाने लगा। मुखर्जी नगर में ही श्रद्धा के होस्टल से थोड़ी दूर एक बंगले के सामने आठ दस कारें खडी थीं । मनोज जब उन कारों के पास से गुजरा तो उसने देखा कि एक लड़का उन कारों को धो रहा है।

मनोज ने लड़के से पूछा –"क्यों भैया तुम्हे इन कारों को साफ़ करने के कितने पैसें मिलते हैं ?"

लड़के ने कहा – "क्यों बताएं?"

मनोज को लड़के का उत्तर अजीब लगा। लेकिन उसने डरते डरते उस बड़े से बंगले की घंटी बजाई। घंटी बजते ही अंदर से कई कुत्तों के भौकने की आवाज आई। वह डर के दो कदम पीछे हट गया।

कुछ देर में एक महिला ने बाहर आकर मनोज से पूछा–"क्या हैं?"

मनोज ने कहा– "मैडम मैं कार साफ़ करने का काम करता हूँ। क्या मुझे आपकी कार साफ़ करने का काम मिल सकता है।उसने अपने आप को आईएएस की तैयारी करने वाले विद्यार्थी की जगह कार साफ़ करने वाला लड़का मान लिया।"

महिला सभ्य थी उसने मनोज से विनम्रता से कहा –"नहीं भैया, कार तो हमारे ड्राइवर साफ़ करते हैं। वो तो आज ड्राइवर छुट्टी पर है इसलिए इस लड़के को बुलाया है।"

महिला की बात सुनकर मनोज निराश हो गया। वह वापस जाने लगा। थोड़ी दूर पहुँचने पर उसने कार धोने वाले लड़के की आवाज सुनी - "सुनो तुम्हें मैडम बुला रही हैं।"

वह वापस गेट के पास पहुंच गया।
महिला ने कहा –"क्या तुम शाम को एक घंटे हमारे कुत्तों को घुमा सकते हो ?"
मनोज ने आज के पहले इस तरह के काम की न तो कभी कल्पना की थी न उसे पता था कि इस दुनिया में कुत्ते घुमाने का काम करने से भी पैसे कमाए जा सकते है। पहली बार सुनी इस सर्विस की समाज में क्या रेपुटेशन है यह भी उसे नहीं पता था ।
"आपको हर महीने आठ सौ रुपये मिलेंगे।" –महिला को शायद वर्कर की सख्त जरुरत थी ।

शाम को दो घंटे के लिए आठ सौ रुपये अच्छी रकम थी। पर कुत्ते घुमाने का काम क्या उसे शोभा देगा? उसके दोस्त क्या कहेंगे? फिर उसे लगा कि बच्चों को पढ़ाना, कोचिंग में काम करना, कार धोना, रिक्शा चलाना, कुत्ते घुमाना, हैं तो सब पैसे कमाने के लिए ही। यह सब काम ईमानदारी और मेहनत से हमारे आसपास ही बहुत से लोग करते हैं फिर इसमें कैसा संकोच ? कैसी शर्म?

महिला ने पांच सौ रुपये एडवांस में उसे दे दिए। वह खुश था उसके दिल्ली में रहने की उम्मीद बन गई थी।

मनोज अपनी ख़ुशी को श्रद्धा से शेयर करना चाह रहा था। श्रद्धा कितना खुश होगी उसके काम मिलने से। वह लगभग दौड़ता हुआ श्रद्धा के होस्टल पहुंचा।

वह घंटी बजाने ही वाला था कि उसे ख्याल आया – "क्या श्रद्धा उसे कुत्ते घुमाते देख खुश होगी? क्या कोई लड़की ऐसे प्रेमी की कल्पना करेगी कि उसका प्रेमी कुत्ते घुमाने का काम करता हो? उसे अचानक अपनी नई नई लगी सर्विस का सामाजिक महत्व समझ आ गया। वह बिना श्रद्धा से मिले वापस अपने कमरे पर आ गया।

अब मनोज रोज रात को श्रद्धा को उसके कमरे पर छोड़कर कुत्ते घुमाने जाने लगा। उसने तय किया कि वह नेहरु विहार के पुल के पीछे नाले के पास कुत्ते घुमाएगा। उसे यह डर भी लगने लगा कि कहीं उसका कोई दोस्त उसे कुत्ता घुमाते हुए न देख ले ,कहीं श्रद्धा उसे न दिख जाए।

पर एक दिन जिसका डर था वही हुआ। वह कुत्ता घुमा कर रात को दस बजे वापस कुत्तों को छोड़ने जा रहा था कि उसे श्रद्धा मिल गई। श्रद्धा ने जब मनोज को दो कुत्ते लिए देखा तो उसने आश्चर्य से पूछा –"ये डॉगी किसके हैं मनोज ?"

मनोज को समझ नहीं आया कि वह क्या कहें? पर श्रद्धा से झूठ बोलने का उसका कोई इरादा नहीं था।

उसने कहा –"श्रद्धा मुझे कुत्ते घुमाने का काम मिल गया है, रोज दो घंटे शाम को।आठ सौ रुपये मिलते हैं।इस महीने का तो एडवांस ही मिल गया। मैंने कमरे का किराया भी दे दिया।"

उसने अपनी बात कह दी और श्रद्धा के रिएक्शन का इन्तजार करने लगा। श्रद्धा कुछ समझ नहीं पा रही थी। उसने महसूस किया कि उसके सीने में ज्वार सा उठ रहा है। श्रद्धा को डर था कि कहीं यह ज्वार उसकी आँखों से न बह जाए। एक मिनिट तक श्रद्धा ने अपने आप को कंट्रोल किया।
"मनोज एक बात कहूं मानोगे ?"-श्रद्धा ने मनोज से पूछा

मनोज को शंका हुई कि कहीं श्रद्धा यह न कह दे कि कुत्ते घुमाने काम मत किया करो।

मनोज डरते हुए कहा –"कहो श्रद्धा।"

"कल से मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ क्या ?" -श्रद्धा ने मनोज से कुत्ते घुमाने में साथ जाने की अनुमति माँगी।

उसने श्रद्धा से पूछा –"क्या तुम्हें मेरे साथ कुत्ते घुमाते हुए संकोच नहीं होगा ?"

श्रद्धा कुछ देर उसे देखती रही। फिर श्रद्धा ने 'ना' में अपनी गर्दन हिला दी।

एक दिन शाम को मनोज की इच्छा हुई कि वह गांधी विहार जाकर पांडे से मिल आये। मनोज और श्रद्धा गांधी विहार चल दिए। पांडे कमरे पर नहीं था,पर उसका रुम पार्टनर गुप्ता कुर्सी पर पुलिस की वर्दी पहने हुए

पढ़ाई कर रहा था। उसने अपने कंधे पर स्टार और आईपीएस लिखा हुआ बिल्ला लगा रखा था। मनोज और श्रद्धा पहले तो चौंक गए। उन्हें लगा कि गुप्ता के कमरे पर कोई आईपीएस आया है। पर नजदीक जाकर देखा तो गुप्ता ने ही वर्दी पहन रखी है।

मनोज ने पूछा-"गुप्ता यह क्या है?" गुप्ता आत्मविश्वास से भरा हुआ था और किसी नई रणनीति के कारण यह भेस बनाये हुए था।

उसने मनोज को अपने कन्धे पर लगे स्टार और आईपीएस लिखा हुआ दिखाया- "ये जो स्टार है ना मनोज ! यह मुझे अब प्रेरणा देंगे। मैं इन स्टार और आईपीएस के इस तमगे से मोटिवेट होऊंगा।”

गुप्ता ने आगे कहा - "अब मैं यह वर्दी पहन कर ही रोज पढ़ता हूँ। जिससे मुझे याद रहे कि मुझे आईपीएस बनना है और उस हवलदार दलजीत सिंह को सस्पेंड करना हैं। मैं उसे बर्बाद करके रहूँगा।”

गुप्ता अभी भी उस हवलदार द्वारा किये गये अपने अपमान को भूला नहीं था बल्कि उस अपमान का बदला लेने के लिए एक कारगर रणनीति पर काम कर रहा था।

मनोज और श्रद्धा समझ गये कि गुप्ता के दिल पर थानेवाली घटना का गहरा असर हुआ है। लेकिन श्रद्धा को आईपीएस की वर्दी बहुत आकर्षक लगी थी।

वापस लौटते समय श्रद्धा ने अपने मन की इच्छा मनोज से कही -"मनोज तुम यदि आईपीएस की वर्दी पहनोगे तो बहुत ही अच्छे लगोगे।”

मनोज ने श्रद्धा से मजाक में कहा-"ठीक है श्रद्धा मैं गुप्ता से पूछ लूँगा कि उसने यह वर्दी कहाँ से खरीदी है? मैं भी पहनकर पढूंगा कल से।"श्रद्धा मनोज के इस मजाक पर जोर से खिलखिलाकर हंस पड़ी।

उसने कहा-"नहीं मनोज मैं तुम्हें आईपीएस बना हुआ देखना चाहती हूँ।“

"जो हुक्म मेरे आका।” -मनोज ने एक्टिंग करते हुए श्रद्धा से मजाक में कहा। मनोज का मजाक सुनकर श्रद्धा मुस्कुरा गई ।दोनों कमरे की सीढियां उतर कर नीचे गांधी विहार की मेन रोड पर आ गया। मनोज ने पांडे को आते हुए देखा । मनोज और श्रद्धा पांडे के लिये रुक गये । पर पांडे उन दोनों के पास से बिना उनकी तरफ देखे हुए निकल कर सीढ़ियाँ चढ़ गया ।

39

दो महीने पहले दिए हुए यू पी मुख्य परीक्षा का रिजल्ट आ गया । ग्रुप में से केवल अश्विन की यू पी मुख्य परीक्षा क्लियर हुई थी।मनोज उत्तर प्रदेश पीएससी की मुख्य परीक्षा में असफल होने से दुखी था।मनोज ने परीक्षा में कई प्रश्नों के उत्तर आधे अधूरे लिखे थे, यहाँ तक कि 'ब्रिटेन में हुए जातीय दंगे' के बारे में उसे कुछ नहीं था ।इतिहास में चार्टिस्ट आन्दोलन ,अमेरिका के गृह युद्ध और प्राचीन भारत में गणतन्त्र के उत्तर भी मनोज अच्छे नहीं लिख पाया था ।उसकी तैयारी इतनी सघन नहीं हुई थी कि सभी प्रश्नों के बेहतरीन उत्तर लिख सके ।मनोज दुखी और निराश अपने कमरे में बैठा था उसके पास अपनी असफलता के मूल्यांकन के अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प नही था ।

मनोज की स्थिति समझते हुए और उसे प्रोत्साहित करते हुए श्रद्धा बोली --"मनोज अपनी असफलता से दुखी होने की जरुरत नहीं है ,यही त्रास तुम्हारी सफलता की सीढ़ियाँ हैं ।तुम्हें जनरल स्टडी और इतिहास की कोचिंग करनी चाहिए ।बिना कोचिंग के तुम्हें इन विषयों में अच्छे नम्बर नहीं मिलेंगे । "

"तुम सही कह रही हो ,मुझे घर जाकर कोचिंग के पैसों की व्यवस्था करनी चाहिए।" –मनोज ने श्रद्धा से कहा। उसे लग रहा था कि कोचिंग के अभाव में यू पी पीएससी का रिजल्ट खराब रहा है

मनोज कोचिंग के लिए पैसों की व्यवस्था करने कुछ दिनों के लिए मनोज गाँव चला गया। पिता कई महीनों से गाँव नहीं आये थे। उसने माँ से कुछ पैसे मांगे तो माँ ने पिता को कोसना शुरु कर दिया –"अब मैं कहाँ से लाऊं पैसा? बाप ने तो कसम खाय ली है कि नौकरी ठीक से ना करेगो, चाहे मोड़ा मोड़ी भीख मांगें।"
उसने माँ से कहा – "सब ठीक हो जायगा। मेरी नौकरी लग जाये फिर कुछ परेशानी नहीं होगी।"
निराशा के इस वातावरण में उसने माँ को बहुत दूर किसी उम्मीद की झलक दिखलाई ।जिसका अभी तक कोई नामो निशान नहीं था।
माँ – "मेरे पास पैसा नहीं हैं। मैं सोच रही हूँ के एक भैंस पाल लूं । राकेश के घर एक भैंस है, वो उधार दे रहो है। दूध बेचके खर्चा चलाए लूंगी । "
मनोज को माँ की कर्मठता पर रोना आ गया।

माँ ने आगे कहा "–दीपक जयपुर जा रहो है, धागा फेक्ट्री में नौकरी करेगो। बारह सौ रुपये मिलेंगे।"
दीपक के कंधे पर जिम्मेदारी का बोझ देखकर मनोज को कष्ट हुआ। कैसे रहेगा यह लड़का अकेला जयपुर में ? कितना दर्द है इस घर की किस्मत में।
कितनी अलग दुनिया है उसके घर और गाँव की।पता नहीं वह कभी अपनी माँ के लिए अपनी बहन भाई के लिए कुछ कर भी पायेगा या नहीं। तीन चार दिन तक उसने पैसों की व्यवस्था करने की गाँव में कोशिश की।

कुछ जगह उधार भी माँगा पर कहीं से भी उसे पैसे नहीं मिले। बेटे को परेशान देखकर माँ ने फिर से कहीं से उधार पैसे लेकर उसे दे दिए ।

मनोज को गए हुए अभी पांच दिन ही हुए थे कि अकेलापन श्रद्धा को घेरने लगा। इस अकेलेपन को दूर करने के लिए उसने अपनी उन सहेलियों से मिलना शुरू किया जिनसे वह होस्टल में रहने के बावजूद कई दिनों तक नहीं मिलती थी । लेकिन दस मिनिट में ही उसका मन सहेलियों की बातों से उबने लगता । उसने कॉलेज के हॉस्टल में भी कई साल अकेले बिताए थे पर कभी इस तरह का सूनापन उसे महसूस नहीं हुआ था,जो अब हो रहा था। कोचिंग जाते समय या शाम को कोचिंग से वापस आते समय उसकी आँखें लोगों की भीड़ में एक ही चेहरा तलाशती रहती पर वहां वह चेहरा नहीं था। तमाम आवाजों में उसके कान एक ही आवाज को सुनने के लिए तरसते रहते पर वह आवाज वहां नहीं थी। बार बार वह अपनी बालकनी से नीचे सड़क को देख आती। पर उस सड़क पर उसे वह दिखाई नहीं देता जिसे देखने की तड़प उसके मन में थी।
कहाँ है ग्वालियर? कहाँ है मनोज का घर? उसे नहीं पता। कोई फोन नम्बर मनोज के घर का उसके पास नहीं था। उसकी इच्छा हुई कि वह मनोज के दोस्तों से मिलने गांधी विहार ही चली जाए।शायद पांडे के पास मनोज के घर का या उसके आस पड़ोस का कोई फोन नम्बर हो। पर उसकी हिम्मत नहीं हुई।
थक हार करवह अपनी किताबों में अपना मन लगाने की कोशिश करती। पर आधा घंटा पढ़ना भी उसके लिए मुश्किल हो जाता। खाने का टिफिन उसका अधूरा ही वापस चला जाता। उसकी भूख भी जैसे मर चुकी थी। अजीब सी स्थिति हो गई थी उसकी ।

उसने मनोज से कह दिया था कि वे पढ़ाई के दोस्त हैं, कोई अलग एक्सपेक्टेशन उसे नहीं रखना चाहिए। पर पता नहीं मनोज ने उस पर कौन सा जादू कर दिया था? उसका कहीं मन नहीं लग रहा था। अल्मोड़ा जाने से पहले जो हालत मनोज की थी वही इस समय उसकी हो रही थी । लेकिन मनोज के इन्तजार के अलावा उसके पास कोई रास्ता नहीं था। उसे आज समझ आ गया था कि मनोज किस मजबूरी में अल्मोड़ा गया होगा ।
मनोज दिल्ली आ गया। उसने श्रद्धा के होस्टल की घंटी बजाई। पैरों में पंख महसूस करते हुए श्रद्धा नीचे आई। मनोज के आने से श्रद्धा सुख से भर गई थी। उसका अकेलापन दूर हो गया था। मनोज के कमरे तक पहुँचते पहुंचते उसकी आँखे आँसुओं से भर गईं, कुर्सी पर बैठी श्रद्धा ने आँखे बन्द कर ली। भरी हुई आँखें कब तक भरी रहती। आँसू छलक गए। मनोज चुपचाप बैठा रहा। लगभग पांच मिनिट तक दोनों शांत उसी भाव और स्थिति में बैठे रहे। फिर उसने एक लम्बी सांस ली। जैसे पिछले पांच दिन का सारा दर्द, अकेलापन, उदासी से निजात मिल गई हो।
मनोज ने उससे पूछा –"क्या हुआ श्रद्धा ?" श्रद्धा के मन का पारखी मनोज शायद उसके मन की हालत समझ गया था ।
श्रद्धा अभी बोलने की स्थिति में नहीं थी इसलिए वह सिर्फ मनोज को देखती रही। एकटक। उसने अपनी गीली आँखों की चुगली को छुपाने के लिए मुस्कुराने की कोशिश की। आँसू और मुस्कुराहट का कंट्रास उसके

के चहरे पर था। अजीब स्थिति थी उसकी। आँखे उसके प्यार को दिखाने को आतुर थी और मुस्कुराहट उस प्यार को छुपाने की असफल कोशिश कर रही थी।

श्रद्धा मनोज से कुछ कहना चाहती थी । यह ‘कुछ’ कहने के लिए वह हिम्मत जुटा रही थी । लेकिन काफी देर तक वह अपने मन की बात नहीं कह पाई और मनोज सांस रोके बैठा रहा । मनोज की अनुपस्थिति में उसकी याद श्रद्धा को बेचैन कर रही थी लेकिन मनोज के आते ही शायद वह बेचैनी दूर हो गई थी । मनोज की दिल्ली में अनुपस्थिति ने श्रद्धा के मन को विचलित कर दिया था पर मनोज के आते ही उसका मन उसके कंट्रोल में आ गया ।

कुछ देर अव्यवस्थित रहने के बाद श्रद्धा के चेहरे पर अब एक शांत मुस्कुराहट ही रह गई । वह कुर्सी से उठी और उसने इस महीने की प्रतियोगिता दर्पण उठा ली और मनोज को देते हुए कहा –“मनोज तुमने बहुत दिन अपने घर में बर्बाद कर दिए अब पढ़ाई पर ध्यान दो ,लो ये लेख बहुत अच्छा है इसमें ‘भारत की अन्तरिक्ष के क्षेत्र में उपलब्धिया हैं । तुम जोर से पढो ।“

श्रद्धा की बात सुनकर मनोज समझ गया कि इस लड़की को जीतना असम्भव है । मजबूरी में उसने सामने किताब रखकर पढ़ना शुरु किया –“दूर दिखने वाला आसमान और उसमें चमकने वाले तारे हमेशा से इंसान के लिए रहस्य और आकर्षण का केंद्र रहे हैं । “

40 .

आईएएस के तीसरे अटेम्प्ट के लिए जनरल स्टडी और इतिहास की कोचिंग करने की मनोज की इच्छा थी , माँ द्वारा दिए पैसों से मनोज ने केवल इतिहास की कोचिंग मणिकांत सर के यहाँ शुरु कर दी। जनरल स्टडी की कोचिंग के पैसे मनोज के पास नहीं थे ।

आईएएस की प्रिलिम्स इस बार मनोज और श्रद्धा दोनों का क्लियर हो गई। मनोज की तीसरी और श्रद्धा की पहली प्रीलिम्स थी यह। अश्विन ,नवनीत का प्रिलिम्स भी क्लियर हो गया। पिछली मैन्स में अश्विन और नवनीत सफल नहीं हो पाए थे ।इस बार उन्हें फिर से मैन्स देने का मौक़ा मिल रहा था। गुप्ता का फिर से प्रिलिम्स क्लियर नहीं हुआ। मनोज का साथ छोड़कर सफलता प्राप्त करने का सिद्धांत पांडे के काम नहीं आया। परीक्षा में सफलता का कोई भी फुलप्रूफ सिद्धांत अभी पांडे को नहीं मिला था। अपने प्यार के साथ मनोज आईएएस प्रीलिम्स में सफल हो गया था जबकि पढ़ाई में डिस्टर्ब करने वाले प्यार के माहौल से दूर रहने वाला पांडे फिर असफल हो गया था।

पिछली मैन्स में असफल होने के बाद नवनीत एक बार फिर अपनी प्रीलिम्स निकलने के कारण उत्साहित था। सफलता से उत्साहित नवनीत की इच्छा असफल पांडे पर व्यंग्य करने की होने लगी ।

नवनीत ने पांडे से कहा-"पांडे प्यार करने वाले का प्रिलिम्स क्लियर हो गया और प्यार से दूर रहने वाले फेल हो गए। अब क्या कहोगे?"

पांडे ने प्रीलिम्स के लिए मनोज से अलग रहकर मेहनत की थी, पर वह नहीं जानता था कि कमी कहाँ रह गई? मनोज की सफलता और अपनी असफलता से पांडे के मन में मनोज के लिए ईर्ष्या पैदा हो रही थी। उसने अब मनोज को अपना कॉम्पटीटर मानते हुए कहा-"अभी तो मनोज का केवल प्रिलिम्स निकला है। मुख्य परीक्षा बाकी है, प्यार में डूबे मनोज का रिजल्ट आने दो। प्यार के साथ सिलेक्शन असम्भव है।”

मुख्य परीक्षा होने तक श्रद्धा रोज शाम को मनोज के कमरे पर आ जाती और दोनों तीन चार घंटे साथ पढ़ाई करते।मनोज इस बार सबसे अलग रहकर केवल श्रद्धा के साथ ही मुख्य परीक्षा की तैयारी कर रहा था ।सुभ से शाम तक दोनों पढ़ाई करते ।पढ़ने से समय बच जाता तो बातें करने लगते और बातों पूरी हो जातीं तो पढ़ाई करने लगते ।दोनों को नहीं पता था कि इतने विशाल सिलेबस को किस तरह से तैयार करें ?क्या पढ़ें ?कैसे पढ़ें ?क्या छोड़ें ?इतिहास हिन्दी में मनोज कोचिंग के नोट्स पढ़ता रहा।जनरल स्टडी में वह अव्यवस्थित ही बना रहा । पैसों के लिए मनोज अभी भी शाम रात को दो घंटे कुत्ते घुमाने का काम कर रहा था ।

मनोज, श्रद्धा, अश्विन और नवनीत ने आईएएस की मुख्य परीक्षा दे दी। सभी लोग अपने रिजल्ट का इन्तजार करने लगे।सामान्य अध्ययन के पेपर मनोज के अच्छे नहीं गए थे।इतिहास , हिन्दी साहित्य में भी वह उतना टू दि पॉइंट नहीं लिख पाया था जितना परीक्षा में पूछा गया था ।उत्तर लिखते समय सभी पॉइंट मनोज को याद नहीं रहे,उसकी याद करने की अपनी सीमा थी ।‘मौलिक कर्तव्य’ पूछे गये तो मनोज केवल पांच छह मौलिक कर्तव्य ही लिख पाया, शेष उसे याद ही नहीं आये।‘देवनागरी लिपि’ की विशेषताएं भी उसे आधी अधूरी ही याद रहीं।मुख्य परीक्षा में पास होने लायक तैयारी मनोज नहीं लकर पाया था ।उसका परिणाम भी वैसा ही आया जैसी उसने तैयारी की थी ।श्रद्धा की भी यही स्थिति थी ।

रिजल्ट आ गया। मनोज और श्रद्धा का मुख्य परीक्षा में नहीं हुआ। मनोज के तीन अटेम्प्ट बेकार हो गए। एक भी अटेम्प्ट में उसने मुख्य परीक्षा क्लियर नहीं की। नवनीत की तैयारी में भी कमी रह गई थी। वह भी मुख्य परीक्षा क्लियर नहीं कर पाया। लेकिन अश्विन ने कमाल कर दिया वह उत्तर प्रदेश पीएससी में अकाउंट ऑफिसर और इस आईएएस की परीक्षा में ‘दिल्ली अंडमान सर्विस’ ‘डानिक्स ’ में डिप्टी कलेक्टर बन गया। पर उसे अभी प्रोपर आईएएस बनना था इसलिए अपनी अगले अटेम्प्ट की तैयारी जारी रखनी थी।

अश्विन ने अपनी दोहरी सफलता के लिए बत्रा सिनेमा के पीछे ‘अपनीरसोई’ रेस्टोरेंट में पार्टी दी। नवनीत,पांडे,गुप्ता,मनोज का रुम पार्टनर सचिन मनोज और श्रद्धा को आमन्त्रित किया।

मनोज के नये रुम पार्टनर सचिन ने हालिया सफल हुए अश्विन से उसकी सफलता का राज पूछा -“अश्विन भैया आप बताएं कि आपकी तैयारी का क्या तरीका था ।हमें भी सफलता के टिप्स बताएं प्लीज ।

“ये जानना इतना आसान नहीं सचिन, गुरुज्ञान लेने के लिए तपना पड़ता है। मेहनत करनी पड़ती है ।आपके लिए सफलता जब जीने मरने का प्रश्न बन जाए तब मैं सफलता के राज बताउंगा। नहीं तो ऐसे तो कई लोग पूछते है एक कान से सुनते है दूसरे से निकाल देते हैं। “ -सचिन को समझ नहीं आया कि अश्विन जैसा समझदार लड़का अचानक ऐसी कड़वी बात क्यों बोल रहान है ।

लेकिन सचिन ने अश्विन से हिम्मत करके पूछा –“आप कैसे समझेंगे कि किसके लिए सफलता जीने मरने का प्रश्न बन चुकी है । “

“तुम्हें देखकर आसानी से समझ आता है कि तुम अभी गम्भीर नहीं हुए, तुम्हें हर दूसरे महीने अपने किसी कजिन की शादी में ग्वालियर जाना पड़ता है।कितने कजिन हैं तुम्हारे ?“- नई नई सफलता से पैदा हुए आत्मविश्वास से भरे हुए अश्विन ने नई नई तैयारी करने आये सचिन की पढ़ाई की अगम्भीरता पर कटु प्रहार कर दिया ।

सचिन को उम्मीद नहीं थी कि अश्विन उसे इस तरह व्यंग्य के माध्यम से पढ़ाई के लिए प्रेरित करेगा। पर सफल अश्विन को नौसिखिया सचिन कोई भी जवाब नहीं दे पाया।अश्विन की बात सुनकर सचिन चुपचाप सामने रखा सूप पीने लगा।

मनोज अपनी मुख्य परीक्षा की असफलता के कारण यह चिंतन कर रहा था कि उसकी तैयारी में क्या कमी रह गई थी । कई रातें उसने यह विचार करते हुए बिता दी थीं कि उसकी तैयारी में क्या कमी रह गई थी ।मनोज को लग रहा था कि कहीं न कहीं मेहनत के बावजूद उसकी पढ़ाई के तरीके में जरूर कोई बड़ी खामी रह गई थी ।

पढ़ाई के सही तरीके को तलाशने के लिए उसने चिंतित होकर अश्विन से पूछा –“अश्विन, बताओ ना क्या तरीका रहा तुम्हारा पढ़ाई का ।तुम्हारे अनुभव से हम लोगों को भी लाभ होगा ।“

“अरे कुछ विशेष नहीं, किसी दिन समय निकाल कर आओ तो विस्तार से बात करेंगे ।“ -अश्विन ने मनोज को टालते हुए कहा। शायद अश्विन अपनी पढ़ाई का राज खोलकर लोगों को लाभ पहुंचाने के मूड में नहीं था ।

पांडे चुपचाप बैठा यह चर्चा सुन रहा था। सामने रखी सलाद की प्लेट में से टमाटर का टुकडा उठाते हुए उसने अश्विन से कहा –“अश्विन, मनोज जी के पास समय कहाँ है इन व्यर्थ की बातों के लिए। वे तो पहले ही बहुत व्यस्त हैं।“

पांडे इस बात से खुश था कि मनोज के प्रति उसकी भविष्यवाणी सही निकली। प्यार में डूबा मनोज मुख्य परीक्षा में फेल हो गया था ।

पांडे ने अपने सामने बैठे हुए कोल्ड ड्रिंक पी रहे नवनीत से कहा-"क्यों नवनीत मैंने कहा था ना कि प्यार के कारण मनोज का सिलेक्शन असम्भव है।“-उसने पास बैठी श्रद्धा का भी कोई लिहाज नहीं किया । पांडे मनोज के मैन्स में असफल होने का कारण केवल श्रद्धा को मान रहा था ।श्रद्धा से प्यार के कारण ही उसने पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया ऐसा पांडे मान रहा था ।

अश्विन अपने सिलेक्शन की ख़ुशी में दी जा रही पार्टी में पांडे की कुंठा को सहने के मूड में नहीं था।

अश्विन ने उसे फटकारते हुए कहा- "बकवास मत करो पांडे, तुम मन्चूरियन खाओ।"

अश्विन की बात का पांडे पर कोई असर नहीं हुआ वह मनोज की असफलता की अपनी भविष्यवाणी से अति उत्साहित हो गया था । वह अपने स्थान पर खड़ा हुआ और हाथ हिलाते हुए मनोज के घाव पर नमक छिड़कना शुरु किया -"मनोज जी आप एक सीन की कल्पना कीजिये, आज से दस पन्द्रह साल बाद जब आपको श्रद्धा जिन्दगी के किसी मोड़ पर कहीं मिलेंगी और पूछेंगी कि मनोज जी आजकल क्या कर रहे हो? तो आप क्या कहेंगे? आटा चक्की पर काम कर रहा हूँ या जौरा से मुरेना टेम्पो चला रहा हूँ?"

पांडे की बात सुनकर मनोज और श्रद्धा का चेहरा उतर गया। मनोज को बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि पांडे पार्टी के इस माहौल में इतनी घटिया बात कर सकता है। श्रद्धा की आँखों से आँसू बहने लगे । मनोज कभी श्रद्धा को देखता कभी पांडे को उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ?

पांडे की बात सुनकर गुप्ता भड़क गया - "पांडे यदि तुम अच्छा नहीं बोल सकते तो अपना मुंह बन्द रखा करो। तुम तो प्रीलिम्स में ही फेल हो गये थे, तुमने कौन से तीर मार लिए। मनोज ने कम से कम मैन्स परीक्षा तो दी ।

पांडे ने गुप्ता की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और बहुत देर से सामने रखे मंचूरियन को खाते हुए कहा –"मैं तो मनोज के भले के लिए कह रहा हूँ ।उन्हें तो वैसे भी भले की बात कहाँ समझ आती है ?"

पांडे मनोज का सारा भला श्रद्धा के बिना करना चाहता था ,श्रद्धा के साथ मनोज के भले का कोई प्लान पांडे के पास नहीं था ।

अपनी बात पूरी करके पांडे ने मंचूरियन की ग्रेवी को फ्राइड राईस में मिलाकर खाना शुरु कर दिया ।

अपमान और शर्मिंदगी के कारण श्रद्धा का पार्टी में बैठना मुश्किल हो गया वह अपने आँसू पोंछती हुई उठी और पार्टी छोड़कर जाने लगी।मनोज भी उसके पीछे चल दिया ।

मनोज को वहां से जाते हुए देख पांडे ने लोगों को सुनाते हुए कहा-"अब पछताए हॉट का जब चिड़िया चुग गई खेत।"

"अभी एक अटेम्प्ट और है मनोज के पास पांडे।" –गुप्ता ने पांडे से कहा ।

गुप्ता की बात सुनकर पांडे व्यंग्य पूर्ण हँसी हँसते हुए सामने रखा मंचूरियन खाने लगा ।

इसके पहले भी मनोज के कई बार अपमान हुए थे।गाँव में घुसते ही व्यंग्य बाण झेले थे।लाइब्रेरी में भी उसे अपमानित किया गया था। अपमानों और बेबसियों की एक लम्बी श्रंखला को उसने झेला था। पर आज श्रद्धा के सामने पांडे ने उसकी योग्यता और भविष्य पर ही सवाल खड़ा कर दिया।पांडे ने उसकी इस असफलता का सारा ठीगरा उसके प्यार पर फोड़ दिया । मनोज और श्रद्धा सर झुकाये साथ चले जा रहे थे। दोनों मुखर्जी नगर के पार्क में जाकर बैठ गये ।

श्रद्धा ने मनोज से कहा –"मनोज इसीलिये मैं कहती थी कि केवल पढ़ाई पर ध्यान दो ,इन सब बेकार की बातों को दिमाग से निकाल दो। अब ये दुनिया तुम्हारे साथ मेरा भी मजाक उड़ा रही है।"-पांडे के कड़वे व्यंग्य से आहत मनोज को उम्मीद थी कि श्रद्धा पांडे को भला बुरा कहेगी। पर जब श्रद्धा ने मनोज पर ही दोष लगाया तो मनोज उखड़ गया ।

"ऐसा कौन सा अपराध कर रहा हूँ मैं, जो बार बार मुझे अपमानित किया जाता है। तुम भी मुझे ही गलत कह रही हो।" – पहले से अपमानित मनोज की आवाज थरथराने लगी और वह सामान्य से तेज हो गई।उसने अपने कंपकपाते हुए हाथों से पार्क की बेंच के हत्थे को कस कर पकड़ लिया।

"मैं तुम्हे गलत नहीं कह रही मनोज। पर बार बार ये प्यार ?"- अधूरी बात ही कह पाई श्रद्धा मनोज से। श्रद्धा शायद अपने मन की कोई बात उसे समझाना चाह रही थी, पर वह बात उलझी हुई थी कहीं ।

मनोज शायद श्रद्धा के मन की दशा नहीं समझ पा रहा था। अपने प्यार को समझाने की उसकी तमाम मौन कोशिशें अब तक असफल रहीं थी। श्रद्धा भी शायद मनोज से दोस्ती और प्यार के बीच कब से झूल रही थी। मनोज तक पहुँचने की कोई साफ़ सीधी डगर श्रद्धा अभी नहीं ढूंढ पाई थी।

उसने सामने खड़ी श्रद्धा की आँखों में गहराई से देखते हुए पूछा –"किससे प्यार कर रहा हूँ मैं? क्या प्यार कर रहा हूँ ?" फिर कुछ देर रुककर वह तेज आवाज में श्रद्धा से फिर पूछता है –"कौन? कौन मुझसे प्यार करता है? तुम्हें तो पता ही होगा? पता है तो बताती क्यों नहीं ।"

मनोज बेंच से उठकर खड़ा हुआ। उसे समझ नहीं आया कि वह खड़े होकर क्या करे, इसलिए वह फिर बैंच पर बैठ गया ।

"मेरे हाथ में नहीं है श्रद्धा कुछ भी, मैं क्या करूँ? नहीं निकलती तुम मेरे दिल से! मैं क्या करूँ? कोई कुछ भी कहे फिर, मैं तुमसे दूर नहीं हो सकता। मैं प्यार नहीं कर रहा तुमसे। मैं तो केवल साँसे ले रहा हूँ तुम्हारे नाम की! पांडे पूछता है कि दस साल बाद तुम पूछोगी कि मैं क्या करता हूँ, तो मैं क्या कहूंगा ? दस बीस साल

बाद नहीं, हजारों साल बाद भी तुम पूछोगी ना कि मैं क्या कर रहा हूँ तो भी मैं यही कहूंगा कि तुम्हारे नाम के साथ सर उठाये खड़ा हूँ ।"- उसने श्रद्धा के प्यार को श्रद्धा के सामने अभिव्यक्त कर दिया ।
श्रद्धा की आँखें अब हिल नहीं पा रही थी वे मनोज के चेहरे पर जम सी गई थीं ।

मनोज की नजरे अँधेरे पार्क में कुछ ढूंढने लगीं । जब उसे अपनी नजरे पार्क में घुमाने के बाद भी कुछ नहीं मिला तो उसने दो लम्बी साँसे भरकर श्रद्धा से फिर कहना शुरु किया –"पांडे कहता है मेरा सिलेक्शन नहीं होगा। क्या मैं इतना कमजोर हूँ ? क्या प्यार कमजोर कर देता है ? बस मुझे लगे कि तुमने दो घड़ी मेरे बारे में सोचा। इतने से ही मैं भरा भरा घूमता फिरूं । कितनी छोटी सी तो इच्छा थी तुम्हारी कि तुम मुझे आईपीएस बना हुआ देखना चाहती हो, बस तुम एक नजर मुझे देख लो इतने से ही मैं ये दुनिया उल्ट पुलट कर दूं , ये नौकरी, सिलेक्शन ये आईपीएस क्या चीज है ?" अपने वाक्य के अंत तक आते आते श्रद्धा के प्यार में मनोज पूरी तरह डूब चुका था ।इसी डूबने से वह बच पायेगा ऐसा उसे लग रहा था ।

मनोज के मन की दशा को श्रद्धा महसूस कर रही थी। उसे लग रहा था कि मनोज अपनी नहीं शायद उसकी खुद की बात कह रहा है । श्रद्धा भी मनोज के बारे में यही सब तो सोचती रहती थी । मनोज जब पांच दिनों के लिए अपने गाँव चला गया था तब वह मनोज के लिए परेशान हो गई थी। आज मनोज की बात सुनकर न जाने कब से रुके हुए आंसू उसकी आँखों में आने को तरस रहे थे, लेकिन वह उन्हें रोकने की बहुत कोशिश कर रही थी। कुछ देर तक मनोज बैंच पर उसी स्थिति में बैठा रहा और वह उसी स्थिति में खड़ी रही। एक दो मिनिट बाद उसने मनोज से कहा –चलो मनोज ,देर हो रही है ।

मनोज उठा और श्रद्धा के साथ साथ चलने लगा। चुपचाप। श्रद्धा के होस्टल पहुँचने तक रास्ते भर दोनों में से कोई नहीं बोला। मनोज के पास बोलने के लिए अब कुछ था नहीं वह तो अपने आप को खाली कर चुका था और श्रद्धा शायद अपने भरे मन में से बोलने लायक कोई मोती चुनने की कोशिश कर रही थी ।

अपने होस्टल के नजदीक पहुँचने पर श्रद्धा ने मनोज से कहा –"मनोज तुम्हारे भीतर असीम सम्भावनाएं हैं । तुममें अगर क्षमता नहीं होती तो मुझे तुमसे कुछ भी नहीं कहना था । अपनी क्षमता के साथ न्याय न करना खुद से और इस समाज से अन्याय करना होगा ।"- श्रद्धा मनोज की क्षमता पर भरोसा जता रही थी ।

होस्टल के बाहर स्ट्रीट लाईट में दो छोटी लड़कियां बेडमिन्टन खेल रही थीं। श्रद्धा होस्टल के गेट से सटकर खडी हो गई। अब विदा की बारी थी। बेडमिन्टन खेल रही लड़कियों में से एक लड़की की शटल रैकेट पर कम आ रही थी नीचे अधिक गिर रही थी ।श्रद्धा ने खेलती हुई लड़कियों की तरफ देखते हुए मनोज कहा – "मनोज मैं केवल दो घड़ी तुम्हें याद नहीं करती। हमेशा तुम्हें याद करती हूँ।"- उसकी आँखों के सामने मनोज के गाँव जाने वाले पांच दिन अचानक तैर गये। अकेले उदास दिन , हर जगह मनोज को ढूंढते तलाशते दिन,

मनोज के बिना निर्जीव से पड़े दिन , मनोज के आने के बाद फिर से चंचल और सुख से भरे दिन। उसने अपनी आँखे लड़कियों की तरफ से हटाकर मनोज की तरफ कर ली ।

मनोज की आँखों में देखते हुए श्रद्धा ने कहा –"मनोज मैं तुमसे प्यार करती हूँ, बहुत प्यार करती हूँ।" कुछ देर सन्नाटा रहा। केवल रैकेट पर शटल के लगने की आवाज आ रही थी ।

श्रद्धा ने मनोज को एकटक देखते हुए कहा –"अब उलट पुलट दो ना ये दुनिया प्लीज ।" श्रद्धा ने मनोज के प्यार और उसकी क्षमताओं को एकसार कर दिया ।

इतना कहकर श्रद्धा ने एक पल को मनोज को देखा और पलटकर होस्टल में चली गई। मनोज गेट पर खड़ा रह गया। उसकी दुनिया अचानक एक पल में बदल गई थी । श्रद्धा की आवाज उसके कानों में गूँज रही थी – "अब उलट पुलट दो ना ये दुनिया प्लीज । "

बेडमिन्टन खेल रही जीतने वाली लडकी ने हारने वाली लड़की से जोर से कहा - "तू शटल पर फोकस नहीं कर रही है। इसलिए बार बार हार जाती है। फोकस कर ना ।

मनोज ने लड़की की आवाज सुनी और हल्के से मुस्कुरा दिया। फिर वह तेजी से पलटा और नेहरु विहार जाने की जगह मुखर्जी नगर की मुख्य सडक की ओर जाने लगा। गांधी विहार जाने के लिए जब कोई भी टेम्पो खाली नहीं मिला तो उसने गांधी विहार जाने के लिए दौड़ लगा दी।मनोज को बार बार श्रद्धा की बात सुनाई दे रही थी 'मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ' कब से यह एक वाक्य मनोज सुनना चाह रहा था श्रद्धा से ।कब से वह श्रद्धा के चेहरे को इसी लालसा से देखता था कि वह उसके प्यार को स्वीकार करके मुस्कुरा जाये।लेकिन आज वह दिन आ गया था लेकिन क्या प्यार किसी के भीतर इतनी ऊर्जा भर देता है ?मनोज को लग रहा था कि वह दौड़ नहीं रहा है बल्कि उड़ रहा है, और उड़कर अश्विन के कमरे पर नहीं जा रहा है बल्कि आसमान के तारे तोड़ने जा रहा है ।अब तक की सारी असफलता की निराशा पीछे छूटती जा रही थी और सफलता की उम्मीद उसे आगे बढ़ा रही थी । दस मिनिट लगातार दौड़ते रहने के बाद वह अश्विन के कमरे पर पहुँच गया ।

41 .

अश्विन ने रात को दस बजे मनोज को हाँफते हुए अपने दरवाजे पर देखा तो चौंक गया। मनोज ने बिना समय बर्बाद किये अश्विन से कहा –"अश्विन मेरे पास अब केवल लास्ट अटेम्प्ट बचा है ,मुझे आई पी एस बनना है । मैं इस लास्ट अटेम्प्ट में कोई रिस्क नहीं लेना चाहता। तुम मुझे बताओ कैसे पढ़ाई करना है ।"
कुछ देर पहले अश्विन की पार्टी से मनोज अपमानित होकर चला गया था अश्विन समझ गया कि उसके दिल पर गहरी चोट लगी है ।फिर भी अश्विन ने उससे कहा –"कल आ जाते, रात को क्यों परेशान हुए ?"
मनोज ने तपाक से कहा –"मेरे पास बिलकुल समय नहीं है अश्विन। एक एक पल मेरे लिए कीमती है ।"
अश्विन ने अपने हाथ में बंधी डिजिटल वाच उतारी और उसे देते हुए कहा –"लो मनोज पढ़ाई के लिए तुम्हारी ललक देखते हुए ये गिफ्ट मेरी तरफ से।"
मनोज को अश्विन का यह अचानक गिफ्ट देना समझ नहीं आया। उसने चौकते हुए कहा –"थेंक यु अश्विन, लेकिन मुझे गिफ्ट की जरुरत नहीं है तुम यदि पढ़ाई के कुछ टिप्स बताओगे तो मेरे लिए बहुत उपयोगी होंगे।"
अश्विन ने मुस्कुराते हुए कहा –"घड़ी बाँध लो पहले। "
उसने चुपचाप अश्विन द्वारा दी गई डिजिटल वाच अपनी कलाई पर बाँध ली।
अश्विन ने मनोज की कलाई पकड़ कर उस घड़ी का एक बटन दबाया और उससे कहा –"मनोज यह एक स्टॉप वाच है। अब मैं तुम्हें पढ़ाई के कुछ नियम बताउंगा। स्टॉप वाच मैंने शुरू कर दी है जितनी देर मैं तुमसे बात करूंगा उतना समय यह वाच दिखायगी। तुम्हारा टाइम शरु होता है अब।"
मनोज अश्विन के समझाने के इस अनोखे तरीके को देखकर मुस्कुरा दिया।

अश्विन ने कहा- "मनोज बाइस मई को आईएएस प्रिलिम्स है। यानी अब केवल एक महीना बचा है। इस एक महीने में तुम्हे केवल प्रीलिम्स की तैयारी करना है। मुख्य परीक्षा को अभी भूल जाओ।
"प्रीलिम्स तो मेरा पिछली बार भी क्लियर हो गया था।" –मनोज ने कहा

"प्रीलिम्स को हलके में कभी मत लेना,पहले अटेम्प्ट में प्रीलिम्स क्लियर होने बाद भी सेकेण्ड अटेम्प्ट में प्रीलिम्स लटक गई थी तुम्हारी, इसलिए तुम्हें प्रिलिम्स की तैयारी ऐसे करनी है कि परीक्षा देकर आने पर प्रिलिम्स में चयन को लेकर कोई डाउट न रहे।"
कुछ देर रुककर अश्विन ने आगे कहना जारी रखा – "मनोज तुम पुराने सालों के पेपर कई बार सॉल्व करो। क्योकि प्रीलिम्स में पुराने सालों के पेपर में से ही कई प्रश्न सीधे सीधे आ जाते है और हम वही प्रश्न गलत कर आते है। प्रीलिम्स में केवल ऑब्जेक्टिव प्रश्न आते हैं तो तुम्हे इस पूरे महीने में प्रेक्टिस बुक से हजारों ऑब्जेक्टिव प्रश्न हल करना है।सिलेबस का कोई भी टॉपिक हल्के में नहीं लेना है ।

मनोज अश्विन की दी जा रही टिप्स को नोट भी करता जा रहा था ।

प्रीलिम्स में जनरल स्टडी का पेपर अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, अश्विन ने जनरल स्टडी के बारे में मनोज को बताया –"मनोज जनरल स्टडी में भी यही ट्रेंड रहेगा ।हाँ आजकल परीक्षा में करंट अफेयर बहुत पूछा जाता है इसलिए प्रतियोगिता दर्पण से तुम हर महीने का करंट अफेयर तैयार करो ।"

मनोज अश्विन की बात सुनकर संतुष्ट हो गया ।

अश्विन ने मनोज की कलाई पकड़ी और स्टॉप वाच बंद कर दी ।

फिर अश्विन ने कहा –"मनोज मेरी बात पूरी होने में बारह मिनिट सोलह सेकेण्ड लगे ।"

मनोज ने देखा कि घड़ी बारह मिनिट सोलह सेकेण्ड पर रुक गई थी ।

अश्विन को अभी शायद पढ़ाई के कुछ और टिप्स देने थे उसने मनोज से पूछा –"तुम रोज कितने घंटे पढ़ते हो ?"

मनोज ने ध्यान करते हुए कहा –"दस घंटे ।"

अश्विन ने हँसते हुए पूछा –कन्फर्म ?

मनोज चुप हो गया । उसने कभी अपने घंटे गिने नहीं थे ।

अश्विन ने कहा –"अब तुम्हें एक एक मिनिट का ध्यान रखना पड़ेगा। इसलिए यह स्टॉप वॉच हमेशा अपनी कलाई पर बांधों। जब तुम पढ़ाई कर रहे हो तो स्टॉप वाच चालू रखना। जब तुम खाना खा रहे हो, कोई मिलने आ गया हो या किसी से बात कर रहे हो तो यह स्टॉप वॉच रोक देना। एक डायरी में स्टॉप वॉच के हिसाब से पढ़े गए रोज के घण्टे आपको रिकार्ड के लिए दर्ज करने है। आठ घण्टे पर पुअर, दस घण्टे पर गुड, और बारह घण्टे पर वेरी गुड खुद को दो ।अब तुम्हें सेल्फ मोटीवेट होकर पढ़ाई करना है ।
"

मनोज ने इस तरह की पढ़ाई कभी नहीं की थी। इस तरह के घण्टों का हिसाब तो कभी नहीं किया था। सामने किताब रहती थी और वह अपने रुम पार्टनर पांडे से बात करता रहता था और सोचता रहता था कि आज तो दस घण्टे पढ़ लिए।

मनोज अश्विन के कमरे से उत्साहित होकर अपने कमरे पर चला गया।अगले दिन उसने श्रद्धा से अपनी पढ़ाई की नई प्लानिंग डिस्कस की ।

"मनोज अश्विन एकदम सही कह रहा है । मैं तो अब उत्तरांचल पीएससी पर फोकस करुंगी। इस साल का आईएएस एग्जाम मैं नहीं दे रही। लेकिन तुम्हें अपने चौथे और आख़िरी अटेम्प्ट की तैयारी करना है। केवल उस पर फ़ोकस करो। अब नहीं तो कभी नहीं। मैं अपने मनोज को आईपीएस बना हुआ देखना चाहती हूँ । "एक दिन पहले ही मनोज के प्यार को स्वीकार करने वाली श्रद्धा ने मनोज से कहा ।

जनरल स्टडी के पेपर के लिए श्रद्धा ने करन्ट अफेयर, खेल, विदेशी डेलिगेशन, पुरस्कार, नई खोजें, दुर्घटनाएं, सरकारीयोजनाएं, आर्थिक मुद्दे, राजव्यवस्था की गतिविधियां आदि पर पूरे साल के लिए महीने वार प्रतियोगिता दर्पण से मनोज के लिए खुद ऑब्जेक्टिव टाइप प्रश्न तैयार किये जैसे कि वह आईएएस की

प्रिलिम्स परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र की पेपर सेटर हो। शुरु शुरु में मनोज के स्टॉप वाच से छह घंटे से ज्यादा नहीं हो पाते थे, धीरे धीरे उसने दस से बारह घंटे रोज स्टाप वाच के अनुसार पढ़ाई करना शुरु कर दी। वह सब्जी लेने जाता या नहाता या कोई दोस्त आ जाता तो वह स्टॉप वाच बन्द कर लेता। इस तरह महीने भर में मेहनत और रणनीति से उसने प्रिलिम्स की अच्छी तैयारी कर ली। श्रद्धा चाहती थी कि मनोज केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे इसलिए उसने मनोज को शाम को कुत्ते घुमाने में समय बर्बाद करने से मना कर दिया। श्रद्धा ने तय किया कि वह अपने खर्चे कम कर देगी जिससे मनोज को पैसों के लिए अधिक परेशान न होना पड़े। श्रद्धा ने अपने रुम पर एक लड़की को रुम पार्टनर रख लिया जिससे एक हजार रुपये श्रद्धा के बचने लगे यह पैसे मनोज के कमरे का किराया भरने के काम आने लगे। श्रद्धा के कहने पर मनोज ने शाम को कुत्ते घुमाने का काम बंद कर दिया।

प्रीलिम्स परीक्षा हो गई। सामान्य अध्ययन में अधिकतर प्रश्न करन्ट अफेयर से आये। कई प्रश्न तो श्रद्धा द्वारा बनाये गए पेपर से ही आ गए । इतिहास का पेपर भी मनोज का बहुत अच्छा गया । अब यह क्लियर था कि मनोज का प्रिलिम्स नहीं रुकेगा।

42 .

मनोज को प्रिलिम्स क्लियर करने में अब कोई सन्देह नहीं था। श्रद्धा ने इस बार आईएएस के स्थान पर उत्तरांचल पीएससी का प्रिलिम्स दिया था। प्रिलिम्स परीक्षा के अगले दिन विकास सर की कोचिंग में पिछले साल आईएएस की परीक्षा में सिलेक्ट हो चुके हिंदी मीडियम के विद्यार्थी सौरभ राव तैयारी करने वाले स्टूडेंट को परीक्षा पास करने के टिप्स देने आये। मनोज मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिए सटीक रणनीति तलाश रहा था, वह सिलेक्टेड सौरभ राव की सफलता की रणनीति को अक्षरशः पालन करने को बेताब था ।

उसने सौरभ राव से पूछा –“सर मुख्य परीक्षा में अधिक से अधिक नम्बर लाने के लिये क्या करें?

सौरभ राव ने बताया-"लोग मानते नहीं है पर यदि कुछ बातें याद रखें तो सफलता जरूर मिलती है।”

सौरभ राव ने कहा-"मुख्य परीक्षा में ऑब्जेक्टिव प्रश्न नहीं पूछे जाते बल्कि निबंधात्मक उत्तर परीक्षा में लिखने होते हैं । इसलिए प्रीलिम्स की पढ़ाई की स्ट्रेटेजी मुख्य परीक्षा के किसी काम की नहीं है । अधिक से अधिक याद करो, अधिक से अधिक लिखकर देखो। परीक्षा के पुराने पेपर सॉल्व करो। मॉक टेस्ट दो।“

सौरभ राव की क्लास के बाद मनोज ने श्रद्धा से कहा - " श्रद्धा मुझे समझ आ गया कि मैं तीसरे अटेम्प्ट में क्यों असफल रहा था ।उस अटेम्प्ट में मैंने केवल नोट्स पढ़े थे ,लेकिन उन्हें याद करके कई बार लिखकर नहीं देखा था।टेस्ट भी नहीं दिए थे,केवल पढ़ने से काम नहीं चलता बल्कि याद करके कई बार लिखकर देखना

चाहिए ।इस बार मैं सौरभ राव सर के बताये गए तरीके से ही पढ़ूंगा।" दोनों मुखर्जी नगर के शक्ति पुस्तक भंडार पहुँच गये। मनोज ने पांच सौ कागजों के दो पैकेट खरीदे और वापस कमरे पर आ गया।

मनोज ने श्रद्धा से कहा - "एक महीने में पांच सौ पेज यानी रोज लगभग बीस पेज हमें लिखने हैं श्रद्धा। तुम्हें भी उतरांचल मुख्य परीक्षा लिए यही रणनीति अपनानी होगी । अब हम रोज बीस पेज लिखेंगे।पहले याद करेंगे फिर लिखकर और टेस्ट देंगे और यह क्रम परीक्षा तक चलेगा।"

पर मनोज के मन में कुछ आशंका थी -"लेकिन एक समस्या है श्रद्धा, यदि मैं अच्छा न लिख पाया तो?"

"तो गन्दा लिखो, पर लिखो।अच्छा लिखने के इन्तजार में ही लोग उत्तर नहीं लिखते हैं, अधिकाँश विद्यार्थी तो सीधे परीक्षा हॉल में ही पहली बार लिखते हैं। परीक्षा हॉल में पहली बार गन्दा लिखने से अच्छा है घर में कई बार गन्दालिखकर हम अपना लेखन सुधार लें।" -श्रद्धा ने मनोज से कहा।

मनोज ने कहा -"सही कह रही तो तुम। इस बार मैं इतना लिखूंगा जितना पूरे जीवन में मिलाकर भी नहीं लिखा होगा।"

मनोज अब सुबह चार बजे उठने लगा। परीक्षा के पुराने पेपरों का अवलोकन करता और निश्चित टॉपिक के प्रश्न का उत्तर नोट्स और किताबों से याद करता । उसे जब वह टॉपिक याद हो जाता तो निश्चित समय सीमा में उसे लिखकर देख लेता। सुबह लगातार बारह बजे तक, उसके बाद दोपहर में दो घंटे के भोजन और विश्राम के बाद दो बजे से छह बजे तक दूसरे विषय में यही क्रम दोहराता।तीसरे अटेम्प्ट के विपरीत इस बार श्रद्धा सुबह से मनोज के कमरे पर नहीं आती थी बल्कि दिन भर की पढ़ाई का लक्ष्य दे जाती । शाम को छह बजे श्रद्धा उसके कमरे पर आकर सामान्य अध्ययन के नोट्स को दोनों रात को दस बजे तक लिख लिख कर याद करते।

पर मनोज के लिए सामान्य अध्ययन की समस्या अभी भी बनी हुई थी । उसे सामान्य अध्ययन की कोचिंग की जरूरत महसूस हो रही थी। साईंस टेक, स्टेटेस्टिक, इकॉनोमी, भारत के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध,जैसे विषयों में वह कमजोर था। बिना कोचिंग के जनरल स्टडी में अच्छे नम्बर नही लाये जा सकते थे ।

एक दिन श्रद्धा ने मनोज से कहा कि उसकी सहेली एक कोचिंग में सामान्य अध्ययन पढ़ने जाती है। विनय सिंह सर ने 'ध्येय' नाम से एक महीने पहले ही यह कोचिंग खोली है। अभी कोचिंग में कुछ स्टूडेंट ही है इसलिए वह सब स्टूडेंट पर व्यक्तिगत ध्यान देते हैं।

मनोज श्रद्धा के साथ 'ध्येय' कोचिंग पहुँच गया । श्रद्धा ने विनय सर से कहा -"सर हम दो लोग पढ़ने वाले हैं पर पैसों के अभाव में केवल एक ही फीस दे पायेगा।”

विनय सिंह को अपनी कोचिंग के पहले ही बैच में मुफ़्त पढ़ने वाले से सामना करना पड़ गया।

मनोज ने विनय सर को एकदम ईमानदारी से बता दिया - "सर मेरे पास फीस के लिए बिलकुल पैसे नहीं हैं , पर सामान्य अध्ययन पढ़ना मेरे लिए बहुत जरूरी है।”

विनय सर के पास अभी पन्द्रह स्टूडेंट ही आये थे।उन्हें अधिक से अधिक स्टूडेंट की जरूरत थी।पर वे फ्री स्टूडेंट नहीं चाहते थे। उन्होंने मनोज को टालने की कोशिश की -" यदि मैंने तुम्हें बिना फीस के पढ़ाया तो दूसरे स्टूडेंट के साथ यह अन्याय होगा।”

विनय सर की बात सुनकर दोनों को निराशा हुई। पर मनोज ने उम्मीद नहीं छोड़ी उसने कहा-“सर मेरे पास सच में पैसे नहीं हैं और बिना जनरल स्टडी की कोचिंग के मेरा सिलेक्शन सम्भव नहीं है। सिलेक्शन के बाद जब मुझे पहला वेतन मिलेगा मैं सबसे पहले आपकी फीस चुकाउंगा सर ।“

मनोज की बात सुनकर विनय सर हँस दिए,उन्हें मनोज की बातों में सच्चाई नजर आई। उन्होंने अपनी टेबल के ड्रावर में से आठ हजार रुपये निकाले और मनोज को देते हुए कहा –“फीस तो तुम्हारी माफ़ नहीं हो सकती । इसलिए यह पैसे लो और काउन्टर पर जमा कर दो,जब तुम्हारे पास पैसे आ जाएँ तब वापस कर देना, पर अभी पैसे के अभाव में तुम पढ़ाई से वंचित नहीं हो सकते।”

पहली बार मिलने वाला कोई अनजान टीचर उसके लिए अपनी जेब से आठ हजार रुपये दे रहा था । मनोज का मन विनय सर के प्रति सम्मान से भर गया।

विनय सर के पढ़ाने का तरीका भी एक्जाम ओरिएंटेड था। वह पढ़ाने से ज्यादा टेस्ट लेने में भरोसा रखते थे। उनकी कोचिंग में जो भी टॉपिक पढ़ाया जाता अगले दिन पढ़ाने के पहले उसका टेस्ट जरूर लेते।
ढाई महीने तक मनोज की पढ़ाई बहुत अच्छी चलती रही। उसने अपने लक्ष्य के अनुसार हिन्दी,इतिहास और सामान्य अध्ययन के सैकड़ों प्रश्नोत्तर लिख डाले। विकास सर,विनय सर उसके लिखे हुए उत्तर को चेक करते और गलती निकलने पर मनोज फिर से सुधारकर लिखने का अभ्यास करता।

अगस्त की पांच तारीख आ गई । अश्विन के कमरे पर उसके बर्थ डे की पार्टी चल रही थी। गुप्ता और सचिन डांस कर रहे थे।मनोज की पढ़ाई अच्छी चलने के कारण आज वह भी अश्विन के बर्थडे में आ गया था और डांस कर रहा था । उसके डांस के स्टेप बेतरतीब थे। पर पास बैठी हुई श्रद्धा उसके अनगढ़ डांस पर मोहित हुए जा रही थी। नवनीत और पांडे बैठकर पनीर बनाने के लिए प्याज और टमाटर काट रहे थे। तभी किसी ने

सूचना दी कि प्रीलिम्स का रिजल्ट आ गया है। पार्टी थम गई। डांसरों के थिरकते हुए पैर जड़ हो गए। पार्टीबाजों के दिलों की धड़कनें अचानक बढ़ गईं। मनोज धम्म से जमीन पर बैठ गया। प्रीलिम्स के अच्छे पेपर जाने के बावजूद अंतिम अटेम्प्ट की प्रीलिम्स के रिजल्ट के प्रति आशंकित करने वाले भय ने उसे घेर लिया। प्याज और टमाटर अधूरे कटे छूट गए। पांडे, अश्विन, गुप्ता, नवनीत और मनोज रिजल्ट जानने के लिए तड़प उठे। सचिन ने यह प्रीलिम्स नहीं दिया था इसलिए वह केवल दर्शक बना रहा। सचिन सभी के रिजल्ट इनरनेट पर देख आया। मनोज, अश्विन, नवनीत,पांडे का प्रिलिम्स क्लियर हो गया। गुप्ता का नहीं हुआ। वह दुःख से भर गया। उसने अपने दुःख को कण्ट्रोल करने के लिए सिगरेट का एक लम्बा कश लगाया और धड़ाम से जमीन पर गिर गया।सब घबरा गए।

अश्विन ने जमीन पर गिरे हुए गुप्ता को झकझोरा- "उठो बे गुप्ता।”

सचिन ने घबराकर पानी का झिड़काव गुप्ता के मुँह पर किया। थोड़ी देर बाद उसे होश आ गया। निराश गुप्ता को समझ नहीं आ रहा था कि उसका प्रिलिम्स क्यों नहीं निकला। उसके चारों अटेम्प्ट खत्म हो गए थे। उसका एक बार भी प्रिलिम्स क्लियर नहीं हुआ था। वह अपने कमरे में गया और उसने कमरा अंदर से बन्द कर लिया। गुप्ता की वेदना की गहराई को समझते हुए अश्विन ने उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया। गुप्ता के इस तरह कमरा बंद करने से दूसरे भी लोग आशंकित हो गये । अश्विन ने आवाज लगाई-"गुप्ता नौटँकी मत करो, बाहर आ जाओ।प्याज टमाटर कट गए हैं। पनीर कौन बनाएगा? "

गुप्ता अच्छा कुक भी था। इसलिए आज की पार्टी में पनीर बनाने का दयित्व उसी के पास था। अश्विन को डर था कि अब पनीर कैसे बनेगा? ग्रुप में आज सफलता का अनुपात ज्यादा था, इसलिए अश्विन केवल गुप्ता के दुःख के कारण पार्टी निरस्त करने के मूड में भी नहीं था। अश्विन के पुकारने के बावजूद अंदर से कोई आवाज नहीं आई। सभी की चिंता बढ़ने लगी। सचिन ने गुप्ता के मन को सांत्वना देते हुए कहा -"गुप्ताजी निराश मत होइए, चार अटेम्प्ट की व्यवस्था केवल आईएएस की परीक्षा में हैं स्टेट पीएससी की परीक्षा चालीस साल तक दे सकते हैं। दस साल हैं अभी आपके पास। घबराइये नहीं।”

नवनीत ने दरवाजे में लात मारकर गुप्ता को चेताया कि यदि वह जल्दी बाहर न आया तो दरवाजा तोड़ा भी जा सकता है। गुप्ता भी ग्रुप के धैर्य की परीक्षा ज्यादा देर तक नहीं ले पाया। वह जानता था कि ज्यादा देर कोप भवन में रहने के कारण ग्रुप के सदस्य उसे अकेला दुखी छोड़कर ‘अपनी रसोई’ रेस्टोरेंट भी जा सकते हैं। फिर उसे मनाने वाला कोई नहीं रहेगा ।इसलिए वह मान गया। उसने दरवाजा खोल दिया। वापस आने पर उसके हाथ में छः स्टील के स्टार और दो आईपीएस के तमगे थे। वह अपनी पुलिस की वर्दी में से उन्हें निकाल लाया था। उसने वे तमगे और स्टार बाथ रुम के बाहर रखे डस्टबिन में फैंक दिए।

और गाली देता हुआ बोला-"साला,चलो टन्टा खत्म हुआ। आईपीएस में वैसे भी अपने राज्य में पोस्टिंग नहीं मिलती। केरल या पश्चिम बंगाल में आईपीएस बनने क्या क्या लाभ। जंगल में मोर नाचा किसने देखा? मैं तो अब एमपी में डीएसपी बनूंगा।"

गुप्ता ने अपने कैरियर का ट्रैक चेंज कर लिया। उसकी गाड़ी मीटर गैज से उतरकर नैरो गैज पर दौड़ने लगी। मनोज ने गुप्ता द्वारा डस्टबिन में फैंके आईपीएस के स्टार और बिल्ले निकालकर अपनी जेब में रख लिए।

श्रद्धा ने आईएएस का यह प्रिलिम्स नहीं दिया था। लेकिन कुछ दिन बाद आये रिजल्ट में उसकी उत्तरांचल पीएससी की प्रिलिम्स क्लियर हो गई। श्रद्धा हरिद्वार जाकर उत्तरांचल की मुख्य परीक्षा भी दे आई।

प्रीलिम्स के रिजल्ट के बाद मनोज दुगुने जोश के साथ मुख्य परीक्षा की तैयारी में जुट गया। उसे अब दिन रात का होश नहीं रहा। बीस पेज लिखने का लक्ष्य रोज पच्चीस तीस पेज तक पहुँच गया। एक अजीब सा पागलपन उस पर छा गया था। उसके दिमाग में इस समय केवल पढ़ाई ही थी।वह सब भूल गया था घर, परिवार, दोस्त, रिश्तेदार सब ।केवल याद करना,लिखना बस। मुख्य परीक्षा में केवल एक महीना बचा था। उसने विकास सर और विनय सर के यहां तीन तीन घण्टे के टेस्ट पेपर देना शुरु किये। तीन घण्टे श्रद्धा भी क्लास में बैठी रहती थी। मनोज पूरे तीन घण्टे तक पूरी एकाग्रता से केवल पेपर सॉल्व करता। उसे ध्यान भी नहीं रहता कि श्रद्धा या कोई और पास में बैठा है। वह प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले एक रूपरेखा तैयार करता कि उस उत्तर में लिखना क्या है? भले ही उस रूपरेखा को बनाने में उसे तीन या चार मिनिट लग जाएँ पर बिना रूपरेखा बनाये वह प्रश्न शुरु नहीं करता।मनोज ने एक महीने पच्चीस तीस टेस्ट पेपर कोचिंग में जाकर दे दिए । इन टेस्ट पेपरों से उसका आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया।

परीक्षा आ गई। मनोज का सेंटर दिल्ली में ही था। उसके सभी पेपर हो गये । श्रद्धा उत्तरांचल मुख्य परीक्षा और मनोज आईएएस मुख्य परीक्षा के रिजल्ट का इन्तजार करने लगे।

43 .

"आईएएस की मुख्य परीक्षा का रिजल्ट इंटरनेट पर लोड हो रहा है। सचिन सबके रिजल्ट देखने इंटरनेट कैफे गया है। मनोज के साथ उसके कमरे पर अश्विन,नवनीत, और पांडे मुख्य परीक्षा के रिजल्ट का साँसे थामे इन्तजार कर रहे हैं। पांडे ने पहली बार मुख्य परीक्षा दी थी। वह भी अश्विन के साथ मनोज के कमरे पर आ गया था। श्रद्धा भी मनोज का रिजल्ट जानने उसके कमरे पर आ गई थी। प्रीलिम्स में गुप्ता कंकड़ की तरह

छांटकर बाहर कर दिया था और वह आगे की दौड़ के झंझट से मुक्त हो गया था इसलिए आज के रिजल्ट को वह केवल एक मनोरंजक घटना के रूप में देख रहा था। पर मनोज, पांडे, नवनीत और अश्विन की घबराहट बढ़ती जा रही थी।

गुप्ता ने लोगों की घबराहट के इस समय का सदुपयोग किया और पत्रकार की भूमिका में आ गया। उसने सिगरेट का धुंआ उड़ाते हुए मनोज से पूछा- "मनोज जी आपका यह अंतिम अटेम्प्ट है, कैसा महसूस हो रहा है ?"

अश्विन ने गुप्ता को गाली देते हुए कहा –"गुप्ता यहाँ प्राण निकले जा रहे हैं और तुम्हें फालतू के प्रश्न सूझ रहे हैं।"

पर मनोज ने गुप्ता को जवाब दिया –" यह अंतिम प्रयास है। इसके बाद कुछ नहीं बचेगा। पर हाँ मेहनत बहुत की है इस बार मैंने, इसे मैं स्वीकार करता हूँ। मैं अपनी तरफ से संतुष्ट हूँ बाकी सब मेरे हाथ में नहीं।"

तभी सचिन हांफता हुआ आ गया। सबकी साँसे अटक गई थीं।

सचिन ने सस्पेंस न रखते हुए कहा-"मनोज भैया और अश्विन जी का मुख्य परीक्षा में हो गया। पांडे जी और नवनीत जी का नहीं हो पाया।"

मनोज को अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था।उसके जीवन की पहली मुख्य परीक्षा क्लियर हो गई थी ।वह चीखकर अपनी खुशी व्यक्त करना चाह रहा था लेकिन पांडे और नवनीत का दुःख देखकर उसने अपनी खुशी कंट्रोल कर ली । पांडे और नवनीत अश्विन और मनोज की खुशी के विपरीत उदास और दुखी बैठे रहे। गुप्ता को पांडे और नवनीत के रूप में दो नये साथी मिल गये । अपने समाज में वृद्धि होते हुए देख गुप्ता संतुष्ट हो गया ।

पांडे और नवनीत को असफल और दुखी देखकर मनोज को दुःख हुआ।

उसने उन दोनों से कहा –"तुम दोनों चिंता मत करो, अगली बार तुम्हारा जरूर हो जाएगा ।"

निराश और दुखी पांडे पर मनोज की सांत्वना का कोई असर नहीं पड़ा। वह मनोज के पलंग पर निढाल सा बैठा रहा। नवनीत भी अपनी असफलता के दुःख में वहीं कुर्सी पर बैठा रो रहा था। अब इस कमरे का दृश्य बड़ा अजीब था। दो सफल लोग प्रसन्न थे और दो असफल लोग रो रहे थे। दो तटस्थ व्यक्ति दुखी लोगों को ढाढस बंधा रहे थे और सफल लोगों को बधाई भी दे रहे थे।

कुछ देर बाद सभी अपने अपने रास्ते चल दिए। रास्ते में गुप्ता ने अश्विन से पूछा-"अश्विन तुम तो कहते थे कि आईएएस की तैयारी करने वाले को प्रेम में नहीं पड़ना चाहिए। पर आज तो प्रेमी मनोज सफल हो गया और प्यार न करने वाले पांडे असफल हो गये। अब क्या कहोगे ?"

अश्विन ने भड़ककर कहा –"कुछ नहीं कहूंगा। चलो चुपचाप।"

अश्विन इस नाजुक मौके पर पांडे का दिल नहीं दुखाना चाहता था। पांडे आज अपनी असफलता से बहुत दुखी था। उसे यह भी नहीं समझ आ रहा था कि मनोज का मैन्स कैसे निकल गया? उसने तो मनोज से अलग होकर केवल पढ़ाई की थी जबकि मनोज तो दिन भर श्रद्धा के प्यार में डूबा रहता था।फिर मनोज मुख्य परीक्षा में कैसे पास हो गया? पांडे को नहीं पता था कि पांच महीनों में मनोज ने किस तरह और कैसी पढ़ाई की थी ?

गुप्ता की सेहत पर इस रिजल्ट का कोई असर नहीं हुआ था इसलिए वह मुक्त भाव से कमेंट कर रहा था – "आज तो मनोज बहुत खुश होगा, उसे प्यार के साथ साथ सफलता भी मिल गई। मनोज के जीवन का सबसे अच्छा निर्णय क्या रहा पता है अश्विन ?"

गुप्ता मनोज के रिजल्ट की व्याख्या कर रहा था और सफल अश्विन से उसकी पुष्टि भी चाहता था।

अश्विन ने बात टालने के उद्देश्य से कहा –"बता दो, बिना बताये तुम मानोगे भी नहीं।"

गुप्ता ने अपनी आवाज को रहस्यमयी ढंग से धीमा करते हुये कहा –"पांडे को अपने कमरे से निकालना और श्रद्धा से प्यार करना।"

पांडे ने जब गुप्ता की बात सुनी तो जैसे आग लग गई। गुप्ता ने नाजुक मौके पर कठोर बात कह दी थी।

दुखी पांडे क्रोध से भर गया –"गुप्ता मुझे मनोज ने नहीं निकाला, बल्कि मैं ही उसे छोड़कर गांधी विहार आ गया था। दूसरी बात, मनोज की सफलता अभी दूर है, फाइनल रिजल्ट नहीं है ये, इंटरव्यू अभी बाकी है। तीसरी बात, ऐसे प्यार बहुत देखें है, श्रद्धा के घर वालों को जिस दिन पता चलेगा कि वह दिल्ली में प्यार कर रही है उसे दिल्ली से खीचकर ले जायंगे और मनोज का प्यार धरा रह जायगा।"

गुप्ता –"कौन बतायगा श्रद्धा के घर वालों को ?"

पांडे के मन में अब क्रोध, दुःख, ईर्ष्या, निराशा,पराजय के भाव घुल मिलकर गड्डु मड्डु हो रहे थे। अशांत और व्यथित मन पांडे के कंट्रोल से बाहर हो रहा था।

उसने कांपती और तेज आवाज में कहा – "कोई तो बतायगा ही,कब तक छुपी रहती हैं ये बातें। बहुत प्यार कर लिया मनोज ने।"

पांडे के दिमाग में पता नहीं क्या प्लान चल रहा था। वह आज प्यार के साथ मनोज की सफलता को पचा नहीं पा रहा था ।उसकी चाल अब तेज हो गई थी।

SK Technology 30

44 .

मनोज की ही बिल्डिंग में उसके ठीक बगल के कमरे में अरुण रहता था। उम्र तथा परीक्षा देने की संख्या के अनुसार अरुण मनोज से सीनियर था। उस के आईएएस के चारों अटेम्प्ट समाप्त हो गये थे। अरुण रोज शाम को पूजा करता था और बहुत सुर में हनुमान चालीसा का पाठ करता था। मनोज की दोस्ती अरुण से हो गई थी। यहाँ तक कि किचिन भी उन लोगों ने साझा कर ली थी। मुख्य परीक्षा के रिजल्ट के कुछ दिन बाद मनोज अरुण के कमरे पर गया।

मनोज की मुख्य परीक्षा की ख़ुशी देखकर अरुण ने कहा- "मनोज जी अभी दिल्ली दूर है। मैं तो दो बार इंटरव्यू से वापस आया हूँ और आज वहीं हूँ जहां से चला था। मेरे चारों अटेम्प्ट खत्म हो गए। पर घर वापस किस मुंह से जाऊं इसलिए यहाँ डला हूँ। प्रिलिम्स,मैन ,इंटरव्यू ये सब मायाजाल हैं। जब तक आपका फाइनल सिलेक्शन नहीं हो जाता आपको खुश होने का कोई अधिकार नहीं है।"

अरुण ने अपने दिल का दर्द कड़वे यथार्थ के रूप में मनोज से कह दिया। मनोज चुपचाप अपने कमरे में वापस आ गया।

"उम्मीद और नाउम्मीदी का दौर है यह। उम्मीद कितने लोगों की पूरी होती है? सिलेक्ट कितने लोग होते हैं?" लाखों में से दो तीन सौ बस । बाकी लोग तो फिर से हताश हो जाते है। फूट फूट कर रोते हैं। कुछ दिनों के लिए होश खो देते हैं। किसी से नजरें नहीं मिला पाते। फिर अपनी कमियां ढूंढते हैं उन्हें दूर करने की कोशिश करते हैं और फिर एक साल लम्बा पढ़ाई का सिलसिला शुरु होता है। सालों साल चलता है यही

सिलसिला। तब जाकर कोई एक अपनी मंजिल पर पहुंचता है। कई तो अंत तक सफल नहीं हो पाते। यह अंतहीन सिलसिला है जो यहां मुखर्जी नगर में ही नहीं बल्कि देश के हर शहर में चल रहा है।"

मनोज ने अपनी डायरी में अपने मन के विचार लिखे। मुख्य परीक्षा की सफलता की खुशी अब इंटरव्यू की तैयारी और फाइनल रिजल्ट की अनिश्चितता में डूब रही थी। तभी श्रद्धा आ गई।

श्रद्धा ने आते ही मनोज से कहा- "मेरा उत्तरांचल मैन्स क्लियर हो गया।"

श्रद्धा की बात सुनकर मनोज अपनी अनिश्चितता भूल गया और उत्साहित होकर श्रद्धा से कहा- "लो अब क्या कहोगी तुम? तुम्हें सलाम।"श्रद्धा के चेहरे पर आत्मविश्वास दिख रहा था।

श्रद्धा ने मनोज का हाथ थाम लिया और उससे बोली - "हम दोनों के इंटरव्यू अभी बाकी है मनोज।"

मनोज ने उत्साह से कहा- "तुम्हारा इंटरव्यू तो सबसे अच्छा जाएगा। तुम्हें डिप्टी कलेक्टर बनने से कोई नहीं रोक सकता।" उम्मीद से सजा सपना मनोज देखने लगा।

श्रद्धा ने मनोज से कहा - "हाँ मनोज यदि मैं डिप्टी कलेक्टर बन गई तो मेरे पापा कितना खुश होंगे? उनका सपना पूरा हो जायेगा। एमबीबीएस में सिलेक्ट न होने की असफलता ने उन्हें बहुत निराश कर दिया था। उनके सामने मैं सर उठाकर खड़ी हो पाउंगी।"

श्रद्धा ने मनोज से आगे कहा –"मैं अल्मोड़ा जा रही हूँ वहीं से हरिद्वार जाउंगी पापा के साथ इंटरव्यू देने। इंटरव्यू देकर मैं वापस आ जाउंगी। "

श्रद्धा की बात सुनकर मनोज ने कन्फर्म करना चाहा –"श्रद्धा अपना इंटरव्यू देकर तुम दूसरे दिन ही वापस आ जाना।"

" तुम अपने इंटरव्यू की तैयारी पर ध्यान दो, तुम्हारे इंटरव्यू के पहले मैं वापस आ जाउंगी।" -श्रद्धा ने आश्वासन दिया ।
अगले दिन श्रद्धा अल्मोड़ा चली गई।

एक दिन शाम को श्रद्धा का फोन मनोज के कमरे के नीचे एसटीडी की दुकान पर आया ।
श्रद्धा ने मनोज से कहा– "मनोज मेरा इंटरव्यू अच्छा गया है।" फिर कुछ देर रुककर श्रद्धा ने मनोज से कहा –"पर मैं दिल्ली जल्दी नहीं आ पाउंगी।"
श्रद्धा की बात सुनकर मनोज ने आश्चर्य से पूछा -"क्यों श्रद्धा क्या हुआ ?"

श्रद्धा ने दुखी स्वर में कहा– “दिल्ली से किसी ने पापा को फोन करके यह बता दिया है कि मैं किसी लड़के से प्यार कर रही हूँ । मम्मी कह रही थी कि जब से यह फोन आया है तब से पापा दुखी हैं।”

“किसने किया होगा फोन ?” मनोज ने आश्चर्य से पूछा।

“मुझे क्या पता ?“-श्रद्धा ने किसी पर संदेह नहीं किया।

मनोज एसटीडी से फोन सुनकर जब अपने कमरे पर आया तो परेशान था। मनोज को समझ नहीं आ रहा था कि किसने श्रद्धा के घर फोन किया होगा।

पांच दिन बाद मनोज के कमरे के नीचे एसटीडी की दुकान पर फिर से श्रद्धा का फोन आया।

इस बार श्रद्धा ने चहकते हुए मनोज से कहा –“मनोज मेरा उत्तरांचल पीएससी में डिप्टी कलेक्टर के लिए सिलेक्शन हो गया है।”

मनोज के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा उसने श्रद्धा से कहा –“ वाह श्रद्धा यह तो बहुत बड़ी खबर है,लगता है आज का दिन ईश्वर ने हमारे नाम लिख दिया है।”

“हाँ मनोज आज मैं बहुत खुश हूँ,आज मैंने अपने पापा के सपने को पूरा कर दिया है ,पापा बहुत खुश हैं ।“-श्रद्धा ने मनोज से कहा ।

श्रद्धा के सिलेक्शन की ख़ुशी में मनोज को अपने इंटरव्यू की चिंता हो आई –“श्रद्धा मैं भी आज बहुत खुश हूँ ।मेरे इंटरव्यू के पहले तुम आ जाओगी ना ?”

श्रद्धा ने रुआंसे स्वर में मनोज से कहा –“मनोज जब से दिल्ली से वह फोन आया है, मेरे पापा दुखी रहने लगे हैं। उन्हें लगता हैं, मैंने उनका भरोसा तोड़ दिया है।”

श्रद्धा की बात सुनकर मनोज कहता है –“क्या किसी से प्यार न करके ही यह भरोसा बचा रह सकता है।“

मनोज की बात सुनकर श्रद्धा कुछ नहीं कह पाई।

45 .

मुख्य परीक्षा का रिजल्ट आये काफी दिन हो गये थे,पांडे का दुःख कम हो गया था, इसलिए जब अश्विन मनोज से मिलने उसके कमरे पर जाने लगा तो वह भी उसके साथ हो लिया। शाम हो चुकी थी।मनोज का रुम पार्टनर सचिन भी कोचिंग करके वापस कमरे पर आ गया था।शाम हो चुकी थी, पास के कमरे में अरुण हनुमान चालीसा का पाठ कर रहा था। उसका स्वर आज उदास था। लेकिन हनुमान चालीसा की ‘विद्यावान

गुणी अति चातुर राम काज करिबे को आतुर’ पंक्तियों तक आते आते उसका उदास स्वर रोने की आवाज में हनुमान चालीसा पढ़ने लगा और अंत में वह हनुमान चालीसा छोड़कर जोर जोर से रोने लगा। फिर अचानक भड़ाभड़-भड़ाभड़ की आवाज सुनाई देने लगी जैसे कोई सामान नीचे पटक रहा हो।
मनोज,पांडे, अश्विन और सचिन अरुण के कमरे की ओर लपके। वहां जाकर देखा तो अरुण अपने पलंग पर पड़ा हुआ जोर जोर से रो रहा है। पूजा की अलमारी के नीचे भगवान का सिंहासन पीतल के हनुमान जी और दूसरे देवी देवता जमीन पर डले हुए हैं। सब लोग घबरा गए। सबको आशंका हुई कि अरुण के परिवार में कुछ अनिष्ट न हो गया हो। अरुण का रुम पार्टनर कोने में खड़ा था। मनोज ने उस लड़के से इस विलाप का कारण जानना चाहा।
वह लड़का कुछ बोल पाता उसके पहले अरुण ने जोर जोर से -" हाय वंदना, हाय वंदना, तुम कहाँ चली गई ?अब मैं कैसे जिऊंगा ?" का ह्रदय विदारक रुदन प्रारम्भ कर दिया।”
प्यार के मामलों के विशेषज्ञ समझ गए कि मामला लड़की का है।
अरुण के पार्टनर ने मौका मिलते ही घटना को विस्तार से बताना शुरू कर दिया - "अरुण की प्रेमिका उत्तर प्रदेश पीएससी में सेल टेक्स इंस्पेक्टर के पद चयनित हो गई थी। सिलेक्शन के पहले मुखर्जी नगर के कमरे में कम्बाइंड स्टडी के चलते दोनों आपस में प्यार करने लगे थे। अरुण को उस लड़की ने वादा किया था कि सिलेक्शन के बाद ही वह शादी कर पायेगी। लड़की का सिलेक्शन हो गया अरुण का नहीं हुआ। लड़की अपने वादे की पक्की निकली,सिलेक्शन के बाद उसने शादी कर ली। उस लड़की ने यूपी में हालिया सिलेक्टेड डीएसपी लड़के से शादी कर ली। इसलिए अरुण दुखी हैं।”

यह कहानी सुनकर पांडे से नहीं रहा गया उसने सीनियर जूनियर का लिहाज छोड़कर सामूहिक रुप से कहा – “पहले पढ़ाई कर लेते ,प्यार बाद में कर लेते ।“
इतना कहकर पांडे ने मनोज पर नजर टिका दी जैसे यह वाक्य उसी के लिए ही बोला गया हो।
पांडे ने अपनी हँसी दबाते हुए अश्विन से कहा- “अश्विन जी, मुझे अरुण में मनोज जी के दर्शन हो रहे हैं। लड़की का मिलना सिलेक्शन पर ही निर्भर है।अगर मनोज का सिलेक्शन नहीं हुआ और श्रद्धा इन्हें छोड़कर चली गई तो क्या होगा?" आज अपनी विचारधारा को लेकर पांडे में गजब का आत्मविश्वास था।

“श्रद्धा जी बहुत समझदार है, वह मनोज जी को छोड़कर कहीं नहीं जायगी।” – समूह में सबसे जूनियर सचिन ने समझदारी का परिचय देते हुए पांडे से कहा।

"सचिन तुम अभी कुछ नहीं जानते। समझदार लड़कियां ही तो अच्छे ऑप्शन की ओर चली जाती हैं, बेवकूफ तो फंसी रहती हैं। यही तो समस्या है कि श्रद्धा समझदार है। अरुण की वन्दना भी समझदार थी जिसने डीएसपी लड़के से शादी कर ली। बेवकूफ होती तो अरुण के चक्कर में अपनी जिंदगी बरबाद कर लेती।” पांडे को श्रद्धा की समझदारी पर पूरा भरोसा था कि मनोज का सिलेक्शन न होने पर वह उसे छोड़कर चली जायेगी ।

इस बार अश्विन ने कहा-"मनोज का सिलेक्शन पक्का है पांडे, तुम बेकार ही शंकालु हो रहे हैं।”
पर पांडे ने अपना सिद्धांत नहीं छोड़ा - "उल्टी सीधी बात मत करो अश्विन। यथार्थ कहो। क्या गारन्टी है सिलेक्शन की? कोई गारन्टी नहीं है। इंटरव्यू देने वाले सभी पन्द्रह सौ लोग सिलेक्शन की उम्मीद लगाये बैठे हैं। होंगे कितने ? चार पांच सौ। हजार तो बिना सिलेक्शन के ही रहेंगे ना। मान लो एक पर्सेंट मनोज का सिलेक्शन नहीं हुआ और श्रद्धा भी उसे छोड़कर चली जाए ,तब इनका क्या होगा?“-पांडे ने श्रद्धा और सफलता के बिना दयनीय मनोज का कल्पना चित्र खींचकर अपनी चिंता अपने मित्र के प्रति प्रकट की।

लेकिन मनोज को श्रद्धा पर पूरा भरोसा था। उसने पांडे से कहा –“तुम अभी श्रद्धा को नहीं जानते। श्रद्धा ने एक बार जिसे चुन लिया उसे कभी नहीं छोड़ सकती।”

“ऐसी कपोल कल्पनाएं प्यार में डूबा हर प्रेमी करता है,अरुण भी करता था।” -पांडे ने मनोज से कहा।

उसने मनोज को सुनाने वाली बात अश्विन को देखते हुए कही –“श्रद्धा को अपने डिप्टी कलेक्टर बनने के तुरंत बाद मनोज के पास पास आना था, पर आज उसका रिजल्ट आये पांच दिन हो गये, श्रद्धा का कहीं अता पता नहीं है। श्रद्धा अब मनोज के रिजल्ट का इन्तजार कर रही है। मनोज सफल हो गये तो वे आ जायेंगीं लेकिन यदि असफल हो गये तो मनोज उनका रास्ता ही तकते रहेंगें ।श्रद्धा को वन्दना बनने में देर नहीं लगेगी।“
मनोज के प्यार को रोकने में अब तक असफल रहे पांडे ने अब अपने विरोध की दिशा बदल दी थी। अब वह डिप्टी कलेक्टर बनने के बाद श्रद्धा पर आरोप लगा रहा था कि उसका प्यार सच्चा नहीं है और वह मनोज के असफल रहने पर उसे छोड़ देगी।

46 .

एक दिन इंटरव्यू की कोचिंग के बाद मनोज ने कमरे पर आकर देखा कि बगल के कमरे में रहने वाला अरुण अपना सूटकेस पकड़े कहीं जा रहा है।

मनोज ने शिष्टाचारवश पूछ लिया- "कहाँ जा रहो अरुण सर ?"

अरुण ने अचानक भड़ककर कहा- "इस बेवफा दिल्ली को छोड़कर अपने घर जा रहा हूँ। अभी मर नहीं गया हूँ मैं। नहीं बन पाया आईएएस, आईपीएस तो क्या हुआ? ऐसा कौना सा बड़ा काम करते हैं आईएएस आईपीएस ? नेताओं के सामने अपनी पूँछ दबाकर खड़े रहते हैं। इसलिए अब मैं राजनीति में जाऊंगा,मंत्री बनूंगा। मैं आईएएस आईपीएस नहीं बन पाया तो वंदना ने मुझे छोड़ दिया। मंत्री बनकर सबसे पहले उसके

पति को नौकरी से निकालूँगा। मनोज तुम्हारा सिलेक्शन ना हो तो घबराना नहीं मेरी पार्टी ज्वाइन कर लेना,तुम्हें भी विधायक बना दूंगा।"

कई दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी और कई दिन से न सोई लाल आँखों में अजीब सी बेचारगी अरुण के चेहरे पर झलक रही थी। पागलों की तरह अनर्गल बातें कर रहा था वह। उसके पैर एक जगह स्थिर नहीं थे। जमीन पर रखे अपने ब्रीफकेस को छोड़कर सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। फिर उसे याद आया कि वह अपना ब्रीफकेस भूल गया है। उसने वापस आकर अपना ब्रीफकेस उठाया और सीढ़ियों पर लड़खड़ाते हुए नीचे उतरने लगा। अंतिम कुछ सीढ़ियों पर वह सम्हल नहीं पाया और लड़खड़ाकर गिर गया। ब्रीफकेस गिरकर खुल गया। मनोज ने लपककर सीढ़ियाँ उतरकर अरुण को सम्हाल लिया। ब्रीफकेस में कुछ सामान और अरुण की प्रेमिका वंदना के कुछ फोटो बाहर फ़ैल गए। मनोज ने उन्हें सम्हालकर सूटकेस में रख दिया। अरुण अपने कमरे को लगातार देखने लगा।

कमरे को लगातार देखते हुए अरुण बोला -"पांच साल ,पांच साल रहा हूँ यहां। अब कभी नहीं आऊंगा।"

मनोज को देखकर अरुण ने कसकर मनोज को गले लगा लिया और जोर जोर से रोने लगा। अरुण के साथ मनोज के भी आँसू निकल आये।अरुण रिक्शे में बैठकर चला गया, मनोज देर तक अरुण को जाते हुए देखता रहा फिर दुखी होकर अपने कमरे में लौट आया।

मनोज को आज श्रद्धा की ज्यादा ही याद आ रही थी। श्रद्धा अभी तक अल्मोड़ा से नहीं आई थी। मनोज अभी भी श्रद्धा का इन्तजार कर रहा था। अरुण का दुखी चेहरा बार बार उसके सामने आ रहा था।कितनी पीड़ा, कितनी वेदना थी असफल और ठुकराए हुए अरुण के चेहरे पर। प्यार में धोखा खाया अरुण लगभग पागलपन की अवस्था में पहुँच गया था। उससे कभी प्यार करने वाली उसकी वंदना क्या इतनी निष्ठुर हो सकती है? क्या अब उसे पूरी तरह बर्बाद हो चुके अरुण की कोई फ़िक्र नहीं?

47 .

डिप्टी कलेक्टर बनने के बाद श्रद्धा मनोज के इंटरव्यू के पहले दिल्ली जाना चाहती थी। पापा के पास दिल्ली से आये अनजाने फोन के कारण वह अपने पापा से बात नहीं कर पा रही थी। लेकिन एक दिन उसने ने हिम्मत की।

पापा अपने बगीचे में फूलों और सब्जियों को पानी दे रहे थे। श्रद्धा दूर खड़े अपने पापा से अपने मन की बात कहने की हिम्मत जुटा रही थी। वह जानती थी कि उसके पापा उससे बहुत प्यार करते हैं। बिना कहे उसके मन की बात समझते है उसके पापा।

उसने पापा से कहा- "पापा ये गुलाब कितने अच्छे खिले हैं ना इस साल! पिछले साल कैसे मुरझा गए थे।

"श्रद्धा गुलाब तो इसी साल लगाये हैं,पिछले साल यह गुलाब नहीं लगे थे। तुम कुछ और कहना चाहती हो शायद।"-पापा शायद उसके मन की उलझन समझ रहे थे।

श्रद्धा की हिम्मत नहीं हो रही थी पापा के सामने मनोज के बारे बात करने की। पर बिना बात किये वह मनोज के पास जा भी नहीं सकती थी। पापा ने श्रद्धा से अभी तक दिल्ली से आये फोन का जिक्र नहीं किया था।उसकी मम्मी ने ही उसे फोन वाली बात बताई थी ।इसलिए अब उसने यह तय कर लिया था कि वह अपने पापा के मन में आई हुई सारी शंकाओं को खत्म करके पापा की अनुमति से ही दिल्ली जायगी।
श्रद्धा ने पापा से नजर चुराते हुए कहा- "पापा वो दिल्ली में मनोज है ना !"

इस अधूरे वाक्य के आगे वह कुछ नहीं बोल पाई। उसे अपने गले में अवरोध महसूस हुआ। पापा उसके चेहरे की रंगत देखकर मामला समझ गए।

पापा ने पूछा-"क्या वह भी तुम्हारे साथ डिप्टी कलेक्टर बन गया ?"

श्रद्धा समझ गई कि राह आसान नहीं है।

श्रद्धा ने पापा से कहा -"उसका आईएएस मैन्स क्लियर हो गया है। इंटरव्यू देना है उसे।"

"कौन सा अटेम्प्ट था।" - पापा पूरी खोजबीन कर रहे थे।

"लास्ट।"-श्रद्धा का चेहरा झुका हुआ था। कुछ देर चुप्पी रही।

इस चुप्पी का मौक़ा उठाते हुए श्रद्धा ने अपनी मांग पापा के सामने रख दी–"मनोज का इंटरव्यू है पापा। मैं जाऊं क्या दिल्ली?"

"उसका फाइनल सिलेक्शन हो जाने दो पहले श्रद्धा।" -पापा कठोर यथार्थ की जमीन पर खड़े थे।श्रद्धा ने अपने मन की सारी हिम्मत जुटाकर अपनी अंतिम बात पापा से कह दी-"पापा यदि उसका सिलेक्शन नहीं हुआ तब तो दिल्ली जाना और जरूरी हो जाएगा।"

पापा को समझ नही आ रहा था कि वह अब क्या बोलें ?वह श्रद्धा के मन की दशा पर हैरान थे। पर उन्होंने बिना पिघले उससे वचन लेना चाहा -"मुझे उम्मीद है तुम मेरा भरोसा नहीं तोड़ोगी।"

“क्या किसी से प्यार न करके ही यह भरोसा बचा रह सकता है।” -श्रद्धा कुछ दिन पहले मनोज के कहे गये इस वाक्य को पापा से कहना चाहती थी। पर यह वाक्य उसके मन से निकलकर उसके गले में आकर दम तोड़ गया। वह पापा से नहीं कह पाई। उसकी आँखे भीग गईं। वह वापस अपने कमरे में चली गई।

एक दिन श्रद्धा के पुराने स्कूल सरस्वती शिशु मन्दिर अल्मोड़ा में उसके डिप्टी कलेक्टर बनने के उपलक्ष्य में सम्मान समारोह आयोजित हुआ। श्रद्धा को उसकी प्रिंसिपल ने मैडल पहनाया। उसके मम्मी पापा को भी मंच पर बिठाया गया।

श्रद्धा से स्कूल के बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए दो शब्द बोलने के लिए कहा गया। उसने बोलना शुरु किया -"आदरणीय दीदी, आचार्य जी और मेरे प्यारे भैया बहनों! ऐसा ही एक सम्मान समारोह सात साल पहले यहां इसी जगह हुआ था जिसमे एमबीबीएस में सिलेक्ट बच्चों का सम्मान हुआ था। मैं एमबीबीएस में सिलेक्ट नहीं हो पाई थी और वहां पीछे बैठी थी। दुखी ,उदास। मेरे पापा को मुझ पर बहुत भरोसा था पर मैंने पापा का भरोसा तोड़ दिया था ।

श्रद्धा ने कुछ देर साँस ली फिर आगे कहना जारी रखा-"मैंने उस दिन खुद को वचन दिया कि मैं पापा का भरोसा कभी नहीं तोड़ूँगी,चाहे कुछ भी हो जाए।”

श्रद्धा आगे कहना जारी रखती है-"बच्चों यह इम्पोर्टेन्ट नहीं है कि हम अपनी जिंदगी में क्या लक्ष्य बनाते हैं। इम्पोर्टेन्ट यह है कि हम उस लक्ष्य को पाने के लिए जी जान से जुटते हैं या नहीं? हमें वादे करना चाहिए खुद से,अपने माता पिता से,अपने मित्रों से, कि जब तक हमें अपना लक्ष्य न मिल जाए हम चैन से नहीं बैठेंगे।”

वह कुछ देर चुप रही। हॉल में तमाम बच्चों के माता पिता भी उसे ध्यान से सुन रहे थे।

उनकी तरफ देखकर श्रद्धा आगे कहती है-"पर मेहनत करते बच्चों के मन में माता पिता को भी यह भरोसा देना होगा कि यदि तुम तमाम मेहनत के बाद भी सफल नहीं हुए तो मेरी बाहें तुम्हें सम्हालने के लिए हमेशा

तुम्हारी तरफ फ़ैली हुई हैं। आज तुम असफल भी हो गए तो कोई बात नहीं,कल सफल हो जाओगे। मैं हर असफलता में तुम्हारे पास हूँ,तुम्हारे साथ हूँ।”

श्रद्धा अपने भाषण के अंतिम पड़ाव पर पहुँच गई -"मेहनत करने वाला हर बच्चा अपने माता पिता अपने दोस्तों से यही चाहता है कि यदि वह सफल हो गया केवल तभी उसे आपका प्यार न मिले। यदि वह असफल भी हो गया तब भी आप उसको प्यार करें। वह चाहता है आप उसे दिलासा दें, उसको सम्हाल लें, देखना आपके इस साथ से, आपके इस प्यार से, आपके विशवास से वह दूसरी कोई राह चुनकर जरूर सफल हो जायगा। क्योंकि कोई भी असफलता अंतिम नहीं होती। हर असफलता के बाद एक सफलता जरूर मिलती है।"

इतना कहकर श्रद्धा अपनी जगह पर बैठ जाती है।उसके पापा के भीतर लगातार यही शब्द गूँज रहे थे। 'यदि वह सफल हो गया तभी उसे आपका साथ आपका प्यार न मिले,यदि वह असफल भी हो गया तब भी आप उसको प्यार करें। '

दो दिन बाद मनोज का इंटरव्यू है। रात को श्रद्धा अपनी डायरी अपने सीने पर रखकर आँखें बंद किये लेटी है । उसके आँसू उसके गालों पर सूख गए थे। श्रद्धा के पापा उसके कमरे में आते हैं। उसकी डायरी के आख़िरी पन्नों में सिर्फ स्याही में भीगे आँसुओं के नीले धब्बे दिखाई देते हैं। कुछ समझ नहीं आया लिखा क्या है ? पापा डायरी को उसके सिराहने रख देते है और उसे एकटक देखते रहते हैं। कुछ दिन पहले पापा का सपना पूरा करने वाली श्रद्धा का चेहरा उदासी में डूबा है। पापा से ज्यादा श्रद्धा को कौन जानता है ? उसकी समझदारी पर पूरा भरोसा है पापा को। वह पापा की सबसे प्यारी बेटी है। उसने कभी कोई जिद नहीं की, कभी अपनी कोई इच्छा पापा को नहीं बताई।

पापा को आज वह दिन याद आ रहा था जब श्रद्धा पहली बार स्कूल ड्रेस पहनकर स्कूल जाने को तैयार हुई थी। तीन साल की नन्ही श्रद्धा का मन उस दिन स्कूल जाने का नहीं हो रहा था। वह तो घर में नये नये आये छोटे से खरगोश चीकू के साथ खेलना चाह रही थी। उस दिन भी उसने जिद नहीं की कि वह स्कूल नहीं जाना चाहती। बस वह उदास हो गई थी उसकी नजरें बार बार सफेद रंग के महीने भर के चीकू को देख रही थी। पापा ने नन्हीं श्रद्धा को गोद में उठा लिया था और लोअर माल रोड की सीढियां चढने लगे थे । पापा ने अपने गाल पर नन्हीं श्रद्धा के दो गर्म आंसू महसूस किये थे उस समय । पापा ने नन्हीं श्रद्धा को देखा पापा को देखते ही उसके होंठों पर मुस्कान तैर गई। शायद मुस्कान का कंट्रास आंसुओं की चुगली को छुपाना चाह रहा था।

आज भी पापा श्रद्धा का चेहरा देख रहे हैं। पापा को देखकर उसके होंठों पर मुस्कान आ जाती है। पापा अपनी बेटी के पास बैठ जाते हैं। पापा उसके सर पर हाथ फेरते हैं। उसकी पलकें बंद हो जाती हैं। उसकी बन्द

पलकों में पता नहीं क्या हलचल है ?शायद अथाह अतल नीला समुद्र आँखों के भीतर हलचल कर रहा है। पर आँखे खुलती नहीं हैं। बिना खुले ही वह समुद्र श्रद्धा के गालों पर बहने लगता है। उसके होठों की मुस्कान गायब हो जाती है। पापा अपनी बेटी को अपने सीने से सटा लेते है। पिछले कई दिनों से डरी हुई, सहमी हुई चिड़िया फिर से अपने पंखों में जान महसूस करती है।

48 .

कल मनोज का इंटरव्यू है, वह अभी भी श्रद्धा का इन्तजार कर रहा है। इंटरव्यू के लिए उसने विकास सर के यहाँ कोचिंग कर ली और अपने कैरियर, गृह नगर, और समसामयिक घटनाओं की अच्छी तैयारी कर ली। लेकिन इंटरव्यू में तो कुछ भी पूछा जा सकता है, इसलिए अब क्या पढ़ाई करे? यह उसे समझ नहीं आ रहा था, इसलिए वह अपनी डायरी पढ़ने लगा। अब तक की अपनी जीवन यात्रा। ट्वेल्थ फेल से लेकर इंटरव्यू की दहलीज पर खड़े अपने जीवन की संघर्ष गाथा।

डायरी पढ़ते पढ़ते मनोज को वह दिन याद आ गया जब पांडे उसकी नौकरी लगवाने जगदीश तोमर के यहाँ ले गया था। वह आज इंटरव्यू तक पहुंचा है उसका बहुत बड़ा श्रेय पांडे को भी है। ऐसा सोचकर उसका का मन पांडे के लिए कृतज्ञता से भर गया। उसकी इच्छा पांडे से मिलने की होने लगी।

मनोज पांडे के कमरे पर गान्धीविहार जाने के लिए तैयार हो गया। वह जैसे ही कमरे से बाहर निकला सामने से तेज चाल में अपनी आखों में भरोसा और होठों पर मुस्कान लिए श्रद्धा आती हुई दिखाई दी।

श्रद्धा ने मनोज से कहा –“सॉरी मनोज मैं लेट हो गई।“

श्रद्धा को देखकर मनोज के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई –“नहीं श्रद्धा ,तुम मेरी जिदगी में एकदम सही समय पर आई हो। तुम्हारे आने से ही सब कुछ अच्छा हुआ है मेरी जिन्दगी में।“

अपनी तारीफ़ सुनकर श्रद्धा मुस्कुरा गई ।

मनोज ने फिर श्रद्धा से कहा –“श्रद्धा मुझे पांडे से मिलने जाना है। अपने जीवन में उसका योगदान मैं कभी नहीं भूल सकता। जब मैं ग्वालियर में था तब पांडे ने मेरी बहुत सहायता की थी, मैं उसके बिना शायद यहाँ तक नहीं पहुँच सकता था।

“पर पांडे ने तो तुम्हारा अपमान किया था ।“-श्रद्धा ने मनोज से पूछा
नहीं श्रद्धा, जो पांडे मेरा आटा चक्की पर काम करते हुए देखना सह नहीं पाया था और मुझे अपने साथ रख लिया था, वह मेरा क्या अपमान करेगा? श्रद्धा कक्षा पांच की हिन्दी में एक पाठ था ‘हरपाल सिंह की पांच बातें’ उसमें कहा गया था कि जिसने आपका कभी भला किया हो उसका साथ कभी मत छोड़ो।“
मनोज की बात सुनकर श्रद्धा की आँखें भीग गईं –“मनोज मुझे लगता है कि मैंने तुम्हे चुनकर दुनिया के सबसे अच्छे लड़के को चुना है जिसके पास ऐसा दिल है जो सबसे प्यार करना जानता है। जो किसी से नफरत कर ही नहीं सकता ।“
मनोज ने श्रद्धा से कहा – “जब आप किसी एक से भरपूर प्यार करते हैं तो आपके दिल में किसी से नफरत करने की जगह कहाँ बचती है श्रद्धा ? “

श्रद्धा और मनोज गांधी विहार पांडे के कमरे पर पहुँच गये। पांडे अपने कमरे में पलंग पर लेटा ‘दुखी मन मेरे सुन मेरा कहना, जहां नहीं चैना वहां नहीं रहना’ गाना गुनगुना रहा था। मनोज के साथ श्रद्धा को देखकर पांडे चौक गया। उसने गाना बंद कर दिया और उठकर बैठ गया।

मनोज ने पांडे से कहा –“कल मेरा इंटरव्यू है पांडे। मुझे इंटरव्यू तक पहुंचाने में श्रद्धा के अलावा यदि किसी का सबसे बड़ा योगदान है वह तुम हो। तुमने यदि मेरा साथ न दिया होता तो शायद मैं कभी यहाँ तक नहीं पहुँच पाता। आज तुम्हारी शुभकामनाएं बहुत जरूरी हैं मेरे लिए। ”

श्रद्धा ने मनोज का साथ दिया –“भैया अब आप भी अपने लास्ट अटेम्प्ट की तैयारी के लिए जी जान से जुट जाइए। मनोज का भी देखो लास्ट अटेम्प्ट में इंटरव्यू के लिए कॉल हुआ है।”

“अगर मनोज का सिलेक्शन नहीं हुआ तो ?”- पांडे ने श्रद्धा के मन की थाह लेनी चाही। उसे अभी भी श्रद्धा पर भरोसा था कि वह मनोज के असफल होने पर उसे छोड़कर चली जायेगी ।

लेकिन श्रद्धा ने पांडे की आशंकाओं को गलत साबित करते हुए कहा –“ये आशंकाएं तो जिन्दगी भर चलती रहेगी। मुख्य बात हैं कि मनोज ने अपनी पूरी मेहनत से तैयारी की। अब अगर नहीं हुआ तो दुनिया में दूसरे बहुत काम हैं करने को। मेरे लिए मनोज इम्पोर्टेंट हैं वह क्या बनता है यह इम्पोर्टेंट नहीं।“ अंतिम वाक्य कहते समय श्रद्धा की नजरें झुक गईं।

“पांडे तुम भी इस साल टूट कर मेहनत करो। फिर देखना तुम्हारे मन के सारे संशय,सारे अविश्वास, सब दूर हो जायंगे। भयानक मेहनत ही है जो हम सबको संतुलित रखती है और सफलता भी देती है ।” -मनोज ने पांडे को प्रोत्साहित करने की कोशिश की ।

मनोज और श्रद्धा को दूर करने के सारे षडयंत्र पांडे के बेकार चले गये थे। इसलिए उसने अब बदली हुई परिस्थिति से समझौता करना बेहतर समझा। आश्वासन और सांत्वना पाकर पांडे का मन हल्का हो गया था , कुछ देर बाद पांडे उन दोनों को गांधी विहार ऑटो स्टेंड पर छोड़ने चला गया।

ऑटो का इन्तजार करते मनोज से पांडे ने कहा –"मनोज मैंने श्रद्धा के घर फोन किया था।" पांडे ने भावावेश में अपना सत्य उगल दिया।

पांडे की बात सुनकर मनोज ने सिर्फ इतना कहा –"कोई बात नहीं पांडे। हो सकता है इसमें भी ईश्वर की कोई अलग इच्छा छुपी हो,या हो सकता है कि मैं तुम्हारी जगह होता तो शायद मैं भी यही करता।"

पांडे मौन रहा। वह कुछ नहीं बोल सका। मनोज और श्रद्धा ऑटो में बैठकर नेहरू विहार की ओर चल दिए। पांडे उन दोनों को जाते हुए देखता रहा ।

49 .

मनोज   और श्रद्धा यूपीएससी के ऑफिस जाने के लिए तैयार हो गये। मनोज जीवन में पहली बार कोई इंटरव्यू देने जा रहा था।

"श्रद्धा मुझे डर लग रहा है,पता नहीं इंटरव्यू में क्या पूछेंगे? मैं उनका सही जवाब दे पाउँगा या नहीं ,कितने ही टॉपिक छूट गये, मैं उनका रिवीजन भी नहीं कर पाया।" – ऑटो में बैठे मनोज ने श्रद्धा से कहा।

"मनोज बस एक बात याद रखना कि यह इंटरव्यू तुम्हें जानने के लिए लिया जा रहा है। तुम क्या हो? तुम जिन्दगी को किस नजरिये से देखते हो ? इस दुनिया, इस समाज, इस नौकरी को देखने की तुम्हारी दृष्टि क्या है? इसलिए तुम्हें कुछ भी रिवीजन नहीं करना सिर्फ अपने आप को जानना हैं।" –श्रद्धा ने शायद उत्तरांचल पीएससी के दिए अपने इंटरव्यू के अनुभव से मनोज को समझाया ।

यूपीएससी के गेट पर इंटरव्यू देने वाले विद्यार्थियों की भीड़ बढ़ रही थी। सभी विद्यार्थी फॉर्मल ड्रेस में थे। अधिकाश लड़के ऑफ़ व्हाईट शर्ट और नेवी ब्लू ब्लेजर में थे। लड़कियों ने साड़ी पहन रखी थी। गेट नम्बर

एक पर उम्मीदवारों के प्रवेश पत्र चेक हो रहे थे ।उनके साथ आये उनके परिजन और मित्रों को दूसरे गेट से अंदर पार्क में बैठने के लिए कह दिया गया था।मनोज को अंदर भेजकर श्रद्धा भी पार्क में जाकर बैठ गई।

मनोज और दूसरे प्रतियोगी अब एक बड़े से हाल में थे जहां कई मेजों पर उनके प्रमाणपत्र एवं मार्कशीट यूपीएससी के कर्मचारी चेक कर रहे थे। जिनके प्रमाणपत्र और मार्कशीट चेक हो गये थे उन्हें आज किस बोर्ड में इंटरव्यू देना है यह बताया जा रहा था।

इस बड़े से हाल में महात्मा गांधी और सरदार पटेल की बड़ी सी तस्वीर दीवाल पर टंगी हुई थी । ठीक साढ़े दस बजे हलचल हुई। दरबान कमरे के अंदर बाहर होने लगे । इससे लोगों ने अंदाज लगाया कि कमरे में इंटरव्यू लेने वाले शायद आ गये हैं। प्रतियोगियों के दिल की धड़कनें बढ़ने लगी थीं, उनके गले सूखने लगे थे, उनके हाथ पैरों में कम्पन होने लगा।

मनोज का इंटरव्यू डॉ पी डी अग्रवाल के बोर्ड में पड़ा। डॉ अग्रवाल आई आई टी दिल्ली के पूर्व डायरेक्टर थे जिन्हें सरकार ने संघ लोकसेवा आयोग का मेंबर बना दिया था। मनोज के लिए यह खबर हताश करने वाली थी कि उसके इंटरव्यू बोर्ड के चेयरमेन का हिंदी साहित्य और इतिहास से कोई लेना देना नहीं है । डॉ अग्रवाल इस बात के लिए भी बदनाम थे कि वह इंजीनियर और इंग्लिश मीडियम के लड़कों को इंटरव्यू में अच्छे नम्बर देते हैं और सोशल साईंस एवं हिंदी मीडियम के लड़कों को कम नम्बर देकर विदा कर देते हैं।

दरबान ने पहले लड़के नाम नाम पुकारा। लड़के ने अपने बाल, अपने कपड़े, अपना कोट ठीक किया और अंदर चला गया। बाहर बैठे लोगों को घबराहट होने लगी। लोगों को कुछ नहीं समझ आ रहा था कि अंदर उस लड़के से क्या पूछा जा रहा है? लड़का लगभग बीस मिनिट के बाद इंटरव्यू देकर वापस आया। इस लड़के से पूछने पर ही अंदर के माहौल का पता लग पायगा।

लड़के ने दुखी होकर कहा –"मैंने बताया कि मैं दसवीं क्लास से नियमित दिनचर्या से योग कर रहा हूँ तो चेयरमेन श्री अग्रवाल बोल पड़े कि आप रोज खाना खाते हैं तो वह भी आपकी हॉबी है क्या ?मैं इसका कुछ जवाब नहीं दे पाया। डॉ अग्रवाल बहुत खतरनाक हैं। बिलकुल नहीं हंसते।"

मनोज समझ गया था कि इंटरव्यू की कुछ भी दिशा हो सकती हैं। इसलिए उसे खुले दिमाग से अंदर जाना चाहिए, पहले से कुछ भी विचार करने की जरूरत नहीं हैं। अगला लड़का बाहर आया तो वह भी दुखी था। उसने बताया कि उसके बीएससी में फिजिक्स में अच्छे नम्बर नहीं आ पाए थे इसलिए डॉ अगवाल ने उसी पर मेरी खिंचाई कर दी। उन्होंने मुझसे पूरे बीस मिनिट फिजिक्स ही पूछा और बाद में कह दिया कि मेरी तैयारी अच्छी नहीं है अगले साल आना। इतना कहकर लड़का दुखी हो गया उसकी आँखें भीग गईं। लड़का अपनी

आँखें छुपाता हुआ बाहर चला गया। मनोज इस लड़के के इंटरव्यू को सुनकर घबरा गया। इस लड़के के तो केवल फिजिक्स में ही कम नम्बर थे। इतनी छोटी कमी पर ही डॉ अग्रवाल ने इस लड़के का इंटरव्यू बिगाड़ दिया। मनोज ने अपने कैरियर पर नजर डाली तो वह अंदर से काँप गया। दसवीं थर्ड डिवीजन ,ट्वेल्थ फेल ,गणित ,फिलिक्स केमिस्ट्री में जीरो ,इंग्लिश लिटरेचर के कारण बी ए में सेकेण्ड डिवीजन ।डॉ अग्रवाल उसका क्या हाल करेंगे यह सोचकर ही वह घबराने लगा ।

तीसरा लड़का लड़का बाहर आ गया। उसका चेहरा प्रसन्न था। यह लड़का अब तक आये सभी लडकों में सबसे अधिक प्रसन्न लग रहा था। उसने बताया कि उसका इंटरव्यू बहुत अच्छा गया है।

उसने कहा कि वह आईआईटी दिल्ली का विद्यार्थी रहा है और अभी इनफ़ोसिस में सोफ्टवेयर इंजीनियर है उसका पूरा इंटरव्यू 'इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी के प्रशासन में उपयोग' विषय पर चला। डॉ अग्रवाल ने पांच छह बार वेरी गुड बोला। मनोज के लिए इस लड़के का इंटरव्यू हताश करने वाला था। मनोज आईटी के बारे में उतना ही जानता था जितना उसने मुख्य परीक्षा में विनय सर के नोट्स में पढ़ा था।

मनोज ने अपने विचलित और चिंतित मन को शांत करने के लिए आँखें बंद कर लीं। बंद आँखों के पीछे कुछ दृश्य तैरने लगे। मनोज का पूरा जीवन ही तैर गया अचानक। मनोज का गाँव, उसका घर ,ग्वालियर का कॉलेज , ग्वालियर की लाइब्रेरी, बाहर बगीचे में बैठी श्रद्धा सब एक रील की तरह मनोज की आँखों के पर्दे पर झिलमिलाकर आते जाते रहे। मनोज आँखें बंद किये हुए बैठा रहा।

तभी दरबान की आवाज मनोज ने सुनी –"मनोज कुमार शर्मा।"

मनोज उठा उसने अपने बालों पर हाथ फेरा, अपना चश्मा ठीक किया और दरबान के साथ गेट के पास आकर खड़ा हो गया। दरबान ने गेट खोला ,मनोज ने अंदर प्रवेश किया। बाहर बैठकर कल्पना करने वाला दृश्य अब एकदम सामने था। कमरे में सामने एक बड़ी यू शेप की टेबल थी जिसके पीछे पांच लोग बैठे थे। चार लोग सूट में थे जबकि एक बुजुर्ग से व्यक्ति धोती कुर्ता पहने बैठे थे,बीच में डॉ अग्रवाल बैठे थे। मनोज ने कमरे में घुसते ही सबसे पहले सभी को नमस्कार किया और अपनी बैठने वाली कुर्सी के पास जाकर खड़ा हो गया। डॉ अग्रवाल ने मनोज को बैठने का इशारा किया तो वह धन्यवाद कहकर बैठ गया।

बोर्ड मेम्बर के चेहरों पर मुस्कान थी, वे शायद मनोज को रिलेक्स कर रहे थे। शायद वह जानते थे कि प्रतियोगी इस समय बहुत तनाव में होता है इसलिए शुरुवाती प्रश्न सरल और परिचयात्मक ही पूछे जाते हैं।

डॉ अग्रवाल ने मनोज से पूछा –"अच्छा मनोज तुम सिविल सर्विस में क्यों आना चाहते हो ? तुम्हें प्रशासन में आने की प्रेरणा कहाँ से मिली ?"

यह प्रश्न सरल था। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए किसी ज्ञान अथवा थ्योरी की आवश्यकता नहीं थी । मनोज ने चार पांच सेकेंड सोचा। उसे जौरा के एसडीएम राघवेन्द्र सिंह याद आ गये जिन्होंने उसे प्रशासनिक सेवा जाने के लिए प्रेरित किया था।

उसने उत्तर देना प्रारम्भ किया –"सर मैं अपने गाँव में टेम्पो चलाता था एक बार मेरा टेम्पो पुलिस ने पकड़ लिया, मैं एसडीम राघवेन्द्र सिंह के पास गया, राघवेन्द्र सर की ईमानदार एवं त्वरित कार्यवाही देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। तभी से मेरी इच्छा प्रशासनिक अधिकारी बनने की होने लगी।"

डॉ अग्रवाल मनोज के उत्तर से प्रभावित नहीं हुए –"मनोज इस तरह की कहानी यहाँ आकर हर प्रतियोगी सुनाता है। दरअसल आप सिविल सेवा के माध्यम से समाज में रुतवा और पॉवर चाहते हैं ।"

सरल सा दिखनेवाला पहला प्रश्न ही उलझ गया। मनोज को उम्मीद नहीं थी कि उसके जीवन की इस सच्ची घटना को इंटरव्यू बोर्ड में झूठ मानकर खारिज कर दिया जायगा। झूठ बोलने से दूसरों को प्रभावित करने वाला मनोज आज सच बोलकर भी झूठा माना जा रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे अपनी बात का यकीन दिलाएं। कौन सच कह रहा है कौन झूठ कह रहा है इसे जांचने का कोई यन्त्र बोर्ड के पास नहीं था। हनुमान की तरह छाती चीरकर दिखाने की कोई सुविधा इंटरव्यू बोर्ड में नहीं थी । मनोज के पास अपनी बातको सही सिद्ध करने का कोई तरीका नहीं था। इसलिए वह चुप हो गया ।डॉ अग्रवाल मनोज को चुप देखकर खुश हो गये ।उन्होंने अपने दूसरे साथी से आगे सवाल पूछने का इशारा किया ।

दूसरा मेम्बर जो मनोज की फ़ाइल पर बहुत देर से नजरें गड़ाए हुए था, उसने फ़ाइल देखते हुए मनोज से पूछा –"आपकी बीए में सेकेण्ड डिवीजन है,ट्वेल्थ में सेकेण्ड डिवीजन है, टेंथ आपने थर्ड डिवीजन से पास की है आप तो बहुत कमजोर स्टूडेंट रहे हैं । "अचानक मेम्बर का ध्यान फ़ाइल पर किसी विशेष जगह पर गया उन्होंने चौंकते हुए मनोज से कहा –"आपने ट्वेल्थ दो साल में किया है ?क्यों ?"

वही हुआ जिसका डर था। मनोज के सामने ट्वेल्थ फेल का विषय राक्षस की तरह मुंह फाड़कर खड़ा हो गया। वह अब उस राक्षस के मुंह में समा जायेगा या बचकर निकल आयेगा उसे नहीं पता। पर संकट का सामना करने की अपनी आदत को वह भूला नहीं ।

"सर मेरे दादाजी उस साल मर गये थे, सर मुझे परीक्षा के पहले ही दिन चिकन पॉक्स हो गया था।" इंटरव्यू बोर्ड में अभी तक उसकी कही गई सच्ची बात को झूठ माना गया था। इसलिए 'ट्वेल्थ फेल' पर वह अपनी पुरानी आदत के अनुसार यह सब झूठ बोलकर आगे उस संकट से बच सकता था । पर आज उसने सच बोलने का फैसला किया। उसे लगा कि सच ही वह ताकत है जो उसे आज बचा सकती है।

मनोज ने अपनी बात मजबूती से कही --" उस साल स्कूल में नकल नहीं हुई थी सर, इसलिए हिन्दी छोड़कर सभी विषयों में फेल हो गया था और नकल उन्हीं राघवेन्द्र सिंह ने नहीं होने दी थी,जिनसे मैं प्रभावित हुआ था।"

मनोज को नहीं पता था कि उसका यह जवाब अब आगे क्या रंग दिखायगा। वह नहीं जानता था कि आईएएस के इंटरव्यू में अपने आप को ट्वेल्थ फेल बताकर उसे लाभ होगा या वह बर्बाद हो जायेगा, पर उसने भावावेश में भयानक रिस्क ले लिया था, उसे नहीं पता था कि उसके इस जवाब से मेम्बर प्रभावित होंगे या उसे अयोग्य मानते हुए बाहर का रास्ता दिखा देंगे ।

तकनीकी क्षेत्र के विशेषज्ञ डॉ अग्रवाल ने अपने जीवन में आई आई टी के बेहतरीन स्मार्ट लड़के देखे थे जो अपने कॅरियर में थ्रू आउटफर्स्ट क्लास रहे थे। ऐसे ही लड़कों को वह देश का भविष्य मानते थे। इंग्लिश मीडियम के लड़के ही देश का प्रशासन बेहतर चला सकते हैं ऐसा डॉ अग्रवाल मानते थे। पर आज उनके सामने एक ट्वेल्थ फेल लड़का बैठा था जो अपने कैरियर में घिसटते हुए उन तक पहुंचा था। डॉ अग्रवाल मनोज के इस उत्तर से चौक गए। उन्हें मनोज सिविल सर्विस के लिए एकदम अनफिट लगने लगा । उन्हें उम्मीद नहीं थी कि कोई लड़का इस तरह का जवाब आईएएस के इंटरव्यू में दे सकता है? अपनी कमजोरी मनोज ने खुद ही डॉ अग्रवाल को सौप दी थी। डॉ अग्रवाल ने मनोज के दिए हथियार से ही उसका गला रेतना शुरु किया।

डॉ अग्रवाल ने मनोज को घूरकर पूछा –"आप नकल से ट्वेल्थ पास करना चाहते थे ? आज तक ऐसा लड़का हमारे सामने नहीं आया जो यह स्वीकार कर रहा हो कि उसने कभी चीटिंग करके पास होने की कोशिश की हो।"

पता नहीं कहाँ से मनोज के भीतर आत्मविश्वास पैदा हो गया था वह डॉ अग्रवाल के इस व्यवहार से घबराया नहीं बल्कि उसने डॉ अग्रवाल की आँखों में आँखे डालकर कहा –"सर आप कभी भिंड मुरैना जाइए,वहां के स्कूल देखिये। आज भी नकल से बच्चे पास हो रहे हैं वहां। क्या इसमें उन बच्चों की गलती है ? या उस सिस्टम की जो वहां नकल नहीं रोक पाता। एक राघवेन्द्र सिंह ने एक साल नकल नहीं होने दी और उन्हीं चीटिंग करने वाले बच्चों में से एक बच्चा अपनी मेहनत के बल पर आज आपके सामने बैठा है। अगर उस साल राघवेन्द्र सिंह नकल नहीं रोकते तो शायद मैं आज भी मुरैना से जौरा टेम्पो चला रहा होता। हमें अब एक नहीं कई राघवेन्द्र सिंह चाहिए और मैं वही बनने आपके सामने आया हूँ।"

मनोज के इस जवाब से प्रभावित होकर बोर्ड के अन्य मेम्बर आपस में बातचीत करने लगे। उनकी भावमुद्रा देखकर ऐसा लग रहा था कि वे मनोज की बात से सहमत हैं।

पर डॉ अग्रवाल मनोज के इस भावप्रवण उत्तर से प्रभावित नहीं हुए उन्होंने मनोज से आगे कहा– “आप कुछ भी कहिये पर मैंने आपका पूरा कैरियर देखा। आप इंग्लिश में बहुत वीक हैं, इंग्लिश लिटरेचर में आपके हमेशा सिर्फ पासिंग मार्क्स आये हैं। एडमिनिस्ट्रेशन केन नॉट बी रन इन द एब्सेंस ऑफ़ इंग्लिश।”

मनोज फिर फंस गया। डॉ अग्रवाल भावुक नहीं निकले। वह कट्टर और अपने मत पर कायम रहने वाले निकले।

पर मनोज ने हिम्मत नहीं छोड़ी -"सर प्रशासन में भाषा उतनी महत्वपूर्ण नहीं होती, जितनी आपकी सच्ची नियत।”

मनोज ने डॉ अग्रवाल की इंग्लिश को महत्व देने वाली विचारधारा का विरोध कर दिया। डॉ अग्रवाल को उसका यह विरोध पसंद नहीं आया।

उन्होंने नाराजगी के स्वर में मनोज से कहा-"नो दिस इज एन एक्सक्यूज़ टू हाइड योर इग्नोरेंस इन इंग्लिश। हाउ केन यू सर्व द कंट्री विथ दिस वीकनेस ? "-

इंग्लिश में कमजोर परीक्षार्थी से डॉ अग्रवाल इंग्लिश में ही सवाल पूछ रहे थे। मनोज इंग्लिश में पूछे गए प्रश्न को समझकर उत्तर ढूँढने की कोशिश करने लगा।

मनोज को कुछ देर सोच में डूबे हुए देखकर दूसरे मेंबर ने बड़े शालीन तरीके से मनोज से कहा- “मनोज सर यह कह रहे हैं कि यह अंग्रेजी में अपनी अज्ञानता को छुपाने का बहाना है। आप अपनी इस कमजोरी के साथ देश की सेवा कैसे करेंगे? "

मनोज को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे? इंग्लिश एक बार फिर मनोज की राह में कांटे बिछाने को तैयार थी। मनोज के माथे पर पसीने की कुछ बूंदे दिख रही थी।

धोती कुर्ता पहने बुज़ुर्ग मेंबर ने मनोज को घबराया हुआ जानकर पूछा -"मनोज आप पानी पीना चाहेंगे ?" उस मेंबर ने टेबल पर कांच के ग्लास में रखे पानी की तरफ इशारा किया।

मनोज ने पानी से भरे कांच के ग्लास को देखा उसकी हिम्मत नहीं हुई पानी पीने की। कुछ सेकेण्ड खामोशी रही। डॉ अग्रवाल के होंठो पर मन्द मन्द मुस्कान तैर रही थी। उन्हें इंग्लिश में कमजोर छात्र को इंग्लिश के हथियार से घायल करने में मजा आ रहा था।

मनोज कुछ विचार करते हुए एकटक पानी के ग्लास को देखता रहा। फिर मनोज ने वह ग्लास अपने हाथ में उठा लिया।

फिर कुछ सोचकर वह डॉ अग्रवाल से बोला -"सर मैं यह पानी नहीं पी सकता।"बोर्ड मेंबर मनोज के इस व्यवहार पर चौंक गए।

एक मेंबर ने पूछा – "पानी गन्दा है क्या मनोज ?

मनोज ने विनम्रता से कहा -" नहीं सर पानी तो साफ़ है पर मैं कांच के ग्लास में पानी नहीं पीता मुझे स्टील का ग्लास पसन्द है।"

डॉ अग्रवाल मनोज के इस उत्तर को समझ नहीं पाये और नाराज होकर बोल पड़े - "ये क्या बात हुई , तुम्हें पानी पीने से काम है या ग्लास से। कोई भी ग्लास हो पानी तो वही रहेगा ना?"

मनोज ने बड़ी शालीनता से डॉ अग्रवाल और दूसरे मेंबर से कहा-"जी सर। यही मैं कह रहा हूँ। असली चीज पानी है, बर्तन नहीं। अगर पानी साफ़ है तो वह कांच के ग्लास में हैं या स्टील के,कोई अंतर नहीं पड़ता। आपके विचार ,आपकी भावनाएं ,आपका ज्ञान यदि अच्छा है,श्रेष्ठ है ,देश हित में है तो यह अंतर नहीं पड़ता कि वह इंग्लिश माध्यम से प्रकट हो या हिंदी माध्यम से।"

इतना कहकर मनोज ने हाथ में पकड़े पानी के ग्लास से पानी पीकर खाली ग्लास टेबल पर रख दिया। मनोज के इस अप्रत्याशित उत्तर से सभी मेंबर आश्चर्यचकित रह गए।

मनोज ने अपनी बात पूरी की – सर मैं जानता हूँ कि इंग्लिश बहुत जरुरी है।इसलिए उसे सीखने की हमेशा मैंने कोशिश की है । पहली बार जब मैंने मुख्य परीक्षा दी थी तो टूरिज्म के स्थान पर टेरेरिज्म पर एस्से लिख आया था और इंग्लिश में फेल हो गया था ,पर उसके बाद दो बार उसी इंग्लिश में पास भी हुआ, इसका अर्थ है कि मेरी इंग्लिश लगातार अभ्यास से बेहतर हो रही है।

बुजुर्ग मेंबर के चेहरे पर चमक आ गई उनके मुंह से अनायास निकल गया –"वाह मनोज।"

मनोज को इस प्रोत्साहन से बल मिला पर डॉ अग्रवाल की नजरें नीचे रखे उसके सर्टिफिकेट पर टिकी रही। उनका इंग्लिश का पैना हथियार मनोज ने बेकार कर दिया था।लेकिन डॉ अग्रवाल आसानी से छोड़ने वाले नहीं थे।

उन्होंने मोर्चा बदलते हुए पूछा- "आपके पहले आईआईटी दिल्ली का विद्यार्थी इंटरव्यू के लिए आया था। जो ट्वेल्थ में अपने स्टेट का टॉपर भी था। उसके स्थान पर आपको सिलेक्ट क्यों करें बताएं आप?"

मनोज का 'ट्वेल्थ फेल' उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था उसे लग रहा था उसका पूरा इंटरव्यू 'ट्वेल्थ फेल' पर ही खत्म होगा।उसके द्वारा इंटरव्यू के लिए की गई तमाम राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय घटनाओं की तैयारी किसी काम नहीं आ रही थी। डॉ अग्रवाल ने उसे उसके कैरियर पर ही उसे घेरने का मन बना लिया था। इस बार बोर्ड मेम्बर ने ट्वेल्थ फेल लड़के की तुलना उनकी नजर में हिन्दुस्तान के सबसे योग्य विद्यार्थी से कर दी ।

मनोज ने जवाब दिया-"क्योंकि मैं उस लड़के से अधिक योग्य हूँ।"

आईआईटी पास आउट इंग्लिश मीडियम लड़के से मनोज ने खुद को योग्य बता दिया। इंटरव्यू बोर्ड के मेंबर इस उत्तर से चौंक गए। सब एक दूसरे का चेहरा देख रहे थे। वे अब इसका कारण जानना चाहते थे।

एक अन्य मेम्बर ने आश्चर्य से पूछा -"आप कैसे योग्य है उस लड़के से जो क्लास फर्स्ट से आज तक अपनी हर परीक्षा में टॉप करता आ रहा है।"

मनोज ने जवाब दिया- "अपनी अयोग्यता को जीतना ही सबसे बड़ी योग्यता होती है। मैं ट्वेल्थ फेल एक अयोग्य लड़का हुआ करता था सर। क्योंकि गाँव के बच्चों को गाँव के सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का वह स्तर नहीं मिलता कि शहरों के इंग्लिश मीडियम स्कूल के लड़कों से कॉम्पीट कर सकें। इन अभावों के बावजूद अपने संघर्ष और संकल्प के कारण मैं यहाँ तक आ सका हूँ। किन्हीं दो लोगों की तुलना उनके परिणामों से नहीं होनी चाहिए बल्कि उनकी परिस्थितियों और सुविधाओं के आधार पर भी होनी चाहिए।"

मनोज ने अपनी बात कह दी। बोर्ड के दूसरे मेंबर मनोज की बात से सहमत होते हुए दिख रहे थे। लेकिन डॉ अग्रवाल फिर टस से मस नहीं हुए।

डॉ अग्रवाल को शायद मनोज का उत्तर पसन्द नहीं आया ,उन्होंने कहा- "ये सब अपनी अयोग्यता को छुपाने के बहाने हैं। जो लड़का मैथ्स और इंग्लिश के डर से उन्हें छोड़ देता है वह क्या शासन में भी कठिन मौकों पर गिवअप नहीं कर जायगा ?आप लोगों को कुछ पूछना है?" - डॉ अग्रवाल ने मनोज के उत्तर को सुने बिना दूसरे सदस्यों से कहा।

एक दूसरे सदस्य ने मनोज से कहा –"देखिये आप कुछ भी कहें पर आप का कैरियर ग्राफ यह बता रहा है कि आप एक बहुत कमजोर विद्यार्थी रहे हैं। मुझे लगता है कि ऐसे कमजोर और असफल विद्यार्थी की

सिविल सेवा में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। सिविल सेवा में शार्प और टेलेंटेड लोग चाहिए। बताइए हम आप जैसे असफल लड़के को क्यों चुनें?"

"क्योंकि असफलता जरूरी है। कोई भी बड़ी सफलता तब तक नहीं मिलती जब तक आप कई बार असफल नहीं हो जाते।" - इतना कहकर मनोज ने कुछ देर सभी मेम्बर को एक नजर देखा फिर अपनी बात आगे बढ़ाई – "थॉमस अल्वा एडिशन बल्ब बनाने के पहले हजारों बार असफल हुआ। केवल एक सफलता से एडिसन टेलेंटेड नहीं कहलायें,बल्कि असफलताओं की सीढ़ियों पर चढ़ चढ़ कर ,गिर गिर कर ही वह टेलेंटेड बन सके। तेनजिंग नार्गे एवरेस्ट को जीतने के पहले सात बार असफल हुए थे। यदि वह पहली या दूसरी असफलता से निराश होकर घर बैठ जाते तो कभी एवरेस्ट फतह नहीं कर पाते। ए पी जे अब्दुल कलाम ने जब पहला भारतीय प्रक्षेपण यान एस एल वी थ्री लॉन्च किया तो वह अपनी उड़ान पूरी नहीं कर पाया और कुछ सेकेण्ड बाद ही उसका मलबा समुद्र के गहरे पानी में समा गया पर इस असफलता से कलाम साहब निराशा के गर्त में नहीं डूबे और अगले दो साल में ही उन्होंने पहला हिन्दुस्तानी प्रक्षेपण यान लॉन्च कर दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम उंचा किया।" – मनोज ने ग्वालियर की लाइब्रेरी में पढ़ी तमाम किताबों में से उदाहरण देकर अपनी बात को मजबूत बनाया ।
मनोज के इस जवाब का अग्रवाल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ,उन्होंने मनोज के उत्तर में से ही अपने मतलब का प्रश्न ढूंढ लिया –अच्छा मनोज बताओ सेटेलाईट लॉन्च व्हीकल फिजिक्स के किस सिद्धांत पर काम करता है ?
मनोज को इस तकनीकी के बारे में कुछ नहीं पता था उसने कहा –सॉरी सर, मुझे नहीं पता ।
"यह तो तुम्हे जानना चाहिए मनोज।" –डॉ अग्रवाल ने मनोज से कहा । पर डॉ अग्रवाल ने यह नहीं बताया कि मनोज को यह क्यों जानना चाहिये?मनोज चुप रहा ।

डॉ अग्रवाल बहुत अनुभवी थे उनके पास हथियारों की कमी नहीं थी उन्होंने मनोज पर नया हथियार आजमाया - "आप हिंदी साहित्य के एक अच्छे लेक्चरर बन सकते है। पर जिले का प्रशासन टेक्नोलॉजी में माहिर लोग ही सम्हालें तो ही देश तरक्की करेगा।"

मनोज अब तक तकनीकी ज्ञान से लबालब भरे डॉ अग्रवाल को प्रभावित नहीं कर सका था। साहित्य टेक्नोलॉजी के सामने हाथ बांधे खड़ा था। इंग्लिश के बेकार गए हथियार की जगह दूसरा हथियार 'टेक्नोलॉजी' डॉ अग्रवाल ने मनोज पर चलाया।

पर मनोज ने हार नहीं मानी उसने कहा-"सर साहित्य का विद्यार्थी आपके विचार में जिला नहीं चला सकता। पर देश के प्रधानमन्त्री इस समय एक साहित्यकार ही हैं। क्या उनकी योग्यता पर भी आपको सन्देह है?" - मनोज ने कमरे लगी देश के प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी की तस्वीर की ओर इंगित करते हुए कहा।

मनोज ने ग्वालियर के एमएलबी कॉलेज के अपने सीनियर और भारत के प्रधानमन्त्री को अपने पक्ष में खड़ा कर दिया। उसका जवाब सुनकर बोर्ड के दूसरे सदस्य हतप्रभ रह गये ऐसा उत्तर उन्होंने इसके पहले कभी भी किसी इंटरव्यू में नहीं सुना था। डॉ अग्रवाल भी भारत के प्रधानमन्त्री को मनोज के समर्थन में खड़ा देखकर कुछ देर के लिए हिल गए। उन्होंने दूसरे मेंबर से प्रश्न पूछने के लिए कहा।

उस मेम्बर ने मनोज से पूछा –मनोज यदि कल्पना करो यदि तुम किसी शहर के पुलिस कमिश्नर हो कुछ आतंकवादी तुम्हारे शहर पर हमला करते हैं ,बताओ तुम्हारी क्या रणनीति होगी ?

मनोज ने कुछ देर सोचकर इस काल्पनिक प्रश्न का जवाब दिया –" मैं हमेशा कुछ बुलेटप्रूफ गाड़ियां शहर के मुख्य स्थलों पर तैनात करूंगा जिसमें आतंकवाद विरोधी दस्ते के जवान तैनात होंगे ,ये तुरंत कार्यवाही करेंगे ।यदि किसी स्थल पर हमला होता है तो उसी जगह उन आतंकवादियों को उलझाए रखूंगा जिससे वह शहर के दूसरी जगह न जा सकें , घायलों को तुरंत अस्पताल पहुचाउंगा ।"
काल्पनिक प्रश्न का काल्पनिक जवाब सुनकर मेम्बर ने मनोज से कहा –"वेरी गुड मनोज ।"

मनोज का जवाब समाप्त होते ही डॉ अग्रवाल ने मनोज से कह दिया – "मनोज अब तुम जा सकते हो धन्यवाद।"

मनोज धन्यवाद देकर अपनी सीट से उठा और दरवाजे की तरफ जाने के लिए पलटा ही था कि बुज़ुर्ग मेम्बर ने उसे रोका और पूछा –"तुम्हारा यह कौन सा अटेम्प्ट है मनोज?"

मनोज ने खड़े खड़े बोर्ड की तरफ देखकर उत्तर दिया –"लास्ट अटेम्प्ट है सर।" डॉ अग्रवाल को समझ नहीं आ रहा था कि यह मेम्बर इस तरह मनोज को रोक कर सवाल क्यों पूछ रहे हैं ?

बुज़ुर्ग मेम्बर ने मनोज से कहा-"यदि इस बार भी आपका सिलेक्शन नहीं हुआ तो आप क्या करेंगे?"

" स्वामी विवेकानन्द का यह वाक्य हमेशा मुझे प्रेरणा देता है –उठो जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रुको, मैं अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक रुकूंगा नहीं । "-मनोज को विवेकानन्द केंद्र में बिताए दिन याद आ गये। उसने विवेकानन्द को याद करते हुए बुज़ुर्ग मेम्बर को जवाब दिया ।

"क्या लक्ष्य है तुम्हारा? क्या आईएएस ,आईपीएस बनना तुम्हारा लक्ष्य नहीं है?"-बुज़ुर्ग मेम्बर को उसका का जवाब सुनकर आश्चर्य हुआ । इसी आश्चर्य से उन्होंने मनोज से पूछा।

"आईएएस, आईपीएस, शिक्षक, लाइब्रेरियन, चलाना ये सब जिन्दगी के लक्ष्य नहीं हो सकते। होने भी नहीं चाहिए। ये आपके लक्ष्य प्राप्ति के साधनमात्र हैं , ये तो रास्ते हैं जिन पर चलकर वास्तविक लक्ष्य प्राप्त किया जाता है, वास्तविक लक्ष्य है - 'इस देश की इमानदारी से सेवा करना'। फिर चाहे आईपीएस बना जाए या शिक्षक । -अपनी बात पूरी करके मनोज शांत खड़ा हो गया ।

बोर्ड के सभी मेम्बर चुप थे । बुजुर्ग मेम्बर ने मुस्कुराकर मनोज को जाने के लिए कह दिया। मनोज सबको नमस्कार करके बाहर निकल गया। गेट पर श्रद्धा मनोज का इन्तजार कर रही थी। श्रद्धा ने घबराते हुए पूछा –"कैसा गया इंटरव्यू मैं तो बहुत घबरा रही थी ?"

"गाँव का एक ट्वेल्थ फेल इंग्लिश में कमजोर लड़का, जैसा इंटरव्यू दे सकता था दे दिया। यदि इन लोगों को मेरी उपयोगिता महसूस होगी तो मुझे चुन लिया जाएगा अन्यथा कुछ और करेंगे ?" -मनोज ने जवाब दिया।

50 •

आज बारह मई है। फाइनल रिजल्ट का दिन। शाम को पांच बजे आईएएस का फाइनल रिजल्ट यूपीएससी के बोर्ड पर चिपक जायगा। इंटरव्यू देने वाले सभी लोग आज इसी उम्मीद में होंगे कि उनका फाइनल सिलेक्शन हो ही जायगा। जबकि दो तिहाई लोगों का सिलेक्शन होगा ही नहीं। चाहे कुछ भी हो जाए। होने न होने की यह जद्दोजहद तब तक चलती रहती है जब तक फाइनल सिलेक्शन नहीं हो जाता। कोई भी विद्यार्थी गारन्टी के साथ यह नहीं कह पाता कि उसका सिलेक्शन पक्का है। एक पल को उम्मीद बनती है दूसरे ही पल निराशा छा जाती है। एक पल को सब बनता हुआ नजर आता है दूसरे ही पल सब बिखर जाता है।

शाम के चार बज गए। एक घण्टे में रिजल्ट यूपीएससी के ऑफिस में लग जायगा। श्रद्धा और मनोज ऑटो से रिजल्ट देखने यूपीएससी के ऑफिस पहुँच जाते हैं। ऑटो यूपीएससी के गेट पर रुक गया। जहाँ ऑटो रुका वहां रिजल्ट देखने वालों की भीड़ पहले से खड़ी थी। ट्रेफिक सम्हालने वाले सिपाही को इस भीड़ से ट्रेफिक सम्हालने में दिक्कत हो रही थी। मनोज और श्रद्धा भी उस भीड़ के पास खड़े हो गये। सिपाही ने मनोज को लगभग धकेलते हुए आगे बढ़ने के लिए कहा। दोनों आगे बढ़ गये। यूपीएससी के गेट के नजदीक पहुँचते ही मनोज की धड़कनों ने अपनी गति बढ़ा दी।

तभी यूपीएससी के कर्मचारी हाथ में रिजल्ट के पेज लिए नोटिस बोर्ड पर चिपकाने आते हैं। गेट के बीतर खड़े सभी लोगों को गेट के बाहर खदेड़ दिया गया। भीड़ गेट के बाहर निकल गई। कर्मचारियों ने गेट अंदर से बंद कर नोटिस बोर्ड पर पांच मिनिट में रिजल्ट चिपका दिया। मनोज को यह पांच मिनिट जैसे पांच युग लग रहे थे। गेट खुलते ही भीड़ लगभग दौड़ते हुए गेट के अंदर घुस गई। रिजल्ट देखकर कोई ख़ुशी से नाच रहा है, कोई रो रहा है, कोई जमीन पर माथा पकड़े बैठा है,कोई बेहोश हो गया है।

मनोज की हिम्मत नहीं हुई रिजल्ट देखने की, उसने श्रद्धा को रिजल्ट देखने के लिए भेजा और खुद गेट के बाहर खड़ा रहा। अब सब कुछ श्रद्धा की हाँ या ना पर निर्भर है। उसकी नजरें बार बार श्रद्धा को देख रही थीं। कुछ लड़के हंसते हुए ख़ुशी में झूमते हुए बाहर आ रहे थे और कुछ रोते हुए। बस यही दो श्रेणियां थी आज यहाँ यूपीएससी के दरवाजे पर। मनोज सांस रोककर बस श्रद्धा का इन्तजार कर रहा था। तभी उसे सामने से श्रद्धा आती हुई दिखी। श्रद्धा धीरे धीरे उसके नजदीक आ गई ,उसके चेहरे पर गम्भीरता थी। श्रद्धा का यह रुप देखकर मनोज का दिल धक से रह गया वह समझ गया कि श्रद्धा कोई बुरी खबर सुनाने वाली है। उसने श्रद्धा से कहा –"क्या हुआ श्रद्धा जल्दी बताओ।" उसकी बेचैनी उसके चेहरे से साफ़ झलक रही थी। श्रद्धा ने बुझे हुए शब्दों में कहा–"मनोज।"

इतना कहकर श्रद्धा कुछ देर रुकी, तीन चार सेकेण्ड तक वह मनोज का निराशा में डूबता का चेहरा देखती रही।

फिर अचानक श्रद्धा लगभग चीखते हुए बोली –"तुम आईपीएस बन गये हो मनोज।"

मनोज को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। उसने श्रद्धा से कहा –"क्या कहा श्रद्धा फिर से कहो।"

श्रद्धा ने उसी उत्साह में फिर से वही वाक्य दोहरा दिया –"मनोज तुम आईपीएस बन गये हो।"

मनोज को अभी भी यकीन नहीं हो रहा था उसने ज्ल्दीबाजी में कहा –"क्या तुमने सही रोल नम्बर देखा है? क्या नाम से भी देखा है? कोई गलत रोल नम्बर तो नहीं देख लिया ?" पर श्रद्धा ने एकदम सही रोल नम्बर देखा था।

मनोज अब अपना रिजल्ट पूरी दुनिया को बताना चाहता था। उसने सबसे पहले अपने पिता को फोन किया। पिता झाबुआ में सस्पेंड थे।

पिता ने फोन उठाया तो मनोज ने कहा-"पापा मेरा रिजल्ट आ गया ,मैं आईपीएस बन गया।"

पिता के आवाज में सदा की गम्भीरता ही बनी रही। उन्होंने उसी भारी और गम्भीर आवाज में मनोज से कहा- "हूँ अच्छा? आईपीएस में हो गया। अब साले इस डिप्टी डायरेक्टर को नहीं छोड़ूंगा। बर्बाद करके ही मानूंगा। अब बताऊंगा साले को कि आईपीएस का बाप क्या होता है।"

मनोज के आईपीएस बनने के कारण अपने शत्रु और वरिष्ठ अधिकारी डिप्टी डायरेक्टर को बर्बाद करने का सपना देखते हुए पिता ने फोन रख दिया। मनोज के चेहरे पर पिता के व्यवहार पर एक हल्की मुस्कान तैर गई। अश्विन का फाइनल सिलेक्शन नहीं हुआ था। मनोज ने गेट के पास निराश खड़े अश्विन को सांत्वना दी और कहा कि अगले साल वह जरूर सिलेक्ट हो जायगा। अश्विन दुखी होकर ऑटो में बैठकर चला गया।

श्रद्धा और मनोज दोनों ने वापस नेहरु विहार जाने के लिए ऑटो रोका और उसमे बैठ गए। पास में वही सिपाही खड़ा हुआ था जिसने मनोज को धकेला था।

सिपाही ने उत्सुकतावश मनोज से पूछा -"क्या रिजल्ट रहा।"

मनोज ने कहा - "आई पी एस।"

मनोज का जवाब सुनकर सिपाही ने मनोज को एक सेल्यूट मारा। मनोज आश्चर्य से सिपाही को देखता रहा। एक ही दिन में, एक रिजल्ट से दुनिया का नजरिया उसके लिए बदल चुका था। वह ऑटो से उतरा और उसने अनजान सिपाही को गले लगा लिया। मनोज की आँखें भीग गई थी। सिपाही भी गले लगाने वाले आईपीएस से पहली बार मिल रहा था। ऑटो नेहरु विहार की ओर चल दिया। ऑटो में मनोज के बाल लहरा रहे थे। श्रद्धा पास में बैठी थी। श्रद्धा की आँखों में भी खुशी के आँसू छलछला आये थे।

- **अनुराग पाठक**

SK Technology 30

SK Technology 30

Youtube चैनल join करें

Click Here

सनी सरोज